रोम का इतिहास

लेखक—
अवध उपाध्याय
पूर्व प्रिंसपल हिन्दी विद्यापीठ प्रयाग और कलकत्ता
तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कालर
और पलर्मो आदि की गणित-
सभाओं के सदस्य

प्रकाशक
रामनरायन लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

मूल्य १॥)

PRINTED BY
RAMZAN ALI SHAH
AT THE NATIONAL PRESS
ALLAHABAD

भूमिका

मै विद्या पीठ के 'विशारद' के विद्यार्थियो को रोम का इतिहास पढ़ाया करता था। उन्हीं के लिए मैने एक छोटी सी नोट तैयार की थी। पीछे विद्यार्थियों ने इसे पुस्तक के रूप मे प्रकाशित करने का विचार प्रकट किया और मैंने भी ऐसा करना अच्छा समझा। इस पुस्तक के लिखने में मैने फाउलर तथा टेलर की पुस्तकों से सहायता ली है और प्राय ग्रथ मे भी इनका नाम लिखा है। कहीं कहीं मैंने स्वतत्र रूप से रोम की व्यवस्थाओ और पुरुषों की समालोचना भी की है। इसके अतिरिक्त मैने और भी अंगरेजी लेखको के ग्रन्थो मे सहायता ली है। परन्तु यह ग्रन्थ किसी एक पुस्तक के आधार पर नहीं लिखा गया है। सब तरह से पुस्तक को रोचक बनाने का प्रयत्न किया गया है और आशा है कि इससे रोम के इतिहास के अध्ययन में सहायता मिलेगी। इस पुस्तक के प्रूफ-सशोधन में श्री गिरिवरधारीसिंह ने बहुत सहायता दी है।

श्री प्रयाग
ज्येष्ठ पूर्णिमा स० १९८६

अयोध्या उपाध्याय

विषय-सूची

प्रथम भाग

दूसरा भाग

विषय पृष्ठ-सख्या

दूसरा भाग

विषय पृष्ठ-संख्या

चौथा भाग

रोम का इतिहास

प्रथम भाग

प्रारभकाल से राजाओं के अन्त तक

दूसरा अध्याय

राजकीय-काल

सन् ७५३ ई० पूर्व से सन् ५०६ ई० पूर्व तक रोम में सात राजाओं ने राज्य किया। यह समय राजकीय काल कहलाता है।

पहला राजा रोम्यूलस (७५३ ई० पूर्व से ७१६ ई० पूर्व तक)

किंवदन्तियों के अनुसार यह रोम का संस्थापक कहलाता है। यह रोम का पहला राजा था। इसने भगे हुए कैदियों तथा अपराधियों को रोम में शरण दी और इस प्रकार रोम की जन-संख्या बढ़ाई। इसने एक युक्ति से इन डाकुओं तथा चोरों के लिए आसपास के लोगों की कुमारी कन्याओं को छीन लिया और इनके साथ इन कुमारियों का विवाह कर दिया। इसने रोम की सीमा की भी बहुत वृद्धि की। इसने आसपास के लैटिन लोगों को परास्त किया। इसने सेबाइन जाति के राजा से युद्ध किया और उससे सन्धि करके उसके राज्य को भी रोम में ही मिला लिया और उसके साथ साथ शासन किया। अन्त में इसने सेबाइन जाति के राजा को हरा दिया और दोनों राज्यों का स्वयं तथा एकमात्र राजा बन बैठा। इसने फाइडीनी को जीता और टाइबर-नदी के दाहिने किनारे की भूमि को भी अपने अधिकार में कर लिया। इसने पहाड़ियों पर कई दुर्ग बनवाये।

रोम्यूलस रोम की राज्य-व्यवस्था तथा शासन पद्धति का भी जन्मदाता कहा जाता है। इसी ने सब से पहले सिनेट तथा

क्युरिआटा (Comitia curiata) नामक कमीटी को प्रारम्भ किया। इसने अपनी प्रजा को पेट्रीशियन और प्लेवियन नामक दो भागों में विभाजित किया। यह अपनी प्रजा के साथ न्याय का बर्ताव करता था। इसने उनके लाभ के लिए अच्छा कानून बनाया। इसने देवतादिक की पूजा की रीतियों को भी स्थिर किया। परन्तु अंत में यह निरकुश हो गया था और सब बातों में मनमानी करने लगा। इसीलिए उसकी प्रजा उससे चिढ़ सी गई क्योंकि वह सिनेट सभा से भी सलाह नहीं लेता था और सब लोगो को तुच्छ समझता था। इसीलिए सब लोगो ने उसके ऊपर हमला कर दिया और उसे मार डाला। परन्तु उसके मृत्यु के सम्बन्ध में बहुत लोग यो कहते हैं :—

"एक दिन सिनेट सभा के बीच मे रोम्यूलस राजगद्दी पर बैठा था। एकाएक आकाश, भयकर शब्दो से गूंजने लगा, बिजली तड़पने लगी और चारो ओर अन्धकार हो गया। इसी समय रोम्यूलस अकस्मात गायब हो गया।"

जो लोग इस प्रकार की बाते मे विश्वास करते हैं वे यह भी मानते हैं कि रोम्यूलस सदेह स्वर्ग चला गया। ज्यूलिस प्राक्यूलस ने जो रोम्यूलस का परम मित्र था, सब लोगों के सामने सभा में यों कहा था :—"रोम्यूलस मुझे मार्ग में मिला था। वह अत्यन्त सुन्दर वस्त्र पहने हुए था। उसने कहा कि अब मेरे अवतार का काम पूरा हो गया अतएव अब मैं स्वर्ग जा रहा हूँ।"

रोम की जनता तथा कुछ इतिहासज्ञ लोग भी सदेह स्वर्ग जाने की घटना को सत्य मानते हैं और रोमवाले क्विरिनस-देवता के नाम से उसकी पूजा करते हैं।

दूसरा राजा न्यूमा पांपियूस (७१५ ई० पूर्व से ६७३ ई० पूर्व तक)

यह सेबाइन जाति का राजा था। इसका शासन काल शांतिमय था। इसने अपनी प्रजा मे धर्म के प्रचार करने का प्रयत्न किया। रोम की धार्मिक-संस्थाओं का भी यही जन्मदाता है। इसने पत्रा (Calender) को ठीक किया, कृषि-विद्या की उन्नति की और जैनस-देवता के मन्दिर को बनवाया। रोम्यूलस के समय में जो जमीन प्राप्त हुई थी, उसे इसने अपनी प्रजा में बाँट दिया। इसने पानटिफ, आगर्स, फ्लेमेन्स और सन्यासिनियो के पद का भी जन्म दिया। न्यूमा पापियस जगत् प्रसिद्ध तत्ववेत्ता पैथोगोरस का शिष्य था और राजा बनने के पहले जंगल में रहकर ईश्वर भजन किया करता था। जब सब लोगो ने इससे राजा बनने की प्रार्थना की, तब पहले इसने राजा बनना अस्वीकार कर दिया था परन्तु बहुत लोगो के प्रार्थना करने पर इसने अन्त में राजा होना स्वीकार कर लिया। इसने स्त्रियो को भी तपस्विनी बनने की योजना की। ये सब तीस वर्ष तक ब्रह्मचारिणी रह कर तपस्या करती थीं। इसके बाद वे अपनी इच्छा के अनुसार अपना विवाह कर सकती थीं अथवा आजन्म कुमारी रह सकती थीं। इन तपस्विनियो का बहुत मान था। उनके साथ कई सिपाही रहा करते थे। यदि वे उस मनुष्य से मार्ग मे मिल जाती थीं जिसे फाँसी का दंड हो गया हो तो वह छोड़ दिया जाता था। इन कुमारियो के लिए बहुत ही अधिक कड़े नियम बनाए गए थे। यदि उनकी तपस्या में किसी प्रकार का, उनकी असावधानी से दोष आता था, तो ये जीती ही जला दी जाती थीं या जमीन में गाड़ दी जाती थीं। इसने ४३ वर्ष राज्य किया और ८३ वर्ष की

of the latin cities) का नेता हो गया और उसका अधिक विस्तार होने लगा।

कुछ दिनो के बाद इसने अपने कार्यों पर पश्चात्ताप करना प्रारभ कर दिया और अन्त मे उसने न्यूमा पांपियस के मार्ग का ही अनुसरण करना उत्तम समझा और वैरागी होगया तथा गरीब आलबन लोगों में जा कर रहने लगा। उसके घर के ऊपर बिजली गिर पड़ी और वह सकुटुम्ब मर गया।

चौथा राजा एंकस मार्सियस (६४२-६१७ ई० पू० तक)

स्यूलियस हास्टीलियस के बाद एकस मार्सियस रोम का राजा बन बैठा। यह न्यूमापा पिलियस का नाती था और उसके समान ईश्वर-भक्त तथा शान्ति-प्रिय था। जब लैटिन लोगो ने देखा कि एकस मार्सियस ईश्वर-भजन मे लगा हुआ है, तब उन्होंने इसे सुअवसर समझ कर रोम राज्य के भीतर लूट-पाट मचा दी। तब एकस मार्सियस ने उन पर आक्रमण कर दिया और मेड्यूलिया की लड़ाई में उन्हे हरा दिया और उन के बहुत गाँवो को छीन लिया और पराजित लोगो को आवेंटाइन पहाडी पर बसा दिया। एट्रस्कन लोगों के आक्रमणो से रक्षा करने के विचार से, इसने जेनीक्युलम पहाडी पर एक बड़ा भारी दुर्ग बनवाया और दुर्ग से शहर तक एक सुन्दर लकड़ी का पुल निर्माण किया। टाइबर नदी पर यह पहला ही पुल बनाया गया था।

रोम नगर के एक पहाड़ी के नीचे, इसने सब से पहला जेलखाना बनवाया। इसने टाइबर नदी के उद्गम स्थान के पास ओस्टिया नामक नगर बसाया। २५ वर्ष राज्य करने के बाद सन् ६१७ ई० पू० मे मर गया।

पाँचवाँ राजा ल्यूसियस टार्किनियस प्रिसकस
(६१७-५७८ ई० पू०)

यह यूनान-देश के कारिथ नगर का रहने वाला था। जब कारिथ में राज्यक्रान्ति हुई तब यह वहाँ से भागा और टार्किनी नगर में एट्रस्कन लोगो के साथ रहने लगा। वहाँ पर उसे अधिक अथवा उचित सम्मान नहीं मिला अतएव वह रोम चला आया और सब लोगो पर उस ने रग जमा लिया। रोम में सब लोग उसे प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखने लगे। अन्त मे यह एकस मार्सियस के लड़कों का शिक्षक नियत कर दिया गया। स्वय एकस मार्सियस भी उस से सलाह पूछा करता था और उस की सम्मति के अनुसार ही काम करता था। जब मार्सियस मरने लगा, तब उसने अपने पुत्रों को ल्यूसियस टार्किनियस प्रिसकस को सौंप दिया।

एकस मार्सियस की मृत्यु के बाद सीनेट तथा जनता ने इसे अपना राजा चुन लिया। यह एट्रस्कन वश का ही राजा कहलाता था। वह शक्तिशाली, शान्ति के समय बुद्धिमान और युद्धों में विजय प्राप्त करने वाला राजा था। इसने सेबाइन-जाति के लोगों को हरा दिया और उनके नगर कोलैशिया को जीत लिया। इसके बाद इसने लैटिन-जातियों को हरा दिया और सम्पूर्ण लैटियम का शासन कर्त्ता बन गया। इसने घुड़दौड़ के खेल के लिए भी प्रबन्ध किया था। यह सदा जनता को प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया करता था। जनता को प्रसन्न करने के लिए वह नाटक-घरो में खेल करवाता था, जनता को भोज देता था और उनकी मांग को पूरी किया करता था। उसने रोम नगर मे पानी पीने के लिए नल बनवाया और गदा पानी बहने के लिए नालियाँ बनवाई। कुछ लोगो का कहना है कि ये सब नल तथा नालियाँ अब तक

वर्त्तमान हैं। इसने रोमनगर में कई सुन्दर भवन बनवाए और नगर के चारों ओर दृढ़ दीवार बनवाई।

उसने जुपिटर नामी देवता का एक बड़ा भारी मंदिर इस विचार से बनवाया कि सारे रोम के लोग उस स्थान पर एकत्रित होकर पूजा कर सकें। इसी मंदिर को साला ने पीछे से और भी अधिक सुन्दर बनवाया था। पर्वेटाइन और पेलेटाइन के बीच में उसने एट्रस्कन-लोगों के लिए एक सुन्दर क्रीड़ा-भूमि भी बनवाई थी।

उसने सिनेट में १०० और सभासदों की भर्ती की। कुछ इतिहासज्ञों का कथन है कि एकस मार्सियस के लड़कों ने उसे दो ग्वालों की सहायता से जो वादी और प्रतिवादी के रूप में राजा के सामने उपस्थित हुए थे मरवा डाला क्योंकि इसने इन लड़कों को रोम राज्य से वंचित कर दिया था। इसके अतिरिक्त कुछ इतिहासज्ञों का यह कथन है कि इसके लड़कों ने ही इसे मार डाला क्योंकि यह अपने दामाद को राज्य देना चाहता था। वस्तुतः बात चाहे जो हो, इस में कुछ भी सदेह नहीं कि यह मार डाला गया।

छठवाँ राजा सर्वियस ट्यूलियस (५७८-५३५ ई० पू० तक)

ल्यूसियस टार्किनियस प्रिसकस की मृत्यु के बाद उसका दामाद सर्वियस ट्यूलियस राजा हुआ। इसने जनता से इस संबध में कुछ भी सम्मति नहीं ली और जनता की सम्मति के बिना ही राजगद्दी पर बैठने वाला यही एक रोम का राजा था। यदि उसने जनता से इस संबध में सम्मति ली होती तो पेट्रीशियन लोग इसे कभी राजा स्वीकार नहीं करते। इसी लिए उसने पहले प्लेबियन लोगों के प्रसन्न करने का विचार किया और उन्हें भी राज्यकार्य में मत देने का अधिकार दे दिया। इस से प्लेबियन लोग

उससे प्रसन्न हो गये। इस प्रकार सर्वियस ट्यूलियस का राज्य एक प्रकार से दृढ़ होगया। इसका राजत्वकाल शान्तिपूर्ण था। इसके समय में निम्नलिखित प्रसिद्ध कार्य हुए —

(१) इसने धन के अनुसार रोम के लोगों का विभाग किया और सेंचूरिआय-समिति (राष्ट्रीय-सभा) स्थापित की।

(२) इसने रोम की सातो पहाड़ियों की सीमा और बढ़ाई और एक ऐसी वृत्ताकार दीवार बनवाई जिसके भीतर सब पहाड़ियाँ आ गई। इस भीत की परिधि ५ मील थी और इसमें १६ फाटक थे। लग भग सात सौ वर्ष तक यह रोम की सीमा का काम देती रही। इसके खँडहर अब भी रोम में पाए जाते हैं। इसका नाम ही सर्वियन-भित्ति (The Servian wall) पड़ गया है।

(३) इसने लैटिन जाति वालो को भी अपने मे मिला लिया। वह चाहता था कि रोम के लोग, सेवाइन जाति तथा लैटिन जाति के लोग मिलकर रहे और परस्पर द्वेष भाव न रक्खें। इसी विचार से उसने एवृटाइन पहाड़ी पर डाइना देवी का एक बहुत अधिक सुन्दर मंदिर बनवाया। इस मंदिर में तीनों—रोम, सेवाइन और लैटिन—जाति के लोग प्रेम पूर्वक एकत्रित होते थे। इस प्रकार रोम के पास के ३० नगर मिलकर एक साम्राज्य बन गये। इसी को "तीस नगरो का लैटिन-संघ" (Latin league of thirty cities) कहते हैं।

(४) इसने मर्दुम-शुमारी करने की पद्धति पहले पहल शुरू की थी।

सर्वियस के सुधारों की समालोचना

सर्वियस ट्यूलियस के सुधारो की टेलर साहब ने बड़ी प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है कि सेना की संख्या इसी ने बढ़ाई थी

और उसका सगठन भी किया था। इसके सुधारों से प्लेबो को भी कुछ अधिकार मिल गये थे। सर्वियस ट्यूलियस के सुधारो के सम्बन्ध में लिवी और डायोनीसियस के कथनो में बड़ा अन्तर पड़ता है। परन्तु सबो ने इस बात को स्वीकार किया है कि देशों तथा मनुष्यो का विभाग उसने धन तथा सापत्तिक अवस्था के विचार से ही किया था। टेलर-साहब ने यह भी लिखा है कि सर्वियस के सुधारो से प्लेबो को दशा कुछ विशेष नहीं सुधरी क्योंकि उन्हे पूर्णरूप से नागरिकता के अधिकार नहीं मिले थे। परन्तु पहले से उनकी दशा अवश्य कुछ अच्छी हो गई।

सातवॉ तथा अन्तिम राजा टार्कीनस सुपर्बस

(५३५-५१० ई० पू०)

यह ट्यूलियस सर्वियस का दामाद था। इसने तथा इसकी स्त्री टुलिया ने एक षड्यत्र रचा और ट्यूलियस सर्वियस को मार डाला और उसके शव के ऊपर से अपना रथ हॅकवाया। प्रजा के साथ इसका व्यवहार अत्याचारपूर्ण होता था। इसलिए वह जनता से डरता था और अपने साथ सदैव सशस्त्र सिपाहियो को रखता था क्योकि अपने मन मे यह डरा करता था कि कहीं कोई मुझे मार न डाले। सब मे पहले तो इसने प्लेबियन लोगो के उन सब अधिकारो को छीन लिए जो उन्हें सर्वियस से मिल गये थे और नये तिहवारो को भी बद कर दिया। वह सिनेट को तो कुछ समझता ही नहीं था और मृत्यु तथा अन्य कारणों से जो स्थान सिनेट-सभा में रिक्त होते थे, उन्हें वैसे ही खाली रखता था। इसने धनवानों से बलपूर्वक धन छीन लिया और गरीबों को कम वेतन पर काम करने को विवश किया। इसी प्रकार से उसने रोम मे कई भव्य भवन बनवाए। इसके समय में कई आश्चर्य

जनक घटनाएँ हुईं। एक दिन ६ पुस्तकों को अपने हाथ में लेकर एक स्त्री राजा के यहाँ आई। वह राजा से उन पुस्तकों के खरीदने का अनुरोध करने लगी। परन्तु उनका अधिक दाम होने के कारण राजा ने उन्हें खरीदना नहीं पसंद किया। तब उसने उनमें से तीन पुस्तकों को जला दिया और शेष ६ का भी वह उतना ही दाम माँगने लगी। राजा ने फिर भी उन्हें लेना पसंद नहीं किया। तब उसने तीन और पुस्तकों को जला दिया और शेष तीन पुस्तकों का दाम भी उतना ही माँगने लगी। आश्चर्य में आकर राजा ने अब उन्हें खरीद लो। ये पुस्तकें कैपिटोलाइन नामक पहाड़ी मंदिर में बहुत दिनों तक रखी रहीं और पुजारी उसकी सहायता से राजा तथा जनता को सलाह दिया करते थे। इसके समय में शकुन विचारने के लिए कुछ लोग डेल्फी में भेजे गये थे।

इसमें संदेह नहीं कि उसका व्यवहार अत्याचारपूर्ण था परन्तु उसने रोम की बड़ी उन्नति भी की और उसे सुन्दर बनाने का प्रयत्न किया।

उसने कई बड़ी बड़ी इमारतें बनवाईं। इसने लैटिन जाति के लोगों पर अपना आतंक जमा लिया। लैटिन-लोग अब उसकी आज्ञाओं का पालन करने लगे। इस प्रकार रोम, लैटिन-संघ का प्रधान बन गया। इसने रोम से बाहर जाकर वालसियन लोगों से युद्ध किया और उनके प्रसिद्ध शहर स्वेसापोमेशिया पर अधिकार कर लिया। इस के बाद इसने गैबी नामक शहर पर हमला किया और उसे धोखा देकर अपने अधिकार में कर लिया।

सुपर्बस के लड़के का नाम सेक्सटस था। यह वास्तव में बड़ा दूषित तथा घृणित चरित्र का मनुष्य था। यह अपनी कामाग्नि

तथा दुर्वासना पूरा करने के विचार से, कोट्याट्रिक्स की स्त्री ल्युक्रीशिया के यहाँ गया और उसका पातिव्रत्य भंग कर दिया। ल्यूक्रीशिया ने अपने पति को बुला भेजा। पति के साथ उसका मित्र ल्यूशियस ब्रूटस भी आया। इन लोगो के सामने ल्यूक्रीशिया ने अपना सब हाल कह सुनाया। उसने अब संसार में रहना अपमान जनक समझा और आत्मघात कर लिया। इस घटना से रोम के लोग, राजा तथा राजा के लडके से अत्यन्त ही अधिक क्रोधित हो गये। ल्यूशियस ब्रूटस ने सब लोगो के सामने यो प्रतिज्ञा की—"अब मै टार्किनस के सुपर्वस राज्य का अंत करके ही छोड़ूँगा और उन्हे रोम से निकालकर ही दम लूँगा। इतना ही नहीं अब मै रोम मे किसी राजा को राज्य नहीं करने दूँगा।" जनता ने भी ल्यूशियस ब्रूटस की सहायता करने की प्रतिज्ञा की और काम्पस मारशियस के मैदान मे एक बडी भारी सभा हुई। इसी सभा मे जनता ने सुपर्वस को देश से निकाल देने का प्रस्ताव किया और शीघ्र ही सुपर्वस देश से निकाल दिया गया। इस प्रकार रोम मे राज व्यवस्था का अंत हो गया और उसकी जगह पर प्रजातंत्र राज्य की नींव पडी।

टार्कीनस सुपर्वस के फिर राजगद्दी स्थापित करने का प्रयत्न

सुपर्वस ने फिर रोम मे राजगद्दी स्थापित करने के कई प्रयत्न किए जिनमें से कुछ प्रसिद्ध नीचे दे दिए गये हैं—

(१) सब से पहले इसने एक षड्यंत्र रचा। उसने अपनी व्यक्तिगत चीजों के ले आने के बहाने से कई दूतो को इस विचार से रोम भेजा कि ये लोग रोम के सरदारो की सहायता से रोम मे क्रांति करा दें। परन्तु उन्हें सफलता होने के पहले ही इस षड्यंत्र

का रहस्योद्घाटन हो गया। इन षड्यन्त्र-कारियों में ल्यूशियस ब्रूटस के दो लडके भी सम्मिलित थे। ल्यूशियस ब्रूटस बडा न्यायी था, उसने अपने लडकों को भी मरवा डाला।

(२) जब षड्यन्त्र में सुपर्वस की दाल न गली, तब उसने तलवार के बल से रोम को फिर से प्राप्त करने का विचार किया। वेई तथा टार्कीनी एट्रस्कन लोगों ने सुपर्वस की सहायता दी। दोनों दलों में खूब घोर युद्ध हुआ। अन्त में लार्स पोरसेना नामक एट्रस्कनों के राजा ने रोम को चारों ओर से घेर लिया और ऐसा मालूम हुआ कि रोम वाले हार जायेंगे परन्तु होरेशियस की वीरता के कारण रोम बच गया। होरेशियस ने अपने दो और साथियों के साथ सारी एट्रस्कन-सेना को रोक रखा। इसी समय रोम लोग ज़ैनीक्यूलम से पुल द्वारा रोम में आ गये और सबों के आ जाने के बाद पुल तोड़ दिया। इस प्रकार रोम इस बार बच गया। परन्तु पोरसेना ने फिर रोम को चारों ओर से घेर लिया और रोम के लोग अन्न बिना मरने लगे। तब म्यूसियस नामक एक वीर ने एट्रस्कनों की सेना में घुस कर उसे जान से मार डालने की प्रतिज्ञा की। वह एट्रस्कनों की सेना में घुस गया और पोरसेना के धोखे से उसके मन्त्री को मार डाला। अब एट्रस्कनी सेना ने उसे पकड लिया और जीते जी आग में जलाने की धमकी दी। तब म्यूसियस ने अपने दाहिने हाथ को आग में रख दिया और उसे जलने दिया और तब भी प्रसन्नतापूर्वक खडा ही रह गया। इस वीरता पर पोरसेना उससे बहुत प्रसन्न हो गया और उसे छोड दिया। जब म्यूसियस वहाँ से लौट आया तब रोम के ३०० और नवयुवकों ने पोरसेना के मार डालने की प्रतिज्ञा की परन्तु पोरसेना रोम से चला गया और सुपर्वस अपने भाग्य को कोसता ही रह गया।

(३) सुपर्वस के दो प्रयत्न सफल नहीं हुए तीसरी बार उसने अपने दामाद की सहायता से रोम को लेना चाहा।

लैटिन-सघ के तीस शहरो ने भी सुपर्वस का पक्ष लिया और दोनो सेनाओं से रेगिलस-झील के पास ५०८ ई० पू० घमासान लडाई हुई जिसमें रोम वाले जीत गये। इस प्रकार इस बार भी सुपर्वस को सफलता नहीं हुई।

राजाओं की समालोचना

मिस्टर डवल्यू वार्ड फाउलर ने लिखा है कि जब एक बार रोम ने राजतत्र का नाश कर दिया, तब से वे इससे बहुत घृणा करने लगे और प्रजातत्र के पक्ष मे सदा लडते रहे।

फाउलर साहब का उक्त कथन सर्वथा सच है क्योकि पीछे तो राजतत्र का स्वप्न देखना भी घोर अपराध समझा जाने लगा था। बहुत इतिहासज्ञों का विचार है कि प्राचीन काल में रोम में राजा को लोग ईश्वर का अवतार मानते थे और उसकी प्रतिष्ठा भी करते थे परन्तु टेलर-साहब ने इस मत का खडन किया है। टेलर साहब ने लिखा है कि वास्तव में राजाओं का समय रोम के ऐतिहासिक-काल के पूर्व का है। परन्तु इसमे तो कुछ भी सन्देह नहीं कि अत्याचारो के कारण ही उनका अत हुआ। वास्तव में सुपर्वस बहुत स्वतत्र हो गया था, बिना स्वीकृति लिए ही यह राजा बन बैठा और मनमानी तथा अत्याचार करने लगा। टेलर-साहब ने लिखा है कि एट्रस्कनों के झगडो से सुपर्वस का कुछ भी सबध नहीं था।

तीसरा अध्याय

रोम की, प्राचीनकाल की सामाजिक दशा

प्राचीनकाल मे रोम मे कुटुम्ब की प्रथा खूब थी। जब आज कल हम लोग यह देखते हैं यूरप मे कुटुम्ब की प्रथा का एक प्रकार से अभाव है तो समझने लगते हैं कि कदाचित् रोम मे भी पहले ऐसा ही हो, परन्तु वास्तव मे ऐसी बात नहीं है। रोम मे पिता ही सारे कुटुम्ब का स्वामी तथा शासनकर्त्ता होता था। वह एक प्रकार का स्वतत्र राजा की तरह होता था क्योंकि उसकी सब आज्ञाएँ बालकों, दासों तथा कुटुम्ब के अन्य लोगो को भी माननी पडती थीं।

अति प्राचीन काल में भी रोम की सारी—जनता दो भागों—प्लेबियन और पेट्रीशियनों—मे विभक्त थी। पेट्रीशियन-लोग भारत के ब्राह्मणों की तरह अपने को पवित्र समझते थे और शासन तथा धर्म सबधी सब काम अपने ही करते थे।

प्लेबियन लोग भारत की नीच जातियों के समान थे। समाज में इनका दर्जा पेट्रीशियनों से कम था। ये शासन तथा धर्म सबधी कोई काम नहीं कर पाते थे।

प्रारम्भ काल मे ये कृषक थे। उनके देवताओं के नाम भी प्राय कृषि सबंधी बातो से ही सबध रखते हैं। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीनकाल में वे अवश्य ही कृषि-जीवी थे। इनके लिए ऋण के बड़े कड़े नियम थे।

टाइबर नदी पर रोम की स्थापना होने के बाद इनमें व्यापारी भी उत्पन्न हो गये। उसी समय उन्होंने आस्ट्रिया के बदर की

सृष्टि कर ली थी। इससे उनके व्यापार-वृद्धि का प्रमाण मिल जाता है। राजाओं के अंत होने पर इन लोगो ने कार्थेज से एक व्यापार सम्बन्धी सन्धि हो की थी।

रोम की राजनैतिक अवस्था

रोम में प्राचीन काल में स्वतत्र राजा हुआ करते थे। इस राजा को राय देने के लिए एक सौ सभासदों की एक सभा भी थी जो सीनेट-सभा कहलाती थी। इसके सिवाय एक और सभा थी जो कमीटिया क्यूरिआटा कहलाती थी और जिसमे केवल पेट्रीशियन लोग ही रह सकते थे। छठवें राजा स्यूलियस के समय मे एक और सभा नियत की गई जो कमीटिया सेंचूरिआटा कहलाती थी। इन सब बातों से स्पष्ट है कि रोम में अति प्राचीन-काल मे भी सीनेट, कमीटिया क्यूरिआटा और कमीटिया सेंचूरिआटा थीं। अब राजा, सीनेट और कमीटिया का सक्षेप वर्णन किया जायगा।

(१) राजा

रोम में राजा का पद भी वश परपरागत नहीं था क्योंकि ये भी चुने जाते थे। नियामक, शासक और निर्णायक सभी शक्तियाँ राजा में ही रहती थीं। वही नियामक भी था। शासक भी और न्यायाधीश भी। वही प्रधान सेनापति भी था। किसी से युद्ध अथवा सन्धि करने का उसीको पूर्ण अधिकार था। वही धार्मिक मुखिया भी था। सीनेट केवल राजा को अपनी सम्मति दे सकती थी परन्तु वह राजा को बाध्य नहीं कर सकती थी। राजा को ही, प्रजा को मृत्यु-दंड देने का अधिकार था। राजा लोग प्राय. अपने उत्तराधिकारी को नियत कर दिया करते थे परन्तु उसे कमीटिया क्यूरिआटा से स्वीकृति भी लेनी पड़ती थी।

जब कोई राजा अपना उत्तराधिकारी नियत किए ही बिना मर जाता था, तब सीनेट दो आदमियों को राज्य चलाने के लिए अस्थायी रूप से और वह भी केवल ५ दिन के लिए नियत कर देती थी। अन्त में स्थायी राजा चुना जाता था और तब कमीटिया क्यूरिआटा से स्वीकृत की जाती थी।

(२) सीनेट

सीनेट के सदस्य चुने भी जाते थे और राजा भी उन्हें नियत करता था। यह सभा एक प्रकार से राजा के अधीन थी क्योंकि जब राजा चाहता था, तभी इस की बैठक होती थी और जिन विषयो पर राजा सम्मतियाँ माँगता था, उन्हीं विषयों पर यह सम्मति दे सकती थी, उसे किसी काम के लिए विवश नहीं कर सकती थी। पहले सीनेटरों की सख्या १०० थी परन्तु शीघ्र ही उनकी सख्या ३०० हो गई। राजाओं को भी आवश्यकता पड़ने पर अस्थायी रूप से सीनेट ही नियत करती थी।

(३) कमीटिया क्यूरिआटा

रोम की यह सब से पुरानी सभा थी। यह केवल पेट्रीशियनों की ही सभा थी। यह सभा राजाओ को चुनती थी, कानून बनाती थी न्याय करती थी और राज्य के सब कामों को करती थी।

(४) धार्मिक-संस्थाएँ

रोम के लोग बड़े धार्मिक मनुष्य थे। ये बहुत से देवताओ की पूजा किया करते थे। ये प्रकृति के पुजारी थे और प्राकृतिक वस्तुओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञादि कर्म किया करते थे। प्रत्येक शहर के अभिभावक एक एक देवता हुआ करते थे। उनको प्रसन्न करने के लिए पूजा की जाती थी। प्रत्येक मनुष्य के घर मे देवताओ और पितरों के लिए एक निश्चित पवित्र स्थान रहता था। इनके

कामों के कराने के लिए पुरोहित भी रहा करते थे। पुरोहित लोग पवित्र कानूनों और शकुनों आदि का भी विचार करते थे। प्रत्येक काम—चाहे वह राज्य का हो अथवा साधारण मनुष्य का—लग्न देख कर और सायत पूछ कर किया जाता था। इस प्रकार राज्य के कामों पर भी पुरोहित का पूरा अधिकार था। यूनान के धर्म का भी रोम के धर्म पर प्रभाव पड़ा था। धार्मिक कामों के करने और पूजा और शकुन आदि का प्रबंध करने के लिए विशेष विशेष अधिकारी नियुक्त थे और स्वयं राजा ही इनका प्रधान हुआ करता था।

रोम के लोगों ने बड़े बड़े मंदिरों को बनाया था और वेस्टा के मंदिर में प्रति दिन आग जलती रहती थी। प्रत्येक राष्ट्रीय तथा प्राइवेट काम के प्रारंभ में बलिदान चढ़ाना आवश्यक समझा जाता था।

सर्वियस ट्यूलियस के सुधार

सर्वियस ट्यूलियस ने कई सुधार किए थे। इसने मनुष्य-गणना करना प्रारंभ की थी, एक रजिस्टर में मनुष्यों की संख्या तथा उनके माल और जायदाद आदि का वर्णन रहा करता था। इस रजिष्टर को ही देख कर कर आदि लगाया जाता था।

कमीटिया ट्रिब्यूटा

सर्वियस ने देखा कि रोम के शासनादिक सब कामों में केवल पेट्रीशियन लोग ही भाग लेते हैं इसलिए उसने प्लेबियनों को भी कुछ थोड़ा अधिकार देने का निश्चय किया।

इसलिए इसने एक ऐसी सभा नियत की जिसमें प्लेबियन और पेट्रीशियन दोनों ही सम्मिलित होने लगे। इस प्रकार प्लेबों को भी कुछ थोड़ा सा अधिकार मिल गया।

कमीटिया-सेंचुरियाटा

सर्वियस ने कमीटिया-सेंचुरियाटा का भी जन्म दिया था। सब से पहले इसने स्थानों के अनुसार लोगों को दो भागों में विभाजित कर दिया। इस विभाग के करने में उसने प्लेबों और पेट्रीशों का बिल्कुल ख्याल नहीं किया था। फिर धन के अधिक और कम के हिसाब से इसने रोम के लोगों को पाँच भागों में विभाजित कर दिया था। फिर इनमें से प्रत्येक भाग को दस सेंचुरियों (भागों) में विभाजित कर दिया। उसने इस प्रकार से इन्हें विभाजित किया था कि धनाढ्यों की सख्या कम रहने पर भी वोट उन्हीं का अधिक आता था। गरीबों के गाँव केवल एक ही वोट दे सकते थे। इस प्रकार रोम में कुल मिलाकर १९३ सेंचुरियाँ होगईं। प्रत्येक सेंचुरियों की सभा कमीटिया-सेंचुरिआटा कहलाती थी। धीरे धीरे यह सभा रोम की प्रधान सभा हो गई। यही सभा राजाओं को चुनती थी। यही कानून बनाती और बिगाड़ती भी थी। अपील भी यही सुनती थी। इसके स्थापित होने पर कमीटिया-क्यूरिआटा का महत्व कम हो गया क्योंकि उसके सब कामों को कमीटिया-सेंचुरिआटा ही करने लगी।

रोम का इतिहास

दूसरा भाग

प्रजातंत्र के प्रारम्भ से प्रजातंत्र की विजय तक

चौथा अध्याय

रोम का प्रजातन्त्र राज्य

प्रीटोर या कसल

टार्किनस सुपर्बस के अत्याचारों तथा उसके परिवार के दुराचारों से तंग आकर रोम की जनता ने राजतन्त्र का अन्त कर दिया और प्रजातन्त्र राज्य के स्थापित करने का ही अन्तिम निश्चय कर लिया। राजा के स्थान पर प्रजातन्त्र ने प्रतिवर्ष दो नए पदाधिकारी चुनने का नियम बनाया। पहले ये प्रीटोर (नायक) कहलाते थे परन्तु कुछ दिन के बाद ये कंसल कहलाने लगे। रोम, शासन कला में संसार भर में प्रसिद्ध है। इस समय भी रोम की जनता ने अपनी शासन-पटुता का अच्छा परिचय दिया। इन लोगों ने सोचा कि ऐसा न हो कि ये प्रीटोर या कसल ही राजा बन बैठें। इसी विचार से उनकी शक्तियाँ निम्नलिखित प्रकार से कम तथा सीमा के भीतर कर दी गई —

(१) ये केवल एक ही वर्ष के लिए चुने जाते थे। इस प्रकार उनके शासन के काल की सीमा बाँध दी गई।

(२) उसे स्वयं जनता चुनती थी, कोई उन्हें नियुक्त नहीं करता था।

(३) उनकी शक्तियाँ दो व्यक्तियों में विभाजित कर दी गई थीं। दोनों ही पूर्ण रूप से एक दूसरे से स्वतन्त्र थे।

इसमें सन्देह नहीं कि कसल तथा प्रीटोर की शक्तियाँ विभाजित कर दी गई थीं परन्तु शासन की तीनों शक्तियाँ—(१) नियम कानून बनाना (२) न्याय करना और (३) शासन करना

इन्हीं के हाथ मे थीं। ये कानून भी बनाते थे, अभियोगों का निर्णय भी करते थे और सेना का सचालन भी करते थे।

टेलर साहब ने लिखा है कि जब एक कौंसल का समय खतम हो जाता था, तब वह सेंचुरियों को बुलाता था और एक नया कौंसल चुनवाता था। इसमें सन्देह नहीं कि इस नियम का सदा उपयोग होता रहा। परन्तु द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के समय में फेवियस ने इस नियम का उल्लघन किया था और सेंचुरियो को फिर से दूसरा कौंसल चुनने के लिए कहा था।

डिक्टेटर

रोम वालो ने सोचा कि शान्ति के समय तो दो कौंसलों का होना आवश्यक है क्योंकि वे एक दूसरे की शक्ति को भी अधिक बढ़ने न देंगे और एक दूसरे की बुद्धिमत्ता से भी लाभ उठाएँगे तथा उनके मतभेद के समय शान्ति से प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में विचार किया जा सकेगा। परन्तु वे आकस्मिक-परिस्थिति तथा सकट के समय पर्याप्त न होंगे। ऐसे समय मे स्वय दोनो कौंसल मिलकर एक मनुष्य को चुनता था और यह डिक्टेटर कहलाता था। यह मनुष्य स्वतन्त्र राजा की तरह काम करता था और कोई उसकी शक्ति को रोक नहीं सकता था। इसकी शक्ति प्राचीन राजाओं की सब शक्तियो से किसी प्रकार कम नहीं थी। डिक्टेटर के समय, कौंसल लोग एक साधारण मनुष्य की दशा मे ही रहते थे और उन्हें कोई शक्ति प्राप्त नहीं थी। डिक्टेटर केवल छः महीने के लिए ही चुने जाते थे। डिक्टेटर प्राय सेना का सचालन करता था। इस समय भी सीनेट तथा परामर्श-समति आदि की अवधि पहले की तरह ही थी।

टेलर-साहब ने लिखा है —डिक्टेटर वास्तव में राजा ही होता था। केवल इसका समय छ महीने का होता था। बस!

इसमे और राजा में और कोई अन्तर नहीं था। यह जो चाहता था करता था और उसके विरुद्ध कोई अपील नहीं हो सकती थी। उसके समय में केवल कसल तथा अन्य मजिस्ट्रेट आदि अपना काम करना बन्द कर देते थे। परन्तु इन सब परिवर्तनों से जनता का विशेष लाभ नहीं हुआ।

प्रथम प्रीटोर तथा प्रथम डिक्टेटर

टार्कीनियस सुपर्बस के निकाल देने के बाद ल्यूशियस ब्रूटस और ल्यूशियस कोलेनटीनस प्रीटोर अथवा केसल चुने गये। सुपर्बस अब भी राजा होना चाहता था। इसलिए प्रजातंत्र मे भी उसका षड्यंत्र चल रहा था। इस षड्यंत्र का पता चल गया। इस षड्यंत्र में ब्रूटस के भी दो लड़के सम्मिलित थे। ब्रूटस ने अपने बेटों को भी प्राणदण्ड की आज्ञा दी और उन्हें अपने सामने मरवा डाला। इस घटना से लोगो के मन में ब्रूटस का खूब अच्छा प्रभाव पड़ा और सब लोग उसे आदर की दृष्टि से देखने लगे। षड्यंत्र के निष्फल होने पर सुपर्बस बाहरी लोगों को रोम पर चढ़ाई करने के लिए उभाड़ना प्रारंभ कर दिया। इस कारण से ल्यूशियस क्याटिनस को रोम छोड़ देना। पड़ा क्योंकि यह सुपर्बस का सम्बन्धी था। सुपर्बस ने फिर एक बार रोम पर तलवार के बल से अधिकार करने का प्रयत्न किया। रोम और सुपर्बस की सेना मे घमासान लडाई हुई। रोम की विजय हुई परन्तु ल्यूशियस ब्रूटस इसी लड़ाई मे मारा गया। इस लड़ाई से सुपर्बस की भी हानि हुई। तथा उसकी अभिलाषा पूरी नहीं हुई। इसलिए अपने दामाद टुस्कुलम की सहायता से राज्य पाने का प्रयत्न करने लगा। इस समय रोम वास्तव में बडे सकट में था। पोर्सनी के युद्ध करने में भी उसकी शक्ति घट गई थी और रोम के साथ देने वाले ३० लैटिन नगर भी शत्रु की ओर मिल

गये थे। इसी संकट के समय में रोम का पहला डिक्टेटर चुना गया। इसने युद्ध करने की पूरी तैयारी की और सुर्बस की सेना को हरा दिया। अब सुपर्बस का दिल टूट गया और थोड़े ही दिनों के बाद वह मर गया। परन्तु उसके जीवन-काल ही मे प्रीटोर या कंसल तथा डिक्टेटर चुनलिए गये थे। रोम में यह भी प्रसिद्ध है पहले कसल ल्यूशियस ब्रूटस और कौलेटैनस के शासन कालही में प्लेबों को परामर्श समिति का सदस्य बनने का अधिकार मिल गया था। परन्तु इस का कोई ठीक प्रमाण नहीं मिलता। इसके सिवाय प्लेबों के पीछे के युद्धों से भी यही पता चलता है कि ऐसा होना उस समय असभव था। यह भी लोग कहते हैं कि इसी समय मे वेलरिय पबली कोला के निर्माण किए हुए नियमो के अनुसार यह निश्चय हुआ कि बिना जनता की स्वीकृति के कोई भी मनुष्य सर्वोच्च पद प्राप्त नहीं कर सकता। उसमें यह भी निश्चय हुआ था कि आर्थिक और शारीरिक दंडों की अपील सेंचूरिया-समिति मे हो सकेगी।

प्रजातन्त्र के समय में प्लेबियनो और पेट्रीशियनों की दशा

रोम के पहले राजा रोम्यूलस के ही समय में पेट्रीशियन और प्लेबियन दो जातियाँ बन गई थीं। इन दोनो जातियो में बड़ा अन्तर था। प्रतिवर्ष दो कंसल चुने जाते थे। ये पेट्रीशियन ही हो सकते थे। इतना ही नहीं, राज के लगभग सब अधिकार इन्हीं लोगों के हाथ मे था। प्लेबियन लोगों को किसी प्रकार का अधिकार नहीं था और एक प्रकार से ये पेट्रीशियन लोगों के दास ही थे। इन सब कारणों से इनका पारस्परिक झगड़ा बढ़ता जाता था। विजय के लूट के माल को केवल पेट्रीशियन लोग ही आपस में बाँट लेते थे और प्लेबियनों को कुछ भी नहीं मिलता था।

प्रजातंत्र के प्रारभ में रोम की दशा

प्रजातन्त्र के प्रारभ में रोम की अवस्था बहुत ही सोचनीय थी। सुपर्वस फिरसे एक राजतंत्र राज्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा था और स्वय रोम में प्रजातन्त्र के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जा रहा था। इस प्रकार इस समय रोम में आभ्यतरिक और बाहरी, दोनो प्रकार का भय था। इसके अतिरिक्त आस पास के निवासियों—वाल्शियन, इक्वीएस और एट्रूस्कस—से भी रोम से सदा लड़ाई हुआ करती थी। इसके सिवाय रोम में अब पेट्रीशियन और प्लेबियन लोगो का झगड़ा उग्र रूप धारण करता ही चला जाता था। पहले तो लोग समझते थे कि प्रजातन्त्र राज्य के स्थापित करने पर सबके दु ख दूर हो जायेंगे। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं हुआ।

सन् ४९८ ई०पू० से ३९४ ई० पू० तक रोम का बाहर के देशों से सबन्ध

सुपर्वस ने अन्त में तलवार के बल मे रोम पर राजतंत्र स्थापित करने का विचार किया था। परन्तु सन् ४९८ ई० पू० में वह रेगिलस की लडाई मे हार गया और राजतंत्र के स्थापित करने का विचार ही छोड़ दिया। इसके बाद रोम मे प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। इसके बाद सन् ३९४ ई० पू० तक अर्थात् लग भग एक सौ वर्ष तक प्रजातन्त्र राज्य को अपने पडोसियो से लडना पड़ा था। रोम के आस पास एट्रूस्कन, वाल्शियन और एक्वीएस आदि जातियाँ थीं। ये सर्वदा ही रोम से लड़ा करती थीं। पहले तो रोम कभी इन जातियो से जीत जाता था। और कभी हार जाता था परन्तु रोम ने जब से लैटिन-सघ स्थापित कर लिया, तब से उस की दशा बदल गई। अब यह अपने शत्रुओं को हराने लगा

और अन्त में रोम ने पूर्णरूप से उन पर विजय प्राप्त कर ली। इन सब लड़ाइयों में एट्रस्कनों की शक्ति क्षीण होने लगी और रोम की शक्ति बहुत बढ़ गई। इन सब लड़ाइयों के सबध में निम्नलिखित तीन कहानियाँ बहुत ही अधिक प्रसिद्ध हैं —

(१) वालशियन-युद्ध

वालसी जाति अथवा वालशियन लोग रोम के दक्षिण में रहते थे। यह बड़े प्रबल थे और इनके अधिकार में बहुत बड़े बड़े नगर तथा दृढ़ किले थे। ये लोग लैटिन-सघ में सम्मिलित नहीं होना चाहते थे और रोम से प्राय लड़ा करते थे। मार्सियस ने वालशियन लोगों के कोरियों नगर को घेर लिया था और बड़ी वीरता से उस पर अधिकार कर लिया था। उसी समय से उसे कोरियोलेनस अर्थात् कोरियोली का वीर की उपाधि मिली थी। मारसियस कोरियो लेनस पेट्रीशियन वश का एक आत्माभिमानी नव-युवक था। इसलिए प्लेबियन लोग उस से घृणा किया करते थे। एक बार कोरियोलेनस ने कसल होने का विचार किया परन्तु प्लेबियन-लोगों ने वोट नहीं दिया। इसलिए वह इन लोगों से घृणा करने लगा। एक बार रोम में एक बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा। इस समय रोम वालों ने प्लेबियनों को भी बिना दाम के ही अन्न देने का प्रस्ताव किया परन्तु कोरियोलेनस ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। इसलिए प्लेबियनों ने प्रयत्न करके कोरियोलेनस को देश-निकाला का दण्ड दिलवा दिया। अब कोरियोलेनस प्लेबियनियों से बहुत बिगड़ा और उनसे बदला लेने का दृढ़ निश्चय किया। अतएव वह वालशियनों के पास चला गया और उनकी ओर से रोम के विरुद्ध लड़ने लगा। कोरियोलेनस एक बहुत ही अच्छा वीर तथा योद्धा था, इसने रोम वालों

को बुरी तरह से हराना प्रारम्भ कर दिया। जब यह रोम के एक शहर के बाद दूसरे शहर पर अधिकार करने लगा तब रोमवालों को आटा-दाल का भाव मालूम हुआ। कुछ दिनों के बाद कोरियोलेनस, स्वयं रोम के पास भी पहुँच गया। अब रोम नगर के निवासी अपने मन में डरने लगे कि कोरियोलेनस रोम को अवश्य ही चौपट कर देगा। रोम वालों ने किसी तरह से उसे प्रसन्न करना चाहा। इसी विचार से पहले इन्होंने बहुत लोगों को कोरियोलेनस के मनाने के लिए भेजा परन्तु उसने किसी की एक नहीं सुनी। इसके बाद धर्माधिकारी लोग उसके पास भेजे गये परन्तु उन के समझाने का भी कुछ फल नहीं हुआ। अन्त में रोम की बहुत स्त्रियाँ उसके मनाने के लिए भेजी गईं। इन स्त्रियों के आगे कोरियोलेनस की माता तथा स्वय उसकी स्त्री थी। अपनी माता तथा स्त्री को दीन मुद्रा से हाथ जोड़े आते देख कर उसका हृदय फट गया और उसकी आँखों में आँसू भर आए। इन की प्रार्थनाओं ने उसके हृदय को स्पर्श कर दिया। माता उसके पास जा कर बोली — बेटा! मैं तुम से आज एक भिक्षा माँगने आई हूँ और वह यह है—तू अपनी जन्मभूमि के नाश करने का विचार छोड़ दे।" उसने इन की बातों को मान ली। कोरियोलेनस ने कहा "माता! तुमने रोम को तो बचा लिया पर तु अपने पुत्र को खो दिया।" कोरियोलेनस अपनी सेना के साथ वापस लौट गया और थोड़े दिनों के बाद वालशी लोगों के बीच ही में मर गया। इस प्रकार इस बार स्त्रियों ने रोम को बचा लिया। शेक्सपियर नामक इङ्गलैंड देश के एक जगत् प्रसिद्ध नाटककार ने कोरियोलेनस नामक एक अच्छा नाटक लिखा है। शेक्सपियर के अतिरिक्त और भी कई लोगों ने इस कहानी के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है। इतिहास के प्रेमियों को शेक्सपियर के उक्त नाटक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

कुछ इतिहासज्ञों का विचार है कि कोरियोलेनस के इस काम से वालशियन लोग उस से चिढ़ गये तथा उसे मार डाला।

(२) वीयाई का युद्धः—फेबी की कहानी

पेट्रीशियन-जाति की फ़ेवियन नामक एक साखा बहुत ही अधिक प्रसिद्ध थी। पेट्रीशियन-लोग, प्लेवियनों के साथ विवाहादिक सम्बन्ध नहीं करते थे। परन्तु केसे नामक एक फेबियन ने प्लेवियन-जाति की एक कन्या से विवाह कर लिया। इसलिए पेट्रीशियन लोग, फेवियनो से घृणा करने लग गये और थोड़े ही दिनों में इन में परस्पर खूब झगड़ा होने लगा। अन्त में सब फेवियनों ने विवश हो कर रोम को छोड़ दिया। एक भी फेबियन अब रोम में नहीं रह गया। ये लोग जा कर क्रेमेरा नदी के किनारे बस गये। वीयाई-नगर के निवासी रोम के कट्टर शत्रु थे। अतएव इन लोगों से वे लड़ाई करने लग गये क्योंकि ये भी रोम ही आये थे। फेबियन लोगों ने विरता पूर्वक इन से लडना प्रारम्भ कर दिया और रोम की प्रतिष्ठा बचाने का घोर प्रयत्न किया। परन्तु रोम के लोगों ने इनकी कुछ भी सहायता नहीं की। अन्त में वीयाई-नगर निवासियों ने इन्हें चारों ओर से घेर लिया और फेवियनों का नाश कर दिया। फेबियनों ने अपने को देश की वेदी पर बलि चढ़ा दिया परन्तु ऐसी दशा मे भी रोम के लोगों ने उन की सहायता न की।

(३) एक्वीएन-युद्ध। लूसियस किंक्टियस सिनसिनेटस की कहानी

एक्वीयन-लोग रोम से पूर्व की ओर पहाड़ी पर रहते थे। ये पहाड़ी लुटेरे थे। इनसे तथा रोम से प्राय: युद्ध हुआ करता था।

एक बार इन लोगो ने रोम वालो को अच्छी तरह से हरा दिया और कसल म्यूसियस को सेना-सहित एलगीदस पहाड़ी पर चारों ओर से घेर लिया। जब रोम में यह समाचार पहुँचा तो हाहाकार मच गया और सब लोग सोचने लगे कि अब इनका बचाना असम्भव है। परन्तु परामर्श समिति ने कहा कि अब भी रोम में एक मनुष्य है जो हम लोगो की रक्षा कर सकता है। वह मनुष्य लूसियस किन्सियस सिनसिनेटस है। उसीको इस समय डिक्टेटर बनाना चाहिए। उसके सिवाय रोम मे और कोई ऐसा मनुष्य नहीं है जो हम लोगो की रक्षा कर सके। यह समचार लूसियस के पास भेजा गया। जब रोम के लोग उसके पास पहुँचे तो वह अपने खेत में हल जोत रहा था। इस समय वह एक देहाती मनुष्य की दशा मे था। उसने अपनी स्त्री से पहनने के लिए वस्त्र माँगा और फिर सदेश-वाहको के सामने आकर उपस्थित हुआ। सदेश-वाहकों ने उसे 'डिक्टेटर' शब्द से सबोधित किया और तब रोम का सब समाचार कह सुनाया। तदनतर लूसियस डिक्टेटर की हैसियत में रोम पहुँचा। वहाँ पहुँच कर, उसने सेना मे योग्य पुरुषो को भरती किया। अन्त में उसने आज्ञा दी कि सब लोग अपने साथ भोजन और बारह लकड़ी के तख्ते ले कर चलें। इस प्रकार सब सामानो से लैस हो कर लूसियस की उस सेना ने प्रस्थान कर दिया जो रोम के इतिहास में अमर होने वाली थी। डिक्टेटर लूसियस ने एकीयन लोगो तथा एलगीदस पहाड़ी पर हमला कर दिया। लूसियस की सेना ने शत्रु की पहाड़ी के पास पहुँच कर घोर शब्द किया। इस शब्द को सुन कर घिरी हुई रोम की सेना समझ गई कि अपनी प्रतिष्ठा, बचाने, शत्रुओं पर अपना आतक जमाने और हम लोगो की सहायता करने के लिए, रोम से लोग आगये हैं। इन शब्दो से घिरी हुई रोम की सेना मे खूब उत्साह

आगया और वह एक्वीयन लोगों पर टूट पड़ी। बाहर से भी लूसियस ने शत्रु की सेना को घेर लिया था क्योंकि लूसियस की सेना ने रात ही मे खाई खोद लिया था और उस में तख्तों को गाड़ दिया था। जब प्रातः काल एकियन लोगों की सेना उठी तो उसने अपने को चारों ओर से घिरा पाया और विवश होकर उन्हें हार माननी पड़ी। इस प्रकार इस बार रोम विजयी हुआ। जब विजय का झंडा फहराते हुए लूसियस ने रोम में प्रवेश किया, तब का दृश्य विचित्र था। लोग आनन्द तथा अभिमान के मारे पागल हो रहे थे।

रोम मे लौटते ही लूसियस क्विन्टियस सिनसिनेटस ने डिक्टेटर पद को त्याग दिया और उसी क्षण खेत पर काम करने के लिए चला गया। इस घटना से पता चलता है कि इस समय रोम का जीवन कितना सरल तथा उच्च था और राष्ट्र के प्रति लोगों के कैसे ऊँचे भाव थे। लूसियस कितना भारी देशभक्त था और कितना त्यागी था। ऐसे ही वीर, देशभक्त तथा त्यागी सज्जनों के कारण ही रोम को वह गौरव प्राप्त हुआ जो किसी भी देश के लिए गर्व का विषय हो सकता है।

वीयाई नगर तथा फेलेरियाई नगर का पतन और एट्रस्कन-युद्धों का अन्त

एट्रस्कन लोगों का प्रधान नगर वीयाई था। वीयाई और रोम में बहुत दिनों तक झगड़ा चलता रहा। इनकी प्रतिद्वन्दिता रोम के प्राचीन इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। रोम टाइबर नदी के बाएँ ओर बसा हुआ था। नदी के दाहिने ओर पर एट्रस्कन लोग अपना अधिकार जमाना चाहते थे और रोम अपना। फेबियनों ने भी रोम की ओर से इन लोगों (एट्रस्कनो) से लड़ाई की थी।

पहला अध्याय

रोम के इतिहास की एक विशेषता

इसमें सन्देह नहीं कि रोम के इतिहास का अभिप्राय इटली का इतिहास भी होता है परन्तु रोम का इतिहास किसी देश अथवा किसी देश के निवासियो का इतिहास नहीं है किन्तु वास्तव में यह एक नगर रोम का इतिहास है। इटली के इतिहास का प्रधान तथा एकमात्र केन्द्र रोम ही रहा है। पहले रोम एक छोटा सा नगर था। कुछ दिन के बाद कई जातियाँ मिल गईं और सब रोम को अपना प्रधान मानने लगीं। धीरे धीरे रोम की शक्ति बढ़ने लगी और इसकी शक्ति का लोहा सारा इटली-देश मानने लगा। अन्त में रोम ने अपने आधिपत्य का सिक्का लगभग सारे ससार में जमा लिया। कुछ दिनो के बाद एक बड़े व्यापक तथा विस्तृत रोम-साम्राज्य की स्थापना हुई और उसका पतन भी हुआ। इस ग्रन्थ मे यह दिखाया जायगा कि किस प्रकार रोम नामक एक छोटा सा नगर ससार भर में अपनी शक्ति तथा प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध हुआ तथा किस प्रकार से रोम-साम्राज्य का उत्थान और पतन हुआ। सारे ऐतिहासिक साहित्य को छान डालने पर पता चलेगा कि किसी भी देश का इतिहास उसके किसी एक नगर के इतिहास से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह विशेषता केवल इटली के रोम नगर को ही प्राप्त है।

रोम के इतिहास का महत्व

रोम का इतिहास कई कारणो से प्रसिद्ध तथा पठनीय है। इसके निम्नलिखित कुछ महत्व हैं —

(१) रोम-साम्राज्य, यूरोप की वर्तमान शासन-पद्धतियो का जन्मदाता है। रोम-साम्राज्य के भीतर एक बार लगभग सारा यूरोप था। इस कारण से यूरोप के सब देशो पर रोम साम्राज्य के सिद्धान्त, सभ्यता, कानून तथा नियमो का प्रभाव पड़ा। रोम की राजनैतिक-धारा मे एक बार यूरोप के सारे देश बड़ी तीव्र गति से बहे थे और उसकी सभ्यता से लाभ उठाए थे। इसमे लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि यूरोप, आज एशिया, अफ्रिका तथा अन्य महाद्वीपो से राजनैतिक व्यवस्थाओ तथा अन्य बातों मे सर्वथा भिन्न है। इस विषमता का प्रधान कारण रोम का प्रभाव ही है। अतएव हम लोगो को रोम के इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक है क्योकि इसके बिना यूरोप का इतिहास पूर्ण नहीं हो सकता।

(२) रोम, वास्तव मे सारे ससार को एक शृखला मे बाँधने की एक प्रधान कडी है। रोम ने एक बार लगभग सारे ससार को जीता था और रोम-साम्राज्य के पतन के बाद रोम-साम्राज्य के भिन्न भिन्न अंशो से ही यूरोप के और सब साम्राज्यो का श्रीगणेश हुआ।

(३) रोम के ही द्वारा यूनानी-सभ्यता तथा विद्या सारे यूरोप मे फैल गई। यूनान की कला, दर्शन और साहित्य का प्रचार रोम ने ही किया।

(४) सारे यूरोप मे रोम ने ही ईसाई-धर्म का प्रचार किया।

(५) रोम का इतिहास केवल भूतकाल ही का इतिहास नहीं है किन्तु वर्तमान काल से भी उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि यूरोप की वर्त्तमान सभ्यता पर रोम की सभ्यता का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा है। इसीलिए कहा जाता है कि रोम साम्राज्य का इतिहास, प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास को जोड़ने वाला पुल है।

इटली की प्राकृतिक तथा भौगोलिक स्थिति का इटली के इतिहास पर प्रभाव

यूरोप के दक्षिण भाग में तीन प्रायद्वीप हैं। इटली इनके मध्य का प्रायद्वीप है। यह उत्तर में अल्पस पर्वत, पश्चिम और दक्षिण में मेडीटेरेनियन-समुद्र और पूर्व में एड्रियाटिक समुद्र से घिरा हुआ है। इसी इटली की राजधानी रोम है। इटली के बीच में एप्पीनाइन्स नामक पर्वत रीढ़ की तरह फैला हुआ है। इसके उत्तरी भाग में पो नदी है। इसलिए यह बहुत ही अधिक उपजाऊ है। इसका दक्षिणी भाग पहाड़ी है और उसके सब बन्दरगाह पश्चिमी किनारे पर हैं। इन सब प्राकृतिक बातों का इटली के इतिहास पर निम्नलिखित प्रभाव पड़े हैं:—

(१) प्राकृतिक सीमाओं से घिरे रहने के कारण प्राचीनकाल में, रोम अथवा इटली के इतिहास पर बाहरी लोगों का बहुत ही कम प्रभाव पड़ा था।

(२) यह केन्द्र में है। अतएव यह पूर्व और पश्चिम दोनों ओर सुगमता से शासन कर सकता था। इसी कारण से धीरे धीरे इसका आधिपत्य सारे मेडीटेरेनियन-समुद्र पर हो गया।

(३) इसके पूर्वी किनारे पर कोई बंदरगाह नहीं था और इसके पश्चिम किनारे पर बन्दरगाह थे। अतएव इसका वाणिज्य

पश्चिम से ही प्रारम्भ हुआ था। रोम का व्यापार नदियों के द्वारा भी पहले होता था।

(४) इटली के प्रारम्भिक निवासियों में से कुछ तो पहाड़ों पर रहते थे और कुछ मैदान में। पहाड़ी लोग लड़ाका तथा असभ्य हुआ करते थे और जो लोग मैदान में रहते थे वे वाणिज्य करते थे और सभ्य होते थे। इनमें प्राय: संग्राम हुआ करता था। परन्तु सभ्य जातियों के सामने असभ्य जातियाँ कभी भी नहीं टिक सकतीं, अन्त में मैदान में रहने वाली जातियों ने पहाड़ी जातियों को हरा दिया। इसके बाद उन्होंने वाणिज्य तथा राज्य के फैलाने में खूब उन्नति की।

रोम की भौगोलिक स्थिति

रोम इस समय इटली की राजधानी है और इटली के मध्य में बसा हुआ है। यह टाइबर नदी के बायें तट पर समुद्र-तट से १५ मील की दूरी पर स्थित है। रोम, कई पहाड़ियों के समूह पर भी बसा हुआ है। एस्ट्रस्कन जाति के हमलों से बचने के लिये इटैलियन लोगों ने इसे पहाड़ियों पर बसाया था। इसलिए रोम सब तरह से सुरक्षित था। नदी के तट पर होने के कारण, यह व्यापार के सर्वथा योग्य था। रोम समुद्र से भी बहुत दूर नहीं था। इसलिए यह सामुद्रिक व्यापारों से तो लाभ उठा सकता था परन्तु समुद्री लुटेरों से यह सुरक्षित था। पहले तो रोम, पैलेटीन नामक पहाड़ी पर ही था। पहाड़ी पर बसने का यह लाभ था कि शत्रुओं से रक्षा करने के लिए पहाड़ी पर दुर्ग बन सकता था। परन्तु धीरे धीरे रोम की जन-सख्या बढ़ती चली गई और छ: पहाड़ियाँ भी रोम नगर में सम्मिलित हो गई। इसी कारण से रोम को "सात-पहाड़ियों का नगर" भी कहते हैं। इन सब बातों से स्पष्ट है कि इसकी भौगोलिक स्थिति, इसे एक उत्तम तथा देश भर में

सर्वश्रेष्ठ नगर बनाने के सर्वथा योग्य थी। फाउलर साहब ने लिखा है कि समस्त इटली में रोम की भौगोलिक स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी और प्रकृति से इटली के और किसी भी नगर को इतनी सुविधाएँ प्राप्त नहीं थीं।

इसी रोम का आतंक कई बड़े बड़े राष्ट्रों पर छाया हुआ था। इस नगर ने प्राचीनकाल में जो कुछ कर दिखाया, वह आज बड़े से भी बड़े राष्ट्र के लिए करना असम्भव है। पहले तो यह नगर इटली का स्वामी बना। फिर इस नगर ने एक के बाद दूसरी बलवान जातियों से युद्ध करके उन्हें हरा दिया और अन्त में विजयी होकर यह समस्त भूमध्य-सागर के पास के देशों का मालिक बन गया। धीरे धीरे इसने उस समय के लगभग सारे सभ्य संसार पर अपना आतंक जमा लिया। इसमें सन्देह नहीं कि रोम में भी परस्पर युद्ध तथा आन्तरिक कलह उत्पन्न होते रहते थे परन्तु अन्त में रोम ने रोम साम्राज्य को स्थापित कर दिया। परन्तु विदेशी जातियों ने अन्त में रोम को हराया और रोम-साम्राज्य को खंड खंड कर दिया तथा उन पर अधिकार जमा लिया। ठीक ठीक पता नहीं चलता कि रोम की स्थापना कब हुई परन्तु लोगों का विश्वास है कि इसकी नींव सन् ७५३ ई० पूर्व में पड़ी थी।

रोम के इतिहास का प्रारम्भ लगभग सन् ८०० ई० पू० से होता है। इसमें सन्देह नहीं कि रोम-साम्राज्य का पतन सन् ४७६ ई० पू० में हो गया परन्तु रोम-साम्राज्य के नाम का अन्त सन् १८०६ ई० के पहले नहीं हुआ। इस ग्रन्थ में निम्नलिखित बातों पर विचार किया जायगा —(१) रोम साम्राज्य की उत्पत्ति (२) दुर्बल रोम साम्राज्य कैसे प्रबल हुआ। (३) रोम ने जीते हुए लोगों के साथ कैसा बर्ताव किया। (४) रोम में लोक मत का

पश्चिम से ही प्रारम्भ हुआ था। रोम का व्यापार नदियों ... भी पहले होता था।

(४) इटली के प्रारम्भिक निवासियों में से कुछ तो पहाड़ों पर रहते थे और कुछ मैदान में। पहाड़ी लोग लड़ाका तथा असभ्य हुआ करते थे और जो लोग मैदान में रहते थे वे वाणिज्य करते थे और सभ्य होते थे। इनमें प्राय संग्राम हुआ करता था। परन्तु सभ्य जातियों के सामने असभ्य जातियाँ कभी भी नहीं टिक सकतीं, अन्त में मैदान में रहने वाली जातियों ने पहाड़ी जातियों को हरा दिया। इसके बाद उन्होंने वाणिज्य तथा राज्य के फैलाने में खूब उन्नति की।

रोम की भौगोलिक स्थिति

रोम इस समय इटली की राजधानी है और इटली के मध्य में बसा हुआ है। यह टाइबर नदी के बायें तट पर समुद्रतट से १५ मील की दूरी पर स्थित है। रोम, कई पहाड़ियों के समूह पर भी बसा हुआ है। एस्ट्रस्कन जाति के हमलों से बचने के लिये इटैलियन लोगों ने इसे पहाड़ियों पर बसाया था। इसलिए रोम सब तरह से सुरक्षित था। नदी के तट पर होने के कारण, यह व्यापार के सर्वथा योग्य था। रोम समुद्र से भी बहुत दूर नहीं था। इसलिए यह सामुद्रिक व्यापारों से तो लाभ उठा सकता था परन्तु समुद्री लुटेरों से यह सुरक्षित था। पहले तो रोम, पैलेटाइन नामक पहाड़ी पर ही था। पहाड़ी पर बसने का यह लाभ था कि शत्रुओं से रक्षा करने के लिए पहाड़ी पर दुर्ग बन सकता था। परन्तु धीरे धीरे रोम की जन संख्या बढ़ती चली गई और छ पहाड़ियाँ भी रोम नगर में सम्मिलित हो गई। इसी कारण से रोम को "सात पहाड़ियों का नगर" भी कहते हैं। इन सब बातों से स्पष्ट है कि इसकी भौगोलिक स्थिति, इसे एक उत्तम तथा देश भर में

सर्वश्रेष्ठ नगर बनाने के सर्वथा योग्य थी। फाउलर साहब ने लिखा है कि समस्त इटली में रोम की भौगोलिक स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी और प्रकृति से इटली के और किसी भी नगर को इतनी सुविधाएँ प्राप्त नहीं थीं।

इसी रोम का आतंक कई बड़े बड़े राष्ट्रों पर छाया हुआ था। इस नगर ने प्राचीनकाल में जो कुछ कर दिखाया, वह आज बड़े से भी बड़े राष्ट्र के लिए करना असम्भव है। पहले तो यह नगर इटली का स्वामी बना। फिर इस नगर ने एक के बाद दूसरी बलवान जातियों से युद्ध करके उन्हें हरा दिया और अन्त में विजयी होकर यह समस्त भूमध्य-सागर के पास के देशों का मालिक बन गया। धीरे धीरे इसने उस समय के लगभग सारे सभ्य संसार पर अपना आतंक जमा लिया। इसमें सन्देह नहीं कि रोम में भी परस्पर युद्ध तथा आन्तरिक कलह उत्पन्न होते रहते थे परन्तु अन्त में रोम ने रोम साम्राज्य को स्थापित कर दिया। परन्तु विदेशी जातियों ने अन्त में रोम को हराया और रोम-साम्राज्य को खंड खंड कर दिया तथा उन पर अधिकार जमा लिया। ठीक ठीक पता नहीं चलता कि रोम की स्थापना कब हुई परन्तु लोगों का विश्वास है कि इसकी नींव सन् ७५३ ई० पूर्व में पड़ी थी।

रोम के इतिहास का प्रारम्भ लगभग सन् ८०० ई० पू० से होता है। इसमें सन्देह नहीं कि रोम-साम्राज्य का पतन सन् ४७६ ई० पू० में हो गया परन्तु रोम-साम्राज्य के नाम का अन्त सन् १८०६ ई० के पहले नहीं हुआ। इस ग्रन्थ में निम्नलिखित बातों पर विचार किया जायगा —(१) रोम साम्राज्य की उत्पत्ति (२) दुर्बल रोम साम्राज्य कैसे प्रबल हुआ। (३) रोम ने जीते हुए लोगों के साथ कैसा बर्ताव किया। (४) रोम में लोक मत का

पश्चिम से ही प्रारम्भ हुआ था। रोम का व्यापार नदियों
भी पहले होता था।

(४) इटली के प्रारम्भिक निवासियों में से कुछ तो पहाड़
पर रहते थे और कुछ मैदान में। पहाड़ी लोग लड़ाका तथा
असभ्य हुआ करते थे और जो लोग मैदान में रहते थे वे वाणिज्य
करते थे और सभ्य होते थे। इनमें प्राय संग्राम हुआ करता था।
परन्तु सभ्य जातियों के सामने असभ्य जातियाँ कभी भी नहीं
टिक सकतीं, अन्त मे मैदान मे रहने वाली जातियों ने पहाड़ी
जातियों को हरा दिया। इसके बाद उन्होने वाणिज्य तथा राज्य के
फैलाने मे खूब उन्नति की।

रोम की भौगोलिक स्थिति

रोम इस समय इटली की राजधानी है और इटली के मध्य में
बसा हुआ है। यह टाइबर नदी के बायें तट पर समुद्र-तट से
१५ मील की दूरी पर स्थित है। रोम, कई पहाड़ियों के समूह पर
भी बसा हुआ है। एट्रस्कन जाति के हमलों से बचने के लिए
इटैलियन लोगों ने इसे पहाड़ियों पर बसाया था। इसलिए रोम
सब तरह से सुरक्षित था। नदी के तट पर होने के कारण, यह
व्यापार के सर्वथा योग्य था। रोम समुद्र से भी बहुत दूर नहीं था।
इसलिए यह सामुद्रिक व्यापारों से तो लाभ उठा सकता था परन्तु
समुद्री लुटेरों से यह सुरक्षित था। पहले तो रोम, पैलेटीन नामक
पहाड़ी पर ही था। पहाड़ी पर बसने का यह लाभ था कि शत्रुओं
से रक्षा करने के लिए पहाड़ी पर दुर्ग बन सकता था। परन्तु धीरे
धीरे रोम की जन संख्या बढ़ती चली गई और छ पहाड़ियाँ
भी रोम नगर में सम्मिलित हो गईं। इसी कारण से रोम को
"सात-पहाड़ियों का नगर" भी कहते हैं। इन सब बातों से स्पष्ट
है कि इसकी भौगोलिक स्थिति, इसे एक उत्तम तथा देश भर मे

सर्वश्रेष्ठ नगर बनाने के सर्वथा योग्य थी। फाउलर साहब ने लिखा है कि समस्त इटली में रोम की भौगोलिक स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी और प्रकृति से इटली के और किसी भी नगर को इतनी सुविधाएँ प्राप्त नहीं थीं।

इसी रोम का आतक कई बड़े बड़े राष्ट्रों पर छाया हुआ था। इस नगर ने प्राचीनकाल मे जो कुछ कर दिखाया, वह आज बड़े से भी बड़े राष्ट्र के लिए करना असभव है। पहले तो यह नगर इटली का स्वामी बना। फिर इस नगर ने एक के बाद दूसरी बलवान जातियों से युद्ध करके उन्हे हरा दिया और अन्त में विजयी होकर यह समस्त भूमध्य-सागर के पास के देशों का मालिक बन गया। धीरे धीरे इसने उस समय के लगभग सारे सभ्य ससार पर अपना आतक जमा लिया। इसमें सन्देह नहीं कि रोम में भी परस्पर युद्ध तथा आन्तरिक कलह उत्पन्न होते रहते थे परन्तु अन्त मे रोम ने रोम साम्राज्य को स्थापित कर दिया। परन्तु विदेशी-जातियों ने अन्त मे रोम को हराया और रोम-साम्राज्य को खड खड कर दिया तथा उन पर अधिकार जमा लिया। ठीक ठीक पता नहीं चलता कि रोम की स्थापना कब हुई परन्तु लोगो का विश्वास है कि इसकी नींव सन् ७५३ ई० पूर्व में पड़ी थी।

रोम के इतिहास का प्रारम्भ लगभग सन् ८०० ई० पू० से होता है। इसमें सन्देह नहीं कि रोम-साम्राज्य का पतन सन् ४७६ ई० पू० में हो गया परन्तु रोम-साम्राज्य के नाम का अन्त सन् १८०६ ई० के पहले नहीं हुआ। इस ग्रन्थ में निम्नलिखित बातों पर विचार किया जायगा —(१) रोम साम्राज्य की उत्पत्ति (२) दुर्बल रोम साम्राज्य कैसे प्रबल हुआ। (३) रोम ने जीते हुए लोगों के साथ कैसा बर्ताव किया। (४) रोम में लोक मत का

पश्चिम से ही प्रारम्भ हुआ था। रोम का व्यापार नदियों के द्वारा भी पहले होता था।

(४) इटली के प्रारम्भिक निवासियो मे से कुछ तो पर रहते थे और कुछ मैदान मे। पहाड़ी लोग लड़ाका तथा असभ्य हुआ करते थे और जो लोग मैदान में रहते थे वे वाणिज्य करते थे और सभ्य होते थे। इनमें प्राय सग्राम हुआ करता था। परन्तु सभ्य जातियों के सामने असभ्य जातियाँ कभी भी नहीं टिक सकतीं, अन्त मे मैदान मे रहने वाली जातियों ने पहाड़ी जातियों को हरा दिया। इसके बाद उन्होंने वाणिज्य तथा राज्य के फैलाने मे खूब उन्नति की।

रोम की भौगोलिक स्थिति

रोम इस समय इटली की राजधानी है और इटली के मध्य में बसा हुआ है। यह टाइबर नदी के बाएँ तट पर समुद्र-तट से १५ मील की दूरी पर स्थित है। रोम, कई पहाड़ियों के समूह पर भी बसा हुआ है। एस्ट्रस्कन जाति के हमलों से बचने के लिये इटैलियन लोगों ने इसे पहाड़ियो पर बसाया था। इसलिए रोम सब तरह से सुरक्षित था। नदी के तट पर होने के कारण यह व्यापार के सर्वथा योग्य था। रोम समुद्र से भी बहुत दूर नहीं था। इसलिए यह सामुद्रिक व्यापारो से तो लाभ उठा सकता था परन्तु समुद्री लुटेरों से यह सुरक्षित था। पहले तो रोम, पैलेटाइन नामक पहाड़ी पर ही था। पहाड़ी पर बसने का यह लाभ था कि शत्रुओं से रक्षा करने के लिए पहाड़ी पर दुर्ग बन सकता था। परन्तु धीरे धीरे रोम की जन सख्या बढ़ती चली गई और छ पहाड़ियाँ भी रोम नगर मे सम्मिलित हो गई। इसी कारण से रोम को "सात-पहाड़ियों का नगर" भी कहते हैं। इन सब बातो से स्पष्ट कि इसकी भौगोलिक स्थिति, इसे एक उत्तम तथा देश भर में

सर्वश्रेष्ठ नगर बनाने के सर्वथा योग्य थी। फाउलर साहब ने लिखा है कि समस्त इटली मे रोम की भौगोलिक स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी और प्रकृति से इटली के और किसी भी नगर को इतनी सुविधाएँ प्राप्त नहीं थीं।

इसी रोम का आतक कई बड़े बड़े राष्ट्रों पर छाया हुआ था। इस नगर ने प्राचीनकाल में जो कुछ कर दिखाया, वह आज बड़े से भी बड़े राष्ट्र के लिए करना असभव है। पहले तो यह नगर इटली का स्वामी बना। फिर इस नगर ने एक के बाद दूसरी बलवान जातियो से युद्ध करके उन्हें हरा दिया और अन्त में विजयी होकर वह समस्त भूमध्य-सागर के पास के देशों का मालिक बन गया। धीरे धीरे इसने उस समय के लगभग सारे सभ्य ससार पर अपना आतक जमा लिया। इसमें सन्देह नहीं कि रोम में भी परस्पर युद्ध तथा आन्तरिक कलह उत्पन्न होते रहते थे परन्तु अन्त में रोम ने रोम साम्राज्य को स्थापित कर दिया। परन्तु विदेशी जातियो ने अन्त मे रोम को हराया और रोम-साम्राज्य को खड खड कर दिया तथा उन पर अधिकार जमा लिया। ठीक ठीक पता नहीं चलता कि रोम की स्थापना कब हुई परन्तु लोगों का विश्वास है कि इसकी नींव सन् ७५३ ई० पूर्व में पड़ी थी।

रोम के इतिहास का प्रारम्भ लगभग सन् ८०० ई० पू० से होता है। इसमे सन्देह नहीं कि रोम-साम्राज्य का पतन सन् ४७६ ई० पू० में हो गया परन्तु रोम-साम्राज्य के नाम का अन्त सन् १८०६ ई० के पहले नहीं हुआ। इस ग्रन्थ में निम्नलिखित बातों पर विचार किया जायगा —(१) रोम साम्राज्य की उत्पत्ति (२) दुर्बल रोम साम्राज्य कैसे प्रबल हुआ। (३) रोम ने जीते हुए लोगों के साथ कैसा बर्ताव किया। (४) रोम मे लोक मत का

जल गई। इस प्रकार विवश होकर पुरुषों को वहीं रहना पड़ा। वहाँ की जमीन उपजाऊ और जल-वायु अनुकूल थी। अतएव थोड़े ही दिनों के बाद इन लोगों की, चैन की वशी वहीं पर बजने लगी। उक्त वृद्ध स्त्री का नाम रोमा था इसलिए उसकी स्मृति अक्षय करने के लिए इस नगर का नाम रोमा रखा गया।

इन दन्त-कथाओं के विषय में ऐतिहासिक अनुमान

इस प्रकार की अनेक दन्त-कथाएँ रोम की स्थापना के सम्बन्ध मे कही जाती हैं परन्तु उसका वास्तविक इतिहास नहीं मिलता। इसमे तो कुछ भी सन्देह नहीं है, कि चाहे रोम की स्थापना जब हुई अथवा जिस तरह से हुई हो उसके पहले उसके सस्थापक को कई कठिनाइयों का सामना अवश्य ही करना पड़ा होगा। पहली दन्त कथा मे भी इस कठिनाई के एक अंश का वर्णन है। वह इस प्रकार हैं'—रोम्यूलस ने रोम नगर तो बसा दिया परन्तु उसमें बहुत कम आदमी रहते थे। इसलिये रोम्यूलस ने भगे हुए कैदियो को और अपराधियो को रोम में शरण देना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार रोम नगर आदमियों से ठसाठस भर गया परन्तु इनके पास स्त्रियाँ नहीं थीं और आसपास के लोगो ने इन चोर, बदमाशो और डाकुओं से अपनी कन्याओं का विवाह करना अस्वीकार कर दिया तब रोम्यूलस ने एक चाल चली। उसने आसपास की जातियों के त्योहारो के दिन, कुश्ती, घुड़दौड़ आदि खेल दिखाना प्रारम्भ कर दिया। लोग बहुत सख्या मे आने लगे। एक बार रोम्यूलस ने बड़ी तैयारी की और बहुत लोग तमाशा देखने के लिए आ गये। सब के सब आनन्द पूर्वक तमाशा देख रहे थे। इसी समय रोम वाले उन पर टूट पड़े और अविवाहित लड़कियो को लेकर भाग गये। रोम वाले इस समय अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे। इसलिए दर्शक लोग कुछ न कर

सके और उनकी सब कुमारियाँ रोम वालों के हाथ लग गई। अब रोम वालों तथा आसपास की जातियों मे बहुत दिनों तक लड़ाई होती रही। कहा जाता है कि कई बार तो इन दोनो दलो के बीच में भगाई हुई कन्याओं ने ही आकर मध्यस्थ का काम किया। और रक्त पात को वन्द कर दिया। इस युद्ध मे सेबाइन जाति की अधिक कन्याएँ भगाई गई थीं। पहले तो सेबाइन-लोग अपने को रोम वालों से श्रेष्ठ समझते थे परन्तु पीछे दोनों मिलकर एक जाति बन गई। रोम वालो तथा सेबाइन लोगो में अन्त मे सन्धि हो गई और ये लोग अपने को पेट्रीशियन (पेटीन) कहने लगे और अपने को सर्व-श्रेष्ठ समझने लगे। इस प्रकार स्पष्ट है कि रोम के इतिहास के प्रारम्भ मे जाति-पाँति का झगड़ा उठ गया था। इसमें सन्देह नहीं कि रोम के लोग एक ही साथ बैठते थे, साथ ही रहते थे और साथ ही लड़ने जाते थे तथा एक साथ ही समितियों में बैठते थे परन्तु उनमें जन्म के अनुसार प्रधान दो श्रेणियाँ थीं—एक पेट्रीशियन और दूसरी प्लेबियन।

उक्त कथाओं से निम्नलिखित ऐतिहासिक अनुमान निकलते हैं:—(१) लगभग ७५३ ई० पू० में रोम्यूलस अथवा अन्य किसी व्यक्ति ने रोम नगर को बसाया (२) रोम के निवासियों में सेबाइन जाति के लोग भी अवश्य थे। (३) यह नहीं कहा जा सकता कि आदि में रोम की स्थापना किस प्रकार हुई परन्तु यह अनुमान निकाला जा सकता है कि लैटिन जाति के कुछ लोग अच्छा तथा अनुकूल स्थान देखकर सन् ७५३ ई० पू० के लगभग टाइबर नदी के किनारे तथा एक पहाड़ी पर बस गये और उस नगर का नाम रोम रखा। धीरे धीरे रोम नगर की सीमा के भीतर ६ और पहाड़ियाँ आ गईं। (४) चाहे रोम को किसी ने भी बसाया हो रोम का प्रथम राजा रोम्यूलस हुआ।

उस समय की इटली की भौगोलिक स्थिति तथा उसके मुख्य भाग

इस समय इटली की सीमा बहुत विस्तृत है परन्तु जिस समय रोम नगर की स्थापना हुई थी, उस समय इटली की सीमा बहुत ही सङ्कुचित थी। उस समय इटली, केवल प्राय' द्वीप के उस भाग का नाम था जो समुद्र में दक्षिण-पश्चिम की ओर निकला हुआ है। वास्तव में उस समय की इटली केवल ब्रूटियम और ल्यूकेनिया के योगफल के ही समान थी। रोम की स्थापना के समय से ई० पूर्व की तीसरी शताब्दी तक केवल इतने ही भाग का नाम इटली था। इसके बाद ज्यो ज्यो रोम का अधिकार बढ़ता गया त्यो त्यो इटली की सीमा बढ़ती गई और प्रजातंत्र राज्य के समय मे इसकी सीमा बहुत बढ़ गई।

बढ़ी हुई इटली के मुख्य विभाग इस प्रकार थे —

पूर्व मे —पाईसिनम, एप्यूलिया और केलेब्रिया

दक्षिण मे —ल्यूकेनिया और ब्रूटियम [प्राचीन तथा प्रारम्भिक इटली]

पश्चिम मे —एट्रूरिया, लेटियम और केम्पेनिया

मध्य में —अम्ब्रिया और सेम्नियम

इटली की जातियाँ

प्रारम्भ काल मे इटली में कई भिन्न भिन्न जातियाँ रहती थीं। ये सब की सब दो भागो मे विभाजित हो सकती हैं,—प्रथम वे जो बाहर से इटली में आई थीं और द्वितीय वे जो स्वय इटली ही की रहने वाली थीं।

इटली की मुख्य मुख्य जातियाँ

(१) एट्रस्क जाति —यह लोग टाइबर नदी और एपिनाइन पहाड़ के बीच मे चारो ओर फैले हुए थे। ये इस देश को एट्रूरिया कहते थे। एट्रूरिया का वर्तमान नाम टस्कनी है। ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि ये लोग पहले कहाँ रहते थे परन्तु अधिक इतिहासज्ञों का अनुमान है कि ये लोग यहाँ पर एशिया से ही आए थे। ये बहुत साहसी, शक्तिशाली और पराक्रमी होते थे। उस प्राचीन काल में भी ये समुद्रयात्रा करते और काँसे तथा लोहे का व्यापार करते थे। इन लोगो ने इटली के अधिक भागो पर अधिकार करने का पहले बड़ा प्रयत्न किया था। अति प्राचीन काल मे भी ये लोग खूब पूजा करते थे और रोम के लोगो के पुरोहित का काम करते थे। इटली के अन्य लोगो से इनकी भाषा, रीति और रहन-सहन भिन्न थीं। रोम मे पूजादि के नियम और राजाओं के वस्त्रादि के भेद के जन्मदाता ये ही हैं। फाउलर साहब ने लिखा है कि ये लोग जिन शहरो को जीतते थे, उन्हें नष्ट नहीं करते थे।

(२) गाल —ये केल्ट-जाति के ही थे। ये अल्पस पर्वत की ओर से यहाँ आये थे। ये अल्पस और एपीनाइन्स के बीच मे—जिसे आज लम्बर्डी कहते हैं—रहते थे। वे बडे वीर हुआ करते थे। इनमे और भी कई छोटी छोटी जातियाँ थीं।

(३) यूनानी —इटली के दक्षिण में यूनानियो के बहुत से उपनिवेश बस गये थे। ये मेगनाग्रीसिया कहलाते थे। इनमें क्रोटोन और टेरेंटम प्रसिद्ध शहर थे।

(४) इटेलियन-जातियाँ —इसकी दो प्रधान शाखाएँ थीं — (क) लैटिन या लातीनी और (ख) आसकस।

दी। अभी तक इनका राज्य अपने ही लोगों मे था। परन्तु इस लड़ाई का सब से अधिक प्रभाव तथा विशेषता, राजनैतिक है। पहले पहल इसी लड़ाई में रोम के सिपाहियों को वेतन मिलने लगा। रोम के इतिहास मे यह एक नई बात थी। परन्तु इसका प्रभाव बहुत पड़ा। इसके बाद रोम में गरीब लोग वेतन के लोभ मे सेना मे भरती होने लगे और रोम में एक स्थायी सेना की उत्पत्ति हो गई। अब सिपाही बनना भी एक पेशा हो गया।

कैमिलस का अन्त

कैमिलस ने लड़ते समय लूट के माल के दसवें भाग को अपने देवता को अर्पण कर देने का विचार किया था। परन्तु जब लूट का माल पेट्रीशियन लोगों में बाँटा जाने लगा, तब इन लोगों ने इस धन को देना अस्वीकार कर दिया और ये लोग उससे चिढ़ गये। ये लोग कैमिलस के वीरता-पूर्ण कार्य को भूल गये और उसके ऊपर लूट का माल बाँटने में विश्वासघात करने का दोष लगाया। उसके ऊपर अभियोग चलाया गया और वह देश से निकाल दिया गया। रोम से प्रस्थान करते समय उसने कहा था— "कृतघ्न रोम! मुझे अकारण निकाल देने के लिए तुझे एक दिन अवश्य पछताना पड़ेगा।"

कैमिलस की यह बात एक दिन पूरी होकर रही। टेलर साहब ने लिखा है कि कैमिलस अपने समय का सब से बड़ा सेनापति था और वह पांच बार डिक्टेटर बनाया गया था।

गालों का रोम सबन्धी होलिका-दहन

गाल लोग वास्तव में केल्ट ही थे। ये लोग अब उत्तरी इटली की ओर बढ़ रहे थे। इन लोगों ने धीरे धीरे एट्रूस्कनों के देशों पर

ना अधिकार जमा लिया। गालो का सरदार ब्रेनस बड़ा वीर । इसने एट्रूस्कनों के बहुत से शहरों पर अपना अधिकार कर या और एट्रूस्कन-लोगों के शहर क्लूजियम को चारों ओर घेर लिया। अब एट्रूस्कनों ने रोम से सहायता माँगी। क तो अब एट्रूस्कन लोग रोम के अधीन हो चुके थे, दूसरे तर्जातीय नियमों के अनुसार भी रोम को एट्रूस्कनों की हायता करनी थी और तीसरे रोम के लोग भली भाँति जानते थे इनसे पराजित करने के बाद ये लोग रोम पर ही धावा करेंगे, म ने क्लूजियम की सहायता करना ही अच्छा समझा। परन्तु सा करने के पहले रोम के निवासियों ने गालो के यहाँ कहला जा कि क्लूजियम, रोम का मित्र है। अतएव गाल लोग उसे तग करें। इस दूत का गालों ने अपमान किया और इस सदेश को णा की दृष्टि से देखा। अब रोम ने एट्रूस्कनों की सहायता की र इन लोगों ने गालों के एक सरदार को मरवा डाला। अब लों का सेनापति ब्रेनस बिगड़ा और रोम से इस सबध में जवाब लब किया। रोम निवासियों ने कैफियत देना अस्वीकार कर या। रोम के बर्ताव से ब्रेनस बहुत चिढ़ा और उसने सीधे रोम ी ओर प्रस्थान कर दिया। इधर रोम के लोग भी लड़ाई करने लिए तैयार ही थे। दोनों सेनाओं के घोर नाद तथा चित्कार से लिया नामक नदी का तट गूंज उठा और सन् ३६० ई० पू० में सी नदी के तट पर घमासान युद्ध हुआ जिसमे रोम की सेना री तरह से हार गई। रोम के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण टना है क्योंकि ऐसी घटना पहले कभी नहीं हुई थी। कुछ थोड़े ोग भागकर कैपीटॉल (Capitol) में छिप गये। अब रोम में ालों को रोकने वाला कोई नहीं रह गया। गाल लोगों ने रोम-गर को खूब लूटा और अन्त में लगभग सारे नगर को जला

दिया। इस घटना को यदि रोम का हाजिकादहन कहें तो अनु चित न होगा। अब गालो ने कैपीटोल के आदमियों को भी अपने अधीन करना चाहा और उन्हें भूखो मार कर अपने वश में करने का विचार किया। इस तरह कई दिन बीत गये परन्तु गाल-लोगों का कैपीटोल पर अधिकार नहीं हुआ। अन्त मे गालों ने कैपीटोल पर रात के समय धावा किया परन्तु मैनलीयस ने कैपीटोल को बड़ी वीरता तथा सावधानी से बचा लिया। रोमवालों ने फिर एक बार कैमिलस को डिक्टेटर के पद पर नियुक्त किया। परन्तु कैमिलस के वहाँ पहुँचने के पहले ही कैपीटल के लोग भूखो मरने लग गये थे। अतएव इन लोगों ने गालो से, बहुत रुपया देकर सधि कर ली थी। इस सबध में फाउलर-साहब तथा और कई इतिहासज्ञो ने लिखा है कि रोम से सीनेट के सिवाय सब लोग डर के मारे बाहर भाग गये थे। इन लोगों ने बहुमूल्य वस्तुओ को जमीन मे गाड़ दिया और कुछ अपने पास लेकर बाहर चले गये। इनमे से कुछ कैपीटोल मे जा छिपे। परन्तु सीनेट के सभासदो ने ऐसे विपत्ति के समय में रोम नगर को छोड़ना अपने कर्त्तव्य के विरुद्ध समझा। इसलिए इन्होने अपने उचित वस्त्रो को पहन कर सीनेट सभा-भवन मे बैठ जाना ही अच्छा समझा। इसी समय गाल की सेना, फाटक पर सिपाहियों के न रहने के कारण नगर मे घुस गयी और देखा कि सारा नगर सूना है और घरों के दरवाजे बन्द हैं। इसके बाद ये सीनेट-भवन मे घुस गये और सीनेटरो को सम्मान के साथ देखा किन्तु एक सिपाही ने एक सीनेटर की दाढ़ी में हाथ लगा दिया। अब सीनेटर ने उसे एक ऐसा तमाचा रसीद कि वह जमीन पर जा गिरा। तब गाल के सिपाही बिगड़ गये और इन सबो ने सब सीनेटरो को मारडाला और नगर को खूब जलाया और लूटा।

प्रथम सेमनाती युद्ध (३४३-३४१ ई० पू०)

सेमनातियों ने कम्पेनिया पर हमला कर दिया। कम्पेनिया वालों ने रोम से सहायता माँगी और कहा कि यदि रोम हमारी सहायता करेगा, तो हम लोग कैपुआ रोम को दे देंगे। इसमें सदेह नहीं कि इस समय रोम और सेमनातियों में सधि थी, परन्तु कैपुआ एक बड़ा प्रसिद्ध और समृद्ध-शाली नगर था उस समय यह कम्पेनिया की राजधानी था। रोम उसे प्राप्त करने का लोभ सबरण नहीं कर सका। इसलिए रोम और सेमनातियों में युद्ध प्रारंभ हो गया। रोम और सेमनातियों से कई युद्ध हुए। परन्तु अन्त में रोम की सेना की जीत हुई। अन्त मे कम्पेनिया वालों ने कैपुआ में रोम से एक बड़ी सेना रखने के लिए प्रार्थना की और रोम वालों ने इसे स्वीकार भी कर लिया। कैपुआ में एक सेना रखी गई परन्तु कुछ दिनो के बाद इसने बलवा कर दिया। इस बलवे को रोम के लोगो ने सिपाहियो को समझा बुझाकर शान्त कर दिया। अन्त में रोम और सेमनातियों में सन् ३४१ ई० पू० में सन्धि हो गई।

निम्न लिखित सधि की प्रतिज्ञाएँ थी —

(१) सेमनाती लोगो को रोम की सेना का एक वर्ष का वेतन देना पड़ा, और (२) उन्हें तीन महीने के लिए भोजन देना पड़ा।

लातीनी-युद्ध (३४०-३३८ ई० पू०)

प्रथम सेमनाती-युद्ध और द्वितीय सेमनाती-युद्ध के बीच ही मे रोम को लातीनो (लैटिन) लोगो से युद्ध करना पड़ा। बात यह थी कि रोम की बढ़ती हुई शक्ति को ये लोग सशक दृष्टि से देखने लग गये थे और इन लोगो ने अपने मन मे समझा कि रोम से

पाँचवाँ अध्याय

रोम और सेमनाती-लोग

सेमनातियों की उत्पत्ति सेवाइन-जाति से ही थी। ये लेटियम के पश्चिमोत्तर की ओर एपीनाइन पहाड़ पर बस गये थे। ये पहाड़ी जाति के लोग थे और बड़े हृष्ट-पुष्ट होते थे। परन्तु जो लोग इटली के पास थे वे सेमनातियों के एक अंश ही थे क्योंकि ये अन्यस्थानों पर भी फैले हुए थे। ये बहुत से कुटुम्बों में विभक्त थे और इनमे सभ्यता का अभी अच्छी तरह से प्रचार नहीं हुआ था। वे वीर और युद्धप्रिय हुआ करते थे। इसलिए रोम से इन का संघर्ष होना स्वाभाविक ही है। परन्तु जिन जिन शत्रुओं से रोम लड चुका था, उन सबों मे ये अधिक भयकर बलवान, वीर और पराक्रमी थे। सेमनातियों से रोम को कई लड़ाइयाँ लड़नी पडीं। वास्तव मे इन दोनो में इस समय इटली के आधिपत्य के लिए लड़ाई हो रही थी। दोनों ही भली भाँति जानते थे कि इन लडाइयो के बाद अंत मे जो विजयी होगा रोम या इटली का राज उसी के हाथ में चला जायगा। कुछ अंतरों के साथ इनमे लगभग ५३ वर्ष तक लडाई होती रही। इनमे वास्तव मे तीन ही लडाइयाँ हुईं और रोम की अंत में विजय हुई। फाउलर-साहब ने लिखा है कि वास्तव मे रोम इस समय बड़े ख़तरे मे था परन्तु उसने अपनी भौगोलिक स्थिति, सीनेट की सहायता और संगठन से सेमनातियों को हरा कर ही छोड़ा।

प्रथम सेमनाती युद्ध (३४३-३४१ ई० पू०)

सेमनातियो ने कम्पेनिया पर हमला कर दिया। कम्पेनिया वालो ने रोम से सहायता मांगी और कहा कि यदि रोम हमारी सहायता करेगा, तो हम लोग कैपुआ रोम को दे देंगे। इसमें सन्देह नहीं कि इस समय रोम और सेमनातियों में संधि थी, परन्तु कैपुआ एक बड़ा प्रसिद्ध और समृद्ध-शाली नगर था उस समय वह कम्पेनिया की राजधानी था। रोम उसे प्राप्त करने का लोभ संवरण नहीं कर सका। इसलिए रोम और सेमनातियो में युद्ध प्रारम्भ हो गया। रोम और सेमनातियों से कई युद्ध हुए। परन्तु अन्त में रोम की सेना की जीत हुई। अन्त में कम्पेनिया वालों ने कैपुआ में रोम से एक बड़ी सेना रखने के लिए प्रार्थना की और रोम वालो ने इसे स्वीकार भी कर लिया। कैपुआ मे एक सेना रखी गई परन्तु कुछ दिनों के बाद इसने बलवा कर दिया। इस बलवे को रोम के लोगो ने सिपाहियों को समझा बुझाकर शान्त कर दिया। अन्त में रोम और सेमनातियो मे सन् ३४१ ई० पू० में सन्धि हो गई।

निम्न लिखित संधि की प्रतिज्ञाएँ थी —

(१) सेमनाती लोगो को रोम की सेना का एक वर्ष का वेतन देना पड़ा, और (२) उन्हें तीन महीने के लिए भोजन देना पड़ा।

लातीनी-युद्ध (३४०-३३८ ई० पू०)

प्रथम सेमनाती-युद्ध और द्वितीय सेमनाती-युद्ध के बीच ही में रोम को लातीनो (लैटिन) लोगो से युद्ध करना पड़ा। बात यह थी कि रोम की बढ़ती हुई शक्ति को ये लोग सशंक दृष्टि से देखने लग गये थे और इन लोगो ने अपने मन मे समझा कि रोम से

मित्रता करने का अभिप्राय रोम की पराधीनता स्वीकार है। युद्धों मे लातीनी-लोग रोम की बडी सहायता करते थे। युद्धो मे तो उन्हीं के बल से रोम की विजय हुई। इसमे सदेह नहीं कि रोम के लोग लातीनियो से बहुत सहायता लेते थे परन्तु उन्हें किसी प्रकार का अधिकार नहीं देते थे। इसलिए लातीनियों ने अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए रोम से कहा—"अब ये दोनों जातियाँ एक ही में मिल जायँ तो अच्छा हो। एक कसल तथा सीनेटरो मे से आधा अवश्य लातीनी-लोग ही हो।"

रोम ने इसे अपना अपमान समझा क्योंकि रोम अपने समान किसी को न तो समझता था और न समझना चाहता था। अब रोम ने लातीनियो के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

इनमें तीन वर्ष तक घोर सग्राम होता रहा। वेस्यूवियस पहाड़ी के पास दोनों मे एक बडी भारी लड़ाई हुई और पहले तो पता ही नहीं चलता था कि किस पक्ष की विजय होगी। इस समय मैन लीयस और पवलीसियस डीसियसमस दो कसल थे। दोनों ही की योग्यता प्रशसनीय थी। पवलीसियस से किसी ने कहा था कि इस युद्ध मे उस पक्ष की विजय होगी जिसका सेनापति स्वय अपना बलिदान कर देगा। उसके मन में यह बात बैठ गई थी। और रोम की विजय के लिए वह अपने को देश की वेदी पर बलि चढ़ा देना चाहता था। इसी विचार से वह शत्रु की सेना में जा घुसा और शीघ्र ही मार डाला गया। कहा जाता है कि इसके बाद रोम की सेना धीरे धीरे जीतने लग गई।

मैनलीयस भी बहुत ही अधिक न्यायपरायण था। उसने एक यह आज्ञा निकाली थी कि कोई आदमी शत्रु दल से द्वंद्वयुद्ध न करे। परन्तु एक दिन किसी शत्रु ने उसके पुत्र को द्वन्द्वयुद्ध करने के लिए ललकारा। इसलिए इसका वीर बेटा ही अपने को न रोक

सका और द्वन्द्वयुद्ध करने के लिए तैयार होगया अन्त मे मैनलीयस का पुत्र ही विजयी हुआ और विजय तथा लूट का माल लेकर अपने पिता के पास लौट आया। जब यह बात उसके पिता को मालूम हुई तो वह अपने लड़के से बहुत बिगड़ा और उसे फांसी की सजा दे दी और स्वय खड़ा होकर उसे मरवा डाला। इससे मैनलीयस की न्यायपरायणता सिद्ध होती है।

युद्ध का परिणाम

इस युद्ध के पहले लातीनी लोगो ने और भी अधिक प्रबल होने का विचार किया था। परन्तु वास्तव में वे ऐसा न कर सके क्योंकि युद्ध के अंत में लातीनी सघ तोड़ दिया और प्रत्येक लातीनी नगर अलग अलग रोम के अधीन हो गया। इससे उनकी शक्ति बहुत कम हो गई। इनमे बहुत नगरो को नागरिता के अधिकार तो नहीं दिए गये परन्तु उन्हें नागरिकता के भार अवश्य ढोने पड़े। पहले ये नगर लातीनी कहलाते थे परन्तु अब वे रोम के नगर कहलाने लगे क्योंकि इन सब नगरो में रोम के लोग भी बसा दिए और नगर के सर्वश्रेष्ठ स्थान उन्होंने ले लिया। इसी के बाद एटियम भी रोम के अधीन हो गया। इस प्रकार युद्ध के बाद सारा लेटियम अर्थात् लातीनी सघ (The Latin League) पूर्ण रूप से रोम के अधीन हो गया।

द्वितीय-सेमनाती-युद्ध (३२६ ई० पू० ३०४ ई० पू० तक)

पेलिपोलिस और नेपोलिस यूनानियों के उपनिवेश थे। यहां वाले सदा कम्पेनिया के लोगो से लड़ा करते थे और उन्हें लूटा करते थे। कम्पेनिया पर रोम का अधिकार था। इसलिए रोम और उक्त दोनो शहरो से प्राय झगड़ा हुआ करता था। हाल ही में इन लोगो ने रोम की प्रजा को लूट लिया था। इसलिए रोम ने इस हानि की

क्षतिपूर्ति के लिए और उनसे कैफियत तलब करने के लिए अपना दूत भेजा। पेलिपोलिस तथा नेपोलियस ने धन तथा कैफियत देना अस्वीकार कर दिया। इसलिए रोम ने इन पर आक्रमण कर दिया और इन्हें घेर भी लिया। सेमनातियों ने इन नगरों का पक्ष लिया और उनकी सहायता की। इस कारण से सेमनातियों से भी रोम का युद्ध छिड़ गया।

लड़ाई की मुख्य मुख्य घटनाएँ

यह युद्ध २२ वर्ष तक होता रहा। बाइस वर्ष का यह समय तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है, पहला ३२६ ई० पू० से ३२१ ई० पू० तक, दूसरा ३२१ ई० पू० से ३१५ ई० पू० तक और तीसरा ३१५ ई० पू० से ३०४ ई० पू० तक।

पहला-काल (३२६ ई० पू० से ३२१ ई० पू० तक)

इस समय सब जगह रोम की सेना की विजय हुई। सेमनाती लोग घबड़ा गये और सधि करने का प्रस्ताव करने लगे।

दूसरा-काल (३२१ ई० पू० से ३१५ ई० पू० तक)

इस समय रोम की सेना सब जगह हारती ही चली गई। सेमनातियों का कायस पोंटियस नामक एक सेनापति, था। यह बहुत वीर था। इसने पहले तो रोमकी सेना के सामने भाग जाने का बहाना किया और रोम की सेना ने उसका पीछा करना प्रारंभ किया। जब रोम की सेना एक घाटी में नीचे उतरी तो यह लौट पड़ा और चारों ओर से उसने रोम की सेना को घेर लिया और उनसे बलपूर्वक हथियार रखवा लिया। अब रोम की सेना को विवश होकर सधि करनी पड़ी। रोम की सेना ने इस सधि में यह भी स्वीकार कर लिया कि सेमनाती लोग, रोम के समान ही हैं, रोम के अधीन नहीं। इसके सिवाय इन लोगों ने जीती हुई ज़मीन

को लौटा देने का भी वादा किया। संधि की एक यह भी शर्त थी कि रोम की सेना के प्रत्येक सिपाही सेमनातियों की सेना के सामने सिर नीचा करके घाटी के बाहर निकल जाय। इसमें सदेह नहीं कि ये शर्तें बड़ी कड़ी थीं परन्तु प्राण बचाने के लिए रोम वालों को माननी पड़ीं। परन्तु जब रोम की सेना रोम लौट आई और सीनेट ने सब बातें सुनी तो संधि की सब बातों को अस्वीकार कर दिया और उन दोनों कसलों को जिन्होंने संधि की थी, पोंटियस के पास कैद करके भेज दिया। रोम मे एक बड़ा भारी गुण यह था कि यह सदा बड़े धैर्य से काम लेता था। घबड़ाना तो यह जानता ही नहीं था। जब ये दोनों कसल, सेमनातियों के प्रधान सेनापति कायस पोंटियस के पास पहुँचे तब उस वीर ने इनसे कहा—"जाओ, तुम लोगों का इसमें कुछ भी अपराध नहीं है।" इतना कह कर पोंटियस ने उन्हें छोड़ दिया।

तीसरा-काल (३१५ ई० पू० से ३०४ ई० पू० तक)

इस समय लगभग सब स्थानों पर रोम की विजय हुई। रोम की बढ़ती हुई शक्ति को एट्रस्क और अंब्रेस लोग नहीं देख सके। इन लोगों ने सेमनातियों की सहायता की। परन्तु संयुक्त सेना को भी रोम ने पेलुसिया और मिवेनिया की लड़ाई मे हरा दिया। अब रोम के सब शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगई और सेमनातियों ने रोम से संधि करली। इस संधि मे उन्होंने रोम की पराधीनता स्वीकार करली।

तृतीय सेमनाती युद्ध (२९८ ई० पू० से २९० ई० पू० तक)

इसमे सदेह नहीं कि प्रथम दो युद्धों मे सेमनाती लोग रोम से हार गये थे परन्तु वे बहुत शूर, वीर तथा पराक्रमी थे। वे वास्तव

में स्वतन्त्रता-प्रिय मनुष्य थे और रोम के लोगों का आधिपत्य नहीं स्वीकार करना चाहते थे। इटली की और सब जातियाँ भी रोम की बढ़ती हुई शक्ति को नहीं देख सकती थीं और उन्हें घटाने का प्रयत्न किया करती थीं। एट्रस्क, गाल, सेमनाती तथा अन्य जातियाँ खूब समझती थीं कि रोम की शक्ति को अभी कम तथा नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए नहीं तो सब लोगों को रोम की पराधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी। इसलिए एट्रस्क, गाल तथा सेमनाती आदि सभी जातियों ने मिल करके रोम से लड़ने का विचार किया।

सेंटिनम की लड़ाई में रोम के सेनापति मेक्सीमस ने संयुक्त सेना को बुरी तरह से हरा दिया और इनकी अधिक सेना को मार डाला। सेंटिनम के युद्ध में रोम की प्रायः समस्त शत्रु-जातियाँ सम्मिलित थीं और रोम की शक्ति के हिलाने तथा उसे नष्ट करने का घोर प्रयत्न कर रही थीं। एक प्रकार से सब के झगड़ों का इसी लड़ाई से अंत हो गया परन्तु सेमनातियों का सेनापति कायस पोंटस अब भी अजेय था और रोम से लड़ रहा था। परन्तु दो वर्ष के बाद यह वीर सेनापति रोम की सेना के हाथ पड़ गया और पकड़ कर रोम भेज दिया गया। अब सेमनाती लोग निराश और उत्साहहीन हो गये और रोम की सेना ने उनका संहार भी कर डाला। इसलिए शेष सेमनातियों ने रोम से सन्धि करली।

इस सन्धि के अनुसार इस लड़ाई में भाग लेने वाली सब जातियों का पारस्परिक संबंध टूट गया। अब वे एक दूसरे से बिल्कुल स्वतंत्र हो गईं और सब की सब अलग अलग रोम के अधीन हो गईं। अब वे एक दूसरे से मित्रता भी नहीं कर सकती थीं।

इस पराजय के बाद इनमें किसी ने भी फिर रोम से लड़ाई छेड़ने का साहस नहीं किया।

जब कायस पोंटियस रोम में पहुँचा तो सीनेट ने उसे मरवा डाला। एक बार पोंटियस ने रोम के कमजोरों तथा कैदियों के साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव किया था परन्तु रोम ने उसके उपकारों के बदले में उसी का खून कर दिया।

इस लड़ाई से रोम सम्पूर्ण इटली का स्वामी बन गया।

रोम इटली में सर्वश्रेष्ठ कैसे बन गया

अब रोम समस्त इटली का स्वामी बन गया। रुविकन के दक्षिणभाग में अब केवल रोम का ही अधिकार था। इटली भिन्न भिन्न नगरों के अधीन अनेक भागों में विभक्त था और इन सब नगरों का स्वामी रोम था। जिन जिन जातियों या नगरों पर रोम विजय प्राप्त करता था, उनमें किसी प्रकार का पारस्परिक संबंध नहीं रखने देता था और इनमें से प्रत्येक पृथक् पृथक् रोम के अधीन रहता था। इस प्रकार वे अपनी शक्ति आगे नहीं बढ़ा सकते थे। इसके अतिरिक्त रोम के लोग विजित नगरों के पास हथियार भी नहीं रखने देते थे। पराजित-जातियाँ परस्पर विवाह का भी संबंध नहीं रख सकती थीं। विजित देशों में मुख्य मुख्य स्थानों पर रोम अपना उपनिवेश स्थापित कर देता था इस प्रकार इन पर रोम के आचार-विचार का प्रभाव पड़ता रहता था।

रोम ने प्रारंभ काल में पास के शत्रुओं से अपनी खूब रक्षा की थी और आस-पास के शत्रुओं को जीता था। इन्हीं दो नियमों से रोम के राज्य की सीमा बढ़ती तथा दृढ़ होती चली जाती थी। रेगीलस-झील की विजय से, रोम लातीनी संघ का मुखिया हो गया। इसके बाद एकियस और वालशीयन लोगों को पराजित

की मात्रा उनमे बहुत अधिक थी। अपने कर्तव्य के सामने वे पुत्रादिकों की मृत्यु को भी कुछ नहीं समझते थे। रोम के कई मनुष्यों ने देश के हित के लिए अपने प्रिय पुत्रों और प्यारी कन्याओं को भी स्वय मार डाला है। अथवा मरवा डाला है। रोम के लोगो का जीवन बहुत पवित्र और सादा था। देश हित और शुभकीर्ति के सामने वे सारे ससार की सम्पत्ति को तृण समझते थे और उनमें उच्च भावों का सचार होता रहता था। उस समय के रोम निवासी विलास-प्रियता तथा इन्द्रिय-लोलुपता को घृणा की दृष्टि से देखते थे। थोड़े शब्दो मे कहा जा सकता है कि किसी जाति को उन्नत करने के लिए जिन गुणो की आवश्यकता होती है, वे सब उनमें मौजूद थे।

रोम की अधीन जातियों का परस्पर विरोध भी रोम की सफलता का एक कारण हुआ। जिन जातियों में विरोध नहीं था उनमे भी रोम के लोग विरोध उत्पन्न कर देते थे। ये विभक्त करके शासन करना चाहते थे। प्राय. शत्रुओ के भय से अन्य सब जातियों को रोम से सहायता लेनी पड़ती थी। रोम की प्राकृतिक स्थिति भी रोम के पक्ष मे थी। इटली के किसी भी दूसरे नगर की भौगोलिक स्थिति ऐसी अच्छी नहीं थी।

छठवाँ अध्याय

Jun रोम और यूनान की लडाई । टेरेंटम ।

हम अभी देख चुके हैं कि रोम को कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं परन्तु इन सबों में रोम की विजय हुई । हाल ही मे रोम ने सेमनातियों को कई लड़ाइयो मे हरा दिया था। परन्तु इन विजयों के बाद भी रोम के लोगो को शान्ति नहीं मिली क्योंकि शीघ्र ही उन्हें यूनानियो से लोहा लेना पड़ गया । जिस समय रोम, सेमनातियों से लड रहा था, उस समय सिकदर महान ससार के जीतने का प्रयत्न कर रहा था और एक के बाद दूसरे देशो को अपने अधिकार मे करता चला जाता था। परन्तु जिस समय रोम ने सेमनातियो को हरा दिया और अपने राज्य का सगठन करने लगा था, उस समय सिकदर के राज्य का पतन हो चुका था और उसके सेनापतियो ने भिन्न भिन्न प्रातो पर अपना अपना अधिकार जमा लिया था । उस समय यूनान में पाइरस नामक एक राजा राज्य करता था और वह भी सिकदर की तरह नाम हासिल करना चाहता था । इसमे भी सदेह नहीं कि उसने अपनी युवावस्था में वीरता के कई काम किए थे ।

यूनान के जितने उपनिवेश पूर्व में थे लगभग उन सबों पर बाहर के लोगो ने अपना अपना अधिकार जमा लिया था । इस प्रकार यूनान के उपनिवेश, थर्ली क्रोटन, रेजियम और सिरेक्यूज पर इस समय रोम का झडा फहरा रहा था । यूनान के अन्य उपनिवेशों पर भी कुछ और लोगो का अधिकार हो गया था। परन्तु पूर्व में

अब भी यूनान के कुछ ऐसे उपनिवेश रह गये थे जिन पर किसी का भी अधिकार नहीं हुआ था। यूनान के इन सब उपनिवेशों की दशा पहले बहुत अच्छी थी, परन्तु अब ये अवनति-दशा के अन्तिम सोपान पर बड़ी तीव्रगति से जा रहे थे। इन सबो में एकता नहीं रह गई थी और ये परस्पर में भी लड़ा करते थे अतएव सब मिल कर किसी एक उभयनिष्ठ शत्रु का सामना नहीं कर सकते थे। इन्हीं सब उपनिवेशों मे से एक टैरेंटम भी था। इटली के दक्षिण भाग में इस समय जितने यूनान के उपनिवेश थे, टैरेंटम उनमें अधिक प्रसिद्ध था। यह नगर टैरेंटम की खाड़ी के किनारे पर पर वसा हुआ था।

टैरेंटम नगर के पास और भी बहुत नगर थे। जब ये आपस में लड़ते थे अथवा और किसी तरह से सकट मे फँसते थे, तो ये रोम से सहायता माँगते थे और रोम उनकी सहायता किया करता था। इसलिए टैरेंटम के लोग, रोम से बुरा मानते थे क्योंकि यह स्वय इन सब नगरो का मुखिया बन बैठना चाहता था और रोम का इस प्रकार हस्तक्षेप करना, उसके मार्ग मे बाधा डालता था।

रोम और टैरेंटम में एक सधि हुई थी जिसमें यह तै हुआ था कि रोम के लोग टैरेंटम की खाड़ी में जहाज न ले जाया करें परन्तु सन् २८२ ई० पू० में, रोम के लोगों को एक यूनानी उपनिवेश की सहायता करने के लिए टैरेंटम की खाड़ी में जहाज ले जाना पड़ा। एक दिन टैरेंटम के लोग समुद्र की ओर मुँह करके बैठे थे और नाटक तथा तमाशा देख रहे थे। इसी समय इन लोगों ने रोम के दस जहाजो को टैरेंटम की खाड़ी में प्रवेश करते हुए देखा और सब के सब अग्निशर्मा बन गये। ये लोग अपनी अपनी नाव मे बैठे औ- जहाजों पर जा पहुँचे। टैरेंटम के लो

पाँच जहाजों को डुबा दिया, सेनापति को मार डाला, जहाज़ के सब सिपाहियों को जहाज पर से उतार दिया और रोम के जहाजों पर जाकर उसी नगर को लूट लिया जिसे रोम के लोग सहायता देने जा रहे थे। इस घटना का कारण पूछने के लिए रोम से टेरेंटम, दूत भेजा गया। परन्तु टेरेंटम वालों ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया और दूत का अपमान भी किया। इस लिए रोम ने टेरेंटम से युद्ध की घोषणा कर दी।

इसमें सदेह नहीं कि टेरेंटम के लोग धनिक थे परन्तु वीर तथा युद्धशील नहीं थे। इसके सिवाय रोम की शक्ति भी बहुत बढ़ी हुई थी। इसलिए किसी दूसरे की सहायता बिना वे रोम से नहीं लड़ सकते थे। इन लोगों ने यूनान के राजा पाइरस से सहायता माँगी। पाइरस वास्तव में बड़ा वीर था। उसने अपनी सेना के साथ टेरेंटम नगर की ओर प्रस्थान कर दिया। टेरेंटम में पहुँच कर पाइरस ने देखा कि वहाँ पर युद्ध की कुछ भी तैयारी नहीं हुई है, तब वह बहुत बिगड़ा, टेरेंटम के सब नाटक-घरों को बंद करवा दिया और युवा मनुष्यों को सेना में भरती होने की आज्ञा दी।

अब टेरेंटम में रोम और यूनान दोनों देशों की सेनाएँ जुट गई और उनमें घोर सग्राम हुआ। रोम की सेना ने सातबार यूनान की सेना पर आक्रमण किया परन्तु सदा यूनानियों ने रोम की सेना को मार भगाया। रोम की सेना ने इसके पहले लड़ाइयों में हाथियों को नहीं देखा था, परन्तु यूनानियों ने लड़ाई में भी उनका प्रयोग करना भारत से सीख लिया था। इन हाथियों को देखकर रोम की सेना डर गई और हाथियों ने आगे बढ़ कर उन्हें कुचल भी दिया। इसमें रोम के कई हजार सैनिक मार डाले गये और कई हजार कैद हो गये। इस लड़ाई में यूनान जीत गया और रोमवाले हार गये। इसी समय पाइरस का एक वैद्य आकर

रोम के लोगों से गुप्त रीति से मिल गया और उनसे कहा—' कहो, तो मैं विष पिलाकर पाइरस को मार डालूँ।"

परन्तु रोम के लोगों ने उसे बहुत झिड़का और उस वैद्य पाइरस के पास भेजवा दिया और सारा भेद खोल दिया। इस सत्यप्रियता पर पाइरस बहुत प्रसन्न हुआ और उनकी भूरि प्रशंसा करने लगा। रोम के सिपाहियों की वीरता देखकर पाइरस बहुत प्रसन्न हुआ था। इसमें संदेह नहीं कि रोम को हरा दिया था, परन्तु रोम की सेना बड़ी वीरता से लड़ी थी। इनकी वीरता, सैनिक-चतुरता, दृढ़ता, धैर्य, शासन-पटुता और देश-भक्ति तथा सत्य-प्रियता देखकर पाइरस का मन आनंद से उठा था। उसने एक बार कहा था—" यदि मैं आप सेनापति होता, तो सारे संसार को विजय कर लेता।" उसने बार यह भी कहा था—"यदि ऐसी ही विजय एक बार और तो उससे तो अच्छी पराजय ही है।"

इसमें संदेह नहीं कि पाइरस की विजय हुई, परन्तु इस उसकी सेना का भी एक बड़ा भारी भाग नष्ट होगया था पाइरस ने अपने तथा टेरेंटम के अनुकूल रोम से संधि कर ही उत्तम समझा क्योंकि यह विजय उसे बड़ी महँगी पड़ी इसलिए पाइरस ने रोम में एक दूत भेजा और उनसे वाया—" यदि रोम की सेनाएँ सब यूनानी उपनिवेशों से जायँ और आप लोग सेयनियम, ल्यूकेनिया और ब्रीटयम को कर दें, तो हम संधि करने को तैयार हैं।"

पाइरस का भेजा हुआ मनुष्य भी बड़ा ही चतुर और नम्बर का काइयाँ था, उसने रोम के लोगों को सुलह करने लिए राजी कर लिया। यह बात क्लाडियस को मालूम हुई

स समय वह बहुत बुड्ढा हो गया था और बुढ़ापे के कारण धा भी हो गया था। इस समय बड़ी कठिनता से वह सीनेट की भा मे लाया गया। वास्तव में वह इस समय बहुत दुर्बल हो या था। उसने सब लोगों को फटकारा और उत्साहित भी या तथा उन्हें धैर्य धारण करने का उपदेश दिया। उसने सशस्त्र त्रु से संधि न करने के लिए प्रार्थना की। अन्त मे रोम ने इरस से कहला भेजा—"जब तक तुम इटली की भूमि मे हो, ब तक तुम्हारे साथ संधि की कोई बात-चीत नहीं हो सकती।"

कुछ दिन तक लड़ाई बंद रही परन्तु फिर पाइरस ने रोम की ना को अच्छी तरह से हरा दिया।

इसके बाद पाइरस तीन वर्ष के लिए सिसली चला गया योंकि वहाँ पर कार्थेज की सेनाएं यूनानियों को तंग कर रही । पाइरस ने कार्थेज की इन सेनाओं को कई बार हरा दिया। तीन वर्ष के बाद पाइरस फिर इटली में लौट आया। पाइरस के ौट आने का समाचार पाते ही रोम के लोग उससे लड़ने के लए तैयार हो गये थे क्योंकि उसकी अनुपस्थिति में भी ये लड़ाई लिए तैयारी कर रहे थे और इस समय इनकी सेना बहुत अच्छी ा गई थी।

सन् २७५ ई० पू० मे बेनेवेंटम स्थान पर फिर पाइरस और ोम की सेना मे युद्ध हुआ। इस युद्ध में भी पाइरस ने अपने ाथियों का उपयोग किया और उनकी सहायता से रोम के सिपाहियों को हराने का विचार किया। परन्तु रोम की सेना अब ाथियों को मार भगाने की विद्या सीख गई थी। इसके सिवाय ाइरस की सेना अब पहले की अपेक्षा बहुत निर्बल हो गई थी। सलिए बेनेवेंटम की लड़ाई मे पाइरस हार गया और अपने देश

को लौट गया और तीन वर्ष के बाद मर गया। वह एक सेना टैरेंटम मे छोड़ गया था परन्तु सन् २७२ ई० पू० में रोम ने टैरेंटम पर अपना अधिकार कर लिया।

इस युद्ध का फल

इस युद्ध का सबसे अधिक प्रसिद्ध फल यह हुआ कि इस युद्ध के बाद सम्पूर्ण इटली पर रोम का पूर्ण रूप से आधिपत्य स्थापित हो गया। फाउलर साहब ने लिखा है कि रोम को टैरेंटम के युद्ध मे बड़ा डर था। परन्तु इस खतरे से बचने के बाद, रोम और भी अधिक प्रबल हो गया और रोम वास्तव मे अब इटली का स्वामी बन गया।

रोम की एट्रस्क और गालों की विजय

तृतीय सेमनाती-युद्ध के बाद रोम ने एट्रस्कनो और गालों पर हमला किया क्योकि ये फिर सिर उठाने लग गये थे। परन्तु वैडीमो की लडाई मे रोम ने इनकी सयुक्त सेना को बुरी तरह से हरा दिया और बहुत दिनो तक इनकी शक्ति फिर न बढ़ सकी। इस प्रकार रोम ने उत्तरी इटली पर अपना अधिकार कर लिया।

इस लड़ाई के बाद रोम के लोगों के चरित्र तथा उनमें परिवर्त्तन

इन सब लड़ाईयो के बाद से रोम के पवित्र, सच्चे तथा प्राचीन सदाचार-मय धार्मिक जीवन का अंत हो जाता है। इसके पहले का समय रोम के इतिहास मे स्वर्ण युग कहलाता है। इसमे संदेह नहीं कि एपिनाइनस (इसका इतिहास पीछे इसी ग्रन्थ में दिया है) का समय भी शान्ति-युग कह लाता है। परन्तु इन दोनो युगों मे बहुत अंतर है। इस समय जनता सच्ची तथा पवित्र थी। एपिनाइनस के समय में राजा अच्छे थे और जनता प्रसन्न तथा शान्त

थी। इस समय रोम का जीवन बहुत सरल तथा साधारण था। छल-कपट तो उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाया था। उनमें वीरता, देशभक्ति और कर्त्तव्य-परायणता आदि गुण कूट कूट कर भरे थे। कर्त्तव्य की वेदी पर वे अपने, पुत्रों, मित्रों, तथा प्रेमियों को भी बलि चढ़ा देते थे। कई कसलों तथा डिक्टेटरों ने रोम के प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए अपनी जान भी लड़ा दी थी। छल तथा कपट के व्यवहार से शत्रुओं को पराजित करने की अपेक्षा, ये धर्म-युद्ध में हार जाना भी अधिक पसन्द करते थे और उभयनिष्ठ शत्रु से लड़ाई करते समय अपने पारस्परिक भेद-भाव भी भूल जाया करते थे।

रोम के लोगों को पहले रोमनगर की रक्षा करने और फिर बाद अपनी शक्ति को बढ़ाने तथा दृढ़ करने के लिए कई बार कठोर युद्ध करना पड़ा था। इन सब युद्धों में अपने परिश्रम, सहनशीलता, सत्यप्रियता और वीरता आदि गुणों के कारण से ही वे सफल हुए थे। बड़े बड़े अधिकारियों तथा सेनापतियों का भी जीवन इस समय बहुत सादा तथा सीधा था। वे अपनी प्रतिष्ठा, शुभकीर्ति और रोम के लिए अपनी जान तक लड़ा देते थे। एक बार सेमनातियों के सरदारों ने रोम के सेनापति के यहां सोने का एक बड़ा उपहार भेजा। इस समय सेमनातियों से और रोम वालों मे लड़ाई हो रही थी। परन्तु उसने इस उपहार को स्वीकार नहीं किया और उन लोगों से कहा—"महाशयो! सोना की अपेक्षा, सोना भेजने वाले पर अधिकार करना, मैं अधिक गौरव की वस्तु समझता हूँ।" इन सब बातों से स्पष्ट ही है कि इस युद्ध के पहले रोम के लोगों में उच्च-भाव उत्पन्न होते रहते थे और रोम के लोग विलास प्रियता को घृणा की दृष्टि से देखते थे। ऐसी दशा में वास्तव में प्रत्येक जाति उन्नति कर सकती है। रोम के लोगों के

उज्ज्वल चरित्र के अनेक और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं परन्तु यहाँ पर इतना ही पर्याप्त होगा। इन युद्धों के बाद से रोम के इस स्वर्ण-युग का अन्त हो जाता है क्योंकि इन युद्धों के बाद रोम के लोगों का आचरण गिरता चला गया। इसमें सदेह नहीं कि इसके बाद भी रोम के लोग बड़ी वीरता से लड़ते रहे और अनेक युद्धो में अपने शत्रुओ को पराजित भी किया था परन्तु इन युद्धों के बाद वे छल और कपट भी करने लग गये थे और क्रूरता तथा निर्दयता का भी आचरण करने लगे थे जैसे जैसे रोम में धन बढ़ता गया और ये अधिक समृद्धि-शाली होते गये, वैसे वैसे रोम के लोग क्रमश विलास-प्रिय होते गये। रोम के इतिहास में एक ऐसा समय भी आ गया कि अधिक विलास-प्रिय होने के कारण से रोम की युद्ध-शीलता कम हो गई और उनमे निर्बलता के चिन्ह दृष्टि गोचर होने लगे और रोम की विलास-प्रियता रोकने के लिए, उन्हें नियम बनाना पड़ा।

सातवाँ अध्याय

प्रजातन्त्र राज्य के समय पेट्रीशियन और प्लेवियनों में युद्ध

पेट्रीशियनों और प्लेवियनों का झगड़ा उतना ही पुराना है जितना रोम का प्राचीन से प्राचीन इतिहास क्योंकि राजाओं के समय में भी इनमें झगड़ा था जैसा कि लिखा गया है। प्लेवियन लोग बहुत गरीब थे और शासन में इनका कोई हाथ नहीं था। इन्हीं दो प्रधान कारणों से इनमें प्राय मतभेद तथा झगडा रहा करता था। कुछ दिनो के बाद इस झगड़े ने बड़ा ही उग्र रूप धारण कर लिया। बात यह थी कि पेट्रीशियन लोग ही राज्य में सब अधिकार पा सकते थे। केवल वे ही सीनेट-सभा के सदस्य हो सकते थे और वे ही पुजारादिक प्रधान कार्यों में भाग ले सकते थे। इनका विवाह भी प्लेवों से नहीं हो सकता था। इसके विपरीत प्लेवों की दशा बहुत ही अधिक शोचनीय और दु:खमय थी। देश की सेवा तो ये पेट्रीशियनो से भी अधिक करते थे परन्तु इन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। इसलिए जब राजाओ का अत हो गया, और प्रजातन्त्र स्थापित हुआ तथा स्वतन्त्रता की लहर रोम में बहने लगी, तब इन लोगो ने भी पेट्रीशियनों के समान अधिकार प्राप्त करने का विचार किया तथा उसके लिए आन्दोलन भी करना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु इन आन्दोलनों के वर्णन करने के पहले प्लेवो की शिकायतों का उल्लेख करना आवश्यक है।

प्लेबों की शिकायतें

इसमें सन्देह नहीं कि प्लेबों की कई शिकायतें थीं क्योंकि केवल सम्पूर्ण प्लेब-समाज के साथ ही अत्याचार नहीं किया परन्तु उनके साथ व्यक्तिगत अन्याय भी किया जाता था। तथापि उनकी शिकायतें नीचे लिखे हुए चार भागों में बाँटी जा सकती हैं —

(१) धन-सम्बन्धी शिकायतें। (२) राजनैतिक-शिकायतें (३) कानूनी अज्ञानता और (४) सामाजिक-अत्याचार।

(१) धन सम्बन्धी शिकायतें

(अ) प्लेबियन लोग वास्तव में बहुत गरीब थे और द... के कारण उन्हें भाँति भाँति का कष्ट सहना पड़ता था। लड़ाई में प्लेबियन लोग ही लड़ने जाते थे और जब लड़ाई में लड़ने जाते तो अपनी खेती का काम नहीं कर सकते थे तथा लड़ाई में उन्हें वेतन नहीं मिलता था। इसलिए ये बहुत ही अधिक ग... हो जाते थे और उन्हें झख मार कर ऋण लेना पड़ता था। जब एक बार ये महाजनों के चंगुल में फँस जाते थे, तो ... निकल ही नहीं पाते थे। ये सरकारी कर्जा चुकाने के लिए पेट्रीशियनों से कर्ज लेते थे और तब अपनी प्रतिज्ञा के ... ये पेट्रीशियनों के अधीन रहते थे। एक प्रकार से ये उनके ... बन जाते थे और इन (प्लेबों) का कुछ भी अधिकार नहीं ... जाता था। यदि पेट्रीशियन लोग ऋण न देने के कारण उन्हें ... भी डालें तो उन्हें कोई दंड नहीं मिलता था। पेट्रीशियनों के घर दासों के रखने तथा उन्हें क़ैद करने के लिए क़ैदखाने ... रहते थे।

(ब) सब लड़ाइयों में प्लेब ही लड़ने जाते थे, पेट्रीशियन (पेट्रीश) नहीं। परन्तु लूट के सब माल को पेट्रीशियन लोग ही आपस में बाँट लेते थे और प्लेबो (प्लेबियन) को उसमें कुछ भी हिस्सा नहीं देते थे। इस प्रकार पेट्रीशियन धनी और प्लेबियन गरीब होते चले जाते थे। इतना ही नहीं, शत्रुओं की भूमि को प्लेबियन लोग ही जीतते थे परन्तु सब भूमि पेट्रीशियन लोग ही आपस में बाँट लेते थे और प्लेबों को कुछ भी नहीं देते थे। जिन प्लेबों के रक्त से ये सब विजय प्राप्त होती थीं, उन्हीं को विजय का कोई अंश नहीं मिलता था।

(२) राजनैतिक शिकायतें

प्लेबों को शासन में कुछ भी अधिकार नहीं था। मजिस्ट्रेट, कसल तथा पुजारी आदि के प्रतिष्ठित तथा शक्तिशाली पद प्लेबों को बिलकुल नहीं मिलते थे। रोम के राजनैतिक-संसार में प्लेबों का कोई अस्तित्व ही नहीं था।

(३) कानून की अज्ञानता

प्लेबियन लोग यह जानते ही नहीं थे कि कानून क्या है। केवल पेट्रीशियन लोग ही कानून के ज्ञाता हुआ करते थे और सब न्यायकर्ता भी पेट्रीशियन लोग ही थे। इसलिए ये लोग कानून के नाम पर खूब अन्याचार करते थे और कानून का मनमाना अर्थ भी लगाया करते थे। इसलिए प्लेब लोग कहते थे कि इन सब कानूनों को प्रकाशित कर देना चाहिए जिससे सब लोग इनका आशय समझ सकें।

(४) सामाजिक-अत्याचार

पेट्रीशियन लोगों की जाति प्लेबियनों से भिन्न थी। ये दो वर्ग के मनुष्य थे। पेट्रीशियन लोग अपने को प्लेबों से श्रेष्ठ समझते थे।

धीरे धीरे प्लेब लोग भी अपने को इनसे नीच समझने लग गये थे। पेट्रीशियन लोग अपने धार्मिक कर्मो में भी प्लेबो को सम्मिलित नहीं होने देते थे। पेट्रीशियन और प्लेबों में पारस्परिक विवाह भी नहीं हो सकता था।

उक्त कथनो से स्पष्ट है कि प्लेब लोग ऋण के कानून, भूमि के अभाव, समाज में अत्याचार तथा असमानता, राजनैतिक अधिकारो से वञ्चित रहने और कानून की अज्ञानता के कारण से दुःखी रहा करते थे। प्लेबो और पेट्रीशियनो के झगडो के ये ही सब प्रधान कारण थे।

पेट्रीशियन और प्लेबियन के झगड़ों का समय विभाग

संसार का नियम है कि जब भर पेट भोजन मिलता है, तब और बातें सूझती हैं। कोई भी मनुष्य अपनी दैनिक आवश्यकताओं की अवहेलना नहीं कर सकता। जो मनुष्य अपनी दैनिक आवश्यकताओं की अवहेलना करता है, वह न तो समाज में अधिक दिन तक टिक ही सकता है और न उसे इस संसार में टिकने का कोई अधिकार ही है। स्वयं प्रकृति भी यही शिक्षा देती है और मनुष्य स्वभाव भी इसी का समर्थन करता है। इसी सिद्धान्त के अनुसार पहले प्लेबो को अपनी आर्थिक स्थिति सँभालने का विचार उत्पन्न हुआ। प्रारंभ-काल में प्लेबियनो और पेट्रीशियनो के झगडो का अधिक सम्बन्ध, धन से था। इसलिए वे इस समय में ऋण सम्बन्धी नियम स्वीकृत कराना चाहते थे, इसके अतिरिक्त ये इस समय ऐसे नियमो के ही स्वीकृत कराने का प्रयत्न करते थे जिनसे इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाय। टेलर-साहब ने भी लिखा है कि पहले प्लेब लोग राजनैतिक अधिकारो

के लिए नहीं लड़ते थे किन्तु पेट के लिए ही। इस झगड़े का प्रारंभ अथवा प्रथम काल ४६४ ई० पू० से ४५० ई० पू० तक है। इसके बाद प्लेबो की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी हो गई। तब इन लोगो ने राजनैतिक और सामाजिक अधिकारों के प्राप्त करने का प्रयत्न करना प्रारंभ कर दिया और ३०० ई० पू० तक इन सब अधिकारो को भी प्राप्त कर लिया। इसलिए सन् ४५० ई० पू० से ३०० ई० पू० तक इस झगड़े काल द्वितीय का कहलाता है। इन कथनो से स्पष्ट है कि प्लेबो और पेट्रीशियनों के ये झगड़े लगभग दो सौ वर्ष तक होते रहे। परन्तु बिना रक्त पात के ही इन झगडो का अंत हो गया।

(१) प्रथमकाल (४९४ ई० पू० ४५० ई० पू० तक)

रोम मे यह प्रसिद्ध है कि राजतत्र के बाद जब प्रजातंत्र का प्रारंभ हुआ और ब्रूटस कमल बनाया गया तब उसने प्लेबो को कई अधिकार दे दिये थे परन्तु यह किंवदती ही जान पड़ती है क्योकि इसके बहुत पीछे तक इन्हें शासन मे कोई अधिकार नहीं मिला था।

(१) प्लेबों के ट्रिब्यून बनने का अधिकार प्राप्त करना

सन् ४६७ ई० पू० में एक दास के साथ पेट्रीशियन लोगो ने बड़ा बुरा बरताव किया। एक बार एक प्लेबियन लड़ाई करने के लिए युद्ध क्षेत्र में गया था। जब वह लौटा तो देखा कि उसका घर जब्त कर लिया गया है और उसके सारे जानवर लापता हो गये हैं। उसके पास जीविका का कोई साधन नहीं रहा। तो भी सरकार ने उसके ऊपर भारी कर लगाया। उसने पेट्रीशियनो से रुपए उधार लिए परन्तु उसके सूद के देने में ही वह तग हो गया और पकड कर जेल में डाल दिया गया। वह वहाँ बहुत पीटा गया।

उसका सारा शरीर रक्त से लाल हो गया। अन्त में वह जेल खाने से भाग निकला और अपनी दु:ख गाथा सब को सुनाने लगा। बहुत-से दास एकत्रित हो गये और ऐसा मालूम हुआ कि ये किसी की बात नहीं मानेंगे। इस समय आपियस क्लाडियस और पब्लियस सर्विलियस कसल थे। दासो के एकत्रित होने से रोम में खलबली मच गई और इस सम्बन्ध में विचार करने के लिए सीनेट सभा बैठी। क्लाडियस बड़ा अभिमानी था और पेट्रीशियन लोगों को वह उच्च दृष्टि से देखता था। उसने कहा कि प्लेबियन लोगों को कड़ी सजा देनी चाहिए। परन्तु सर्वीलियस की राय उसके विरुद्ध थी, उस ने प्लेबो की दु:खित दशा पर दया का बरताव करने के लिए कहा। इसी समय वालशियन लोगों ने रोम पर हमला किया और प्लेबों से लड़ाई में भरती होने के लिए कहा गया परन्तु प्लेबियन लोगो ने लड़ाई में जाना अस्वीकार कर दिया। इन्होंने कहा—"पेट्रीशियन लोग स्वय जा कर लड़े। लड़ाई में मरने से तो यहीं मरना अच्छा है।" परन्तु पेट्रीशियन लोग तो लड़ाई करने जाते ही नहीं थे। अब पेट्रीशियन लोगो को विवश हो कर प्लेबों की बात माननी पडी। पेट्रीशियन लोगों ने कहा—"अब किसी भी प्लेब की जब वह युद्ध करने जाय, जमीन जप्त न की जाय और वेंची भी न जाय तथा उसके बालबच्चे भी पकड़े न जायें और उनके ऋण भी कम दिए जाएँ।" इस आज्ञा के निकलते ही प्लेब लोग सेना में भरती होने लग गये। लड़ाई हुई, रोम की विजय हुई और रोम में फिर शान्ति स्थापित हो गई। परन्तु पेट्रीशियन लोग अपनी बात तथा प्रतिज्ञा को भूल गये, वे फिर प्लेबियन लोगो के साथ अत्याचार करने लगे।

दूसरे साल फिर रोम के लिए एक ऐसा ही विघ्न उपस्थित हुआ। और प्लेबों ने फिर सेना में भरती होना अस्वीकार कर दिया।

वालशियन, सेवाइन और एकीयन लोगो ने रोम पर आक्रमण कर दिया। फिर पेट्रीशियन लोग, प्लेबों की खुशामद करने लगे परन्तु प्लेब लोग कई वार धोखा खा चुके थे, इन लोगों ने सीनेट की बातों का विश्वास नहीं किया। अब सीनेट सभा घबराई और पेट्रीशियन लोगो के छक्के छूट गये। अब वेलेरियस डिक्टेटर बनाया गया। रोम के सब लोग जानते थे कि केवल वेलेरियस ही इस समय प्लेवों को मना सकता है, और कोई नहीं। वेलेरियस ने डिक्टेटर बनते ही प्लेवों का सब ऋण क्षमा कर देने की सूचना प्रकाशित कर दी। उसने ऋणदाताओं के क़ैद न करने और प्लेवो की जमीन जप्त न करने की आज्ञा निकाली। इसके बाद उसने प्लेवो को विश्वास दिलाया कि लड़ाई के बाद उनके सब दुःख दूर कर दिए जायँगे। वेलेरियस की आज्ञा मान कर प्लेब लोग फिर सेना में भरती होने लग गये और फिर रोम की विजय हुई किन्तु युद्ध समाप्त होते ही फिर पेट्रीशियन लोग पहले की तरह प्लेवो के साथ अत्याचार करने लग गये। इसमें सन्देह नहीं कि वेलेरियस अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करना चाहता था परन्तु सीनेट ने उसकी बात न मानी क्योंकि सीनेट में सब-के-सब पेट्रीशियन ही थे।

यह हाल देख कर प्लेवो ने इनसे सब सम्बन्ध तोड़ देने का निश्चय कर लिया। ये लोग सन् ४६४ ई० पू० मे एवेंटाइन पहाड़ी पर चले गये और मोरचाबन्दी करने लगे। इसके साथ-ही साथ उन लोगो ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। इस प्रकार प्लेबो के अलग होने से पेट्रीशियन लोगो को बड़ा कष्ट होने लगा। उनके कृषि सम्बन्धी तथा अन्य सब काम बन्द हो गये। अन्त मे पेट्रीशियन लोगो को प्लेबो की बात माननी पड़ी। अन्त में एक बड़ा चतुर मनुष्य प्लेबों के पास भेजा गया। दूसरे लोगो के मन

को अपने वश में करने की विद्या वह खूब जानता था, उसने उन्हें समझा-बुझा कर फिर रोम में लौट आने के लिए राज़ी कर लिया। परन्तु पेट्रीशियन लोगों को नीचे लिखी हुई शर्तें माननी पड़ीं —

(१) सब महाजन लोग प्लेबो को भरपाई लिख दें और जितने प्लेब-कैदी हैं, सबके सब छोड़ दिये जायँ।

(२) ट्रिब्यून नामक दो प्लेब-अफसर, प्लेबों के हित की रक्षा करने के लिए प्रति वर्ष चुने जायँ। और (३) दो ईडाइल नामक अफसर भी प्रति वर्ष चुने जायँ।

(अ) ट्रिब्यूनों के कर्त्तव्य

ट्रिब्यून लोग प्लेबों में से ही चुने जाते थे। इनका कर्त्तव्य प्लेबों के हित की रक्षा करना था। इनका यह भी कर्त्तव्य था कि ये प्लेबों पर अत्याचार न होने दें। टेलर-साहब ने लिखा है कि पहले ट्रिब्यूनों को कुछ भी शक्ति नहीं दी गई थी। ये प्लेबो को व्यक्तिगत अत्याचारो से ही बचा सकते थे। परन्तु धीरे धीरे इनके अधिकार बढ़गये। परन्तु इन ट्रिब्यूनो की शक्ति रोम के बाहर कुछ भी नहीं थी। पेट्रीशियन लोग ही उस समय मजिस्ट्रेट हुआ करते थे और ये प्लेबो के साथ बहुत अन्याय किया करते थे। ट्रिब्यूनों को यह भी अधिकार मिला कि ये प्लेबो को इन मजिस्ट्रेटों के अन्याय से भी बचावें। इस सम्बन्ध में इन्हें "वीटो" का अधिकार मिल गया था। इसके अनुसार ये किसी भी मजिस्ट्रेट के फैसले को रद्द कर सकते थे। यहाँ तक कि ये सीनेट के डिग्री भी रद्द कर सकते थे। ट्रिब्यूनों के शरीर भी पवित्र माने जाते थे। उनके घर के फाटक सदैव खुले रहते थे। जो आदिमी ट्रिब्यून पर हथियार चलाता था, अथवा उन्हें किसी प्रकार का कष्ट देता था

वह राज विद्रोही माना जाता था। ऐसे लोगो की किसी प्रकार भी रक्षा नहीं हो सकती थी और उनकी सब जायदाद जप्त कर ली जाती थी। ट्रिब्यूनो को यह भी अधिकार दिया गया कि वे सीनेट-सभागृह के द्वार के पास बैठ कर सभा की कार्यवाही सुना करे और ज्योंही प्लेबो के अहित करने वाला कोई नियम आवे त्यों ही वे अपनी अस्वीकृति प्रकट करदें। ऐसा होने पर वह नियम स्वीकार ही नहीं हो सकता था। इस प्रकार ट्रिब्यूनो के बहुत अधिकार बढ़ गये थे। उसी स्थान पर प्लेबो ने पहले दो ट्रि-ब्यून चुन लिए जहाँ वे खडे थे। इसके बाद ट्रिब्यूनों की सख्या ५ हो गई और फिर अन्त में १० हो गई थी।

प्लेबों की यह बडी भारी विजय थी क्योकि ट्रिब्यूनों ने ही लड़-झगड़ कर प्लेबो को राजनैतिक और सामाजिक अधिकार दिला दिए। इनकी "वीटो" की शक्ति बड़ी प्रबल थी क्योंकि सर-कार के सब कामों तथा शक्तियो को ये इसी एक "वीटो" से रद्द कर देते थे।

(१) ईडायीलों के अधिकार

ईडायील न्याय का काम करते थे। ये प्लेबो के कानून सबधी विषयो का निरीक्षण किया करते थे। इनकी सख्या पहले दो ही थी परन्तु पीछे से बढ़ा दी गई। ये ट्रिब्यूनो के कामों मे सहायता दिया करते थे। पहले तो इन्हें प्लेबियन और पेट्रीशियन दोनों मिलकर चुनते थे। परन्तु पीछे इस व्यवस्था मे परिवर्तन होगया। इन्हें नालो, मकान और मदिरों का प्रबंध करना पडा था। ये पुलिसो का भी निरीक्षण करते थे और पबलिक तिहवारों का भी प्रबंध कर सकते थे।

(२) कैसियस का भूमि सम्बन्धी कानून

स्परियस कैसियस वास्तव में पेट्रीशियन था तथापि पक्षपात-रहित तथा न्याय-प्रिय था। प्लेवों के आर्त्तनाद ने क॰ वार उसके दयालु हृदय पर चोट की थी। उसके मन में यह बहुत खटका करती थी कि जिन प्लेवो की सहायता से रोम लोग भूमि प्राप्त करते हैं, उन्हीं प्लेवो को भूमि में कुछ भी कार नहीं दिया जाता। इसके विपरीत पेट्रीशियन लोग अपना जीवन आनन्द से विताते हैं और भूमि का कुछ कर भी नहीं देते वह यह भी जानता था कि प्लेवो के पक्ष लेने से उससे बहुत बहुत बुरा मान जायेंगे परन्तु न्याय तथा सत्य के लिए अपने को वलि चढ़ा देने का दृढ़ सकल्प कर लिया। उसने नियम बनाया कि भूमि का आधा भाग दरिद्र प्लेवों में बाँट जाय और सार्वजनिक-भूमि पर पशुओं के चराने के लिए पेट्रीशि लोगो से कर लिया जाया करे और इस धन से उन प्लेवों—द॰ प्लेवो—को वेतन मिला करे, जो लड़ाई में भेजे जाते हैं।

पेट्रीशियन लोगों ने इस नियम का घोर विरोध किया कैसियस ने भी इसके लिए खूब प्रयत्न किया। इसलिए यह स्वीकृत हो गया परन्तु पेट्रीशियन लोगो की ज्यादती के क॰ व्यवहार में नहीं लाया जा सका। अब पेट्रीशियन लोगो ने से बदला लेने का विचार करना प्रारंभ कर दिया और शीघ्र उसके ऊपर एक अभियोग चलाया। उन्होंने उसके ऊपर यह लगाया कि वह साधारण लोगों को अपने पक्ष में करके बन बैठना चाहता है। अभियोग में वह दोषी ठहराया गया उसे प्राणदण्ड दिया गया। उसका घर गिरा दिया गया और जान से मार डाला गया। फिर इस अधिकार के लिए फेवी-

ै बहुत लोगो ने प्लेबों की सहायता की परन्तु प्लेबो ने स्वय
कभी भी शस्त्र नहीं उठाया। इस प्रयत्न मे अनेक लोग मार
डाले गये क्योंकि जो ही प्लेबों का पक्ष लेता था, वही मार डाला
जाता था।

पवलीलियन कानून और पवलीलियस वोलेरा

पवलीलियस वोलेरा एक दृढ़-निश्चय का मनुष्य था। यह
प्लेबो का नेता बन गया और उनके हितो के लिए लड़ने भी
लगा। पेट्रीशियन लाग कैसियन के, भूमि सम्बन्धी कानून के
स्वीकृत हो जाने पर भी, उसे व्यवहार में नहीं लाने देते थे। इस-
लिए वोलेरा उनसे चिढ़ता था और उन्हें झुकाना चाहता था। उसे
शीघ्र ही एक अच्छा अवसर भी हाथ लग गया। सीनेट को सेना
की आवश्यकता हुई तब सीनेट ने वोलेरा से सेना के लिए कहा
परन्तु वोलेरा ने सेना देना साफ साफ अस्वीकार कर दिया।
सीनेट, वोलेरा से बिगड़ी और उसे पकड़ने की आज्ञा दी। वोलेरा,
प्लेबो में जा घुसा और प्लेब-लोग उसकी रक्षा करने के लिए तैयार
हो गये। यह देख कर सीनेट डरगई और वोलेरा को दड देने का
विचार छोड़ दिया क्योंकि वे अब प्लेबो के बलवा से डरने लग गये
थे। इससे प्रकट होता है कि प्लेब लोगों की शक्ति अब खूब बढ़ गई
थी और पवलीलियस वोलेरा उनका नेता था। इसलिए वोलेरा
अब और भी अधिक शक्तिशाली हो गया था। इसलिए शीघ्र ही
वह ट्रिब्यून चुन लिया गया। ट्रिब्यून होने पर इसने एक कानून
स्वीकृत करा लिया इस कानून का नाम, उसके नाम के अनुसार
ही *पवलीलियन कानून रखा गया।*

(३) पवलीलियन कानून —

, बात यह थी कि यह नियम तो स्वीकृत हो ही गया था कि प्लेबो में से ही दो ट्रिब्यून चुने जायँ। परन्तु प्लेबियन और पेट्रीशियन दोनो ही मिलकर इन ट्रिब्यूनो को चुनते थे। प्राय ऐसा होता था कि पेट्रीशियन लोग अपने प्लेब असामियों का अपनी ओर मिला लेते थे और जिसे चाहते ट्रिब्यून चुनवा लेते थे। इस प्रकार वे ऐसे लोगों को चुनवा लेते थे जो प्लेबो का पक्ष ही नहीं लेते थे। इसलिए इसने यह नियम स्वीकृत करवा लिया कि अब केवल प्लेब लोग ही ट्रिब्यूनो और ईडायीलो को चुना करें। बहुत लोगों ने इसका घोर विरोध किया और इस सम्बन्ध मे कई झगडे भी हुए परन्तु अन्त मे पवलीलियस वोलेरा ने इसे स्वीकृत करा के ही दम लिया। पहले प्लेबों ने अलग सभा करने का विचार किया परन्तु पेट्रीशियन लोग उन्हें अलग सभा नहीं करने देते थे और भांति भांति का विघ्न उपस्थित करते थे। परन्तु प्लेबो ने एक दिन नियत कर ही तो दिया और उस दिन लाख विघ्न उपस्थित होने पर भी उस नियम को पास कर दिया। परन्तु सीनेट तथा पेट्रीशियनो ने इस नियम को स्वीकार नहीं किया। तव प्लेबो ने कैपीटल नामक दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया और पेट्रीशियनो से लड़ाई करने की धमकी भी दी। तव सब लोगो ने उसी रूप मे उस नियम को स्वोकार कर लिया जिस रूप मे प्लेबो ने पास किया था। इस प्रकार प्लेबो की एक अलग सस्था हो वन गई और रोम के लोगों को इसे भी अपनी व्यवस्था में स्थान देना पड़ा। धीरे धीरे इस सस्था का मान कमीटिया के समान हो गया।

(४) दस-गुट, और कानूनों का लिखा जाना

प्राय पेट्रीशियन लोग ही मजिस्ट्रेट हुआ करते थे और मनमानी फेसला किया करते थे। कोई लिखा हुआ कानून

रोम मे था ही नहीं तथा उनका उपयोग व्यवहार पर निर्भर था अतएव ये लोग कानून के नाम पर जैसा चाहते वैसा कर देते थे। इस प्रकार ये स्वतंत्र रूप से प्लेवो के साथ अन्याय कर सकते थे और करते भी थे और प्राय कानूनो का अभिप्राय पेट्रीशियन लोगो के अनुकूल मान लेते थे। प्लेबियनो ने इन सब कानूनो के प्रकाशित करने के लिए आंदोलन करना प्रारंभ कर दिया। आठ वर्ष तक इन लोगो ने इसके लिए घोर प्रयत्न किया। एकबार तो केसो नामक एक व्यक्ति ने एक ट्रिब्यून से हाथापाई भी की परन्तु ऐसे अपराधों का दंड मृत्यु था। इसलिए उसे रोम से भाग जाना पड़ा। इन सब कारणो से इस आन्दोलन ने बड़ा ही उग्र रूप धारण किया। अन्त मे सीनेट को प्लेबियन लोगो की बात माननी पड़ी। सीनेट ने तीन सभासदों को एथेंस मे यूनानी कानून के अध्ययन करने के लिए भेजा। वहाँ पर इन लोगो ने यूनान की व्यवस्था का अच्छी तरह से निरीक्षण किया और तब वे वहाँ से लौटे। उनके रिपोर्ट देने पर पेट्रीशियनो ने दस सदस्यों की एक समिति बनाई। सब राज्यों का कानून बनाना, (व्यवस्था करना), शासन करना और न्याय करना अवश्य ही पड़ता है। परन्तु प्रारंभिक काल में ये तीनो शक्तियाँ एक ही मनुष्य अर्थात् राजा के हाथ ही में रहती थीं। इसमें सदेह नहीं कि इस समय रोम मे प्रजातंत्र राज्य था परन्तु अब भी ये तीनो शक्तियाँ पृथक पृथक नहीं हुई थीं। इसलिए जब ये दस मनुष्य कानून बनाने के लिए नियत किए गए, तो शासन भी उन्हीं के हाथ में दे दिया गया क्योंकि शासन कर्ता को कानून जानने की बड़ी भारी आवश्यकता पड़ती है। इस इस गुट को ही रोम का राज्य सौंप दिया गया। इनको रोम का राज्य सुपुर्द होते ही और सब लोगो का अधिकार कम कर दिया गया।

इस समिति (दस गुट) में उस समय के दो कसल और आठ अन्य सदस्य थे। इन लोगों ने दस धारा की एक व्यवस्था साधारण लोगों में कमीटिया मे पेश की। ये सब, स्वीकार कर लिए गए और ये ताम्र तथा कासे के पत्रो पर खुदवाए गये और मुख्य स्थानो मे लटका दिए गये। इन दस धाराओं मे पेट्रीशियन और प्लेबियन का भेद नहीं माना गया था। टेलर-साहब ने लिखा है कि दस-गुट के बनाए हुए इन नियमो को कमीटिया-सेंचुरियाटा न पास किया था। यह समिति केवल एक ही वर्ष के लिए बनाई गई थी। परन्तु ये लोग कानून के सब कामों को पूरा नहीं कर सके।

इसलिए एक वर्ष के लिए फिर एक समिति (दस गुट) बनाई गई। पहले वर्ष तो समिति में सब-के-सब पेट्रीशियन ही थे, परन्तु इस वर्ष पांच पेट्रीशियन और पांच प्लेबियन थे। अब ये रोम के प्रजातत्र का सब काम करने लगे और इन्हीं के हाथ मे सब अधिकार था। पहले लिखा जा चुका है पहले वर्ष यह समिति कानून का सब काम नहीं कर सकी क्योंकि इन लोगों ने केवल दस धाराएँ ही बनाई थीं। परन्तु जब दूसरे वर्ष दूसरी समिति बनी तो उसने दो और धाराए बढ़ाईं। पहली धारा यह थी कि रात के समय सभा करने वालो को प्राणदड की आज्ञा दना चाहिए और दूसरा धारा यह थी कि पेट्रीशियन और प्लेबियन लोगो मे परस्पर विवाह न हो। इन लोगों ने सन् ४५० ई० पू० में अपने काम को समाप्त किया और सब नियमों को प्रकाशित किया। इन नियमों को द्वादश कथात्मक नियम कहते हैं। इनमे से कुछ नीचे लिखे जाते हैं'—

(१) पिता अपने पुत्र को दास बना कर बेंच सकता है परन्तु बेचने के बाद पुत्र पर पिता का किसी प्रकार का अधिकार

हीं रह सकता। पिता के मरने के बाद पुत्र का अधिकारी वही ोगा जिसका नाम वसियतनामा में होगा।

(२) बिना कर दिए—चाहे वह कितने ही अधिक दिनों । उसके पास रही हो—कोई भी किसी भूमि का स्वामी नहीं हो ाकता।

(३) कोई भी विदेशी रोम में भूमि का स्वामी नहीं हो ाकेगा।

(४) ऋण का व्याज १० प्रति सैकड़ा से अधिक नहीं हो ाकता।

(५) पेट्रीश लोग ट्रिब्यूटा समिति के सदस्य हो सकते हैं।

(६) पेट्रीश और प्लेबों में विवाह नहीं हो सकता।

डायोनीसियस ने लिखा है कि इन दस गुटों में तीन तो अव-ाय ही प्लेवियन थे। मामसेन ने लिखा है कि पहले दस-गुट में ी प्लेवियन थे।

दूसरे वर्ष की समिति में आपियस क्लाडियस नामक एक ेट्रीशियन भी था। उसी के कारण, पेट्रीशियन और प्लेवियनों में ववाह न होने वाला नियम पास हुआ था। इसमें संदेह नहीं कि ाहले वर्ष की समिति में भी आपियस क्लाडियस था परन्तु पहले ार्ष तो उसने शान्तिपूर्वक काम किया था और किसी का भी वेरोध नहीं किया परन्तु इस वर्ष उसने अपने मन के योग्य आदमियों को समिति में रख लिया था और अब स्वेच्छाचार करना चाहता था। विवाह सम्बन्धी नियम से बहुत प्लेब, बिगड़ ाये और बलवा करने का अवसर देखने लगे। इधर समिति के लोग भी जनता से बिगड़ खड़े हुए और उन्हें दबाने का प्रयत्न करने लगे।

अब आपियस क्लाडियस ने अत्याचार और निरकुशता का व्यवहार करना प्रारभ कर दिया। सब से पहले तो उसने ल्यूशियस डॅन्टेटस को मरवा डाला। इसे जनता बहुत चाहती थी तथा इसकी मृत्यु से वह बहुत अप्रसन्न हुई।

इसके बाद एक और घटना हुई जिससे सब लोग आपियस क्लाडियस से और भी अधिक अप्रसन्न हो गए। एकियुन लोगो से लड़ाई छिड़ गई। उनसे लडने के लिए ल्यूशियस वर्जीनियस भेज दिया गया था। ल्यूशियस वर्जीनियस की वर्जीनिया नामक कुमारी कन्या बहुत ही अधिक सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता की धूम चारों ओर छा गई थी। आपियस क्लाडियस भी वर्जीनिया पर मुग्ध तथा आसक्त था। पिता की अनुपस्थिति मे उसने पुत्री के सतीत्व को भग करने का प्रयत्न करना प्रारभ कर दिया। पहले तो इसने उससे विवाह का प्रस्ताव किया परन्तु उसका विवाह एक दूसरे मनुष्य से निश्चित हो गया था, अतएव उसने इससे विवाह करना अस्वीकार कर दिया। फिर इसने उसे कई तरह का प्रलोभन दिखलाना प्रारभ कर दिया परन्तु वह कुमारी पहाड की तरह अचल रही और उनसे प्राण दे कर भी अपने सतीत्व की रक्षा करने का दृढ सकल्प कर लिया। अन्त में आपियस क्लाडियस ने सोचा कि इस प्रकार काम नहीं चलेगा। इसलिए उसने एक षड्यन्त्र रचा और अपने नौकर से उस कुमारी के ऊपर यह अभियोग चलवा दिया कि वह उसकी दासी है और सब के सामने फैसला भी कर दिया कि वह वास्तव में नौकर की दासी है। अब वह वर्जीनिया को अपने नौकर को सौंपने जा रहा था। इसी समय उसका पिता वहाँ आ गया। पिता के मित्रों ने यह सब समाचार उसके पिता के यहाँ भेज दिया था। अब उसका पिता, अपनी पुत्री से कुछ बात कहने के बहाने से उसे एक ओर ले गया और नीचे की लिखी हुई

ात कह कर अपनी कन्या की छाती मे छुरी भोक दी और उसे ार डाला —

"पुत्री ! तेरे सतीत्व के रक्षा करने का केवल यही एक मार्ग है।" सके बाद उसने रक्तमय छूरे को आपियस क्लाडियस को दिखलाया और उससे कहा—"नराधम !" इस रक्त का अपराधी तू ही है।"

इसके बाद लूशियस वर्जीनियस अपनी सेना में चला गया। परन्तु जनता आपियस क्लाडियस से बहुत बिगड़ी। इसलिए उसे वहाँ से भाग जाना पड़ा। इन घटनाओ से रोम मे हाहाकर मच गया।

अब लूशियस वर्जीनियस ने अपनी सब सेनाओ को एकत्रित कर लिया और वह एवेंटाइन पहाड़ी पर जाकर ठहर गया। रोम नगर के शेष प्लेबियन भी दूसरी बार उसी के पास चले गये और केवल पेट्रीशियन लोग ही अलग रह गये। फिर इन लोगो को कष्ट होने लगा और फिर इन लोगों ने प्लेबों से रोम लौट आने की प्रार्थना की। परन्तु प्लेबियन लोग वर्त्तमान शासन पद्धति में परिवर्तन तथा सुधार हुए बिना, यहां से आना ही नहीं चाहते थे। इसलिए पेट्रीशियन लोगो को फिर प्लेबो की बात माननी पड़ी और इन लोगो ने फिर पहले की तरह दो कसलो तथा ट्रिब्यूनों के द्वारा राज्य चलाने की व्यवस्था स्वीकार की। आपियस क्लाडियस अब कैद कर लिया गया परन्तु कारागार ही मे उसने अपनी आत्महत्या कर ली। दूसरे एक और सभासद ने आत्मघात कर लिया और शेष दस सदस्यो को देश निकाला का दड दिया गया। टेलर साहब ने लिखा है कि शेष दो धाराओं के पास करने और ट्रिब्यूनो के पद के हटाने से ही आपियस का पतन हुआ।

अब वालेरियस और होरेशस कसल चुने गये और वर्जीनियस तथा इसीलियस ट्रिब्यून। ये सब के सब अच्छे आदमी थे। अतएव फिर रोम का प्रजातन्त्र अच्छी तरह से चलने लगा। अब इन लोगो ने व्यवस्था में सुधार करना प्रारम्भ कर दिया। वास्तव मे प्लेबो के हित की रक्षा केवल ट्रिब्यून ही किया करते थे। इधर गत दो वर्षो मे उनकी शक्ति कुछ कम हो गई थी और प्लेबो को कष्ट भी मिलने लग गया था। इसलिए प्लेबियन लोग अब डरने लग गये थे कि कहीं ऐसा न हो कि पेट्रीशियन लोग ट्रिब्यून का चुनना ही बन्द करदें। इसलिए ट्रिब्यूनों ने रोम की व्यवस्था मे एक और धारा बढ़वा लिया और वह धारा यह थी —जो लोग ट्रिब्यून की प्रथा को बन्द करने का प्रयत्न करेंगे उन्हे प्राणदड दिया जायगा।

वालेरियस और होरेशस के समय में प्लेबो के पक्ष मे बहुत बातें हुई। इन्ही के समय में एक कानून पास हुआ जो वालेरियन और होरेशियन-कानून कहलाता है। इस कानून की धाराएं ये हैं—

(१) प्लेबियनो की सभा में जो नियम या कानून स्वीकृत किए जायेंगे उन्हे प्लेबो और पेट्रीशों दोनो ही को मानना पड़ेगा

(२) मजिस्ट्रेट के फैसला के विरुद्ध प्रत्येक व्यक्ति अपील कर सकता हैं।

(३) ट्रिब्यूनो तथा अन्य प्लेब अधिकारियो को पवित्र समझना चाहिए और यदि कोई व्यक्ति इनके साथ अच्छा बर्ताव न करे तो उसे राजद्रोही समझना चाहिए।

इस प्रकार केवल प्लेब लोगों की संस्था का मान भी कमीटिय के मान के समान हो गया। इस कारण से प्लेबो की दशा बहु

सुधरने लगी क्योंकि अब उन्हें कानून बनाने का भी अधिकार मिल गया था।

प्लेबो और पेट्रीशो के झगडे के प्रथम काल का यहीं से अन्त समझना चाहिए। इसके बाद इन झगड़ो के द्वितीय काल का आरम्भ होता है। टेलर-साहब ने लिखा है कि इन नियमो से प्लेबों की दशा बहुत कुछ सुधर गई। इसमें सन्देह नहीं कि प्लेबो को इसके बाद भी लड़ना पड़ा था परन्तु अब वे पहले की अपेक्षा अपनी रक्षा बहुत अच्छी तरह से कर सकते थे। अब तक वे अन्याय के साथ युद्ध कर रहे थे। परन्तु अब उनके सब कानून प्रकाशित हो गये थे। अब उन्होने पूर्ण रूप से सामाजिक तथा राजनैतिक स्वतन्त्रता तथा समानता के लिए लडना प्रारम्भ कर दिया।

प्लेबों और पेट्रीशों के झगड़ों का द्वितीय काल (४५० ई० पू० से ३०० ई० पू० तक)

प्लेब और पेट्रीश के झगड़ों का द्वितीय काल ४५० ई० पू० से ३०० ई० पू० तक समझना चाहिए।

(१) कैन्यूलियन-नियम और पेट्रीशों की चाल

नियम बनाने वाली दूसरी समिति ने प्लेब और पेट्रीश के परस्पर के विवाहों को बंद कर दिया था। इस नियम के कारण लोगो को बहुत कष्ट होने लग गया था। बहुत प्लेबों की कन्याओ का विवाह पेट्रीश लोगो से हो गया था और इनके संयोग से जो सन्तति उत्पन्न हुई थी, वह नीच समझी जाती थी। इसलिए प्लेबो ने इसके विरुद्ध आन्दोलन करना प्रारंभ कर दिया और सन् ४४५ ई० पू० में कैन्यूलियन-नामक नियम पास हो गया जिसके अनुसार प्लेबो और पेट्रीशो में परस्पर विवाह हो सकता था। इस प्रकार प्लेबो के

इसलिए इन लोगों को पेट्रीशो से रुपया उधार लेना पड़ा। लेने के कारण से इनकी दशा और भी अधिक खराब हो गई था। इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे प्लेबो ने अपने अधिकार के प्राप्त करने के लिए और भी अधिक आन्दोलन करना प्रारंभ कर दिया। वह घटना मैनलियस की मृत्यु थी।

सन् ३३६ ई० पू० में रोम मे एक बड़ा भारी अकाल पड़ा था। इस समय मैनलियस नामक एक धनिक प्लेबियन ने दूसरे प्रांत से बहुत अन्न मॅगाया और बिना दाम के ही प्लेबो में दिया। इसके बाद मैनलियस सर्व प्रिय हो गया। यह बात पेट्रीशो को अच्छी नहीं लगी और वे उससे जलने तथा उसे मार डालने का उपाय सोचने लगे। इस लिये उन लोगो ने गल्ले के बाजार के मुख्य अधिकारी के द्वारा मैनसोयस पर अभियोग चलवा दिया और उस पर यह दोषारोपण किया गया कि वह जनता में सर्व प्रिय बन कर राजा बन बैठना चाहता है। मैनलियस दोषी ठहराया गया और मारडाला गया। मैनलियस की मृत्यु से प्लेब लोगो मे शोक सागर उमड चला और उन लोगो ने निश्चय कर लिया कि बिना कसल पद के प्राप्त किए प्लेबों का कल्याण नहीं है। इन लोगों ने निश्चय कर लिया कि बिना कसल बने प्लेबो और पेट्रीशों मे कभी भी राज नैतिक समानता हो ही नहीं सकती।

अब लूशियस स्टोलों और लूशियस सेक्शश नामक दो ट्रीब्यूनो ने प्लेबो के अधिकारो के प्राप्त करने का कठिन प्रयत्न करना प्रारभ कर दिया और पेट्रीशो ने भी इनके विरुद्ध आंदोलन करना प्रारम कर दिया। कभी कभी तो इनके झगड़े ने इस समय बड़ा ही उग्ररूप धारण किया परन्तु सदा इन दोनो ट्रिब्यूनो ने शान्ति से काम ली और एक बूद भी रक्त नहीं गिरने दिया। परन्तु इस

समय इन लोगों ने अपने विशेष अधिकार "विटो" से खूब काम लिया और इसी की सहायता से प्रजातन्त्र के सब कामों को बन्द-सा कर दिया। पबलिक के सब कामों में ये अपने "विटो" से ही काम लेने लग गये थे।

लूसियस स्टोनो और और लूसियस सेक्शस ने दस वर्ष तक बार प्रयत्न करके सन् ३७६ ई० पू० में निम्नलिखित नियम पास करा लिया, और ये ही लाइसीनियन नियम कहलाते हैं :—

(१) फौजी ट्रिब्यूनों का पद अब तोड़ दिया जाय और फिर दो कसलों के नियत करने की प्राचीन प्रणाली जारी कर दी जाय। इन दो कसलों में से एक कसल अवश्य प्लेब हो।

(२) किसी भी आदमी के पास ५०० (जुगेरा लगभग ३०० एकड़) से अधिक जमीन न रहे।

(३) जो व्याज महाजनों को दे दिया गया है, वह मूल धन में से घटा कर शेष धन तीन वर्ष के भीतर चुका दिया जाय।

इनमें अन्तिम दो नियमों से तो गरीब प्लेबों की बड़ी रक्षा हुई। परन्तु पहले नियम से प्लेबों को सब से बड़े पद पर अधिकार प्राप्त करने का निश्चय रूप से व्यवस्था हो गई। प्रथम नियम को अस्वीकृत कराने तथा करने के लिए पेट्रीशो ने बड़ा परिश्रम किया था परन्तु दोनों ट्रिब्यून भी एक ही नम्बर के हाइयाँ निकले, इन लोगों ने उनकी एक न चलने दी। सीनेट सभा ने कैमिलस को डिक्टेटर बनाया और उससे इस झगड़े को तोड़ने की प्रार्थना की। परन्तु वह भी इस सबन्ध में कुछ नहीं कर सका। अन्त में सीनेट को भी इन नियमों को स्वीकार करना पड़ा। इस प्रकार १० वर्ष के लगातार के युद्ध के बाद सन् ३६७ ई० पू० में इस नियम ने कानून का रूप धारण कर लिया।

संसार के इतिहास मे शान्ति पूर्वक तथा व्यवस्था की मर्यादा के भीतर ही भीतर की इस प्रकार की लड़ाई तथा इस प्रकार की लड़ाई के इस तरह के अंत का उदाहरण और कहीं नहीं मिलता। इसमे सन्देह नहीं कि इन दोनों मे मतभेद था और परस्पर लड़ाई होती थी, परन्तु जब कोई शत्रु रोम पर आक्रमण करता था, तो ये मिल जाया करते थे और शत्रु को पराजित करने के बाद फिर परस्पर का युद्ध प्रारम्भ कर देते थे। प्लेब और पेट्रीश दोनों ही कानून और व्यवस्था की मर्यादा के अनूकूल काम करते थे और दोनो ही देशभक्त थे।

प्रत्येक देश के आभ्यन्तरिक और वाह्य दो इतिहास हुआ करते हैं। रोम के प्रजातन्त्र का प्रारम्भिक वाह्य इतिहास एट्रस्क, वालशीयन और एकियस का युद्ध ही है। इन युद्धो मे अन्त मे रोम की विजय हुई और रोम ने अपने विस्तार को और बढ़ाया।

रोम के प्रजातन्त्र का प्रारम्भिक आभ्यन्तरिक इतिहास प्लेबों और पेट्रीशो का परस्पर का झगड़ा है। इन सब झगड़ों मे प्लेबों ने धीरे धीरे पेट्रीशो से अधिकार प्राप्त कर लिया और अन्त में इनमे सामाजिक और राजनैतिक समानता भी स्थापित हो गई।

जब जब रोम पर कोई भारी खतरा आता था, तब तब प्लेब लोग पेट्रीशों को धमकाते थे क्योंकि सेना मे प्लेबो की ही सख्या अधिक थी इस प्रकार धमकाने से उन्हें कुछ अधिकार मिल जाया करता था और तब ये लड़ाई मे चले जाते थे और शत्रुओं को अवश्य ही हरा देते थे।

आठवाँ अध्याय

रोम का इटली के बाहर विस्तार
तीनो प्यूनिक युद्धों का वर्णन
कार्थेज-नगर का संक्षिप्त परिचय

कार्थेज-नगर अफ्रीका के उत्तरी किनारे पर सिसली के अत्यन्त ही अधिक समीप था। टायर नगर के रहनेवाले फीनीशियन लोगों ने सन् ८२५ पू० में इसे अपने उपनिवेश के रूप में बसाया था परन्तु व्यापार के कारण उसकी शीघ्र ही बड़ी उन्नति हो गई। व्यापार के लिए इन्हें जहाज भी बनाना पड़ा था। इस प्रकार शीघ्र ही इसकी समुद्री-शक्ति भी बहुत बढ़ गई। अब यह भूमध्य सागर के समीप के सर्वश्रेष्ठ नगरों में से एक हो गया। धीरे धीरे वह स्वतन्त्र नगर बन गया। यहाँ के व्यापारी बड़े धनी हो गये थे। कार्थेज नगर के व्यापारी चारों ओर फैले हुए थे और व्यापार के जाल चारों ओर फैलाए हुए थे। सेना की छावनी की अपेक्षा इन्हें बाजार तथा व्यापार अधिक प्रिय था। इसी व्यापारशीलता के कारण शीघ्र ही कार्थेज एक नगर राष्ट्र बन गया और अफ्रिका के पश्चिमी भाग पर इसका आधिपत्य हो गया। धीरे धीरे इन लोगों ने सारडीनिया और कारसिका को भी जीत लिया। सिसली का अधिक भाग भी अब इन्हीं के अधिकार में आ गया। कार्थेज के लोग यहूदियों की भाषा बोलते थे और व्यापार में अपना समय बिताते थे। कार्थेज में समुद्र की ओर एक ऊंची दीवार थी और लोहे की जंजीर थी। शेष तीन ओर से ३० गज ऊंची दीवारें थीं। इस

प्रकार कार्थेज चारों ओर से सुरक्षित था। इसलिए उसका व्यापार बहुत बढ़ गया। जब अपने राज्य में अन्य देश वालों को वाणिज्य करते हुए ये पा जाते थे तो उन्हें पानी में डुबा कर मार डालते थे।

कार्थेन में भी रोम की तरह कोई राजा नहीं था। वास्तव में कार्थेज मे एक प्रकार का अल्पजनसत्तात्मक प्रजातन्त्र था। इसमें रोम की तरह ही केवल एक वर्ष के लिए मजिस्ट्रेट चुने जाते थे। कार्थेज में भी एक सिनेट थी। इस सीनेट मे केवल १०४ मनुष्य रहते थे। परन्तु इसमे प्रतिनिधियो के चुनने की प्रथा का बिल्कुल ही विकास नहीं हुआ था। कार्थेज के लोग अधिकतर बनिए थे और उनमे से कुछ बहुत धनाढ्य थे। इसलिए कार्थेज के सब पदों तथा अधिकारों को इन बनियो ने आपस में बांट लिया था। इसलिए यह बात बिना किसी सकोच के कही जा सकती है कि कार्थेज के सब अधिकार नगर के बड़े और धनी पुरुषों के हाथ में था। रोम भी अब धीरे धीरे उन्नति कर रहा था इसलिए कार्थेन और रोम मे सघर्ष होने लगा। परन्तु इन सघर्षो तथा लड़ाइयों (प्यूनिक-युद्ध) के वर्णन करने के पहले रोम और कार्थेज की परिस्थितियो का अत्यन्त ही सक्षिप्त वर्णन आवश्यक जान पड़ता है।

रोम और कार्थेज का सक्षिप्त परिचय

स्थल सेना का परिचय

रोम के सिपाही ससार मे अब भी प्रसिद्ध हैं। अति प्राचीन काल मे भी रोम के सिपाहियों ने अपनी वीरता तथा सैनिक योग्यता का अच्छा परिचय दिया था। इसके सिवाय रोम के सिपाही जानते थे कि हम अपने देश के लिए लड़ रहे हैं और वास्तव में

अपने देश की प्रतिष्ठा बचाने के लिए जान भी लड़ा देते थे। परन्तु कार्थेज के सिपाही भाड़े के टट्टू ही हुआ करते थे। ये लोग वेतन के ही लिए लड़ते थे, अपने देश के लिए नहीं। इसके सिवाय रोम के सिपाहियो का विश्वास किया जा सकता था, परन्तु कार्थेज के सिपाहियों का विश्वास करना कठिन था। इन सब बातों से प्रकट है कि रोम की स्थल सेना, कार्थेज की स्थल सेना से सर्वथा श्रेष्ठ थी।

दोनों की जल सेना का परिचय

व्यापार करने के लिए कार्थेज निवासियों को समुद्र भी पार करना पड़ता था, अतएव वहाँ पर अति प्राचीन काल से ही जहाज बनाने की कला की अच्छी उन्नति होगई थी और जहाजपर लड़ना भी इन्हें अच्छी तरह से आ गया था। इस समय कार्थेज में अनेकों जहाज नाव और बोट बन गये थे। उस समय कार्थेज के समुद्री सिपाही तथा जहाज के मल्लाह अनुभवी तथा सर्वश्रेष्ठ थे। परन्तु रोम वालो को जहाज भी बनाने नहीं आता था। इन सब बातो से स्पष्ट है कि रोम की समुद्री शक्ति कार्थेज की अपेक्षा बहुत कम थी। स्थल सेना अथवा जल सेना के हारे हुए जनरलों को कार्थेज में मृत्युदंड मिलता था, जिससे वे अनुभव प्राप्त करने के पहले ही यमलोक भेज दिए जाते थे। इसके विपरीत रोम वाले ऐसे सेनापतियों के साथ सहानुभूति प्रकट करते थे।

दोनो की आर्थिक परिस्थिति

कार्थेज अपने व्यापार के कारण रोम से बहुत ही अधिक धनी था। रोम में अभी व्यापार होने लगा था और वह भी थोड़ा थोड़ा और इधर उधर। कार्थेज वालों की तरह ये दूर तक व्यापार नहीं करते थे।

प्रकार कार्थेज चारों ओर से सुरक्षित था। इसलिए उसका व्यापार बहुत बढ़ गया। जब अपने राज्य मे अन्य देश वालो को वाणिज्य करते हुए ये पा जाते थे तो उन्हें पानी में डुबा कर मार डालते थे।

कार्थेन मे भी रोम की तरह कोई राजा नहीं था। वास्तव में कार्थेज मे एक प्रकार का अल्पजनसत्तात्मक प्रजातत्र था। इसमें रोम की तरह ही केवल एक वर्ष के लिए मजिस्ट्रेट चुने जाते थे। कार्थेज में भी एक सिनेट थी। इस सीनेट मे केवल १०४ मनुष्य रहते थे। परन्तु इसमें प्रतिनिधियो के चुनने की प्रथा का बिल्कुल ही विकास नहीं हुआ था। कार्थेज के लोग अधिकतर वनिए थे और उनमे से कुछ बहुत धनाढ्य थे। इसलिए कार्थेज के सब पदों तथा अधिकारो को इन वनियो ने आपस में बाट लिया था। इसलिए यह बात विना किसी सकोच के कही जा सकती है कि कार्थेज के सब अधिकार नगर के बड़े और धनी पुरपो के हाथ में था। रोम भी अब धीरे धीरे उन्नति कर रहा था इसलिए कार्थेज और रोम मे सघर्प होने लगा। परन्तु इन सघर्षो तथा लड़ाइयों (प्यूनिक-युद्ध) के वर्णन करने के पहले रोम और कार्थेज की परिस्थितियो का अत्यन्त ही सक्षिप्त वर्णन आवश्यक जान पड़ता है।

रोम और कार्थेज का सक्षिप्त परिचय

स्थल सेना का परिचय

रोम के सिपाही ससार मे अब भी प्रसिद्ध हैं। अति प्राचीन काल में भी रोम के सिपाहियो ने अपनी वीरता तथा सैनिक योग्यता का अच्छा परिचय दिया था। इसके सिवाय रोम के सिपाही जानते थे कि हम अपने देश के लिए लड़ रहे हैं और वास्तव में

अपने देश की प्रतिष्ठा बचाने के लिए जान भी लड़ा देते थे। परन्तु कार्थेज के सिपाही भाड़े के टट्टू ही हुआ करते थे। ये लोग वेतन के ही लिए लड़ते थे, अपने देश के लिए नहीं। इसके सिवाय रोम के सिपाहियों का विश्वास किया जा सकता था, परन्तु कार्थेज के सिपाहियों का विश्वास करना कठिन था। इन सब बातों से प्रकट है कि रोम को स्थल सेना, कार्थेज की स्थल सेना से सर्वथा श्रेष्ठ थी।

दोनों की जल सेना का परिचय

व्यापार करने के लिए कार्थेज-निवासियों को समुद्र भी पार करना पड़ता था, अतएव वहां पर अति प्राचीन काल में ही जहाज बनाने की कला की अच्छी उन्नति होगई थी और जहाजपर लड़ना भी इन्हें अच्छा तरह से आ गया था। इस समय कार्थेज में अनेकों जहाज नाव और बोट बन गये थे। उस समय कार्थेज के समुद्री सिपाही तथा जहाज के मल्लाह अनुभवी तथा सर्वश्रेष्ठ थे। परन्तु रोम वालों को जहाज भी बनाने नहीं आता था। इन सब बातो से स्पष्ट है कि रोम को समुद्री शक्ति कार्थेज की अपेक्षा बहुत कम थी। स्थल सेना अथवा जल सेना के हारे हुए जनरलो को कार्थेज में मृत्युदंड मिलता था, जिससे वे अनुभव प्राप्त करने के पहले ही यमलोक भेज दिए जाते थे। इसके विपरीत रोम वाले ऐसे सेनापतियों के साथ सहानुभूति प्रकट करते थे।

दोनों की आर्थिक परिस्थिति

कार्थेज अपने व्यापार के कारण रोम से बहुत ही अधिक धनी था। रोम में अभी व्यापार होने लगा था और वह भी थोड़ा थोड़ा इधर उधर। कार्थेज वालों की तरह ये दूर तक व्यापार नहीं करते थे।

प्रजाओं की दशा

रोम के लोग विजित देशो के साथ अच्छा वर्ताव करते थे और उन्हें अपने मे मिला लेते थे। इसलिए रोम की प्रजा उसे प्यार करती थी और रोम की प्रतिष्ठा अपनी प्रतिष्ठा समझती थी। इसके विरुद्ध कार्थेज के निवासी अपनी प्रजा के साथ अन्यायपूर्ण वर्ताव करते थे और उन्हें तग भी करते थे। इसलिए ये सदा कार्थेज के विरुद्ध बलवा करने को तैयार रहते थे।

प्यूनिक-युद्ध के पहले सिसली की अवस्था

सिसली में यूनानियो और कार्थेज वालो का अधिकार था। ये एक दूसरे से सिसली मे प्राय लड़ा करते थे। यूनान के लोगों का अधिकार पूर्वी सिसली पर और कार्थेज वालो का अधिकार पश्चिमी सिसली पर था। सिरेक्यूज नामक एक यूनानियो का नगर था और जब जब कार्थेज के लोग अपने राज्य को पूर्व म बढ़ाना चाहते थे, तब तब सिरेक्यूज वाले उनसे भिड़ जाते थे और उन्हें आगे नहीं बढ़ने देते थे। इसके सिवाय यूनानी सब शहरों मे भी एकता का अभाव ही था। इसलिए ये अब बाहर से एक दूसरे के विरुद्ध सहायता लेना चाहते थे। इसलिए बाहर के लोग भी सिसली के सम्बन्ध मे हस्तक्षेप करने लगे।

प्रथम प्यूनिक युद्ध (२६४ ई० पू० से २४१ ई० पू० तक)

अब धीरे धीरे रोम भी अपने राज्य की सीमा को इधर उधर बढ़ाने का विचार कर रहा था। जब रोम ने आस पास के देशो पर भी अधिकार करने की इच्छा की तो उसे बहुत लोगों से युद्ध करने पड़े। सब से पहले उसे कार्थेज से ही लोहा लेना पड़ा। कार्थेज से और रोम से तीन युद्ध हुए जो प्यूनिक-युद्ध के नाम से प्रसिद्ध हैं। ज्यो ज्यो रोम की वृद्धि हो रही थी, त्यो त्यो कार्थेज

वालों को अपने व्यापार की चिन्ता होने लगी थी। इसके सिवाय ये दोनो ही भूमध्यसागर पर अपना आधिपत्य जमाना चाहते थे और दोनो ही सिसली को अपने अधिकार में रखना चाहते थे।

इटली और सिसली के बीच मे मेसिना नामक एक प्रसिद्ध नगर है। यह यूनानियों के अधिकार में था। परन्तु कपेनिया के सैनिकों ने उस पर हमला कर दिया और उस पर अपना अधिकार भी जमा लिया। इन लोगो ने मेसिना मे अपना स्वतंत्र राज्य नियत कर लिया और इधर-उधर के शहरों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। सिरेक्यूज के राजा हायेरो ने इन डाकुओं को नष्ट कर डालने का विचार किया और उन पर हमला कर दिया तथा मेसिना मे उन्हें घेर लिया। इस समय मेसिना मे दो दल हो गये थे। एक दल ने रोम से और दूसरे ने कार्थेज से सहायता मांगी। रोम अभी इस सम्बन्ध मे सोच विचार ही कर रहा था। इतने में कार्थेज वालो ने मेसिना पर एक प्रकार से अधिकार ही कर लिया क्योंकि जिस दल ने कार्थेज वालों को बुलाया था, उसने उनका स्वागत किया अब रोम ने समझा कि यदि कार्थेज वाले मेसिना पर अधिकार कर लेंगे, तो रोम के लिए यह एक भयानक बात हो जायगी। इसलिए रोम ने भी इस लड़ाई में हस्तक्षेप करना उचित समझा। अब रोम के लोगो ने मेसिना मे रहने वाले अपने पक्ष के लोगो को कार्थेज के लोगो को मेसिना के बाहर निकाल देने के लिए खूब भड़काया। इस पर कार्थेज और रोम मे मनमुटाव बढ़ गया और सन् २६४ ई० पू० मे रोम ने मेसिना के रोम वालो की सहायता देने के बहाने से कार्थेज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यह लड़ाई लगभग चौबीस वर्ष तक होती रही। दोनो ओर विजय और पराजय होती रही परन्तु अंत में रोम ही विजयी हुआ।

इस प्रकार सन् २६४ पू० मे युद्ध आरम्भ हो गया और रोम की एक बड़ी भारी सेनाने सिसली की ओर प्रस्थान कर दिया। सिरेक्यूज के राजा हायरो ने रोम से हार मान ली और रोम को दो सौ टैलंट क्षति पूर्त्ति के लिए दिया तथा रोम का मित्र बन गया। इसके बाद रोम की सेना ने कार्थेज की सेना को भी हरा दिया औ मेसिना पर अधिकार कर लिया। इसमे सदेह नहीं कि रोम के लागो के पास जहाजी बेड़ा नहीं था, तथापि जमीन पर लडने वालो की रोम मे कमी नहीं थी। रोम के लोग अपने देश के लिए और कार्थेज की सेना वेतन के लिए लड़ती थी। जब कार्थेज वालों को रोम ने स्थल पर हरा दिया तब उन्होंने अपने जहाजों की सहायता से इटली के समुद्री किनारे के शहरों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। इन सब घटनाओं को देखकर रोम के लाग अब समझ गये कि जहाजी बेड़ा के बिना कार्थेज वालों का सामना करना कठिन है। इसलिए रोम के लोगो ने भी जहाजी बेड़े के बनाने का अन्तिम निश्चय कर लिया परन्तु ये जहाज़ बनाना तो जानते ही नहीं थे। इसी समय सयाग वश कार्थेज-नगर का एक जहाज इटली के एक किनारे पर डूब गया। अब रोम के लोगो ने उस जहाज को निकाल लिया और उसे देख देख कर उसी नमूने का जहाज बनाना प्रारम्भ कर दिया और दो महीने के भीतर ३० उत्तम जहाज बना डाले। जहाज बनाने के साथ ही साथ, इन लोगों ने मल्लाहो के कामों को भी सीखना प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रकार रोम के लागो का पहला जहाज़ २६० ई० पू० बन कर तैयार हो गया। और उन के केवल लडना ही नहीं प्रारम्भ की। इसके बाद माइली नामक और स युद्ध में राम

जहाजों को डुबा दिया और तीस जहाजो को अपने अधिकार में कर लिया।

सन् २६० ई० पू०, में रोम की समुद्री सेना ने एकबार माइली स्थान पर और दूसरी बार इकोनोमस स्थान पर सन् २५६ ई०पू० में अच्छी तरह से विजय प्राप्त की। इन विजयो से रोम वालो का साहस बहुत बढ़ गया तब उन्होने रेग्यूलस को १३० जहाज और एक लाख सेना दी और मारसियस रेग्यूलस ने अपनी सेना के साथ अफ्रिका की ओर प्रस्थान कर दिया और कार्थेज के प्रान्तो मे हलचल मचा दिया। अब कार्थेज के लोग भयभीत हो गये और सधि का प्रस्ताव रेग्यूलस के यहाँ भेजने लगे। इस पर मारसियस रेग्यूलस ने कहा कि यदि कार्थेज रोम की अधीनता स्वीकार करले तो सधि हो सकती है परन्तु कार्थेज वालों ने ऐसी अपमान जनक सन्धि नहीं स्वीकार की और फिर युद्ध ठन गया। अब कार्थेज निवासी अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए प्रयत्न करने लगे और पानी की तरह रुपये को इस काम में लगा दिया। और स्पार्टा के एक सरदार से सहायता ली क्योकि स्पार्टा के लोग युद्ध-विद्या में निपुण हुआ करते थे। इन लोगो ने एक बड़ी भारी सेना एकत्रित की और बड़ी बुरी तरह से रेग्यूलस को लड़ाई में हरा दिया और उसे कैद कर लिया। रेग्यूलस की विजय सम्बन्धी लूट का माल लाने के लिए एक जहाज का बेड़ा अफ्रिका भेजा गया था। यह तूफान में डूब गया। जिस समय रेग्यूलस कार्थेज मे लड़ाई कर रहा था, उसी समय सिसली मे भी रोम और कार्थेज में युद्ध हो रहा था। वहाँ पर रोम के लोग विजयी हुए थे और उन लोगो ने कार्थेज के बहुत मनुष्यों को कैद कर लिया था। इसलिये कार्थेज वाले चाहते थे कि प्रत्येक दूसरे के कैदियों को लौटा दे। इसी विचार से कार्थेज वालों ने रेग्यूलस को रोम में भेजा। वे चाहते थे कि रेग्यूलस इस

प्रस्ताव को सीनेट के सामने रखे और यदि सीनेट इसे अस्वीका करे तो रेग्यूलस कार्थेज मे लौट आवे। जब रेग्यूलस रोम पहुँच तब उसने यही कहा कि आप लोग कार्थेज के कैदियो को कभी छोडिए, क्योंकि ऐसा करने मे रोम की हानि है। रेग्यूलस यह भ अच्छी तरह मे जानता था कि कार्थेज वाले उसे कुत्ते की मौत मा डालेंगे परन्तु उसने अपनी जान को कुछ भी चिन्ता नहीं की औ कार्थेज जाने को तैयार हो गया। स्वार्थ ने देश प्रेम के आगे सि झुका दिया। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार, अपने कुटुम्ब देश तथ मित्रों को अन्तिम प्रणाम करके रेग्यूलस कार्थेज लौट गया औ शीघ्र ही कार्थेज वालो ने उसे कष्ट के साथ मार डाला।

कई वर्षों तक युद्ध होता रहा। सन् २५८ ई०पू० और २३८ ई पू० में भी रोम की सेना ने कार्थेज वालो को हरा दिया। सन् २४ ई० पू० मे रोम ने एक दूसरा समुद्री तथा जहाजी बेड़ा तैयार कर लिया और बडे उत्साह के साथ लड़ना प्रारभ कर दिया औ इगैटीज द्वीप के पास कार्थेज वालों को बुरी तरह से हरा दिया इसमें सन्देह नहीं कि अभी किसी की भी विजय नहीं हुई थी परन्तु अब कार्थेज वाले लड़ते लड़ते थक गये थे। रोम मे यही एक प्रधान गुण था कि वह कभी निरुत्साह होता ही नहीं था और सदा धैर्य से काम लेता था। अपने इसी एक गुण के कारण भी रोम कई बार विजयी हुआ।

इसी समय कार्थेज मे एक अच्छा सेनापति पैदा हो गया था। इसका नाम हैमिलकार था और यह जगत् प्रसिद्ध हैनीबल का पिता था। यह शूर और चतुर था। हेमिलकार ने कार्थेज में यह प्रस्ताव किया कि इस समय रोम से संधि कर लेना ही अच्छा जान पड़ता है। इस प्रकार सधि कर के कुछ अवकाश प्राप्त करना

चाहिए और इस अवसर मे रोम से युद्ध करने के लिए खूब अच्छी तरह से तैयारी कर लेनी चाहिए।

इसी उद्देश्य से सन् २४१ ई० पू० मे कार्थेज ने रोम से सन्धि करने का प्रस्ताव किया और रोम की सब शर्त्तें को स्वीकार भी कर लिया। इस सन्धि के अनुसार कार्थेज वालो ने क्षतिपूर्त्ति के लिए रोम को दस वर्ष के भीतर ही भीतर बहुत धन (३२००) टैलेंट) देने की प्रतिज्ञा की और सारी-सिसली को खाली कर दिया। इस सन्धि की शर्त्तों के अनुसार कार्थेज ने रोम के सब बंदियो को भी मुक्त कर दिया। इस प्रकार अब सिसली रोम का एक प्रांत बन गया और रोम का झंडा सिसली द्वीप पर उड़ने लगा और पहली ही बार रोम का अधिकार इटली के बाहर के देश मे हुआ। इसी समय मे रोम के प्रांतीय शासन का सूत्र पात हुआ। सिसली के प्रबन्ध के लिए एक मजिस्ट्रेट नियुक्त हुआ, जो प्रीटॅर कहलाता था। इस प्रकार प्रथम प्यूनिक-युद्ध का अंत हुआ। इस लड़ाई के बाद अब कार्थेज की जहाज की प्रधानता जाती रही।

कारसिका और सारडीनिया पर रोम का अधिकार

प्रथम प्यूनिक-युद्ध के अंत होने के थोड़ेही दिन बाद कारसिका और सारडीनिया वाले—जो अब तक कार्थेज के अधीन थे—कार्थेज से रुष्ट हो गये और इन लोगो ने रोम की अधीनता स्वीकार कर ली। बात यह हुई कि कार्थेज वाले नियत समय पर यहाँ के सिपाहियों को वेतन नहीं दे सके इसलिए इन लोगो ने बलवा कर दिया। रोम ने भी इसे उचित समय समझ कर हस्तक्षेप किया और इन्हें अपने अधिकार मे कर लिया।

प्रथम आर द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के बीच की घटनाएँ

प्रथम तथा द्वितीय-प्यूनिक युद्ध के बीच मे इलीरीया और गाल से युद्ध के अतिरिक्त और कोई महत्व पूर्ण घटना नहीं हुई।

इलीरिया से युद्ध

इलीरिया के रहने वाले प्राय समुद्री लुटेरे थे और एड्रियटिक समुद्र के व्यापारी जहाजों को प्राय लूट लिया करते थे और उन्हें बहुत तग किया करते थे। रोम ने इलीरिया की ट्यूटा नामक रानी के यहाँ दूत भेजा और उस से कहलाया कि वह ऐसा प्रबन्ध करे कि भविष्य में ये फिर लूट-पाट न करें। परन्तु ट्यूटा ने इनका कोई संतोष जनक उत्तर नहीं दिया और जब रोम के दूत लौट रहे थे, उसने रास्ते में उन्हें मरवा डाला। इसलिए रोम ने २०० जहाजों का बेड़ा इलीरिया की ओर भेजा। इस बेडे ने इन समुद्री लुटेरो के अड्डों को नष्ट कर दिया और उस देश की कुछ जातियों को भी अपने अधीन कर लिया। इस विजय का दूसरे नगरों पर बडा अच्छा प्रभाव पड़ा क्योंकि एपोलोनिया, एपीडेमनस तथा कोरसिर द्वीप के लोगों ने भी रोम के साथ मित्रता कर ली। इस प्रकार २२६ ई० पू० में प्रथम बार रोम का, यूनान से सम्बन्ध हुआ। इसी समय यूनान में मैसेडोनिया के राजा की शक्ति बढ़ रही थी। जब इलीरिया वालो ने यूनान की बढ़ती हुई शक्ति को देखा तो उन्होने रोम की पराधीनता छोड़ देने और मैसेडोनिया के राजा की अधीनता स्वीकार करने का विचार किया। इस प्रकार अपने को सुरक्षित समझ कर उसने समस्त इटली पर अपना अधिकार जमाना चाहा। इसलिए रोम ने फिर उसके विरुद्ध एक बड़ी भारी सेना भेजी और फिर वह रोम के अधिकार में आ गया। इसके बाद रोम के लोग सदा मैसीडोनिया

ापत्तियों की सहायता करते रहे और मैसोडोनिया के लोग भी
ाम को अपना शत्रु समझते रहे।

गालों से युद्ध

सन् २३६ ई० पू० से केल्ट-जाति के लोग इटली के उत्तरी भाग
। आकर बस गये थे और फिर ये धीरे धीरे दक्षिण भाग की ओर
ासना चाहते थे। इन्होंने रोम के कुछ नगरों पर भी अधिकार
र लिया था परन्तु आपस में फूट हो जाने के कारण से ये आगे
हीं बढ़ सके। सन् २३२ ई० पू० में रोम ने इन गालों के देश के
ास ही पाइसीनम नगर को अपना उपनिवेश बनाना प्रारम्भ किया,
ो गाल लोगों को रोम का यह काम बहुत बुरा लगा और उन्होंने
क बड़ी भारी सेना एकत्रित कर ली तथा रोम-राज्य के नगरों
ो भी लूटना प्रारम्भ कर दिया। अन्त में रोम को इन गालों से
वशेष हानि की सम्भावना मालूम पड़ने लगी और सन् २२५ ई०
० में रोम वालों ने इन पर आक्रमण करने का विचार करना
ारम्भ कर दिया और सब से पहले रोम की प्राचीन प्रथा के अनु-
ार उन्होंने एक गाल और एक यूनानी स्त्री पुरुष के एक जोड़े को
क देवता को भेंट चढ़ाया और देवता के मन्दिर के नीचे उन्हें
ीवित ही गड़वा दिया। इसके बाद रोम की सेना ने गालों से
लड़ने के लिए प्रस्थान किया और गालों को एट्रूरिया नामक
स्थान पर चारों ओर से घेर लिया। टेलामन नामक स्थान पर एक
ोर संग्राम हुआ जिसमें रोम ने गालों की सेना को अच्छी तरह से
राजित किया। अब रोम के लोगों ने अपने मन में दृढ़ निश्चय
र लिया कि समस्त गालों को अवश्य ही अपने अधिकार में
र लेगें। इसी विचार से इन लोगों ने गालों पर इधर उधर
मला करना प्रारम्भ कर दिया। रोम ने अब क्लैस्टीडियम नामक

स्थान पर गालों को अच्छी तरह से हरा दिया और मैडियोलैनम—जिसे आजकल मिलन कहते हैं—को भी अपने अधिकार में कर लिया। इसके बाद रोम ने गाल वालों के देशों मे अच्छी २ सड़कें भी बनवाई और कई किले भी बनवाए। म्यूटिना, प्लेसेंशिया और क्रीमोना नामक स्थानो पर भी इन्होंने दृढ़ दुर्गों का निर्माण किया। इस प्रकार रोम के लोगों ने केवल गाल वालों के देशो को जीता ही नहीं किन्तु अपनी शक्ति को भी गाल में दृढ़ कर लिया।

नवाँ अध्याय

हैनीवलीय अथवा द्वितीय प्यूनिक-युद्ध
(२१८-२०१ ई० पू०)

द्वितीय प्यूनिक युद्ध लगभग सत्रह वर्ष तक होता रहा। इस युद्ध की छोटी छोटी कई घटनाएँ भी भारी भारी तथा प्रसिद्ध लडा-इयों के समान हैं। इसलिए सुगमता के लिए इस युद्ध का समय निम्नलिखित चार भागों में विभाजित किया जा सकता है —

(१) द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के पहले की प्रसिद्ध घटनाएँ (२) लड़ाई का प्रथम काल (३) लड़ाई का द्वितीय काल और (४) लड़ाई का तृतीय काल।

(१) द्वितीय-युद्ध के पहले की घटनाएँ

प्रथम प्यूनिक-युद्ध के बाद सन् २१८ ई० पू० तक रोम में शान्ति रही। इस बीच में रोम ने आल्प्स पर्वत तक अपना राज्य बढ़ा लिया था और फ्रांस वालों को पराजित करके वहाँ भी अपना अधिकार जमा लिया था। इसी समय सार्डीनिया में कार्थेज निवा-सियों तथा उसके सिपाहियों ने विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। वहाँ पर शान्ति स्थापन करने के बहाने से रोम ने आक्रमण कर दिया और वहाँ के लोगों को बुरी तरह से पराजित किया तथा वहाँ पर अपना अधिकार जमा लिया। रोम ने इस समय बहुत कार्थेज निवासियों को दास बना लिया था और कुछ लोगों को बेंच भी दिया था। कार्थेज वालों ने रोम से इस सम्बन्ध में एक दूत के

द्वारा शिकायत की और रोम से इस प्रश्न को फिर से हल के लिए प्रार्थना की परन्तु रोम वालों ने कार्थेज से कहा—" प्रकार दूत भेज कर कार्थेज ने हम लोगो का घोर अपमान किया है। अतएव दंड-स्वरूप उसे एक हज़ार टैलेंट अवश्य देना चाहिए।" इतना ही नहीं रोम ने उस से एक हजार टैलेंट जबरदस्ती वसूल भी किया। जब कार्थेज के प्रसिद्ध वीर तथा नेता हेमिल्कार ने इन सब बातो को सुना तो क्रोध के मारे उसकी आँखें लाल हो गईं रोम से वह उसी समय से घृणा करने लगा और उससे बदला लेने का उपाय सोचता रहा। इस समय उसका पुत्र हैनीबल न वर्ष का था। हेमिल्कार ने उसे वेदी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया और फिर अन्त मे उसका हाथ वेदी पर रख कर उससे शपथ करवा ली कि जब तक हैनीबल जीवित रहेगा सदा रोम से शत्रुता रखेगा और युद्ध करके उससे बदला लेगा।

हेमिल्कार स्पेन में

पहले कार्थेज का, सिसली, कारसिका और सारडीनिया राज्य था परन्तु अब उसका अधिकार उन पर नहीं रह गया अतएव उन्हे व्यापार करने में कठिनाई पड़ने लगी। इसलिए हेमिल्कार ने सोचा कि स्पेन में जा कर वहाँ पर कार्थेज वालों का अधिकार जमाना चाहिए। इसलिए शीघ्रही स्पेन में हेमिलकार ने एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर दिया। हेमिल्कार ने अपने मन में यह भी सोचा था कि यदि रोम पर हमला करना होगा, तो स्पेन से अधिक सुगमता होगी। धीरे धीरे हेमिल्कार ने वहाँ की कई जातियो को पराजित कर दिया और रोम वाले भी अब उस से डरने लगे। इसलिए रोम वालो ने कार्थेज और रोम की सीमा को निश्चित कर देने का प्रयत्न किया और बिना किसी लड़ाई के एक

नदी दोनों के बीच की सीमा नियत हो गई। हेमिल्कार थोड़े ही दिन के बाद स्पेन ही में मर गया। मृत्यु शय्या पर से भी उसने पुत्र को वेदी पर हाथ रखकर की गई हुई प्रतिज्ञा को स्मरण दिलाया और इस समय भी पुत्र ने पिता को रोम से बदला लेने के प्रयत्न करने का पूर्ण रूप से विश्वास दिलाया। हेमिल्कार के मरने के बाद हैनीवल तथा हसड्रूबल ने स्पेन का प्रबन्ध करना प्रारम्भ किया था।

(२) लड़ाई का प्रथम काल (२१८-२१६ ई० पू०)

युद्ध का कारण

द्वितीय प्यूनिक-युद्ध का प्रधान कारण कार्थेज वालों के बदला लेने का विचार था। प्रथम प्यूनिक-युद्ध मे ये बुरी तरह से हार गये थे और अब उसका बदला लेना चाहते थे। लड़ाई के बाद भी रोम ने कारसिका और सारडीनिया आदि को अपने अधिकार में कर लिया था। इससे कार्थेज वालों का अपमान भी हुआ और व्यापारिक-हानि भी, अभी तक दोनों के हृदयों में वैराग्नि धधक रही थी।

हैनीवल बहुत दिनों से रोम से युद्ध करने की तैयारी कर रहा था। सन् २१९ ई० पू० में उसने देखा कि वह रोम से युद्ध करने के लिए सब तरह से तैयार है। इसलिए रोम से झगड़ा करने का वह बहाना ढूढ़ने लगा और शीघ्र ही ढूढ़ भी निकाला। स्पेन के पूर्वी किनारे पर सैगेंटम नामी एक देश था। वास्तव में यह रोम का मित्र था और कार्थेज से इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं था। हैनीवल ने रोम के साथ युद्ध छेड़ने के विचार से, रोम के मित्र, इसी नगर—सैगेंटम—पर हमला कर

दिया और आठ महीने के घोर परिश्रम के बाद उसे ले भी लिया। सैगेंटम की दीवारें बड़ी ऊँची थीं। इसलिए हैनीबल उसका कुछ न बिगाड़ सका परन्तु उसे चारों ओर से घेर लिया। नगर के लोग भोजन-सामग्री घट जाने के कारण घबड़ा गये। परन्तु जीते जी ये शत्रु की शरण में जाना नहीं चाहते थे। इसलिए इन लोगो ने अपनी सारी सपत्ति जला दी और स्वय भी अग्नि में जल मरे। जब हैनीबल ने उस नगर पर अपना अधिकार किया, तब उसमें एक भी मनुष्य नहीं था। यह समाचार सुनकर रोम में बडा विवाद हुआ कि लडाई करनी चाहिए या नहीं। प्लेब लोग तथा साधारण जनता युद्ध के विरुद्ध थी परन्तु सरदारो के निश्चय के अनुसार युद्ध करना ही तै हुआ।

रोम ने अपने प्रतिनिधियो को इस अनुचित काम की शिकायत करने के विचार से कार्थेज भेजा। ये सब प्रतिनिधि कार्थेज की परामर्श-समिति में बुलाए गये। सभा में रोम के प्रतिनिधियों ने कहा—"हैनीबल ने रोम के मित्र सैगेंटम पर बिना कारण ही हमला किया है तथा उसे अपने अधिकार मे कर लिया है। इसलिए आप लोग हैनीबल को रोम के हाथ मे दे दीजिए और सैगेंटम को जो हानि पहुँची है, उसे पूरा कर दीजिए। यदि आप लोग ऐसा करना पसद न करें तो आप लोगों को रोम से युद्ध करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। हम आप लोगो के लिए युद्ध और सुलह दोनों ले आए हैं।"

कार्थेज के लोगो ने रोम के प्रतिनिधियो की पहली बात को अस्वीकार कर दिया और रोम से युद्ध करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सन् २१८ ई० पू० में रोम और कार्थेज में दूसरी लड़ाई छिड़ गई—इसी को द्वितीय प्यूनिक-युद्ध कहते हैं।

लड़ाई के प्रथम काल की कुछ घटनाएँ

प्रथम प्यूनिक-युद्ध के समय से ही कार्थेज के जहाज़ी-बेड़े का दिवाला निकल गया था और रोम वालों ने भी अब जहाज बनाना सीख लिया था। इसलिए हैनीबल ने अपने मन में पहिले ही निश्चय कर लिया कि रोम पर उत्तर की ओर तथा स्थल मार्ग से हमला करना चाहिए। हैनीबल वास्तव में बड़ा बुद्धिमान तथा एक अच्छा राजनीतिज्ञ था। उसने सोचा कि हाल ही में रोम ने गालों को जीता है और गाल लोग इटली के उत्तर में बसे हैं। यदि हम इनके देश में पहुँच जायँगे तो ये अवश्य ही हमारी ओर मिल जायँगे क्योंकि ये भी रोम से बदला लेने का विचार कर रहे हैं। हैनीबल ने यह भी सोचा कि यदि मैं दो तीन लड़ाइयों में रोम के सिपाहियों को हरा दूँगा तो रोम के अधिक मित्र हमारी ओर मिल जायँगे और तब रोम को पराजित करना बहुत सुगम हो जायगा।

रोम के लोगों ने हैनीबल की बातों तथा उपायों को समझा ही नहीं। इन लोगों ने तो समझा कि रोम और कार्थेज की लड़ाई अब स्पेन देश में ही होगी। अतएव इन लोगों ने अपने एक प्रसिद्ध जनरल सीपियो को हैनीबल की गति रोकने के लिए स्पेन भेज दिया। परन्तु इससे, हैनीबल से भेंट नहीं हुई क्योंकि इसके आने के पहले ही हैनीबल वहाँ से चला गया था।

सन् २१८ ई० पू० में हैनीबल ने स्पेन से रोम की ओर प्रस्थान कर दिया। अपने विचार को कार्यरूप में परिणत करने के लिए उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु इसने सब को पार किया। कहा जाता है कि हैनीबल के मार्ग में जितनी कठिनाइयाँ थीं, उनमें से एक एक भी साधारण मनुष्य के लिए अजेय हो जाती।

हैनीवल ने पहले एक नदी को पार किया। यहाँ पर भी उसके शत्रु लोग, उसके मार्ग मे रोड़ा अटका रहे थे परन्तु उसने उन्हे हरा दिया और पश्रो नदी को पार कर लिया। इसके बाद वड़ी कठिनता से पीरिनीज पहाड़ को तै किया और तब रोहन नदी को पार किया। इस नदी पर गालो ने उसे रोकने का घोर प्रयत्न किया परन्तु हैनीवल ने उन्हें हरा दिया। कसल सिपियो भी हैनीवल को रोकना चाहता था परन्तु हैनीबल अपने सिपाहियों के साथ वड़ी तेजी से आगे निकल जाता था और सिपियो उसको नहीं रोक सका। अन्त में इसने अल्पस पहाड़ को भी तै किया और इटली में पहुँच गया। जब वह इटली में पहुँचा तो .. सिपाहियो की संख्या केवल आधी ही रह गई थी और सिपाही मार्ग में ही मर गये थे।

हैनीवल की यह यात्रा रोम के इतिहास में एक महत्व पूर्ण और प्रसिद्ध घटना है। हैनीवल वड़ी तीव्र गति से आगे वढ़ता था और जिस स्थान पर रोम उसे रोकना चाहता था, वहाँ से .. पहले ही आगे निकल जाता था। अन्त मे इन सब कठिनायों .. पार करके हैनीवल इटली मे पहुँच ही तो गया।

इटली में हैनीवल की लड़ाई

इटली मे आते ही आते हैनीवल विजयी हुआ। सब से पहले उसने ट्युरिन पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद टिसि.. की लड़ाई में हैनिबल ने सीपियो को हरा दिया। इस लड़ाई .. सीपियो घायल हुआ और लड़ाई के मैदान से पीछे हट गया। यहाँ से हैनीवल को रोम के जीतने की सम्भावना स्पष्ट होने लगी सीपियो तथा सेंप्रोनियस की संयुक्त सेना को हैनीवल ने .. नदी के पास हरा दिया। इसलिए इन लोगो को यह देश छोड़

आगे चला जाना पड़ा। इस प्रकार बहुत ही शीघ्र इटली का उत्तरी भाग हैनीबल के अधिकार मे आ गया। अब गालदेश के निवासियो ने हैनीबल के साथ मित्रता का बर्ताव करना प्रारम्भ कर दिया और जैसा कि हैनीबल को पहले ही से आशा थी धीरे धीरे इटली के लोग रोम के आधिपत्य को अस्वीकार और हैनीबल के अधिकार को स्वीकार करने लगे।

अब हैनीबल आरनो नदी के दलदलो मे होता हुआ आगे बढ़ा। इस समय उसके बहुत आदमी मर गये और घोड़े भी नष्ट हो गये। इस समय फ्लेमियस नामक कंसल तथा रोम का जनरल, ट्रासमियन नामक झील पर हैनीबल से युद्ध करने के लिए तैयारी कर रहा था। हैनीबल ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसे बुरी तरह से पराजित किया तथा रोम की सारी सेना तथा फ्लेमियस को मार डाला। अब हैनीबल सीधे रोम की ओर जा सकता था और स्वयं रोम पर ही हमला कर सकता था क्योंकि अब मार्ग मे उसे रोकने वाला कोई नहीं रह गया था। तथापि उसने दक्षिणी इटली में ही जाना अच्छा समझा। वह चाहता था कि स्वयं इटली के लोग ही रोम के विरुद्ध हो जायँ और तब रोम पर हमला करें। इसके सिवाय उसके सिपाही नगर घेर कर उसे अपने अधिकार में करने की कला भी नहीं जानते थे। इन सब कारणों से उसने सीधे रोम पर हमला नहीं किया।

अब रोम में हाहाकार मच गया। रोम में कोई कुछ कहता था और कोई कुछ। कोई कहता था कि हैनीबल ने रोम पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान कर दिया है और कोई कहता था कि अब हम लोगों की जान नहीं बचेगी। परन्तु इस समय भी रोम के कुछ लोग दृढ़ थे और हैनीबल के हराने का तरह तरह का उपाय

सोच रहे थे। रोम मे घर घर रोना पीटना देख कर नगर में यह ढिढोरा पिटवाया गया कि कोई भी आदमी सड़क पर अथवा घरमे जोर से न रोए नहीं तो रोम की वीरता कम हो जायगी और उसकी वीर-श्री मन्द पड़ जायगी।

इसी समय फेवियस मैक्सीमस रोम का डिक्टेटर बनाया गया। इसने हैनीबल से युद्ध करने का विचार ही छोड़ दिया क्योंकि वह भली भाँति समझ गया कि हैनीबल को युद्ध मे पराजित करना कठिन है। उसने यथाशक्ति हैनीबल की शक्ति के घटाने का ही प्रयत्न किया। इसमे सन्देह नहीं कि मैक्सीमस की नीति बुरी नहीं थी परन्तु रोम के लोगो ने इसे पसन्द न की और उसका नाम "विलम्बकर्ता" रख दिया। इस समय रोम के कुछ लोग डरके मारे थर थर कॉप रहे थे। हैनीबल भी इस समय मनमाना लूट मार किया करता था और रोम की प्रजा को तरह तरह से तंग करता था। इसके सिवाय रोम के लोगो को यह भी भय था कि यदि हैनीबल अधिक दिन तक इटली मे रह जायगा तो यहाँ की अन्य जातियाँ भी उस से मिल जायॅगी। इसलिए रोम ने वारो और पैालस नामक दो रोमियों को कसल चुना और उनसे हैनीबल पर शीघ्र ही आक्रमण करने की प्रार्थना की। रोम के लोगो ने हैनीबल को हराने के विचार से इस बार घोर प्रयत्न किया और हैनीबल की सेना से दुगुनी सेना तैयार की। कैनी नामक स्थान पर सन् २१६ ई० पू० मे एक घोर संग्राम हुआ जिसमें हैनीबल ने रोम को अच्छी तरह से हरा दिया। इस लड़ाई मे एक कसल भी मारा गया। कहा जाता है कि इस लड़ाई मे रोम के एक लाख लगभग सिपाही मारे गये थे और हैनीबल के बहुत कम। इस हार से रोम को हैनीबल के पराजित करने की आशा जाती रही।

अब भी हैनीवल ने रोम पर आक्रमण नहीं किया। अब भी वह प्रतीक्षा करना चाहता था और इटली के लोगों को अपनी ओर मिलाना चाहता था। दक्षिणी-इटली के लगभग सब लोगों ने—लैटिन-उपनिवेशों को छोड़ कर—रोम के आधिपत्य को अस्वीकार कर दिया और हैनीवल की अधीनता स्वीकार करली। अब हैनीवल ने कम्पेनिया में प्रवेश किया और कैपुआ नामक धनिक नगर ने हैनीबल के लिए अपना फाटक खोल दिया और उसका स्वागत किया। हैनीवल ने जाड़े में यहीं रहने का विचार किया। इस प्रकार द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के प्रथम काल का अंत हुआ। इस काल में हैनीबल की सदा विजय ही विजय होती रही।

लड़ाई का द्वितीय काल (२१९-२०७ ई० पू०)

अब हैनीवल को कैपुआ में सुस्ताना आवश्यक हो गया परन्तु यहीं से हैनीवल के पतन का भी श्रीगणेश होगया। इसके सिपाहियों का चरित्र शहर के संसर्ग से दूषित हो गया और उनकी देख-रेख भी भली भाँति नहीं हो सकी, हैनीवल, इटली के लोगों की सहायता से रोम पर विजय पाने की इच्छा रखता था। परन्तु कैनी के हार के बाद रोम ने अपनी लड़ाई का ढंग ही बदल दिया। अब ये हैनीबल से लड़ना तो चाहते ही नहीं थे परन्तु अन्य रीतियों से उसकी शक्ति के कम करने का प्रयत्न करते थे और अवसर पाने पर उसकी सेना को लूट लेते थे। हैनीवल ने टेरेंटम पर भी अपना अधिकार कर लिया। परन्तु इन लड़ाइयों में हार होने पर भी रोम ने धैर्य से काम लिया। अब रोम के कुछ लोग तो इतना डर गये कि रोम से बाहर चले जाने का विचार करने लगे। परन्तु सीनेट ने उन्हें पकड़ मँगाया और उन्हें सजा दी, हैनीवल ने रोम के बहुत से सिपाहियों को कैद कर लिया था और सोचता था कि इनके बदले हम रोम वालों से बहुत सा धन लेंगे।

सोच रहे थे। रोम मे घर घर रोना पीटना देख कर नगर में यह ढिढोरा पिटवाया गया कि कोई भी आदमी सड़क पर अथवा घरमे ज़ोर से न रोए नहीं ते रोम की वीरता कम हो जायगी और उसकी वीर-श्री मन्द पड़ जायगी।

इसी समय फेबियस मैक्सीमस रोम का डिक्टेटर बनाया गया। इसने हैनीबल से युद्ध करने का विचार ही छोड़ दिया क्योंकि यह भली भाँति समझ गया कि हैनीबल को युद्ध मे पराजित करना कठिन है। उसने यथाशक्ति हैनीबल की शक्ति के घटाने का ही प्रयत्न किया। इसमे सन्देह नहीं कि मैक्सीमस की नीति बुरी नहीं थी परन्तु रोम के लोगो ने इसे पसन्द न की और उसका नाम "विलम्बकर्ता" रख दिया। इस समय रोम के कुछ लोग डरके मारे थर थर काँप रहे थे। हैनीबल भी इस समय मनमाना लूट मार किया करता था और रोम की प्रजा को तरह तरह से तंग करता था। इसके सिवाय रोम के लोगो को यह भी भय था कि यदि हैनीबल अधिक दिन तक इटली में रह जायगा ते यहाँ की अन्य जातियाँ भी उस से मिल जायँगी। इसलिए रोम ने वारा और पौलस नामक दो रोमियों को कसल चुना और उनसे हैनीबल पर शीघ्र ही आक्रमण करने की प्रार्थना की। रोम के लोगो ने हैनीबल को हराने के विचार से इस बार घोर प्रयत्न किया और हैनीबल की सेना से दुगुनी सेना तैयार की। कैनी नामक स्थान पर सन् २१६ ई० पू० मे एक घोर सग्राम हुआ जिसमे हैनीबल ने रोम को अच्छी तरह से हरा दिया। इस लड़ाई में एक कसल भी मारा गया। कहा जाता है कि इस लड़ाई मे रोम के एक लाख लगभग सिपाही मारे गये थे और हैनीबल के बहुत कम। इस हार से रोम को हैनीबल के पराजित करने की आशा जाती रही।

ाता है, तो अधिक सेना भेजने की क्या आवश्यकता है। इसके
ाघाय वे हैनीबल से अब डरने भी लग गये थे। ये समझते
कि अधिक शक्तिशाली होने पर कदाचित् हैनीबल राजा
न बैठेगा।

रोम ने भी इस समय शत्रुओं से लड़ने के लिए खूब तैयारी
ी। रोम में जितने लोगों की अवस्था सत्रह वर्ष से अधिक थी, वे
ाके सब सेना में भरती कर लिए गये। सबसे पहले रोम ने
पुआ नगर पर हमला किया। हैनीबल उसकी रक्षा न कर सका।
सलिए रोम के लोगों ने कैपुआ नगर पर अधिकार कर लिया।
सके अनन्तर इन लोगों ने टैरेंटम को भी हैनीबल से छीन लिया।
ाब रोम के सब नगर तथा लोग डरने लग गये जिन्होंने रोम का
ाथ छोड़ दिया था और हैनीबल के अधिकार को स्वीकार कर
ाया था। इसलिए इटली के इन नगरों ने अब हैनीबल का साथ
ोड़ दिया और रोम से मिल गये। इस समय हैनीबल के भाग्य
ा सूर्य अस्ताचल की ओर जाने लगा था।

इसमें सदेह नहीं कि कैपुआ और टैरेंटम हैनीबल के अधिकार
ा निकल गये थे परन्तु फिर भी हैनीबल ने मारसेलस और
क्रस्पीनस नामक दो कसलों की सयुक्त सेना को एक स्थान पर
ुरी तरह से हरा दिया और रोम के सर्वश्रेष्ठ जनरलों को इसी
ाड़ाई में मार डाला। यही हैनीबल की अंतिम विजय थी।

हैनीबल का भाई हसड्रुबल स्पेन में रोम की सेना से लड़
हा था। परन्तु उसने इटली में जाकर हैनीबल की सहायता देना
ी अब उत्तम समझा और इटली में पहुँच भी गया और अपने
ाई हैनीबल के पास, रोम में अपने पहुँच जाने का समाचार देने
े लिए एक दूत को हैनीबल के पास भेजा। परन्तु यह दूत मार्ग
ी में पकड़ लिया गया। इससे सारा भेद खुल गया और रोम

परन्तु इस विचार से जब हैनीबल का आदमी रोम पहुँचा तो सीनेट ने उसे रोम के बाहर अपमान के साथ निकलवा दिया। इस अवसर पर रोम ने कहा—" जाओ, हम लोग ऐसे मनुष्यों को सोना दे कर नहीं ले सकते जो जीते जी शत्रुओं के हाथ में पड़ जाते हैं और जो अपने देश के लिए मर मिटना नहीं जानते।"

राजनीति का यह एक अकाट्य सिद्धान्त है और इतिहास भी इसका मुक्त कंठ से समर्थन करता है कि किसी जाति की स्थायी विजय के लिए थोड़े दिन की विजय उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी अधिक दिन तक शक्ति बनी रहने की है। वही जाति अंत में विजय पाती है जिसकी शक्ति अधिक दिन तक बनी रहे और जिसके मित्र उसका साथ न छोड़ें। हैनीबल को आशा थी कि कैनी के युद्ध के पश्चात् रोम की सब जातियाँ हैनीबल की ओर मिल जायँगी। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं हुआ क्योंकि सारे लातिनी (Latin) नगर और रोम के सारे उपनिवेश सर्वदा रोम का साथ देते रहे। इसलिए रोम को जीतना कोई सहज काम नहीं था। रोम के जीतने के लिए रोम के सब बड़े बड़े नगरों को अलग अलग जीतना आवश्यक था।

सेना की प्रतीक्षा में तथा कैपुआ में जाड़ा बिताने के विचार से हैनीबल को कुछ दिन तक चुप चाप पड़ा रहना पड़ा। इस प्रकार रोम के लोगों को अवकाश मिल गया और इन लोगों ने पूरी तैयारी करली। हैनीबल ने अच्छी तरह से समझ लिया था कि रोम के जीतने के लिए एक बड़ी भारी सेना की आवश्यकता होगी और हैनीबल के पास कम सेना थी। इसलिए उसने कार्थेज वालों के यहाँ अधिक सेना भेजने के लिए लिखा और वह भी कई बार। परन्तु कार्थेज वालों ने कभी भी सेना नहीं भेजी। वहाँ के लोग समझते थे कि जब इतनी ही सेना से हैनीबल जीतता ही चला

ाता है, तो अधिक सेना भेजने की क्या आवश्यकता है। इसके
तवाय वे हैनीबल से अब डरने भी लग गये थे। ये समझते
कि अधिक शक्तिशाली होने पर कदाचित् हैनीबल राजा
न बैठेगा।

रोम ने भी इस समय शत्रुओं से लड़ने के लिए खूब तैयारी
ी। रोम में जितने लोगों की अवस्था सत्रह वर्ष से अधिक थी, वे
नके सब सेना में भरती कर लिए गये। सबसे पहले रोम ने
पुआ नगर पर हमला किया। हैनीबल उसकी रक्षा न कर सका।
सलिए रोम के लोगों ने कैपुआ नगर पर अधिकार कर लिया।
सके अनन्तर इन लोगों ने टेरेंटम को भी हैनीबल से छीन लिया।
ब रोम के सब नगर तथा लोग डरने लग गये जिन्होंने रोम का
ाथ छोड़ दिया था और हैनीबल के अधिकार को स्वीकार कर
लया था। इसलिए इटली के इन नगरों ने अब हैनीबल का साथ
ोड़ दिया और रोम से मिल गये। इस समय हैनीबल के भाग्य
ा सूर्य अस्ताचल की ओर जाने लगा था।

इसमें सन्देह नहीं कि कैपुआ और टेरेंटम हैनीबल के अधिकार
ो निकल गये थे परन्तु फिर भी हैनीबल ने मारसेलस और
क्रस्पीनस नामक दो कसलों की संयुक्त सेना को एक स्थान पर
ूरी तरह से हरा दिया और रोम के सर्वश्रेष्ठ जनरलों को इसी
लड़ाई में मार डाला। यही हैनीबल की अंतिम विजय थी।

हैनीबल का भाई हसड्रूबल स्पेन में रोम की सेना से लड़
हा था। परन्तु उसने इटली में जाकर हैनीबल को सहायता देना
ी अब उत्तम समझा और इटली में पहुँच भी गया और अपने
ाई हैनीबल के पास, रोम में अपने पहुँच जाने का समाचार देने
े लिए एक दूत को हैनीबल के पास भेजा। परन्तु वह दूत मार्ग
ी में पकड़ लिया गया। इससे सारा भेद खुल गया और रोम के

लोगों ने हसड्रूवल से ही लड़ाई करना अच्छा समझा। वे जानते थे कि यदि यह भी हैनीवल के पास पहुँच जायगा तो इन्हें जीतना और भी अधिक कठिन काम हो जायगा। मेटौरस नदी के मैदान मे एक घोर सग्राम हुआ जिसमे रोम की विजय हुई और इसी लड़ाई मे हसड्रूवल मारा भी गया। कासल नीरो ने इसके सिर को कटवा लिया और हैनीवल की सेना मे उसे फेंकवा दिया। जब हैनीवल ने इस सिर को देखा तो वह शोक और आश्चर्य के सागर मे डूबने-उतराने लगा। इसी सिर को देख कर हैनीवल को पता चला कि हसड्रूवल उसकी सहायता करने के लिए इटली मे आ गया था। इसके पहले उसने कभी ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोचा था। अन्त मे हैनीवल ने बड़े ज़ोरो से चिल्लाकर कहा —"अभागा कार्थेज! तेरा नसीब फूट गया!! आज तेरे भाग्य का फैसला हो गया!!!"

इस प्रकार अब हैनीवल की दशा रोम में बड़ी शोचनीय हो गई। कार्थेज ने उसे सहायता देना बद कर दिया था, रोम के सब जातियाँ अब रोम से मिल गई थीं उसका भाई जो उसके सहायता के लिए आ रहा था—मार डाला गया था और रोम में हैनीवल आज अकेला था। परन्तु फिर भी हैनीवल ने अपने धैर्य को नहीं छोड़ा और रोम के जीतने की उसकी आशा बनी ही रही। रोम निवासी उसे अब बहुत तग कर रहे थे परन्तु तौभी वह कार्थेज नहीं जाना चाहता था और एक-न-एक दिन रोम के जीतने की इच्छा करता था।

इसी समय सीपियो-बन्धुवों ने स्पेन पर आक्रमण कर दिया परन्तु ये लड़ाई मे मार डाले गये। इसी समय पी० कारनीलियस सीपियो ने स्वय स्पेन की सेना का भार लेने का प्रस्ताव किया और रोम के लोगो ने उसे स्वीकार भी कर लिया। वह वास्तव

बड़ा शूर और पराक्रमी था। उसके बाप दादे भी रोम की सेनापति रह चुके थे। वास्तव में वह युद्ध कला में भी बड़ा चतुर था सबसे पहले वह स्पेन भेजा गया। वहाँ पर उसने साम, दाम, दण्ड और विभेद की सहायता से स्पेन के अधिक लोगो को अपनी ओर मिला लिया। धीरे धीरे रोम की शक्ति स्पेन मे बहुत बढ़ गई और कार्थेज को सन् २०६ ई० पू० में स्पेन देश छोड़ देना पड़ा। इस प्रकार सीपियो ने रोम के अधिकार को स्पेन में स्थापित कर दिया। इसके बाद सीपियो रोम मे लौट आया। यहीं पर द्वितीय प्यूनिक युद्ध के द्वितीय काल का अन्त होता है।

लड़ाई का तृतीय काल (२०६-२०१ ई० पू०)

स्पेन से लौट आने के बाद पी० कारनीलियस सीपियो सन् २०५ ई० पू० में रोम का कसल चुना गया। सीनेट ने इसका घोर विरोध किया था परन्तु जनता इससे बहुत प्रसन्न थी। इस समय हैनीबल दक्षिणी-इटली में डटा हुआ था और रोम मे भावी-सग्राम की तैयारी कर रहा था और रोम के लोग उसे इटली से निकालने का उपाय सोच रहे थे। परन्तु सीपियो ने हैनीबल से दूर हटाने का एक दूसरा ही उपाय सोच निकाला। उसने कहा—"इस समय कार्थेज में सेना है ही नहीं। मै अफ्रिका जाकर स्वय कार्थेज नगर पर ही आक्रमण कर दूँगा। तब मख मार कर कार्थेज वाले हैनीबल को अपनी रक्षा करने के लिए वहाँ बुलाएँगे। इस प्रकार किसी की लड़ाई किए ही बिना हैनीबल यहाँ से चला जायगा।" सब लोगों ने सीपियो की इस बात को मान ली और सन् २०४ ई० पू० मे सीपियो ने अफ्रिका की ओर प्रस्थान कर दिया। वहाँ पहुँचकर इसने कार्थेज की सेना के तम्बू मे आग लगवा दी। इसलिए वहाँ के सब सैनिक घबरा कर भाग गये। रोम की सेना अब उन पर टूट पड़ी और सब लोगों को मार डाला। इस प्रकार

सीपियों ने कार्थेज की सब सेना को लड़ाई किए ही विना कर दिया। कार्थेज में हाहाकार मच गया और वहाँ के लोग बहु घबड़ा गये। इसलिए इन लोगों ने हैनीवल को रोम से बुला और हैनीवल को इनकी आज्ञा माननी पड़ी। सन् २०२ ई० पू० हैनीवल और सीपियो से ज़ामा नामके स्थान पर एक घोर हुआ जिसमें सीपियो ने हैनीवल को बुरी तरह से हरा दिया उसकी सेना को बुरी तरह से नष्ट कर दिया। सीपियो की अच्छी थी और बिलकुल ही थकी हुई नहीं थी इस युद्ध में के प्राण भी बड़ी कठिनाई से बचे थे। इसके सिवाय हैनीवल की सेना इस समय बहुत ही थक गई थी और लड़ाई करने योग्य ही नहीं। अब कार्थेज वालों के पास कुछ भी सेना नहीं रह इसलिए विवश होकर उन्हें सन्धि करनी पड़ी। जब इस विजय का समाचार रोम में पहुंचा, तब सीनेट ने कार्थेज के लोगों का नाम तथा अस्तित्व के मिटा देने के लिए सीपियो से और यह भी कहा कि हैनीवल को पकड़ कर यहाँ भेज दो। हैनीवल को यह समाचार मिल गया अतएव वह कार्थेज से भा गया। परन्तु सीपियो ने सीनेट की आज्ञाओं के अनुसार नहीं किया। उसने सीनेट के यहाँ लिखा—"पराजित शत्रु उनके नष्ट करने की अपेक्षा, उन पर दया करना बहुत अधिक महत्व का काम है।"

म सरकार को दे दें और स्पेन तथा भूमध्य-सागर के सारे द्वीप-मूह पर अपना अधिकार छोड़ दें।

इस प्रकार द्वितीय प्यूनिक-युद्ध का अन्त हो गया। इस युद्ध कई महत्व पूर्ण प्रभाव तथा परिणाम हैं जिनमे से कुछ नीचे दिए ते हैं —

(१) भूमध्य सागर के तट के सब राज्यो मे रोम अत्यन्त क्तिशाली हो गया और सबो का मुखिया बन गया।

(२) कार्थेज और स्पेन, रोम के अधिकार में आ गये और रोम के पास जहाजी बेड़ा भी हो गया।

(३) अब कार्थेज की महत्ता बिलकुल नष्ट हो गई और अब ह केवल एक व्यापारी नगर मात्र रह गया। न तो उसके पास ोई सेना रह गई और न किसी काम करने की कोई स्वत त्रता ही।

(४) इस लड़ाई के बाद रोम ने पूर्व के देशो की ओर भी वेजय प्राप्त करने का विचार करना प्रारम्भ कर दिया।

(५) इस युद्ध के बाद रोम के लोगो में निर्दयता अधिक बढ़ ई क्योंकि रोम ने उन सब नगरो के साथ बड़ी कठोरता का र्ताव किया, जिन्होने रोम का पक्ष छोड दिया था। बहुतो को तो उन्होने अपना दास बना लिया।

(६) रोम में कृषको तथा गाँवो की संख्या कम हो गई और नगरो की जन-संख्या अधिक हो गई। इन नगरो मे कई प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गईं।

द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के बाद हैनीबल

इस युद्ध के बाद हैनीबल कार्थेज से भाग गया। इसके बाद भी हैनीबल कई वर्ष तक जीता रहा। वह अब भी रोम को अपना

शत्रु समझता था और उसका नाश करना चाहता था। उसने कई राजाओं से मिल कर उन्हें रोम के विरुद्ध उत्तेजित किया परन्तु इस समय रोम का प्रभाव बहुत बढ़ गया था। इसलिए सब लोग उससे डरते और किसी ने उसकी सहायता न की। इसलिए हैनीबल रोम का कुछ न बिगाड़ सका। कार्थेज वाले भी अब उसका विश्वास नहीं करते थे। अतएव उसे दूसरों का आश्रय लेना पड़ा। उसने कई बार कई राजाओं से प्रार्थना की परन्तु किसी ने उसे रोम के डर से आश्रय नहीं दिया। अन्त में बैथिनिया के राजा ने उसे अपने यहाँ आश्रय दिया। परन्तु वहाँ जाने पर पता चला कि वह हैनीबल को रोम के हवाले करना चाहता है। इसलिए सन् १८३ ई० पू० में उसने विष पी लिया और अपने जीवन को समाप्त कर दिया।

हैनीबल की समालोचना

लड़ाइयों में हैनीबल ने एक चतुर राजनीतिज्ञ का अच्छा परिचय दिया। इसे कई बार बड़ी विकट परिस्थितियों तथा विकट समस्याओं का सामना करना पड़ा था परन्तु प्रत्येक में इसने अपनी राजनीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता और सैनिकयोग्यता का अच्छा परिचय दिया। सेनापति की हैसियत से वह वास्तव में एक प्रशसनीय तथा बडा पुरुष था। उसमे सर्वश्रेष्ठ सेनापति तथा राजनीतिज्ञ के सब चिन्ह थे। प्राचीन काल मे रोम अपनी सेना के सगठन, वीरता तथा धीरता आदि गुणों मे सर्वश्रेष्ठ समझा जाता था। परन्तु उसी रोम को हैनीबल ने कार्थेज के किसी प्रकार की सहायता बिना ही, एकबार नहीं—कई बार हरा दिया बस! इसी मे उसकी सैनिक योग्यता का अकाट्य प्रमाण मिल जाता है। कार्थेज के सिपाही वास्तव मे भाडे के टट्टू ही थे

था केवल अपने वेतन की ही चिन्ता करते थे। ऐसे सिपाहियों में सर्वप्रिय होना और उनकी सहायता से जगत् प्रसिद्ध रोम के प्रसिद्ध तथा वीर सेनापतियों को कई बार हरा देना केवल हैनीबल का ही काम था। असल में सब परिस्थितियाँ ही हैनीबल के विरुद्ध थीं, नहीं तो रोम को अवश्य ही हरा देता और आज यूरोप की सभ्यता का इतिहास कुछ और ही होता। वास्तव में द्वितीय प्यूनिक-युद्ध राष्ट्रों अथवा दो जातियों में नहीं हुई किन्तु एक मनुष्य और सम्पूर्ण राष्ट्र में। एक ओर केवल हैनीबल था और दूसरी ओर सारा रोम। इतना ही नहीं एक ओर पूरा हैनीबल भी नहीं था क्योंकि जब कार्थेज वालो ने हैनीबल को कार्थेज बुलाया, तो वह वहाँ जाना नहीं चाहता था और इटली वालो से रोम में ही रह कर युद्ध करना चाहता था। इसलिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि द्वितीय प्यूनिक युद्ध एक भारी आदमी और एक भारी राष्ट्र के बीच में हुआ।

हैनीबल वास्तव मे बड़ा साहसी था और उसकी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति सर्वश्रेष्ठ थी। वह बड़ा परिश्रमी और सहनशील था। वह सादा भोजन करता था और पानी ही पीता था, शराब नहीं। उसने अपने जीवन में कर्त्तव्य ही को सर्वश्रेष्ठ समझा और कभी भी वासना तथा इन्द्रिय के दुराचार में नहीं फँसा। कभी भी उसने बहुमूल्य वस्त्र नहीं पहना और युद्ध मे सदा वह अपने सैनिको के आगे रहता था।

हैनीबल आज भी यूरोप के प्रसिद्ध वीरो और प्रशंसनीय सेनापतियो मे गिना जाता है। इसकी गणना यूरोप के प्रसिद्ध जनरलों—सिकंदर, जूलियस सीजर और नेपोलियन आदि में की जाती है परन्तु वह इस बात में सब से बढ़ कर है कि थोड़ी सेना की सहायता से भी वह सदा बड़ी बड़ी सेनाओ को हराता रहा।

द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के बाद रोम में परिवर्त्तन

द्वितीय प्यूनिक-युद्ध रोम के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण घटना था। इसके अंत करने मे रोम को एड़ी और चोटी का बल लगाना पड़ा था। यह युद्ध कई वर्ष तक होता रहा। जब हेनीबल ने कई युद्धो मे सफलता प्राप्त करली थी और रोम के पास आ गया था तब रोम के बहुत लोग डरने लग गये थे और रोम में हाहाकार मच गया था। इस समय रोम के कुछ लोग तो इतने डर गये थे कि वे रोम से दूर भाग जाना चाहते थे परन्तु सीनेट इस समय भी प्रबल थी और उसने अपने धैर्य को नहीं छोड़ा था। इस असाधारण घटना—द्वितीय प्यूनिक-युद्ध से रोम मे कई भारी भारी राजनैतिक परिवर्त्तन हो गये जिनमे से कुछ नीचे दिए गये हैं—

(१) सीनेट की शक्ति बहुत बढ गई और उसमें परिवर्त्तन भी हुआ

वास्तव मे इस युद्ध के बाद सीनेट की शक्ति बहुत बढ़ गई क्योकि इस समय इसी के हाथ मे प्रजातन्त्र का सब काम आ गया था। अब रोम मे कई प्रांतीय प्रश्न भी उठ खड़े हुए और इनका फैसला सीनेट के हाथ मे छोड़ दिया गया। इस प्रकार सीनेट शक्तिशाली हो गया। काम करने में सीनेट ने इस समय बड़ी कुशलता दिखलाई। इस समय सीनेट के सदस्य, अनुभवी, विद्वान और शासन काम मे बड़े चतुर थे। इसलिए सीनेट के आगे अन्य सब सभाओ की शक्ति बहुत कम हो गई। इस समय सीनेट में केवल वे ही लोग सम्मिलित हो सकते थे जो बड़े बड़े मजिस्ट्रेटों के पद पर रह चुके होते थे। इस कारण से भी सीनेट की योग्यता और

के लिए चुने जाते थे और सेंसर लोग इस समय इन पर बड़ी कड़ी दृष्टि रखते थे। जो सीनेटर अच्छा काम नहीं करते थे, उन्हें सेंसर लोग सीनेट-सभा से निकाल देते थे। इस प्रकार सीनेट में जो स्थान रिक्त होते थे, उन पर सेंसर ही नियुक्त किए जाते थे। इसमें संदेह नहीं कि सीनेट की शक्ति का कहीं इस प्रकार लिखा पढ़ी नहीं हुई थी तथापि अब उसकी शक्ति अपरमित हो गई थी। जब तक सीनेट स्वीकार नहीं करती थी, तब तक कोई भी नियम कानून नहीं बन सकता था। कई दशाओं में सीनेट की आज्ञा ही कानून मानी जाती थी और कोई भी उसके विरुद्ध काम करने का साहस नहीं कर सकता था। शासन के सब काम इस समय सीनेट के हाथ में था। पहले कसल लोग सीनेट के पथ दर्शक थे परन्तु आज वे सीनेट का अनुगमन करने लगे थे।

(५) ट्रिब्यूनों की शक्ति में परिवर्त्तन

पहले तो ट्रिब्यून, प्लेबियनों के हित की रक्षा करने के लिए चुने गये थे परन्तु अब प्लेबो और पेट्रीशों के झगड़ों का अंत-सा हो गया था और दोनों मिल कर अब एक हो गये थे। परन्तु अब प्रबल मजिस्ट्रेट हो गये थे और कमीटिया-ट्रिब्यूटा में कानून भी बनाया करते थे। अपने विशेष अधिकार वीटो से, अब ये सरकार के सब कामों को बन्द कर सकते थे। ये कसलों को भी आज्ञा दे सकते थे तथा उन्हें कैद कर सकते थे परन्तु कसल तथा और कोई भी पदाधिकारी ट्रिब्यूनों का कुछ भी नहीं कर सकते थे।

(६) डिक्टेटर के अधिकारों में परिवर्त्तन

प्रजातन्त्र के प्रारंभ काल में प्राय डिक्टेटर चुने जाते थे परन्तु प्यूनिक युद्ध के बाद ये बहुत कम चुने जाने लगे। जब कभी रोम में किसी प्रकार का भय उत्पन्न होता था, तब कसलों को ही डिक्टेटर की सारी शक्तियाँ दे दी जाती थीं।

दसवाँ अध्याय

तृतीय प्यूनिक-युद्ध (१४९ ई० पू० से १४६ ई० पू० तक)

द्वितीय प्यूनिक युद्ध के बाद कार्थेज की अवस्था बहुत बुरी था। वह किसी से सधि अथवा विग्रह नहीं कर सकता था और उसके पास जहाज भी बहुत कम रह गये थे। तथापि वहाँ के लोग साहसी और उद्योगी थे। इन लोगों ने धीरे धीरे अपने व्यापार म उन्नति करना प्रारभ कर दिया। द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के बाद लग भग पचास वर्ष तक कार्थेज मे शान्ति रही। इस बीच में इन लोगो का व्यापार खूब चमक उठा और धीरे धीरे उनकी परिस्थिति पहले की तरह हो गई अर्थात् कार्थेज का धन और व्यापार बढ़ गया। रोम से भी उनकी यह दशा छिपी नहीं थी। कार्थेज के लोगो ने भी अब समझ लिया कि वह अब रोम की आँखों का किरकिरी हो रहा है परन्तु वहाँ के लोग अपने व्यापार मे लगे रहते थे और व्यवस्था की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता था। इधर रोम उसके व्यापार को फिर नष्ट करना चाहता था और कोई न कोई वहाना ढूढ़ कर कार्थेज को नष्ट कर देना चाहता था। बात असल यह थी कि कार्थेज के व्यापार के कारण रोम के व्यापारियो का बड़ी हानि होती थी। इन सब कारणो से रोम ने मेसीनिसा को—जो न्यूमीडिया का राजा था—कार्थेज पर हमला करने और उसे तग करने के लिए भड़काया। और मेसीनिसा ने कार्थेज को सब तरह से तग करना प्रारभ कर दिया और कार्थेज की एक अत्यन्त ही अधिक उपजाऊ भूमि पर अधिकार कर लिया। कार्थेज के

लोगों ने कई बार इस सम्बन्ध में मेसीनिसा की शिकायत की परन्तु रोम ने उन्हें कोई सतोषजनक उत्तर नहीं दिया। इस से कार्थेज ने मेसिनिसा से लड़ाई की घोषणा कर दी। इसे रोम ने अपना अपमान समझा और कार्थेज से लड़ने का एक यह भी बहाना निकाल लिया।

इधर रोम वाले भी कार्थेज से लड़ाई छेड़ना चाहते ही थे। मार्कस पोर्सियस केटो, रोम का एक सरदार, बड़ा शूर और विद्वान था। यह कार्थेज की उन्नति तथा बढ़ती हुई शक्ति से भली भाँति परिचित था। एक बार सिनेट-सभा में इसने अपने लबादे में से तीन ताजे अंगूर गिराए और तब कहा—"ये अंगूर परसों कार्थेज नगर में तोड़े गये थे। इस से सिद्ध है कि शत्रु निकट है। इस प्रकार मौनव्रत धारण करने से अब काम न चलेगा, कार्थेज को नष्ट करना होगा, कार्थेज का नाश करना होगा, नाश करना होगा।" यह बात सीनेट के मन में पहले ही से बैठी हुई थी ही, उसने कार्थेज से लड़ाई करने की तैयारी करना और बहाना खोजना प्रारम्भ कर दिया। रोम ने कार्थेज से ३०० आदमी जमानत माँगे और कार्थेज ने रोम की आज्ञा का पालन किया। तथापि रोम की सेना कार्थेज जा धमकी। यह देख कर कार्थेज के बनिए बहुत डर गये और उन्होंने अपना प्रतिनिधि, सेनापति के पास भेजा। सेनापति ने कहा कि यदि कार्थेज के लोग अपने सब अस्त्र शस्त्र और हथियार रोम की सेना को सुपुर्द करदें तो काम चल सकता है। कार्थेज ने रोम की यह आज्ञा भी मान ली। अंत में रोम के सेनापति ने कहा कि कार्थेज को मटियामेट करके लोग, यहाँ से १० मील की दूरी पर बसाए जायँगे। इस शर्त्त को कार्थेज ने अस्वीकार कर दिया इसलिए सन् १४६ ई० पू० में तृतीय प्यूनिक-युद्ध प्रारम्भ हो गया। समुद्र से १० मील की दूरी पर ५

से कार्थेज का व्यापार नष्ट हो जाता और रोम का व्यापार चमक उठता।

इस प्रकार कार्थेज के सब लोगों के निःशस्त्र हो जाने पर, रोम के सेनापति ने अपने सिपाहियों को कार्थेज को नष्ट करने की आज्ञा दी। इस आज्ञा को सुन कर कार्थेज के लोग आश्चर्य सागर में डूबने-उतराने लगे। इन लोगों ने रोम को इतना नीच नहीं समझा था। अब कार्थेज के बेचारे बनियों ने भी एक बार क्षात्र धर्म का धारण किया और कार्थेज की रक्षा करने के लिए तैयार होगये। उन्होंने अस्त्रों का कारखाना खोल दिया और कार्थेज में रात दिन नए नए अस्त्र बनने लगे। परन्तु एक बड़ी कठिनाई उनके मार्ग में यह पड़ती थी कि उन्हें बाहर से किसी प्रकार की सहायता ही नहीं मिलती थी क्योंकि रोम की सेना ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया था। एक बार ऐसा हुआ कि धनुष की बहुत सामग्रियाँ तो मिल गईं परन्तु प्रत्यचा बनाने के लिए पतली रस्सियाँ नहीं मिलीं। तब वहाँ की स्त्रियों ने अपने लंबे लंबे बालों को प्रसन्नता पूर्वक काट दिया। इन बालों की रस्सियाँ बनाई गईं और उनसे प्रत्यचा का काम लिया गया।

इस युद्ध में छोटा सीपियो एफ्रिकेनस रोम का सेनापति था। यह सीपियो हैनीबल के हराने वाले सीपीयो का पोता था। इसने अच्छी तरह से कार्थेज नगर को घेर लिया और उसका सब रास्ता बन्द कर दिया।

कार्थेज वाले भी बड़ी वीरता से लड़ने लगे। इस बार कार्थेज की सेना में भाड़े के टट्टू कम थे और बाहर से इस समय बुलाए भी नहीं जा सकते थे। इस समय कार्थेज के नवयुक ही अपनी स्वतन्त्रता तथा प्रतिष्ठा के लिए लड़ रहे थे। इन लोगों के हृदय में

श-भक्ति का समुद्र उमड़ रहा था और इन लोगों ने अपने मन में ढ़ सकल्प कर लिया था कि जीते जी शत्रु को कार्थेज मे पैर नहीं रखने देंगे। इसलिए रोम के सैनिक भी उनकी समानता नहीं कर के। परन्तु रोम की सेना बहुत थी और उनका बाहर के सब गों पर अधिकार था। अब कार्थेज को अन्न मिलना कठिन होगया, लोग भूखों मरने लगे। तथापि उन्होंने अभी भी लड़ना ही जारी रखा। अन्त में रोम के सैनिकों ने कार्थेज की दीवार को अपने अधिकार में कर लिया और उसकी सहायता से नगर में घुस गये। भीतर भी कार्थेज के लोग वीरता पूर्वक लड़ने लगे। परन्तु इतनी अधिक सेना के सामने वे कैसे टिक सकते थे? प्रत्येक घर मे घुसने के लिए रोम के सैनिको को युद्ध करना पड़ता था।

जिसके बाबा ने एक दिन कार्थेज के साथ उदारता पूर्वक बर्ताव किया था और सब लोगो के कहने पर भी कार्थेज को नष्ट नहीं किया था, उसी सीपियो ने कार्थेज वालों के साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया। इसके सिपाहियो ने वृद्धों, स्त्रियों और अबोध बालकों पर भी अपनी वीरता की परीक्षा की और उन्हें मार डाला। घर, गली और सड़कें सब कटे हुए मुर्दों से खचाखच भर गये। इस नगर में सब मिला कर सात लाख मनुष्य थे। उनमें से साढ़े छः लाख मनुष्यों को तो सीपियो के सिपाहियो ने मार डाला और शेष पचास हज़ार को गुलामों की श्रेणी मे भरती करके उन्हें बेंच दिया। सब लोगो को काट डालने के बाद सीपियो ने कार्थेज मे आग लगवा दी और वे मनुष्य का यह नगर सात दिन तक जलता रहा।

इस प्रकार कार्थेज नगर का आज अंत हो गया। जिस कार्थेज ने लगभग एक हज़ार वर्ष तक अपनी प्रतिष्ठा बचा रखी थी, आज

उसका पतन हो गया। जिस कार्थेज ने रोम को सर्वदा भय भीत बना रखा था, आज वह कहाँ है !!! जिस कार्थेज के नष्ट करने के लिए मेसीनिसा भड़काया गया था, जिस कार्थेज को समूल नष्ट करने के लिए सीपियो भेजा गया था, जिस कार्थेज की उन्नति पर रोम की गृद्ध दृष्टि बहुत दिनो से लगी हुई थी और जिस कार्थेज पर रोम ने अकारण ही हमला कर दिया था, रोम ने उसका आज समूल नष्ट करके ही संतोष किया !!!!

ग्यारहवाँ अध्याय

रोम का पूर्व में विस्तार

सिसली, भूमध्यसागर और स्पेन पर अपना अधिकार जमा लेने के बाद रोम के लोगों ने पूर्व की ओर ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि अब वही शेष रह गया था। अभी तक यूनान के लोग रोम की बढ़ती को उदासीनता की दृष्टि से देखते थे। इस समय पूर्व मे मिश्र, एशिया माइनर और मेसेडोन ये ही तीन प्रधान रियासतें थीं। इन पर अभी यूनान का अधिकार था। परन्तु यहाँ भी उनका विशेष सगठन नहीं था और यूनानी-प्रभाव उनसे एक प्रकार से उठ-सा गया था।

(१) मिश्र की रियासत

इस समय पूर्व में सबसे प्रबल राज्य मिश्र का था। इस पर टालेमी के वशज राज्य करते थे। यहाँ के राजा ने आसपास के कई द्वीप निवासियो को हराया था और उन पर अधिकार कर लिया था। यहाँ पर भी एक प्रकार से यूनानियो का ही शासन था। परन्तु अब उनका आधिपत्य एक प्रकार से उठ-सा गया था।

(२) सीरिया की रियासत

एशियामाइनर में सीरिया (शाम) एक प्रसिद्ध रियासत थी। इसका राज्य बहुत विस्तृत था और इस राज्य में कई समृद्धशाली नगर थे। परन्तु ये सब एक दूसरे से स्वतत्र थे। इस समय सीरिया में एन्टीओकस राजा था।

(३) मैसोडोनिया की रियासत

मैसोडोनिया को रियासत भी अच्छी थी। सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसका राज्य छोटे छोटे टुकड़ो मे बँट गया और इसके सेनापतियो ने उन पर अधिकार कर लिया और ये परस्पर लड़ा भी करते थे। इन्हीं प्रान्तो मे से मैसोडोनिया भी एक था। यह यूनान के उत्तर मे था और यहाँ के राजा का मान तथा सत्कार सारे यूनान पर था। इस समय मैसोडोनिया का राजा फिलिप था। यह वास्तव मे बड़ा बलवान था। जब हैनीवल रोम को जीत रहा था, तो उसकी अन्तिम विजय के समय फिलिप ने हैनीवल से मित्रता करली थी। उसी समय से रोम और मैसोडोनिया एक दूसरे के शत्रु हो गये थे। अब यूनान मे एथेंस, स्पार्टा और कारिंथ आदि का कुच्छ भी प्रभाव नहीं रह गया था। इनमें पृथक् पृथक् तथा छोटे छोटे सघ अवश्य स्थापित हो गये थे परन्तु उन सबो मे एकता नहीं थी। इस समय यूनान में एकियन-सघ और एटोलियन सघ बन गये थे। एकियन सघ तो पेलोपानेसस में स्थापित था और एटोलिय-सघ मध्य यूनान में। इसमे तो कुछ भी सन्देह नहीं है कि मैसोडोनिया की रियासत ही इस समय सर्वश्रेष्ठ थी परन्तु ये दोनो सघ मैसोडोनिया की शक्ति को कम करने का सदा प्रयत्न करते रहते थे।

पूर्व में ये ही तीन प्रसिद्ध रियासतें थीं और रोम को इन्हीं तीनों से लड़ना पड़ा था। अन्त में रोम विजयी हुआ।

सबसे पहले रोम को मैसोडोनिया से लड़ाई लड़नी पड़ी थी।

(१) रोम और मैसोडोनिया की पहली लड़ाई

कैनी की लड़ाई के बाद मैसोडोनिया के राजा पचम फिलिप ने हैनीवल से सन्धि करेली थी। इससे रोम से और मैसोडोनिया से

ड़ाई छिड़ गई। फिलिप ने समुद्री सेना लेकर रोम पर हमला
र दिया और ओरिकन तथा एपोलोनिया को लगभग अपने
धिकार में कर लिया। इसी समय रोम वालों ने भी फिलिप पर
क्रमण किया क्योंकि ओरिकम और एपोलोनिया रोम के राज्य
भीतर थे। परन्तु वास्तव मे दोनो में से कोई भी इस समय
ड़ने के लिए तैयार नहीं था इसलिए यह लड़ाई बड़े धीरे धीरे
ती रही। रोम के लोग इस समय हैनीबल को हराने के लिए
पनी सारी शक्ति को कार्थेज मे एकत्रित तथा केन्द्रित करना
ाहते थे। फिलिप भी इस समय लड़ने के लिए तैयार नहीं था।
सलिए दोनो ने सन्धि कर ली और दोनो ने एक दूसरे पर
मला न करने की प्रतिज्ञा की।

(२) रोम और मेसोडोनिया की दूसरी लड़ाई
(२०० ई० पू० १९७ ई० पू० तक)

जामा की लड़ाई मे रोम ने हैनीबल को अच्छी तरह से हरा
दिया। अब उसे कार्थेज का किसी प्रकार का भय नहीं था।
इसीलिए रोम के लोगों ने लड़ाई मोल लेने का विचार करना
आरम्भ कर दिया क्योंकि रोम के लोग बहुत युद्धप्रिय होते थे
और अब कोई भी शत्रु लड़ाई करने के लिए तैयार नहीं था।
इसलिए यहाँ के लोगों ने मैसोडोनिया के राजा फिलिप से ही युद्ध
करने का अंतिम निश्चय किया और उससे लड़ाई करने का
निम्नलिखित तीन कारण ढूँढ निकाला —

(१) मैसोडोनिया के राजा फिलिप ने हैनीबल की सहायता
की है और उसकी भेजी हुई सेना जामा की लड़ाई में रोम के
विरुद्ध लड़ी थी।

(२) फिलिप ने भूमध्य-सागर के पास के देशों पर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न किया था जिससे रोम के मित्र रोड्स द्वीप के निवासियों पर जेमुस के राजा को बहुत कष्ट पहुँचा है।

(३) फिलिप ने सीरिया के राजा एंटीओकस से इस विचार से मित्रता की है कि ये दोनों आपस में मिश्र के राज्य को बाँट लें। इन लोगों से डर कर मिश्र के राजा टालेमी ने रोम से सहायता माँगी है।

रोम ने इनके अतिरिक्त कुछ और भी मैसेडोनिया से लड़ने के लिए कारण ढूँढ़ निकाला और सन् २०० ई० पू० में फिलिप के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। दो वर्ष तक धीरे धीरे लड़ाई होती रही।

सन् १९२ ई० में फ्लेमीनायस फिलिप से लड़ने के लिए भेजा गया। वास्तव में इसी समय से लड़ाई का प्रारम्भ समझना चाहिए। फ्लेमीनायस अच्छे कुल तथा स्वभाव का था। सिनोसिफैली स्थान में दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। परन्तु रोम के सिपाहियों ने आठ हजार यूनानियों को जान से मार डाला और पाँच हज़ार को कैद कर लिया। इसमें फिलिप बुरी तरह से हार गया और उसे सन्धि करनी पड़ गई। इस सन्धि के अनुसार फिलिप को सब यूनान-नगरों से अपना अधिकार उठा लेना पड़ा और अपनी सब जहाजी सेना रोम को सुपुर्द कर देनी पड़ी। फिलिप को लड़ाई का सब खर्च भी देना पड़ा। उसकी सेना घटा कर ५००० कर दी गई और सीनेट के [illegible] बिना उसे [illegible] से सन्धि या विग्रह करने का कुछ अ[illegible] नहीं [illegible]

[illegible] यूनानी-सभ्यता तथा कला [illegible] के [illegible] तरह से देखा और तब [illegible] [illegible] सागर में [illegible] उतराने

ा देखकर और भी अधिक मुग्ध हुआ और ऐतिहासिक स्थानों
दिरों तथा भग्नावशेषों को देखता फिरा और उन्हें अपने देश में
ी जाने का प्रयत्न किया।

इस प्रकार सारा यूनान ही रोम के हाथ आ गया। यह सब
ा हुआ परन्तु रोम ने मैसीडोनिया को अपने राज्य रोम में नहीं
मलाया क्योंकि मैसोडेनिया के उत्तर मे गाल आदि जातियाँ बसी
हुई थीं और उन्हे रोकने के लिए रोम को प्रयत्न करना पड़ता था।
सलिए रोम ने यूनान को स्वतन्त्र ही छोड देने का विचार किया।
यूनान में प्रतिवर्ष ग्रीष्म ऋतु मे इस्थमियन गेम्स नामक एक राष्ट्रीय
खेल हुआ करता था। लड़ाई के बाद ही उन लोगो का यह खेल
आरम्भ हो गया। उसी समय सीनेट की यह आज्ञा उन्हें सुना
दी गई कि सीनेट ने सारे यूनान को स्वतन्त्र कर दिया है,
न तो उसमें कोई सेना रखी जायगी और न कोई कर ही उनसे
वसूल किया जायगा। सीनेट की इस आज्ञा से लोगो को बड़ा
आनन्द तथा आश्चर्य हुआ और रोम के जय जय कार से आकाश
मडल गूज उठा। इसके बाद यूनानियो ने रोम के प्रति खूब कृतज्ञता
दिखलाई। हैनीबल के समय में रोम के कुछ लोग गुलाम बना लिए
गये थे और वे यूनान मे बेंच दिए गये थे। वे सब के सब स्वतन्त्र
कर दिए गये थे। इस प्रकार यूनान को जीत कर तथा उस पर
राम का प्रभाव दृढ करके फ्लेमीनायनस रोम लौट आया।
रोम के लोगो ने उसका खूब स्वागत किया और उसकी
प्रतिष्ठा में लगातार तीन दिन तक जुलूस निकाले गये।

(३) मैसोडोनिया की तीसरी लड़ाई

(१७१ ई० पू० से १६८ ई० पू० तक)

फिर रोम और मैसोडोन मे लड़ाई छिड़ गई। यह मैसोडोन
की तीसरी लड़ाई कहलाती है। इसमें सदेह नहीं कि पचम फिलिप

रोम से हार गया था परन्तु उसे रोम की अधीनता बहुत खटकती थी। इसके सिवाय वह अपने राज्य का विस्तार बढ़ाना चाहता था और रोम की सीनेट ने उसे राज्य के विस्तार के बढ़ाने के सम्बन्ध मे अच्छी तरह से मना कर दिया था। यह बात उसे बहुत खटकती थी। इसलिए भीतर ही भीतर रोम से लड़ाई करने के लिए तैयारी कर रहा था और रोम से बहुत चिढ़ता था। फिलिप का पुत्र फि. रोम से युद्ध नहीं करना चाहता था और प्राय रोम की प्रशंसा किया करता था। इसलिए फिलिप ने उसे मरवा डाला और अपने एक जारज पुत्र पर्सियस को अपना उत्तराधिकारी बना दिया। फिलिप की मृत्यु के बाद यह सन् १७९ ई० पू० में गद्दी पर बैठा और यूनानी तथा एशिया के राजाओं से मित्रता करना प्रारम्भ कर दिया। वास्तव में यह एक बड़ा भारी देशभक्त था और रोम के प्रभुत्व तथा अपनी पराधीनता नहीं स्वीकार कर सकता था। ✓

परगेमस के राजा ने पर्सियस के बुरे व्यवहारों की रोम से शिकायत की। परगेमस का राजा रोम का मित्र था। अतएव पर्सियस ने परगेमस के राजा को जान से मार डालने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। इसलिए सन् १७१ ई० पू० में रोम ने मैसेडोनिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

दो कसल और भेजे गये। इधर पर्सियस ने थेसली पर आक्रमण कर दिया परन्तु वह कुछ कर न सका क्योंकि एपिरस, थेसली, और बोटिया आदि सबो ने अपनी अपनी सेनाओं से रोम की सहायता की और परगेमस का राजा यूमीनीज भी एक बड़ी भारी सेना के साथ रोम की सहायता करने के लिए आ गया। इस प्रकार रोम की सयुक्त-सेना अब यूनान की सेना से दूनी हो गई। दोनो सेनाओं में युद्ध होने लगा।

मैसेडोनिया के सवार रोम की सेना के बीच मे घुस गये और उन्हे मार कर खलिहान कर दिया। इस प्रकार रोम की पराजय हो गई। सन् १७० ई० पू० में इन दोनों सेनाओं मे फिर घोर सग्राम हुआ और पर्सियस ने फिर रोम की सेना को मार कर बिछा दिया और एक एक बार फिर रोम हार गया। अब राम में बड़ी चिन्ता तथा ग्लानि फैल गई। रोम के सब लोगो ने कहा कि अब एमीलियस पालस को ही कसल बनाना चाहिए क्योकि वह बडा वीर है। यह विजयी सीपिओ का मित्र और सम्बन्धी था। फिर दोनो सेनाओं में पीडना नामक स्थान पर सन् १६८ ई० पू० में युद्ध हुआ। इसी समय चन्द्रग्रहण लग गया इसमें दोनो ओर की सेनाएँ तरह तरह के झगड़ों मे फँस गई और चन्द्रमा को लील जाने वाले राक्षस को भगाने का प्रयत्न करने लगीं। इसी समय पालस ने अपनी सेना को सावधान करके शत्रु की सेना पर हमला कर दिया। बहुत से यूनानी मारे गये और शेष भाग गये और पर्सियस भी भाग गया क्योंकि किसी ने उसका साथ नहीं दिया। इस विजय से रोम मे खूब हर्ष मनाया गया और देवताओ के आगे खूब हवनादिक कर्म किए गये।

इस युद्ध का फल

इस लड़ाई से मैसेडोनिया के राज्य का अंत हो गया और अब मैसोडोनिया राम का एक प्रात बन गया। मैसेडोनिया अब चार जिलों मे विभाजित कर दिया गया और प्रत्येक जिला एक दूसरे से स्वतत्र था। यह सब तो हो गया परन्तु अब यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इन जीते हुए देशो का क्या प्रबन्ध किया जाय। विजित-देशों की भाषा साहित्य, कला, धर्म, आचार तथा शासन पद्धति आदि सब भिन्न थे। अन्त में चार भागो में से प्रत्येक पर प्रजातत्र के सिद्धान्तों पर ही उनकी शासन पद्धति बना दी गई और नितना

कर पर्सियस लिया करता था, उसका आधा कर नियत कर दिया गया। मैसोडिया मे रोम ने कोई सेना नहीं रखी। इलीरिया तथा यूनानी रियासतोंका भी ऐसा ही प्रबन्ध किया गया। रोम की सेना को वेतन देने के लिए सीनेट की आज्ञा से यूनान के हजारो मनुष्य दास बना कर बेंच दिए गये। इस बात से स्पष्ट है कि इस समय के रोम के लोग स्वर्णयुग के रोम के लोगो से आदर्श मे बहुत गिर गये थे।

(४) मैसोडोनिया की चौथी लड़ाई

यूनान देश मे एड्रिसकुस नामक एक मनुष्य था, यह बहुत वीर था और मैसोडोनिया के राज्य पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। उसने लोगो मे अपने के पर्सियस का बेटा प्रसिद्ध करा दिया और रोम के विरुद्ध लड़ाई करने लगा। पहले तो थोड़ी छोटी लड़ाइयो मे उसकी विजय हुई परन्तु अन्त मे वह हार गया और कैद कर लिया गया और अब मैसोडोनिया रोम का एक प्रांत बना लिया गया।

एकियन युद्ध

पिडना की लड़ाई के बाद रोम वालों ने यूनानियों को स्वतंत्र कर दिया था परन्तु सीनेट, यूनान के एक हजार आदमियों को रोम में बुलाया था। यहाँ पर रोम के लोगो ने उनके साथ अच्छा वर्ताव नहीं किया। ये सब सत्रह वर्ष तक रोम मे कैद रहे और इसी बीच मे ७०० आदमी मर भी गये। इसके पहले भी कई बार यूनानियों ने उन्हें छुडाने का घोर परन्तु निष्फल प्रयत्न किया था। अंत में रोम के लोगो ने उन्हें छोड दिया। जब इन लोगो ने अपनी दु ख गाथा को यूनान के लोगो से रो रो कर कहना और सुनाना प्रारंभ किया तो यूनानियो की छाती फटने लगी और वे गुप्त रीति से लड़ा

करने की तैयारी करने लगे। इसी समय यूनान के एकियन सघ और स्पार्टा में झगड़ा हो गया।

यूनान ने अपने हित की रक्षा करने के लिए एकियन नामक एक सघ स्थापित किया था। कई कारणों से स्पार्टा और एकियन सघ में झगड़ा हो गया। स्पार्टा के लोग अब निर्बल हो गये थे। इसलिए इन लोगों ने रोम से सहायता माँगी। इस पर रोम के लोगों ने इस झगड़ा के तै करने के बहाने से स्पार्टा का पक्ष लिया। रोम ने स्पार्टा के पक्ष में फैसला सुनाया और एकियन सघ से कुछ प्रसिद्ध नगरो के पृथक् कर देने की आज्ञा दी। रोम वाले कहते थे कि स्पार्टा और एकियन-सघ के पारस्परिक युद्ध के तै करने के ही विचार से उक्त आज्ञा दी गई थी परन्तु वास्तव में रोम का उद्देश्य एकियन-सघ की शक्ति के कम करना था। परन्तु एकियन सघ ने रोम की आज्ञा नहीं मानी। इसलिए सन् १४७ ई०पू० में रोम ने यूनान के एकियन सघ के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

इस युद्ध में रोम का सेनापति सिसिलियस मेटेलस था। इसने यूनान में शिक्षा पाई थी और यूनानी—सभ्यता तथा कला के आदर की दृष्टि से देखता था। इसलिए यूनानियो के साथ वह क्रूरता का बर्ताव नहीं कर सकता था। इसलिए वह यूनान के शीघ्र न जीत सका। अतएव सीनेट ने लूसियस ममियस के सेनापति बनाया और उसने थोड़े ही दिनो में यूनानियों के हरा दिया, कई नगरों के मिट्टी में मिला दिया और कारिंथ नगर के जला दिया, हजारों कारिंथियन मारे गये और हजारों दास बना लिए गये। कारिंथ, यूनान का एक बहुत ही प्राचीन नगर था। यहाँ पर अनेक कला कौशल सम्बन्धी पदार्थ थे। इन सबो के रोम के सिपाहियों ने लूट लिया और रोम मे भेज दिया।

एकियन-युद्ध का प्रभाव और फल

सन् १४६ ई० पू० में एकियन-संघ की पराजय हुई। इसी वर्ष से यूनान की स्वतन्त्रता के इतिहास का अंत होता है। अब यूनान की स्वतन्त्रता सब तरह से नष्ट हो गई। जिस यूनान ने संसार भर में ख्याति पाई थी, जो यूनान, यूरोप की सभ्यता तथा कला की जननी है, वही यूनान सन् १४६ ई० पू० में रोम का एक प्रांत मात्र रह गया और उसकी स्वतन्त्रता नष्ट हो गई। परन्तु यूनान की विद्या और कला का भी अब रोम पर खूब प्रभाव पड़ा।

सीरिया से रोम की लड़ाई

(१९१ ई० पू० से १९० ई० पू०)

सीरिया के राजा तृतीय एंटीओकस और रोम में बहुत दिनों से मन-मुटाव चला आ रहा था। मिश्र पर जिस समय एक तरह से, रोम का प्रभाव था और मिश्र का राजा रोम की रक्षा में था, उस समय भी एंटीओकस और फिलिप मिलकर मिश्र के राज्य को बाँट लेना चाहते थे। मैसेडोनिया की दूसरी लड़ाई के बाद रोम वालों ने उसे यूरोप के मैदान में पैर रखना भी मना कर दिया था। इससे रोम से वह और भी अधिक चिढ़ गया था और रोम के शत्रुओं के साथ मित्रता और मित्रों के साथ शत्रुता करने लगा था। इसी समय हैनीबल भी सीरिया में आ गया था क्योंकि कार्थेज वालों से और हैनीबल से मतभेद हो गया था। एंटीओकस ने पहले तो हैनीबल का स्वागत किया परन्तु पीछे उसके कथनानुसार काम नहीं किया। हैनीबल ने एंटीओकस से कहा—"कृपया आप दस हजार सेना हमको दीजिए और तब मैं वादा करता हूँ कि मैं रोम की सेना को हरा दूँगा।" परन्तु एंटीओकस हैनीबल से डर गया। उसने समझा कि विजयी हो कर स्वयं हैनीबल ही राज

बन बैठेगा। इसलिए इसकी सहायता करना अच्छा नहीं है। कुछ लोगों का यह भी कथन है कि सीरिया का राजा अब हैनीबल को रोम वालों को सुपुर्द करना चाहता था और इस प्रकार इस लड़ाई को बन्द करना चाहता था। चाहे जो हो यदि एटीओकस ने हैनीबल को सहायता दी होती तो वह अवश्य कुछ कर दिखाता। वास्तव म हैनीबल ने मेसेडेन, यूनान, स्पेन और सीरिया, आदि सबों में चारों ओर से विप्लव कराने और रोम, के नष्ट करने का उपाय सोचा था।

इधर रोम वालों को भी पता चल गया कि हैनीबल सीरिया पहुँच गया है। अभी हैनीबल का भय बना हुआ था। इसलिए रोम वाले फिर घबड़ाने लगे। अतएव रोम ने इस बार खूब अच्छी तैयारी की।

अच्छी तरह से तैयारी करने के बाद रोम की सेना पूर्व की ओर भेजी गई। थर्मापिली मुहाने के पास सन् १६१ ई० पू० में दोनों सेनाओं में एक घोर संग्राम हुआ जिसमे सीरिया की सेना हार गई और एटीओकस अपने देश में भाग गया। अब विजयी सीपियो ने राजा का पीछा किया और फिलिप ने भी उसकी सहायता की। मेगनीशिया के मैदान पर एटीओकस ने बड़ी भारी सेना एकत्रित की थी। इसी स्थान पर दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। रोम की सेना ने एटीओकस की दो तिहाई सेना को मार डाला और विवश हो कर एटीओकस को सधि करनी पड़ी। सधि की शर्त्त के अनुसार सीरिया उसे दे दिया गया परन्तु एशियामाइनर से उसका सब अधिकार उठ गया। एटीओकस को दड स्वरूप बहुत सा धन, सब हाथी और जहाज दे देने पड़े। इस प्रकार सीरिया अब एक छोटी सी रियासत मात्र रह गई।

युद्ध के बाद एशिया में रोम का प्रबन्ध

एंटीओकस की शक्ति को नष्ट करने के बाद रोम के लोगों ने उसे रोम का प्रांत नहीं बनाया क्योंकि वे इनका उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहते थे और सीरिया की शक्ति भी नहीं बढ़ने देना चाहते थे। इसलिए इन लोगों ने एशियामाइनर के अधिक भागों को पर गेमस के राजा यूमीनीज के अधिकार में कर दिया और शेष रोड्स वालो के अधीन कर दिया। इस प्रकार ये दोनों सीरिया की शक्ति के रोकने के लिए पर्याप्त थे।।

१२९ ई० पू० में एशिया रोम का प्रांत बन गया

परगेमस के लोगो मे परस्पर मे सन् १३३ ई० पू० में झगड़ा हो गया और एक ने रोम की सहायता माँगी। इसीलिए रोम ने परगेमस पर हमला किया, उसे पराजित किया और सन् १२६ ई० पू० मे उसे 'एशिया' के नाम से रोम का एक प्रांत बना लिया।

मैसेडोनिया और एंटीओकस के हार जाने पर मिश्र स्वय रोम का प्रात बन गया। इस प्रकार पूर्व मे भी चारों ओर रोम का अधिकार हो गया।

पश्चिम में भी रोम को कई लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। परन्तु रोम उन सबों में विजयी हुआ। इटली स्पेन के लोगों तथा अन्य कई जातियों मे भी रोम को लोहा लेना पड़ा परन्तु अंत मे रोम ने सबको हरा कर ही दम लिया।

बारहवाँ अध्याय

कार्थेज, मैसेडोनिया और सीरिया से युद्ध के बाद रोम की अवस्था

सामाजिक अवस्था

इस समय पेट्रीशियन और प्लेबों के झगड़े का अंत हो गया था। अब पेट्रीशियन और प्लेब का कुछ भी अर्थ नहीं था परन्तु अब रोम में एक नया झगड़ा उठ खड़ा हुआ। वास्तव में यह झगड़ा धनाढ्यों और दरिद्रों में था। इस समय रोम के कुछ लोग धनी हो गये थे। धन के बढ़ने के कारण से रोम में धनियों, सरदारों और व्यापारियों की एक नई कक्षा बन गई थी और दरिद्र लोगों की कक्षा अलग थी। पेट्रीशियनों और प्लेबों का झगड़ा नगर राष्ट्र की परस्पर की लड़ाई था परन्तु इस नए झगड़े का रोम के विस्तृत राष्ट्र से सम्बन्ध है।

द्वितीय-प्यूनिक-युद्ध के बाद रोम की विदेश सम्बन्धी पालिसी

द्वितीय-प्यूनिक-युद्ध के बाद से सन् १४६ ई० पू० तक रोम की पालिसी, विदेशी-राज्यों के सम्बन्ध में एक थी, परन्तु सन् १४६ ई० पू० के बाद यह पालिसी बिल्कुल बदल गई और रोम ने बिल्कुल ही दूसरी पालिसी का सहारा लिया।

द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के बाद से सन् १४६ ई० पू० तक रोम ने रक्षा के सिद्धान्त का अवलम्बन किया था क्योंकि इस समय ये नई नई रियासतों को रोम के राज्य के भीतर नहीं लाना चाहते थे।

इसलिए जिन जिन देशों को ये जीतते थे, उन उनको भीतरी कामों के लिए स्वतंत्र कर देते थे परन्तु ये, विजित देशों को किसी भी दूसरी शक्ति से कोई सम्बन्ध नहीं रखने देते थे। जब कोई दो शक्तियाँ परस्पर लड़ती थीं, तो रोम के लोग दुर्बलों का पक्ष लेते थे और प्रबलों को हरा कर अपने अधीन कर लेते थे। मैसेडोनिया और सीरिया के युद्ध इसी सिद्धान्त (पालिसि) के फल थे। शक्तिशाली तथा प्रबल राज्य को हरा देते थे, उससे रोम की पराधीनता स्वीकार करा लेते थे, उसके सब बाहरी सम्बन्धों को तोड़ देते थे और तब उसे भीतरी प्रबन्ध के लिए स्वतंत्र छोड़ देते थे।

परन्तु सन् १४६ ई० पू० के बाद रोम ने अपनी इस पालिसी को बदल दिया और विजित देशों को अपना प्रांत बनाना प्रारम्भ कर दिया।

रोम के प्रांत और उनके शासन का प्रबन्ध

इटली के बाहर भी रोम के कई प्रांत थे। इन पर भी रोम ही शासन करता था। इन सब प्रांतों के शासन के लिए सीनेट सभा नियम बनाती थी और उन्हीं नियमों के अनुसार प्रांतों के लाट या गवर्नर लोग इन सब प्रांतों का प्रबंध करते थे। बड़े बड़े प्रांतों पर कंसल के तौर पर और छोटे छोटे प्रांतों पर प्रीटोर के तौर पर लाट नियत किए जाते थे। परन्तु एक प्रकार से ये सब लाट स्वतंत्र राजा की ही तरह होते थे। ये प्रत्येक विषय में जैसा चाहें कर सकते थे क्योंकि सीनेट-सभा तो उन्हें देखने आती ही नहीं थी। टैक्स, न्याय सम्बन्धी तथा अन्य कामों में भी ये स्वतंत्र ही थे। ये प्राय एक ही वर्ष के लिए चुने भी जाते थे। इसलिए ये प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते थे। कभी कभी तो ये प्रजा पर खूब मनमानी और अत्याचार भी करते थे और कोई इन्हें देखने तथा

मना करने वाला भी नहीं था। ये यह भी जानते थे कि मुझे यहाँ थोड़े ही दिन रहना है अतएव इतने ही दिनो मे ये खूब धन एकत्रित कर लेना—चाहे जैसे हो—परम आवश्यक समझते थे। कभी कभी तो डाकुओं तथा चोरो की तरह लूट भी लेते थे परन्तु ये प्रजा की रीति और रिवाज का आदर भी करते थे। इन सब प्रांतो का अगस्टस के समय तक बहुत ही बुरा प्रबन्ध था।

इन सब विजयों का रोम पर प्रभाव

जब दो भिन्न भिन्न जातियो तथा राष्ट्रों का परस्पर सघर्ष होता है, तब एक का प्रभाव दूसरे पर अवश्य ही पड़ता है। इसमें भी लेशमात्र सन्देह नहीं है कि कुछ लोग इस प्रभाव को कम करने तथा बिल्कुल ही न पड़ने के लिए प्रयत्न करते हैं परन्तु यह असभव है। इन पारस्परिक सम्बन्धो को कोई मिटा नहीं सकता। इसी सिद्धान्त के अनुसार रोम पर भी इन विजित राष्ट्रो तथा जातियो का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। इन सब प्रभावो को हम निम्नलिखित तीन भागो में विभक्त कर सकते हैं —

(१) सामाजिक (२) राजनैतिक और (३) सांपत्तिक।

(१) बाहरी विजयों का सामाजिक प्रभाव

प्लेबों और पेट्रीशो के पुराने झगड़े का अब अंत हो गया था। परन्तु अब समाज में एक नया झगड़ा उत्पन्न हो गया था। यह झगड़ा धनिको और दरिद्रो का था। धनिक तथा शासन में भाग लेने वाले एक ओर थे और सरदार दल कहलाते थे इसके विरुद्ध दरिद्रो तथा जनता का दल एक ओर था और ये उदार दल कहलाते थे। सरदार दल, उदार दल को शासन में कोई भाग नहीं देना चाहता था और उदार दल इस शासन के तख्ते को ही उलट देना चाहता था। इन सब कथनो का केवल यही अभिप्राय है कि

आगे जो एक बड़ी भारी क्रान्ति होने वाली थी उसका प्रारम्भ इन युद्धों की विजय के बाद ही से हो गया। बात यह थी कि रोम में लूट का बहुत धन और यूनान से नई सभ्यता आई थी। धन और यूनान की आयी सभ्यता के संयोग से रोम में कई तरह की बुराइयाँ फैल गई थीं। अब रोम के लोग दासों की लड़ाई देखना पसन्द करते थे। इन लड़ाइयों में ये दास एक दूसरे को जान से भी मार डालते थे। इसलिए अब रोम के सरल तथा पवित्र जीवन के स्थान को विलासिता, बदमासी और अन्य बुराइयों ने ले लिया था। रोम के स्वर्ण युग के चरित्र अब रोम में कम दिखलाई पड़ने लगे।

(२) बाहरी विजयों का राजनैतिक प्रभाव

सरदार दल और उदार दल के झगड़ों ने अब राजनैतिक रूप धारण कर लिया था और अब ये एक दूसरे के राजनैतिक शत्रु हो गये थे। इसी समय रोम के प्रांतीय शासन-पद्धति का निर्माण हुआ। रोम के प्रांत लाटों के अधीन होता था। प्रांतीय लाटों को इन प्रांतों पर पूरा अधिकार रहता था और वह वहाँ के आय और व्यय के सम्बन्ध में भी पूरा स्वतन्त्र था। इस समय रोम के प्रांत के लाट प्रजा के साथ बड़ा अत्याचार करते थे। इस समय बाहर के प्रांतों की दशा तथा उनकी शासन प्रणाली बहुत दूषित हो गई थी। अब रोम में वोट भी बिकने लगे थे और बहुत कृषक अपने खेतों को बेंच कर रोम में चले आए थे और वोटों को बेंच कर निर्वाह करते थे। इन सब विजयों के बाद सीनेट की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। इन विजयों के कारण रोम में कई नए प्रश्न उत्पन्न हो गये थे और सीनेटर लोग ही इन प्रश्नों को हल किया करते थे। इन विजयों के पहले कसल की शक्ति प्रधान तथा अधिक थी परन्तु इसके बाद सीनेट की शक्ति प्रधान तथा अधिक हो गई।

(३) इन विजयों का सापत्तिक प्रभाव

यहां के धनवान लोग तो और भी अधिक धनवान् हो गये क्योंकि लूट का बहुत माल रोम में आया और दरिद्र लोग और भी अधिक दरिद्र होते चले गये। कृषकों की दशा तो और भी अधिक बिगड़ गई और इनकी संख्या बहुत कम हो गई क्योंकि इन्हें अब खेती में कुछ भी लाभ नहीं होता था। इसलिए इन लोगों ने खेती का काम करना छोड़ दिया और या तो ये शहर में बस गये अथवा सिपाही का काम करने लगे। बाहर से अन्न आने लगा और बड़े बड़े खेती के कारखाने खुल गये। इन कारणों से भी कृषकों को बड़ी हानि पहुंची।

जितनी बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुईं, उनमें सहस्रों आदमी दास बनाए जाते थे। इसलिए ये बहुत कम दामों पर रोम में बिकते थे। रोम के बड़े बड़े ज़मींदार और व्यापारी लोग अपने कामों के लिए उन्हें सस्ते भावों पर मोल ले लेते थे और उनसे खेती तथा व्यापार का काम कराते थे। इस प्रकार उन्हें बड़ा लाभ होता था। परन्तु इसका एक बड़ा बुरा प्रभाव यह पड़ा कि रोम के मजदूरों को काम मिलना कठिन होगया। इधर दासों की संख्या बढ़ने से कभी कभी ये विप्लव भी करने लगे। विप्लवों का रोम के सापत्तिक-अवस्था पर भी प्रभाव पड़ा।

इन सब परिवर्त्तनों के सम्बन्ध में डबलू वार्ड फाउलर-साहब का मत

फाउलर साहब ने लिखा है कि इन सब विजयों का रोम पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और प्रत्येक क्षेत्र में रोम की अवनति होने लगी। उन्होंने लिखा है कि अब रोम का सामाजिक जीवन बहुत गिर गया था। इसके पहले रोम में स्त्रियों के त्यागने की प्रथा नहीं

थी परन्तु सबसे पहले इसी समय स्त्री त्यागने की प्रथा चली। अब स्त्रियाँ भी पुरुषों को विष पिलाने लगी थीं। इस समय स्त्रियों का ही रोम में राज्य था। इस सम्बन्ध में केटो ने भी लिखा है—"हम लोग तो सारे सभ्य संसार पर इस समय शासन कर रहे हैं परन्तु हम लोगों की स्त्रियाँ हम लोगों पर शासन करती हैं।"

फाउलर-साहब का विचार है कि इस समय रोम के प्रत्येक प्रकार के जीवन में दोष आ गया था। कर्त्तव्य परायणता और सत्यप्रियता आदि गुण रोम से उड़ गये थे और पदाधिकारी लोग भी खूब घूस लेते थे।

यूनानी-विजय का रोम पर प्रभाव

इसमें संदेह नहीं कि रोम वालों ने यूनानियों को लड़ाई में हरा दिया था परन्तु यह विजय केवल शारीरिक थी। वास्तव में यूनानियों के मस्तिष्क ने रोम के मस्तिष्क को हरा दिया था। इस पराजय के बाद से रोम निवासियों ने यूनानी साहित्य तथा कला का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया था। इस समय रोम में यूनानियों की ही तूती बोलती थी। रोम के नवयुवकों को पढ़ाने के लिए यूनानी लोग शिक्षक नियत किए जाते थे। रोम पर यूनान की सभ्यता का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। धीरे धीरे रोम निवासी यूनानी-साहित्य, कला कौशल तथा अन्य सब बातों का अनुकरण करने लगे। पश्चिमी सभ्यता की जन्म-भूमि यूनान ही है और रोम ने भी उसी यूनान से बहुत कुछ सीखा है। यूनान के संपर्क से रोम के निवासियों की साहित्य-प्रियता बहुत बढ़ गई और धीरे धीरे रोम के साहित्य की वृद्धि हो चली। यूनान के प्रभाव से रोम के निवासी दर्शन और गहन विषयों का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय यूनान की सभ्यता ने रोम की सभ्य

को अच्छी तरह से दबा दिया था। साधारण व्यवहार में भी अब रोम के लोग यूनानियों का अनुकरण करने लग गये। यहाँ तक कि इस विजय के बाद रोम के घरों में यूनानी रीति, रिवाज और रूढ़ियों का भी प्रयोग होने लगा था। एक प्रकार से रोम अब अपनी सारी पुरानी बातों को भूल गया। इसमें सन्देह नहीं कि अब भी रोम में रोम के लोग ही शासन कर रहे थे परन्तु रोम के लोगों की सभ्यता अब यूनानी-सभ्यता थी। इसलिए कुछ इतिहासज्ञ लिखते हैं। रोम के लोगों ने यूनानियों को हरा भी दिया और उनसे हार भी गये। इस प्रकार कला तथा साहित्य के मैदान में विजित-यूनान ने विजयी रोम को जीत लिया।

इससे सदेह नहीं कि यूनानी-सभ्यता का रोम के निवासियों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। परन्तु इसका यह आशय नहीं है कि इस सभ्यता के प्रभाव का क्षेत्र भी विस्तृत था क्योंकि इसका प्रभाव केवल थोड़े ही लोगों पर पड़ा था। साधारण लोग यूनानी सभ्यता का आशय ही नहीं समझ सके। इसलिए कुछ लोगों पर इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा क्योंकि इन लोगों ने समझ लिया कि भाँति भाँति के आनन्द में मग्न रहना ही यूनानी-सभ्यता है। इन लोगों ने यूनान की वास्तविक सभ्यता का आशय ही नहीं समझा। अतएव रोम की बड़ी भारी हानि हुई क्योंकि यूनान की वास्तविक सभ्यता नहीं समझने के कारण से ही रोम में तरह तरह की बुराइयों का प्रचार हो गया। धीरे धीरे इन बुराइयों का सब लोगों पर प्रभाव पड़ गया। इसमें संदेह नहीं कि यूनान के प्रभाव से रोम में साहित्य-प्रियता बढ़ गई परन्तु उसके साथ-ही-साथ रोम में स्वतन्त्रता की लहर भी खूब बढ़ी और बहने लगी। इस स्वतन्त्रता के कारण से रोम के लोगों के पहले के आज्ञापालन, देश-प्रेम, राजभक्ति तथा वीरता आदि गुण कम हो गये। इस प्रभाव से स्त्रियों की

विलासिता तो और भी अधिक हो गई। इन सब बातों तथा बुराइयों के रोकने के लिए सीनेट को कानून बनाने पड़े थे। सीनेट मे भी कई प्रकार की बुराइयाँ आ गई थीं। पोर्सियस केटो ने इन सब बुराइयों के बन्द करने का घोर प्रयत्न किया परन्तु उसे कुछ भी सफलता नहीं हुई।

यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो भारतवर्ष की दशा भी इस समय लगभग रोम की दशा के समान ही है। अंगरेजी-सभ्यता में गुण तथा दोष दोनों ही हैं। परन्तु इस देश के कुछ लोग केवल अंगरेजी-सभ्यता की बुराइयों का ही अनुकरण करते हैं।

तेरहवाँ अध्याय

प्रजातन्त्र की शासन-व्यवस्था

प्रत्येक राजनीति-शास्त्र का विद्यार्थी जानता है, सब राज्यो अथवा राष्ट्रों मे, नियामक, शासक और निर्णायक तीनो ही शक्तियाँ किसी न किसी रूप मे अवश्य ही वर्त्तमान रहती हैं। ये तीनो शक्तियाँ किसी एक को अंतिम सीमा तक नहीं बढ़ने देतीं और एक दूसरे को उसकी मर्यादा के भीतर ही रखती हैं। राजा मे ये तीनो ही शक्तियाँ रहती हैं परन्तु प्रजा तन्त्र में ये भिन्न भिन्न रूप धारण कर लेती हैं। जब तक रोम में राजाओं का राज्य था, तब तक नियामक, शासक और निर्णायक तीनो ही शक्तियाँ राजा में थीं परन्तु जब रोम में प्रजातन्त्र की स्थापना हो गई तब इन तीन शक्तियों ने निम्नलिखित तीन रूपों को धारण किया —

(१) सीनेट-सभा (२) व्यवस्थापिका सभाएँ और (३) मजिस्ट्रेट परन्तु इस कथन से यह नहीं समझ लना चाहिए कि तीनो शक्तियो के ये तीनो ही अलग अलग रूप थे।

(१) सीनेट-सभा

कदाचित् सब से पहले सीनेट-सभा का निर्माण हुआ था। इसमें नगर के बड़े बड़े, अनुभवी तथा उच्च घराने के आदमी आजन्म के लिए सभासद् बना दिए जाते थे। इसमें सब से पहले मजिस्ट्रेट लोग ही भरती किए जाते थे। पहले तो सीनेट-सभा का काम सम्मति देना मात्र था परन्तु धीरे धीरे उसकी शक्ति बहुत बढ़ गई थी। कभी कभी तो सीनेट की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ जाती थी परन्तु कभी कभी उसकी शक्ति नाम-मात्र ही रह जाती थी। बात

यह थी कि सीनेट सभा के नियम कहीं लिखे हुए नहीं थे परन्तु य नियम प्रयोगों तथा सीनेटरों पर ही निर्भर थे। इनकी सख्या ३०० थी परन्तु इनकी सख्या भी घटती बढ़ती रहती थी। कभी कभी तो सीनेट की शक्ति अपरिमित हो जाया करती थी। व्यवस्थापिका सभाओ के ऊपर भी इसका अधिकार था क्योकि किसी नियम को व्यवस्थापिका-सभाओ मे कानून बनने के पहले, उसके सम्बन्ध में सीनेट की आज्ञा लेनी आवश्यक थी। प्रांतीय तथा अन्य देशीय, तथा सब प्रकार के अर्थ सम्बन्धी विषयों में सीनेट का पूरा अधिकार था। सब द्रव्यो का वितरण इन्हीं की आज्ञा के अनुसार होता था, प्रांतीय गवनरो को ये ही नियत करते थे, विदेशों से युद्धादि का निश्चय ये ही करते थे और विदेशो में ये ही किसी सीनेटर को दूत बना कर भेजते थे।

(२) व्यवस्थापिका सभाएँ

वास्तव मे तो रोम मे दो ही प्रधान व्यवस्थापिका सभाएँ-कमीटिया सेंचूरियाआटा और कमीटिया ट्रिब्यूटा—थीं। परन्तु इनके अतिरिक्त—कमीटिया क्यूरिआटा और प्लेबीट्रिब्यूटा—दो और व्यवस्थापिका सभाएँ भी थीं।

(अ) कमीटिया क्यूरिआटा

यह केवल पेट्रीशियनों की ही सभा थी। प्राचीन काल में यह शक्ति शाली थी। परन्तु शीघ्र ही यह शक्ति हीन हो गई और अप्रसिद्ध भी हो गई। अब इसमें केवल धार्मिक-कार्मो के लिए ही पेट्रीशियन लोग परस्पर मिला करते थे।

(ब) कमीटिया सेंचूरिआटा

इसमें पेट्रीशियन और प्लेबियन दोनों ही सम्मिलित हो सकते थे और होते थे। जब यह सभा स्थापित हुई, तब इसने कमीटिया

क्यूरिआटा के सब अधिकारों को छीन लिया और यह रोम में सब से अधिक प्रसिद्ध सभा हो गई। यही सभा प्रजातन्त्र के भारी भारी पदाधिकारियों को चुनती थी, युद्ध तथा शान्ति के प्रश्नों के बारे में बहस करती थी और न्याय का भी काम करती थी। जिन लोगों को मृत्यु का दंड दिया जाता था, उनकी अपील केवल इसी सभा में हो सकती थी और कहीं नहीं।

(स) कमीटिया ट्रिब्यूटा

इसमें भी पेट्रीशियन और प्लेबियन दोनों ही सम्मिलित हो सकते थे। वास्तव में यह जनता की सभा थी, इस सभा में जाति के अनुसार वोट दिए जाते थे, व्यक्ति के अनुसार नहीं। इस में भी पहले न्याय का काम होता था और छोटे छोटे मजिस्ट्रेटों को भी यह सभा नियत करती थी। परन्तु जब प्लेबा और पेट्रीशों के झगड़े का अंत हो गया, तब इस सभा की शक्ति बहुत बढ़ गई। यह नियम को कानून बनने से रोक सकती थी और सरकार के सब कामों को बन्द कर सकती थी। इसका सभापति कसल या प्रीटोर हो सकता था। लिवी ने लिखा है कि सब से पहले कसलों तथा मजिस्ट्रेटों के विरुद्ध ट्रिब्यून बनाए गये। इसी नाम के अनुसार कमिटिया ट्रिब्यूटा की सृष्टि हुई, जिनमें ट्रिब्यून ही सभापति आदि होते थे। लिवी ने कमीटिया ट्रिब्यूटा का जब जब प्रयोग किया है, तब तब उस से यही पता चलता है कि इसमें केवल प्लेब रहते थे परन्तु लीवी की यह बात गलत मालूम पड़ती है क्योंकि रोम में कमीटिया का प्रयोग सर्व साधारण के लिए ही किया जाता था।

(द) प्लेब-ट्रिब्यूटा

यह केवल प्लेबों की सभा थी। इसके सभापति केवल प्लेब मजिस्ट्रेट अथवा ट्रिब्यून ही हो सकते थे। पीछे इसकी शक्ति भी

बहुत बढ़ गई थी और इस सभा मे स्वीकृत किए हुए नियमों को सब को मानना पड़ता था।

(३) मजिस्ट्रेट

रोम के माजिस्ट्रेट दो भागो में विभाजित किए जा सकते हैं - (१) भूषणमय मजिस्ट्रेट और (२) भूषण रहित मजिस्ट्रेट। ऊँचे दर्जे के मजिस्ट्रेट—जैसे कसल, सेंसर और प्रीटॉर आदि—ऐसी कुरसियो पर बैठते थे जो भांति भांति के भूषणों से सजी होती थीं। इसलिए ये भूषणमय मजिस्ट्रेट कहलाते थे। इनसे छोटे दर्जे के मजिस्ट्रेट—जैसे क्वेस्टर, इयाडील और ट्रिब्यून आदि—सादी कुरसियों पर बैठते थे। इसलिए ये भूषण रहित मजिस्ट्रेट कहलाते थे।

(१) कंसल

सन् ५१० ई० पू० में प्रजातन्त्र का प्रारंभ हुआ और राजा के स्थान पर प्रति वर्ष दो कसल चुने जाने लगे। स्वय जनता इन्हें चुनती थी, वर्ष के अंत में इन्हें सब अधिकार छोड़ देना पड़ता था। कुछ दिनों के बाद ऐसा समय भी आ गया कि कसल एक वर्ष से अधिक दिनों तक भी रहने लगा। कभी कभी तो स्वय सिनेट ने कसलो की अवधि बढ़ा दी थी और कभी कभी स्वय कसलों ने अपने कसल के पद को छोड़ना अस्वीकार कर दिया। कसल लोगो की शक्ति कभी कभी बहुत अधिक और कभी कभी बहुत कम हो जाती थी क्योंकि जब कोई प्रबल मनुष्य कसल बनता था तो वह मनमानी भी करता था और सीनेट भी उससे डरने लगती थी। परन्तु कोई कमजोर मनुष्य कसल चुना जाता था तो उसकी शक्ति भी कम हो जाती थी। काम करने के लिए इन कसलों के नीचे बहुत से छोटे अधिकारी रहते थे और ट्रिब्यून भी

नके साथ ही साथ शासन-कार्य में भाग लेते थे। लड़ाई के समय कसल ही प्राय: सेनापति बना दिए जाते थे। कसलों की सहायता के लिए सीनेट और कमीटिया दो सभाएँ होती थीं। वास्तव में कसल ही अब प्रजातंत्र में सर्वश्रेष्ठ पद हो गया था क्योंकि सैनिक तथा अन्य सब विषयों में ये ही सबसे बड़े अफसर थे। सीनेट-सभा और सब व्यवस्थापिका सभाओं के सभापति ये ही होते थे और ये ही इन सभाओं का सञ्चालन भी करते थे। सेनाओं के सेनापति ये ही होते थे और सिपाहियों को मृत्यु दण्डादि भी ये दे सकते थे।

(२) सेंसर

रोम में दो सेंसर चुना जाया करते थे। एक प्रकार से यह दर्जा भी सर्वश्रेष्ठ ही था क्योंकि इस पद पर केवल वे ही लोग हो सकते थे, जो पहले कसल रह चुके हों। वे प्रत्येक पाँचवें वर्ष चुने जाते थे। उनके निम्नलिखित प्रधान तीन काम हुआ करते थे :—

(१) ये प्रत्येक मनुष्य के धन की गणना करते थे और उन्हीं की गणना के अनुसार प्रजा पर टैक्स लगाया जाता था। सेंसर लोग ही सीनेट के रिक्त स्थानों को भरते थे।

(२) सेंसर लोग सब के प्राइवेट तथा पबलिक चाल चलन तथा कामों पर दृष्टि रखते थे और उन्हें दंड भी देते थे। ये सीनेटरों को सीनेट-सभा से और किसी व्यक्ति को उसकी जाति से भी अलग कर सकते थे।

(३) वे सीनेट की आज्ञा के अनुसार कर तथा कोष का भी प्रबन्ध करते थे।

टेलर साहब ने लिखा है कि सेंसरों के नियुक्त होने से रोम में न्याय की व्यवस्था बहुत अच्छी हो गई। जो सीनेट घूस लेते थे अथवा और किसी तरह से अयोग्य होते थे, उन्हें ये सीनेट सभा से निकाल देते थे। सेंसरों की शक्ति धीरे धीरे बहुत बढ़ गई।

(३) डिक्टेटर

जब कोई आभ्यन्तरिक अथवा बाहरी भय उत्पन्न होता था, तो कसल अपना काम बन्द कर देते थे और उनके स्थान पर एक डिक्टेटर नियुक्त होता था। यह केवल ६ महीने के लिए ही नियुक्त किया जाता था। अपने समय में वह निरंकुश राजा की तरह काम कर सकता था और करता भी था। वह जो चाहता था, करता था और सब लोगों को उसकी आज्ञा माननी पड़ती थी। प्रजातन्त्र के प्रारम्भ काल में ही ये प्राय: चुने जाते थे। प्यूनिक-युद्धों के बाद ये बहुत कम चुने जाते थे। वह परिमित समय के लिए निरङ्कुश राजा ही होता था।

(४) क्वेस्टर

ये प्रजातन्त्र के कर्मचारियों के वेतन का वितरण किया करते थे। ये कर आदिक आमदनी जमा करते थे और सैनिक तथा अन्य लोगों के वेतन का वितरण भी करते थे। इन्हें आय-व्यय का भी हिसाब रखना पड़ता था।

(५) ईडायील

पहले तो इस पद पर केवल प्लेब ही लोग हुआ करते परन्तु पीछे से इनकी संख्या और बढ़ा दी गई जिनमें से पेट्रीशियन-ही सकते थे। इन्हें नाली, मकानों तथा मन्दिरों का प्रबन्ध करना पड़ता था। ये पुलिसों का भी निरीक्षण कर सकते थे। ये पबलिक तिहवारों का भी प्रबन्ध करते थे।

(६) ट्रिब्यून

ट्रिब्यून केवल प्लेब ही हो सकते थे। इनका प्रधान काम प्लेबों के हित की रक्षा करना था। इन्हें 'वीटो' का अधिकार प्राप्त था। ये कसल तथा किसी भी मजिस्ट्रेट के कामों को बन्द कर दे सकते थे और किसी भी कानून को अस्वीकार कर सकते थे। वास्तव में ट्रिब्यूनों के अधिकार बहुत थे। ये पवित्र माने जाते थे और इनके साथ हाथापाई करने वाला अथवा इनसे लड़ने वाला आदमी राजद्रोही समझा जाता था। पहले इनकी संख्या केवल दो थी परन्तु पीछे यह १० तक बढ़ गई थी। सीनेट भी ट्रिब्यूनों का कुछ नहीं कर सकती थी परन्तु ट्रिब्यून कसल को भी जेल की हवा खिला सकते थे।

(७) प्रीटोर

प्रीटोर शब्द का प्रयोग रोम के इतिहास मे कई अर्थों मे किया जाता है। पहले तो कसल को ही प्रीटोर कहते थे। परन्तु इसके बाद जो प्रीटोर पद अलग नियत किया गया वह एक न्यायकर्त्ता हुआ करता था। इसके बाद एक और पद प्रीटोर का नियत किया गया जो विदेशियों के साथ व्यवहार करता था। ये सीनेट को भी बुला सकते थे और सैनिक काम भी ले सकते थे। जब रोम की विजय होने लगी और उसका विस्तार बढ़ने लगा तो चार और प्रीटोर के पद की सृष्टि हुई। ये गवर्नर का काम करते थे।

रोम की शासन-व्यवस्था की समालोचना

रोम की शासन व्यवस्था सिद्धान्त रूप से तो प्रजातन्त्र ही थी क्योंकि अब रोम मे कोई पद अथवा कोई अफसर वंश परंपरागत

नहीं था। मजिस्ट्रेटों का चुनाव जनता करती थी और ये ही मजिस्ट्रेट, सीनेट-सभा का निर्माण करते थे। परन्तु इन मजिस्ट्रेटों को कुछ भी वेतन नहीं मिलता था। इसके विरुद्ध इन्हें अपने पास से भी खर्च करना पड़ता था। वोट के लिए तथा जनता को प्रसन्न रखने के लिए इन्हें अपने पास से व्यय करना पड़ता था। इसलिए केवल धनाढ्य लोग ही इसके लिए खड़े होते थे और धनाढ्यों की सख्या परिमित थी। इसलिए केवल धनवान लोग ही मजिस्ट्रेट बन सकते थे। फिर ये ही लोग (मजिस्ट्रेट) सीनेटरों को भी चुनते थे। इसका अभिप्राय यह हुआ कि धनवान लोग ही सीनेटर हो सकते थे। इसलिए इन परिमित धनवान् घरो के लोग ही प्राय सब पदो पर काम करते थे और साधारण लोगों का हाथ शासन-व्यवस्था मे बहुत कम रहता था। इसलिए रोम म एक प्रकार से अल्पजन सत्तात्मक राज्य ही था।

थ्यूसीडाईडीज ने एक बार कहा था :—"एथेंस में प्रजातन्त्र तथा लोकतन्त्र राज्य तो नाममात्र ही था, वास्तव में तो वहाँ, उसके नागरिकों मे से कुछ मुख्य नागरिकों का ही राज्य था।"

कई अंशो मे थ्यूसीडाईडीज़ का उक्त कथन रोम के लिए भी सत्य ही जान पड़ता है।

रोम की शासन व्यवस्था के अध्ययन से भी यही पता चलता है कि वहाँ पर शक्ति का विभाग अच्छी तरह से नहीं हुआ था। उदाहरण के लिए हम ट्रिब्यून ही को ले सकते हैं। एक प्रकार से इसकी शक्ति अपरिमित थी। वह केवल कानून ही को बन्द नहीं कर सकता था परन्तु प्रजातन्त्र के सारे काम को भी बन्द कर सकता था और मजिस्ट्रेटों के फैसलों को भी रद्द कर सकता था। इस प्रकार ट्रिब्यूनों में नियामक, शासक और निर्णायक तीनों ही

शक्तियाँ मौजूद थीं। इसी प्रकार रोम के अन्य पदाधिकारियों के विषय में भी दिखलाया जा सकता है कि रोम के प्रजातन्त्र में तीनों शक्तियों का उचित प्रबन्ध नहीं किया गया था।

वास्तव में रोम में न तो प्रजातन्त्र था, न प्रतिनिधितन्त्र, न लोकतन्त्र न राजतन्त्र और न रिपबलिक ही। वास्तव में वहाँ पर इन सब तन्त्रों का अपूर्व तथा विचित्र मिश्रण था। दो कसल के अधिकार राजाओं के समान था परन्तु ट्रिब्यून लोग कसलों की शक्ति को मर्यादा के भीतर और परिमित कर देते थे। सीनेट में भी जनता का विशेष अधिकार नहीं था किन्तु कुछ थोड़े लोगों का ही। कई व्यवस्थापिका सभाएँ थीं। अतएव किसी एक की शक्ति प्रबल नहीं हो सकती थी। परन्तु रोम की व्यवस्था में सबसे भारी एक दोष यह था कि कोई केन्द्रिक-शक्ति तो थी ही नहीं। कोई भी ऐसी शक्ति थी ही नहीं जो किसी विशेष काम को—चाहे वह कितना ही उत्तम क्यों न हो—करने के लिये सबको विवश कर सके। कसल अथवा डिक्टेटर, सीनेट और कमीटिया में प्राय प्रतिद्वन्दिता होती रहती थी। कभी एक सभा प्रबल होती थी और कभी दूसरी। कभी कमीटिया प्रधान हो जाती थी और कभी सीनेट बाज़ी मार ले जाती थी। इसमें सन्देह नहीं कि ट्रिब्यून लोग सीनेट के कामों को रोक सकते थे परन्तु यदि एक भी ट्रिब्यून सीनेट के पक्ष में हो जाता था, तो वह सब ट्रिब्यूनों के विरुद्ध और सीनेट के पक्ष में लड़ सकता था। क्योंकि तब वह ट्रिब्यूनों के कामों को भी अपने विशेष अधिकार 'वीटो' से रद्द कर सकता था।

ये सब बातें तो थीं परन्तु इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि रोम में व्यवस्था का भाव बड़ा प्रबल था। इन सब मतभेदों के होने पर भी कभी रोम नगर की शान्ति भंग नहीं हुई। इन सब

मतभेदों के सम्बन्ध में वादविवाद हुए, धमकियाँ दी गईं, चालसी और चालाकी से काम लिया गया परन्तु मार काट की नौबत कभी नहीं आई। रोम की व्यवस्था-प्रियता का इससे बढ़ कर और कोई प्रमाण नहीं हो सकता। इसमें सन्देह नहीं कि पीछे आपस के रक्तपात से रोम नगर की गलियाँ लाल हो गई थीं परन्तु उनमें से अधिक युद्धों का कारण भी व्यवस्था-प्रियता ही था।

रोम का इतिहास

तीसरा भाग

प्रजातंत्र की विजय से प्रजातंत्र के अन्त तक

चौदहवाँ अध्याय

सन् १३३ ई० पू० में रोम की दशा और उसकी समालोचना

अब हम लोगों को रोम की सन् १३३ ई० पू० की दशा का भी अध्ययन करना चाहिए क्योंकि रोम के इतिहास में सन् १३३ ई० पू० एक बहुत ही प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण वर्ष है। इसी वर्ष से रोम की उस आंतरिक क्रान्ति का प्रारंभ होता है जो पीछे बहुत प्रबल हो गई और जिसका अंत, प्रजातन्त्र के पतन के साथ ही-साथ हो गया। इसी वर्ष से रोम में उन सब आभ्यंतरिक बातों का प्रारंभ हुआ जिनसे रोम में अन्त में एक मनुष्य की शक्ति प्रधान हो गई और रोम में साम्राज्य स्थापित हो गया।

सन् १३३ ई० पू० में रोम की राजनैतिक दशा

सन् १३३ ई० पू० में रोम की सत्ता लगभग सारे सभ्य संसार में फैल गई थी और सब लोगों ने उसके प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया था। रोम इस समय इटली का ही स्वामी तथा नेता नहीं था परन्तु सिसली, सारडिनिया, कारसिका, स्पेन, मैसेडोन, मिश्र, यूनान, अफ्रिका और एशिया का भी। भूमध्य सागर के आस पास के देशों पर भी अब रोम ही का अधिकार था। इस प्रकार रोम का राज्य एशिया, अफ्रिका और यूरोप पर स्थापित हो गया था। इसमें सदेह नहीं कि रोम के लोगों में धैर्य की मात्रा भी बहुत अधिक थी, परन्तु उनकी सफलता का कारण शासन पटुता भी थी। वे विजित लोगों को अपने में मिला लेते थे, उनकी रीतियों

तथा रूढ़ियों का आदर करते थे और कभी कभी उन्हें स्वतन्त्रता भी दे देते थे। इन सब कारणों से रोम का राज्य दृढ़ हो गया।

सामाजिक-अवस्था

इस समय प्लेबियनो और पेट्रीशियनों का परस्पर का सब झगड़ा मिट गया था और अब दोनों अपने को 'रोमन' कहने लगे थे। अब उनमे विवाहादिक सस्कार भी होने लगे थे और पूर्व के झगडे का अब उनमे कोइ चिन्ह नहीं रह गया था। परन्तु अब समाज मे एक नया झगडा उठ खड़ा हुआ था। यह झगड़ा धनवानों और दरिद्रो का था। रोम की विजयों के कारण कुछ लोग तो बहुत ही अधिक धनवान हो गये थे और कुछ बहुत निर्धन। इसलिए ये दो भिन्न भिन्न दलो में विभक्त हो गये थे। इनमें से प्रत्येक शासन में भाग लेना चाहता था परन्तु एक प्रकार से दरिद्र लोग सब अधिकारो से वंचित थे।

टाइबीरियस ग्रेकस

इसके पिता का नाम सेंप्रोनियस ग्रेकस और इसकी माता का नाम कारनीलिया था। कारनीलिया, बड़े सिपियो अफ्रीकैनस की कन्या थी। टाइबीरियस ग्रेकस के छोटे भाई का नाम कायस ग्रेकस था। इनके लड़कपन मे ही इनके पिता का देहान्त हो गया था। इसलिए इनकी शिक्षा तथा पालन-पोषण का सब भार कारनीलिया पर ही पड़ा। कारनीलिया वास्तव मे बड़ी गुणवती स्त्री थी। उसमें प्राचीन रोम की श्रेष्ठ-माताओं के सब गुण मौजूद थे। वह पढ़ी-लिखी तथा विदुषी भी थी। इसी सुशील तथा गुणवती माता ने बड़े परिश्रम से दोनों भाइयों को पढ़ाया था। टाइबीरियस ग्रेकस, बहुत सरल तथा सीधा था। परन्तु इसके व्याख्यान का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता था। सैनिक-शिक्षा भी उसे खूब मिली थी। इसने तीसरे

प्यूनिक-युद्ध में सिपाही तथा सेनापति का काम किया था। स्पेन में भी रोम की ओर से यह लड़ा था।

रोम की परिस्थिति का अनुभव

टाइबीरियस ने साधारण लोगों की स्थिति तथा उनकी शोचनीय दशा का अच्छी तरह से अनुभव किया था। जब यह स्पेन मे लड़ने के लिए जा रहा था, तब इसे कई गाँवो तथा शहरों में होकर जाना पड़ा था। उसी समय उसने इटली के लोगों की गिरी हुई तथा शोचनीय दशा का अनुभव किया था। उसने देखा कि गाँवो मे दास लोग जमींदारो तथा सरदारो की ओर से खेती करते थे और स्वतन्त्र कृषकों का नाम गांव से भी उठता जाता था। उसने देखा कि शहर तथा गाँव के लोग, स्वय दरिद्रता से घोर युद्ध कर रहे थे। उसने यह भी देखा कि राज्य की भूमि का अधिक भाग सरदारों तथा जमींदारों के अधीन है। ये लोग सरकार को कुछ कर दिया करते थे। परन्तु कृषको के पास अपनी जमीन नहीं थी।

टाइबीरियस, ट्रिब्यून के पद पर

सन् १३३ ई० पू० में टाइबीरियस ग्रेकस ट्रिब्यून चुना गया। ज्योंहीं यह ट्रिब्यून चुना गया त्योंही इसने भूमि-सम्बन्धी एक प्रस्ताव किया। उस समय सारी भूमि सरदारों के हाथ में थी। उसने विचार किया कि यदि यह भूमि सरदारों से ले ली जाय और छोटे छोटे टुकड़ो में विभाजित करके गरीब लोगों तथा समस्त नागरिकों में बाट दी जाय तो बड़ा अच्छा हो। इसी उद्देश्य से उसने निम्नलिखित बातो के लिए प्रस्ताव पेश किया —

(१) किसी एक मनुष्य के पास ५०० जुगेरा से अधिक जमीन नहीं होनी चाहिए। यदि किसी के लड़के भी हों तो प्रत्येक के लड़के के लिए २५० जुगेरा और जमीन मिलनी चाहिए।

(२) यदि किसी आदमी के पास इससे अधिक जमीन हो तो उसे लौटा देना चाहिए। हाँ, जमीन का दाम उसे मिल जायगा।

(३) प्रत्येक गरीब आदमी को ३० जुगेरा जमीन मिलनी चाहिए। यह भी शर्त होनी चाहिए कि ये उसे बेंच न सकें क्योंकि यदि इन्हें बेंचने का अधिकार दिया जायगा, तो फिर सब जमीन धनाढ्यों के पास चली जायगी।

(४) प्रत्येक वर्ष इस कानून को कार्य रूप में परिणत करने के लिए तीन मनुष्यों का एक कमीशन नियुक्त करना चाहिए और जो लोग इन सब नियमों का पालन न करें उन्हें कड़ा दंड देना चाहिए।

स्वभावत धनाढ्य लोगों ने इसका घोर विरोध किया। भला ऐसा नियम इन्हें कैसे रुचिकर हो सकता था। इन लोगों ने यहाँ तक समझा कि सरकार इन सब जमीनों को जब्त कर रही है। इन सब जमीनों पर धनाढ्यों का बहुत दिनों से अधिकार था तथा ये लोग इन सब जमीनों को अपनी प्राइवेट जमीन समझने लग गये थे। इसलिए इन धनिकों ने इस प्रस्ताव के विरुद्ध खूब प्रयत्न किया तथापि इन लोगों की दाल नहीं गली। टाइबीरियस ग्रेकस का प्रस्ताव पास हो गया। अब इन धनिकों ने और कोई दूसरी चाल चलने का प्रयत्न किया। अब किसी दूसरे ट्रिब्यून की सहायता के बिना इन लोगों का काम नहीं चल सकता था।

यदि स्वय कोई ट्रिब्यून इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता तब यह कानून का रूप नहीं धारण कर सकता था। ने आक्टेवियस नामक ट्रिब्यून को अपने पक्ष में कर इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार

कानून नहीं बन सका। इस पर जनता और टाइबीरियस ग्रेकस दोनों ही सीनेट तथा आक्टेवियस से बिगड़ गये। अंत में टाइबीरियस ने जनता को इस बात के लिए प्रेरित किया कि आक्टेवियस को पदच्युत कर दे। जनता ने ऐसा ही किया, टाइबीरियस के प्रयत्नों से आक्टेवियस पदच्युत कर दिया गया।

रोम के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि इसका नैतिक प्रभाव बहुत अधिक है। आक्टेवियस का काम—चाहे जनता को अच्छा लगे या न लगे—सर्वथा रोम की व्यवस्था के अनुकूल और नियमों के अनुसार था। परन्तु टाइबीरियस का यह काम रोम के प्राचीन नियमों के सर्वथा विरुद्ध था। ट्रिब्यून का इस प्रकार पदच्युत होना रोम ने इसके पहले कभी नहीं देखा था। बहुतों ने इसे क्रांति का संकेत समझा। कानून के अनुसार उस वर्ष आक्टेवियस के विरुद्ध कोई कुछ नहीं कर सकता था। एक प्रकार से क्रान्ति का आरम्भ यहीं से हो गया। इसके बाद लोग राजनियमों को तोड़ने में संकोच नहीं करते थे। इसका फल यह हुआ कि टाइबीरियस ग्रेकस से लोग घृणा करने लगे।

इसी समय परगेमस प्रांत का राजा, अपना सब धन छोड़ कर और रोम को अपना उत्तराधिकारी बना कर निःसंतान मर गया। टाइबीरियस ने यह प्रस्ताव किया कि उसका सब धन दीन प्रजा में बाँट दिया जाय। टाइबीरियस के इस काम से सीनेट बहुत अप्रसन्न हुई। सीनेट ने कहा कि टाइबीरियस हम लोगों के अधिकारों पर हमला करता है। सीनेट अति प्राचीन काल से रोम के आर्थिक और प्रान्तीय प्रश्नों को हल करती रही है। परन्तु अब टाइबीरियस उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाता है। टाइबीरियस ग्रेकस को इसमें सफलता न हुई। अब सीनेट ने टाइबीरियस की अवधि समाप्त होने पर उस पर अभियोग चलाने का विचार किया।

और देश भक्त था। यह अपने भाई की तरह केवल एक समाज सुधारक ही नहीं था। वह सीनेट की शक्ति को कम और वीरा (knigts) की शक्ति को अधिक करना चाहता था। वास्तव में उसका भीतरी उद्देश्य यही था। दरिद्रो की दशा सुधारना तो उसके विचार में गौण बात थी। परन्तु अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह जनता को अपने साथ लेना आवश्यक समझता था। इसलिए जनता के हित के लिए भी काम करता था। उसके हृदय में भाई की मृत्यु का घाव बना हुआ था और वह सीनेट से इसका बदला लेना चाहता था। परन्तु उसकी प्रसिद्ध, धीर तथा आदर्श माता ने उससे कहा था :—"बेटा बदला लेना अच्छा है परन्तु रोम की हानि करके बदला-लेना-बुरा-है।"

कायसग्रेकस के सुधार

कायस ने बहुत से क्रान्तिकारी प्रस्ताव किए और उन सब बातो को कानून के रूप में परिणत कर दिया जिनके लिए इसके भाई ने अपना प्राण दे दिया था। इसके सुधार दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं —(१) सेंप्रोनियन-कानून जिससे उसने जनता की दशा को सुधारने का प्रयत्न किया (२) सीनेट की शक्ति को कम करने के लिए कानून। इसी को राजनैतिक सुधार भी कह सकते हैं।

कायस ग्रेकस के सुधारो का अधिक सम्बन्ध उन सब कानूनों से है जो उसने पास करवा दिए।

कायस ग्रेकस के समय मे कई प्रसिद्ध कानून बने हैं। वास्तव में वह रोम की वर्त्तमान व्यवस्था में बड़ा भारी परिवर्त्तन करना चाहता था। वह सरदारो की शक्ति को नष्ट कर जनता की शक्ति को प्रधान बनाना चाहता था। उसने एक यह नियम स्वीकृत करा लिया कि रोम के सब नागरिको को एक मास के खाने के लिए

अनाज आधे दाम पर मिला करे। इस नियम के स्वीकृत होते ही साधारण जनता कायस के पक्ष में हो गई। इसका नया अनाज-नियम नाम है। अपने इस प्रयत्न से उसने वास्तव में दरिद्रों की बड़ी सहायता की। अन्यथा ये भूखों मर गये होते। इसके बाद इसने यह नियम भी स्वीकृत करा लिया कि रोम के किसी नागरिक की हत्या का दंड, प्राण-दंड है। इस नियम की सहायता से उसने अपने भाई तथा भाई के साथियों की हत्या का बदला चुका लिया। इसके बाद इसने नाइटो (वीरो) की शक्तियों के बढ़ाने का प्रयत्न किया और ऐसे कानून बनवाए, जिससे नाइटों को आर्थिक लाभ होने की सभावना थी। इसने एक यह भी नियम बनवा दिया कि अब जूरी के सदस्य, नाइट-लोगों में से ही हुआ करें। इस नियम के कारण नाइट-लोग भी, कायस के पक्ष में हो गये। नाइटों की गणना, सरदारों में थी। इसलिए कायस ने अब सरदारों में भी दो दल कर दिए। कायस की इस भेदनीति के कारण से रोम के सरदारों में भी परस्पर विरोध हो गया इस प्रकार अब कायस ग्रेकस का पक्ष बहुत प्रबल हो गया। तब कायस ने भूमि-सुधार सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया। इसके अनुसार इसने इटली तथा इटली के बाहर के देशों में भी दरिद्र-लोगों के लिए बहुत से उपनिवेशों की स्थापना की। कायस के इन सब सार्वजनिक कामों से जनता इससे बहुत प्रसन्न हुई।

कायस ग्रेकस ने कई तरह से सीनेट की शक्ति को कम कर दिया। इसके पहले रोम के प्रांतीय गवर्नरों के अभियोगों के फैसला करने के लिए सीनेट-सभा के सदस्य ही चुने जाते थे परन्तु इसने यह नियम स्वीकृत करा लिया कि मध्यम तथा उच्च श्रेणी के लोग ही इनका फैसला किया करें। इस प्रकार सीनेट-सभा का प्रभाव प्रांतीय सूबों से बिल्कुल उठ गया।

कायस ने यह प्रस्ताव भी स्वीकृत करा लिया कि एशिया में ये ही लोग मालगुजारी भी लिया करें। अभी तक मालगुजारी आदि का काम सीनेट-सभा ही करती थी। इस प्रकार सांपत्तिक सम्बन्धी बातों मे भी सीनेट का अधिकार कम हो गया। कायस ने एक यह नियम भी स्वीकृत करा लिया कि प्रांतों का प्रबन्ध कसल होने के पहले ही कर दिया जाया करे। इसके पहले सीनेट सभा जिसे चाहती प्रांतो को दे देती थी। जो प्रांत अच्छे रहते थे और जिनमें आमदनी की आशा रहती थी, उन्हें तो वे अपने लोगों को दे देते थे और जो प्रांत खराब रहता था, उन्हें वे अपने शत्रुओं को देते थे। परन्तु उक्त नियम के स्वीकृत हो जाने पर वे ऐसा नहीं कर सकते थे।

इसने एक यह नियम भी स्वीकृत करा लिया कि सब लोग, सीनेट सभा के अन्तिम नियम के विरुद्ध, लोगो से अपने अभियोग के सम्बन्ध में अपील कर सकते हैं। इससे भी सीनेट की शक्ति बहुत कम हो गई क्योंकि अब वे कसलों के द्वारा जिसका चाहे, जी नहीं ले सकते थे।

अब रोम की जनता कायस ग्रेकस से इतना प्रसन्न थी कि यह सन् १२२ ई० पू० में दूसरे वर्ष भी ट्रिब्यून चुन लिया गया। इस प्रकार दूसरे वर्ष ही एक ही आदमी के ट्रिब्यून चुने जाने का यह पहला ही अवसर था और इसके पहले यह शासन-व्यवस्था के विरुद्ध समझा जाता था। इसमें सन्देह नहीं कि रोम की जनता कायस से प्रसन्न रहती थी परन्तु सरदार लोग और सिनेट उससे बहुत अप्रसन्न रहते थे। जब यह दूसरी बार ट्रिब्यून चुना गया तो यह प्रस्ताव किया कि सब लातीनी (लैटिन) लोगों को भी रोम नागरिकता के अधिकार दे दिए जायँ। उसने इसके साथ-ही यह भी प्रस्ताव किया कि इटली की सब जातियो को वे

कार दे दिए जायें जो लातीनी-जाति को प्राप्त हैं। परन्तु रोम के सरदार लोग ऐसा करना पसंद नहीं करते थे। रोम के सरदार लोग अपने को अन्य लोगों कि अपेक्षा ऊँचा समझते थे और सब अधिकारों का स्वय भोग करना चाहते थे। यदि ये लोग इन सब अधिकारों को सबको दे देते तो ये भी साधारण लोगों की तरह हो जाते और सस्ता अनाज भी नहीं पा सकते थे। इसलिए इन लोगों ने कायस ग्रेकस के प्रस्ताव को पास नहीं किया। इस प्रस्ताव के ले आने के कारण सीनेट तथा दूसरे लोग भी कायस से अप्रसन्न हो गये। सीनेट तो इस अवसर के ताक में थी ही, उसने सब लोगों को कायस के विरुद्ध भड़काना प्रारम्भ कर दिया। इस समय सीनेट ने एक और चाल चली। उसने लिब्रियस ड्रूसस नामक ट्रिब्यून को अपने पक्ष में किया और उसे रोम की जनता को बहकाने के लिए तथा कायस के प्रभाव को जनता से सदा के लिए मिटाने के लिए कहा। ड्रूसस ने वास्तव में वैसा ही किया। उसने झूठ ही जनता को बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाईं। सीनेट के इस जाल में जनता फँस गई और कायस का प्रभाव जनता से बिल्कुल उठ गया। इसलिए जब दूसरी बार यह ट्रिब्यून के लिए खड़ा हुआ तो किसी ने इसको वोट नहीं दिया और सिनेट ने इसे देश का शत्रु कहा। इसी समय कायस के कुछ साथियों ने टाइबीरियस के मारने वाले की हत्या कर दी। इस पर रोम में एक बड़ा भारी विप्लव उठ खड़ा हुआ और दोनों दलों में मार काट मच गई और कायस के पक्ष के बहुत लोग मार डाले गये। अतएव कायस ने भी अब मर जाना ही अच्छा समझा। इस प्रकार लगभग तीन हजार आदमी तलवार के घाट उतार दिए गये।

ग्रेकस बन्धुओं के मरने के बाद फिर रोम की वही पहले की दशा लौट आई। भूमि के छोटे छोटे टुकड़ों को फिर सरदारों ने ले

लिया और दासों की संख्या बढ़ती ही जाती थी तथा कृषकों की दशा में भी उचित सुधार नहीं हुआ। इस प्रकार ग्रेकस-बधुओं का सब प्रयत्न तथा कार्य व्यर्थ हो गया। परन्तु मातृभूमि की वेदी पर चढ़ा हुआ शहीदों का रक्त कभी व्यर्थ नहीं होता। इसमें सन्देह नहीं कि ग्रेकस-बधुओ के मरने के दस बारह वर्ष तक सीनेट और सरदारो ने खूब चैन की बशी बजाई परन्तु उनका बलिदान व्यर्थ नहीं हुआ क्योकि अन्त मे वे सब सुधार हो कर ही रहे जिनके लिए ग्रेकस-बधुओ ने अपनी बलि चढ़ाई थी।

ग्रेकस-बन्धुओं की असफलता का कारण

ग्रेकस बधुओ की असफलता के कई कारण थे। पहले तो वह समय से कुछ पहले ही रोम इतिहास के रग मच पर आ गये थे क्योंकि यह उन के लिए उपयुक्त समय नहीं था। राजनीतिज्ञ को समय की गति भी अवश्य देखनी चाहिए। जब कायस ने सब इटली के लोगो को वोट देने का अधिकार दिया तो रोम के बहुत लोग उससे अप्रसन्न हो गये। इसमें सदेह नहीं कि ग्रेकस-बन्धुओं का उद्देश्य बहुत अच्छा था परन्तु वह समय के अनुकुल नहीं था। इनकी असफलता का एक कारण सीनेट सभा की स्वार्थ परता तथा अदूरदर्शिता थी। ग्रेकस बधुओ के सुधारों से धनाढ्यों और सरदारों के अधिकारों पर धक्का लगता था। इसलिए इन लोगों ने उनके सुधारों का घोर विरोध किया। अपने अधिकारो को छोड़ने के लिए वे हर तरह से तैयार थे, यहाँ तक कि मार पीट करने में भी उन्हें किसी प्रकार का संकोच नहीं होता था। इसके सिवाय इन दोनों भाइयों के सुधार करने की प्रणाली भी कुछ ऐसी विचित्र थी कि जो लोग वास्तव में इनके प्रतिद्वन्दी नहीं थे, वे भी इनसे बुरा मान जाते थे। इस दूषित प्रणाली का एक उदाहरण

आक्टेवियस का पदच्युत करना है। ऐसी बातों का घोर विरो-
होना स्वाभाविक ही था।

ग्रेकस-बधुओं के प्रयत्नों का फल

इसमें संदेह नहीं कि ग्रेकस-बधुओं की हत्या हो गई और वे रोम के राजनैतिक-इतिहास के रंग मंच से विदा कर दिए गये परन्तु इस हत्या का रोम के इतिहास पर कई प्रभाव पड़ा। पहले तो इनकी हत्या से यह प्रकट होता है कि अब रोम वालो में कानून की प्रतिष्ठा उठ गई थी। इस उदाहरण से रोम में रक्तपात और पारस्परिक झगड़ा बढ़ गया और इसके बाद रोम में झगड़ा फैसला करने का रक्तपात भी एक साधन बन गया।

ग्रेकस भाइयो की मृत्यु का जनता पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा क्योंकि ये दोनो जनता के लिए ही मरे थे। इसलिए उनकी मृत्यु के बाद इटली मे असंतोष की मात्रा और भी अधिक हो गई। रोम के दो भिन्न भिन्न दलों—धनाढ्यों और दरिद्रों—का झगड़ा और भी अधिक हो गया। इसी झगड़े ने अंत में सामाजिक-युद्ध का रूप धारण कर लिया। सामाजिक युद्ध का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में आगे किया गया है। सामाजिक-युद्ध का कारण ग्रेकस भाइयो की हत्या है।

ग्रेकस भाइयो के सुधार के कारण, सीनेट के कुछ अधिकार अन्य लोगों को दिए गये थे। इन लोगो का एक अलग दल हो गया और सिनेट का अलग। इन दानो दलों में प्राय अब झगड़ा होने लगा था। इन दोनो दलो के झगड़े का अंत प्रजातन्त्र के पतन के साथ ही साथ हुआ।

ग्रेकस भाइयो के अन्त ही, रोम में अल्प तथा कुलीन जन, ...क राज्य की विजय था। इसके बाद अल्पजन

और वहुजन सत्तात्मक राज्य में झगड़ा होता रहा। कुछ दिनो के बाद एक एक आदमियों मे झगड़ा होगे लगा और अंत मे एक मनुष्य की शक्ति प्रधान हो गई और अल्प जन सत्तात्मक राज्य का अंत हो गया।

ग्रेकस भाइयों के सुधारों पर एक दृष्टि तथा उनकी समालोचना

इसमे सदेह नहीं कि ग्रेकस बधुओ के उद्देश्य बहुत अच्छे थे और जनता के हित से प्रेरित होकर ही उन्होंने सब नए नियमो तथा कानूनो को स्वीकृत कराया था, परन्तु उनके सुधारो के कारण से रोम के सरकार की दशा कुछ अच्छी नहीं हुई। ग्रेकस भाइयो ने सीनेट की शक्ति कम कर दी थी और सीनेट के कुछ अधिकारो को अन्य लोगों को दे दिया था। परन्तु ये लोग सीनेट से भी बुरे निकले और इनका प्रबन्ध सीनेट से भी अधिक बुरा हुआ। बिना दाम तथा कम दाम देने से सरकारी खजाना बहुत कम हो गया और लोगों ने भीख माँग कर पेट भरना ही अच्छा समझा। रोम में अन्न सस्ता मिलता था और कभी कभी माँगने से भी मिल जाता था अतएव गांव के लोग गाँवों को छोड़ छोड़ कर रोम मे ही आने लगे। इस प्रकार गाँवो की आबादी कम हो गई और बहुत लोग रोम मे आ कर बस गये। ग्रेकस भाइयों के सुधारों का एक फल यह भी हुआ कि सरदार तथा सीनेट, और साधारण लोग तथा दरिद्रों में परस्पर झगड़ा होने लगा। इसी झगड़े ने अंत में सामाजिक युद्ध का रूप धारण कर लिया। इन सब कथनों का यह अभिप्राय नहीं कि ग्रेकस बधुओं के सुधारो में कोई भी अच्छी बात थी ही नहीं। अच्छे कामों के उदाहरण के लिए हम यह कह सकते हैं कि ग्रेकस बंधुओं ने इटली और इटली के बाहर के देशों में उपनिवेश बसाने का नियम बनाया था। परन्तु कायस ग्रेकस

ने जो यह प्रस्ताव किया था कि लातीनियो और इटली की अन्य जातियों को भी अधिकार दे दिए जायँ, वह बुद्धिमत्ता से भरा हुआ था। वास्तव में इस प्रस्ताव को न मान कर रोम ने बड़ी भारी गलती की क्योंकि इतने बड़े राज्य का प्रबन्ध केवल रोम कैसे कर सकता था। रोम के लिए इतने बड़े राज्य पर अकेला अच्छी तरह से शासन करना असम्भव था। इसके सिवाय लातीनी (लैटिन) आदि जातियो ने रोम का अच्छी तरह से साथ दिया था और उसकी राज्य वृद्धि मे अपना खून भी बहाया था और उनमें भी जातीयता के भाव उपस्थित थे। यदि इस समय रोम के लोगो ने उन्हें अधिकार दे दिया होता तो इसमे लेशमात्र भी सन्देह नहीं कि रोम की शक्ति बड़ी प्रबल और दृढ़ हो जाती और यूरोप का आज एक दूसरा ही इतिहास होता। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसका फल वास्तव मे वही हुआ जो ऐसी दशाओ मे प्राय हुआ करता है अर्थात् इसके कुछ ही दिन बाद लातीनी तथा अन्य सब जातियो ने रोम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और अपने को उनसे स्वतत्र मानने लग गये। इसी के अनुसार इन लोगो ने एक अलग रोम ही बसा दिया और रोम के सेनापतियो को हरा दिया। इस प्रकार इन लोगो ने रोम को उन सब अधिकारों के देने के लिए विवश कर दिया जिनका कायस ने प्रस्ताव किया था।

ग्रेकस भाइयों के सम्बन्ध में डब्ल्यू वार्डे फाउलर साहब का मत

चाहे जो हो, ग्रेकस-बन्धुओं ने अपने जीवन और मृत्यु से सिनेट की शक्ति को हिला दिया। इनके कामों ने रोम मे क्रान्ति का बीज बो दिया और रोम की किसी भी व्यवस्था मे लोगो की श्रद्धा नहीं रह गई।

पन्द्रहवाँ अध्याय

सिसली में दासों का युद्ध

दासों की दशा रोम में बिगड़ती चली जाती थी क्योंकि उनके स्वामी उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव करते थे। कभी कभी तो इन स्वामी का बर्ताव दासो के साथ लज्जापूर्ण होता था। इन सब अत्याचारों की प्रतिक्रिया का होना, कोई आश्चर्य की बात नहीं है, इन सब दासो ने अपने को मुक्त करने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। कायस के सुधारो से भी इनकी दशा कुछ विशेष नहीं सुधरी और दिन प्रति दिन शोचनीय होती चली गई। अब दासों की सख्या इतनी अधिक हो गई कि उन्हें नियम भीतर रखना केवल कठिन ही नहीं किन्तु असभव भी हो गया। सीरिया का एनस नामक एक दास बहुत धीर तथा मनस्वी था। इसने कई दासो को एकत्रित कर लिया और स्वय उनका सेनापति बन गया। उभयनिष्ठ दु ख ने भी उन्हें एकसूत्र मे बाँध दिया था। इसी एनस के नेतृत्व मे एन्ना नामक स्थान पर इन दासो ने सरकार के विरुद्ध बलवा कर दिया। धीरे धीरे इस बलवे का क्षेत्र बढ़ने लगा और चारों ओर गड़बड़ी मच गई। सारे इटली मे धूम मच गई और दासो ने सिसली को तो लूट ही लिया। रोम की कई सेनाएँ इन्हें दबाने के लिए भेजी गई परन्तु दासों ने इन्हें हरा दिया। अन्त में विवश होकर रोम को स्वय कसल रूपीलियस को इनके विरुद्ध भेजना पड़ा और इसने जाकर इस बलवे को शान्त [illegible]ा।

जुगर्था से लड़ाई (१११-१०६ ई० पू० तक)

कार्थेज के नष्ट हो जाने पर अफ्रिका में सब से बड़ा राज्य न्यूमीडिया का था। मेसीनिसा, न्यूमीडिया का राजा था। यह रोम का मित्र था। सन् १४६ ई० पू० में वह मर गया। उसके तीन पुत्र थे। इनमें से दो तो शीघ्र ही मर गये। तीसरा पुत्र मिसिप्सा गद्दी पर बैठा जिसने सन् ११८ ई० पू० तक राज्य किया। वह भी रोम का मित्र था। उसके दो पुत्र और जुगर्था नामक एक भतीजा था। उसने इन तीनों को अपना राज्य परस्पर बाँट लेने के लिए कहा था। परन्तु जुगर्था बड़ा ऐश्वर्याकाक्षी और ईर्षालु था। इसने सारे राज्य को किसी न किसी प्रकार से अपने अधिकार में करने का विचार किया। इसीलिए उसने राजा के एक लड़के को जान से मार डाला और दूसरे से युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। इस दूसरे पुत्र ने अपने इस दु ख के समय मे रोम से सहायता माँगी क्योंकि रोम उसका मित्र था। सीनेट ने उसे सहायता देने का वचन दिया और सब राज्य को इन दोनो मे बाँट देना चाहा। इसी विचार से कुछ लोग रोम भेजे भी गये परन्तु जुगर्था ने इन्हें घूस देकर अपने पक्ष में कर लिया। अतएव इन लोगो ने सर्वश्रेष्ठ तथा आधा से अधिक राज्य को जुगर्था को दे दिया। इतना ही नहीं, जुगर्था ने अपने प्रतिद्वन्द्वी पर हमला कर दिया और घेर कर छल पूर्वक उसे मार डाला। इस पर रोम के लोग उससे बहुत बिगड़े और जुगर्था के विरुद्ध, लड़ाई की घोषणा कर दी। रोम ने एक सेना न्यूमीडिया भेजी। परन्तु दो वर्ष तक इस सबध मे विशेष कुछ नहीं हुआ क्योंकि जो सेनापति वहाँ भेजा गया था, उसे जुगर्था ने अपने पक्ष मे कर लिया और उसके साथ मनमानी सुलह कर ली। परन्तु रोमवालों को पता चल गया कि सेनापति ने जुगर्था से घूस ले लिया है। इस पर जनता बहुत बिगड़ी और उन सब लोगों पर

अभियोग चलाने का विचार किया जिन लोगो ने घूस लिया था इन लोगो ने यह भी प्रस्ताव पास कर दिया कि जुगर्था स्वय रो आवे और इस सबंध मे गवाही दे। जुगर्था रोम मे पहुँच गया औ यहाँ आकर ऐसा कुछ छू-मंतर पढ़ दिया कि उसके रोम आने प इस सबध में कोई प्रश्न ही नहीं उठा। जुगर्था ने घूस देने क अपनी प्राचीन-प्रथा का यहाँ भी सहारा लिया और रोम के स लोग शान्त हो गये।

इसी समय रोम मे एक और मनुष्य पहुँच गया जो जुगर्थ का शत्रु था। जुगर्था ने उसे भी मरवा डाला। यह एक पेस अपराध था जो रोम मे हुआ था और जिसे सब लोग जान ग थे। इसलिए जुगर्था इसे घूस देकर शान्त नही कर सका अतए यहाँ से जुगर्था भागा और फिर न्यूमीडिया पहुँच गया। तब सीने ने जुगर्था के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

जुगर्था से लड़ने के लिए एक कसल भेजा गया पर जुगर्था क घूस काम कर गया, अतएव कसल से कुछ भी नहीं बन पड़ा तब सीनेट उसके भाई के जुगर्था से लड़ने के लिए भेजा। परन्तु उसके भाई ने ता काम और भी बिगाड़ दिया, उसने जुगर्था के साथ अपमान जनक सधि कर ली। परन्तु सीनेट ने इस सधि के स्वीकार न की और सन् १०८ ई० पू० में मिटिलस नामक कसल को जुगर्था से युद्ध करने के लिए भेजा क्योंकि मिटिलस सत्यप्रियता और ईमानदारी के लिए बहुत प्रसिद्ध था। इस समय मिटिलस के नीचे कायस मेरियस और मेरियस के नीचे साला काम करता था।

कायस मेरियस एक नीच जाति का मनुष्य था। परन्तु वह बहुत ही अधिक वीर तथा पराक्रमी था। उसकी उन्नति का एक मात्र कारण उसकी वीरता ही है। इसमें संदेह नहीं कि यह मिटि

लेस सेना मे उसके अधीन, एक सेनापति था परन्तु यह सैनिक लोगों का उससे भी अधिक प्रिय था। बहुत लोगो ने लिखा है कि मिटिलस, कायस मेरियस की इसलिए हँसी उड़ाया करता था कि मेरियस नीच जाति का मनुष्य था। इसलिए इन दोनो मे अनबन होगई थी और एक दूसरे से घृणा करते थे। मेरियस से इसी समय एक ज्योतिषी ने कहा कि तुम एक बड़े भारी आदमी होगे। मेरियस ने ज्योतिषी की इस बात पर विश्वास कर ली थी और अपने को बड़ा बनाने का प्रयत्न करता रहता था।

हाँ, मिटिलस की सेना को जुगर्था ने दो बार हरा दिया। एक बार तो उसके प्राण भी न बचते परन्तु मेरियस ने उसकी रक्षा की। इसमें संदेह नहीं कि मिटिलस साहसी था और घूस के लोभ मे फँसने वाला नहीं था। मिटिलस को दृढ़ देख कर जुगर्था डरा और संधि करने का प्रस्ताव किया। इसके साथ ही साथ जुगर्था ने सोचा कि किसी न किसी प्रकार मिटिलस को घूस देना चाहिए। इसी विचार से उसने ऐसे सब सिपाहियो को तथा नगरों को जिन्होंने रोम का साथ छोड दिया था, मिटिलस के हवाले किया। रोम के सिपाहियो ने उन्हें पहले कमर तक पृथ्वी मे गाड़ दिया और तब उन पर गोली छोडना प्रारम्भ कर दिया।

इसी समय जुगर्था ने सुना कि मिटिलस उसे किसी प्रकार नहीं छोड सकता और उसे भी पकड़ने की इच्छा करता है, तब जुगर्था ने फिर युद्ध आरम्भ कर दिया। अब जुगर्था की स्थिति पहले से बदल गई थी। उसके कई मित्र रोम के अधीन हो गये थे और मिटिलस एक के बाद दूसरे लोगो को अपने अधिकार में कर रहा था। अब उसे जुगर्था पर विजय पाने की पूर्ण आशा हो गई थी। उसी समय रोम वालो ने उसे बुला लिया और उसे रोम लौट जाना पड़ा। वास्तव में मिटिलस रोम जाने से बहुत दुःखी हुआ।

मिटिलस के रोम चले जाने पर मेरियस सन् १०८ ई० पू० में सेनापति और कंसल बनाया गया। इस समय मेरियस का सहायक साला था। साला, वीर, युद्ध-कला-विशारद और जनता के पक्ष का आदमी था। इसलिए इसकी सेना में बहुत आदमी भर्ती हुए। एक वर्ष तक तो इसने अपनी सेना का फिर से अच्छी तरह से सगठन किया और सन् १०७ ई० पू० मे लड़ाई करना प्रारभ कर दिया। एक वार उसने एक नगर पर अधिकार कर लिया और वहाँ के सब लोगों को मार डाला। परन्तु इन सब घटनाओं से जुगर्था की कुछ भी हानि नहीं हुई। अन्त मे जुगर्था के सहायक और श्वसुर बोकस ने मेरियस के पास यों लिखा —"यदि आप किसी बड़े आदमी को मेरे पास भेजें तो मै जुगर्था को आपके हवाले कर सकता हूँ।" मेरियस ने इस समाचार को शका की दृष्टि से देखा और बोकस का विश्वास नहीं किया परन्तु साला वहाँ जाने के लिए तैयार हो गया और वहाँ जा कर जुगर्था को पकड़ लिया और उसे मेरियस के हवाले कर दिया। सन् १०६ ई० पू० में जुगर्था रोम लाया गया और सीनेट ने उसे अन्न तथा जल बिना तड़पा तड़पा कर मार डाला। रोम के लोगों ने कई दिनों तक उस मनुष्य की कराह सुनी थी जिसके डर से बहुत लोग काँपते थे और जिसका नाम अंतिम तीस वर्ष से रोम के घर घर तथा कोने कोने में सुनाई पड़ता था।

न्यूमीडिया का नया प्रबन्ध

इसमें सन्देह नहीं कि रोम ने अब न्यूमीडिया को जीत लिया था परन्तु उसने उसे रोमीय-प्रांत नहीं बनाया। न्यूमीडिया का आधा भाग तो बोकस को दे दिया गया क्योंकि यह विजय उसी के कारण प्राप्त हुई थी। आधे भाग पर राजवंश का एक ऐसा याजक बैठा दिया गया जिससे रोम को कोई शका नहीं थी।

रोम की राजनीति पर इस युद्ध का प्रभाव

इस युद्ध के सम्बन्ध में यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि यदि रोम के सेनापति जुगर्था के घूस के फेर मे न फॅसते और इमानदारी से काम करते तो यह युद्ध इसके बहुत पहले ही समाप्त हो गया होता। दूसरी बात यह है कि इस युद्ध से मेरीयस की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और वह प्राय लोगो की इच्छा से कसल बनाया गया था। इस प्रकार स्पष्ट है कि सीनेट की शक्ति बहुत कम हो गई थी और जनता की शक्ति बढ़ गई थी। इस लड़ाई मे यह भी प्रकट हो गया कि सीनेट अब घूसखोर हो गई है। इस समय मेरियस ने सैनिक व्यवस्था को बिल्कुल बदल दिया। पहले सैनिक लोग कुछ विशेष वर्गो में से ही लिए जाते थे परन्तु उसने सब वर्गो मे से सिपाहियों को भर्ती करना प्रारभ कर दिया। इस प्रकार सैनिकों का आपस का सब भेद-भाव उड गया और सेना मे अधिक लोग भर्त्ती होने लगे। सेना का सम्बन्ध राज्य के अन्य अधिकारियो से अलग कर दिया गया और वे स्पष्ट रूप से अपने सेनापति के नीचे ही रह गये। इस कारण से उनका सम्बन्ध, अपने सेनापति से घनिष्ट हो गया। इसी कारण से अब सेनापतियो की शक्ति बहुत बढ़ गई और इन लोगो ने प्रबन्ध मे भी भाग लेना प्रारभ कर दिया।

ट्यूटन और सिम्री जातियों से युद्ध

उधर तो रोम के लोग जुगर्था से लड़ रहे थे, इधर इटली के उत्तर से ट्यूटन और सिम्री दो जातियाँ रोम के राज्य में उतर आई थीं और रोम वालों को वहाँ से हटा देना चाहती थीं। इस प्रकार रोम के ऊपर एक भारी सकट उपस्थित हो गया। रोम वालो ने हाल ही में गाल के दक्षिणी भाग को अपने राज्य में मिला लिया।

यहाँ के निवासी ट्यूटन-वीर, सुन्दर, भीमकाय और साहसी होते थे और अपनी स्त्री तथा बच्चों के सहित इधर-उधर उपजाऊ भूमि की खोज मे घूमा करते थे। सन् १०६ ई० पू० मे ही इन लोगों ने रोम के उत्तरी भाग मे प्रवेश किया। रोम वालों ने उन्हें रोकना चाहा परन्तु इन वीरो ने रोम की सेना को अच्छी तरह से हरा दिया और फिर आगे बढ़ने लग गये। वास्तव में युद्ध मे यह बड़ी वीरता से लड़ते थे। अब रोम के लोग इनसे डरने लगे। अतएव इन्होंने इनकी गति के रोकने का प्रबल प्रयत्न किया। इसी विचार से सन् १०५ ई० पू० में इन्होंने उन्हे मार भगाने के लिए अस्सी हज़ार सेना भेजी। परन्तु इन वीरों ने सारी सेना को काट कर फेंक दिया। अब तो समस्त इटली भय से काँप उठा और सब लोग डर के मारे थरथर काँपने लगे। अब इटली में एक बार फिर एकता का वैसा ही अखंड राज्य आ गया जैसा कि हैनीबल से युद्ध करते समय था। जनता ने एक स्वर से सीनेट और सरदार को चुप कर दिया और उस समय के कसल को हटाकर, मेरियस को फिर कसल बनाया। रोम के इतिहास मे इस प्रकार कसल के हटाने का यह पहला ही अवसर था। मेरियस ने सेना मे सुधार किया और एक भारी सेना भी एकत्रित कर लिया। इस भारी सेना के साथ मेरियस ने शत्रुओं के विरुद्ध आक्रमण करने का विचार किया।

इधर रोम मे यह सब हो रहा था, उधर सिम्री-जाति के लोग स्पेन में जाकर लूट रहे थे। वहाँ लूटने के बाद इन लोगों ने भी रोम की ओर प्रस्थान कर दिया और ट्यूटन-लोगों की सेना से मिल गये। अब, रोम इस सम्मिलित सेना से लड़ने के लिए तैयारी करने लगा। उधर ट्यूटन तथा सिम्री-जातियों ने यह सोचा कि कुछ सेना तो मेरियस से लड़ने के लिए एक ओर भेजना चाहिए

और कुछ सेना दूसरी ओर से रोम को लूटने के लिए भेजना चाहिए।

इधर मेरियस ने शत्रु के विरुद्ध चलना प्रारम्भ कर दिया। अभी लड़ाई हुई ही नहीं थी, इसलिए जनता ने उसे फिर दूसरे वर्ष कसल चुना। ऐसा भी पहले रोम के इतिहास में कभी नहीं हुआ था और पहले यह रोम की व्यवस्था के विरुद्ध समझा जाता था। सन् १०१ ई० पू० में रूडियाई के मैदान में दोनों सेनाओं में घोर संग्राम हुआ। दिन भर घमासान लड़ाई होती रही परन्तु मेरियस की मर्जी हुई तथा सैनिक-शिक्षा-युक्त सिपाहियों के सामने ट्यूटन लोगों की वीरता अब न टिक सकी, सध्या समय वे पीछे हटने लगे। जब वीर ट्यूटन लोगों की वीर पत्नियों ने देखा कि ये लोग हार रहे हैं और पीछे हटते चले आते हैं, तब उन लोगों ने अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर, स्वयं अपने ही लोगों पर हमला कर दिया। इस प्रकार ट्यूटन लोग दोनों ओर से घिर गये और कुछ तो मेरियस की सेना से और अधिक स्वयं अपनी स्त्रियों से ही मारे गये। अन्त में सब स्त्रियाँ भी रोम के सिपाहियों से लड़ने लगीं और सब को सब कट मरीं। इन वीर स्त्रियों ने अपनी प्रतिष्ठा को, अपनी जान तथा अपने पतियों की आत्माओं से अधिक महत्व पूर्ण समझा। सब की सब मर मिटीं परन्तु शत्रु के हाथ अपमान नहीं सहा। इन स्त्रियों ने अपने पातिव्रत्य की खूब रक्षा की। यह युद्ध एक्युई-सेक्सटी के स्थान पर हुई थी। इसमें मेरियस ने ट्यूटन जाति का सत्यानाश कर दिया क्योंकि इसमें स्त्री और पुरुष सब के सब कट मरे थे। इनका नाश करने के बाद मेरियस ने इनकी दूसरी सेना की ओर भी प्रस्थान कर दिया जो रोम को लूटने जा रही थी। वार्सिली स्थान पर एक और घोर संग्राम हुआ। परन्तु इसमें भी मेरियस ने इन लोगों को

बुरी तरह से हरा दिया। जब मेरियस विजयी होकर रोम आय तब रोम में खूब आनन्द मनाया गया और इस विजय के कार मेरियस की कीर्त्ति और भी अधिक हो गई और लोग अ उससे डरने लगे। मेरियस ने वास्तव में इस बार रोम को ब लिया, नहीं तो वे अवश्य ही इसे चौपट कर देते। मेरियस विजयों से प्रसन्न होकर लोगों ने इसे "रोम का तृतीय संस्थापक की पदवी दे डाली।

सोलहवाँ अध्याय

विजय के बाद मेरियस

ट्यूटनो के हार जाने पर फिर रोम मे आनन्द के उत्सव मनाए जाने लगे और चैन की वशी बजने लगी। अब रोम ने फिर एक बार स्वतन्त्रता पूर्वक साँस लिया और आगामी चार सौ वर्ष तक फिर ऐसा भयानक अवसर उपस्थित नहीं हुआ। मेरियस ने रोम की शासन व्यवस्था मे एक क्राति कर दी। ऐसी नई बात पहले कभी नहीं हुई थी। वह न तो धनवान था और न सरदार ही। तथापि वह लगातार पाँच वर्ष तक रोम का कसल नियत किया गया। अब इसके सामने सीनेट सभा का बल बहुत कम हो गया। जब प्रजातन्त्र की स्थापना हुई थी तब यह एक नियम बना दिया गया था कि कोई भी मनुष्य लगातार दो वर्षों तक कसल न चुना जावे। परन्तु अब रोम ने स्पष्ट रूप से इस नियम का उल्लघन किया। यहीं से भावी रोम-साम्राज्य के लक्षण दिखलाई पड़ने लगे और यही घटना भावी रोम साम्राज्य की नींव कही जा सकती है। इसी समय से रोम में सैनिकों की प्रधानता होती चली गई। मेरियस के बाद साला, साला के बाद पाम्पियस, पाम्पियस के बाद जूलियस-सीजर और जूलियस सीजर के बाद अगस्टस आदि ऐसे ही शक्तिशाली पुरुष हुए।

अब मेरियस रोम मे एक बहुत ही अधिक प्रभावशाली तथा शक्तिशाली मनुष्य हो गया और सारे इटली मे उसकी तूती बोलने

लगी। परन्तु मेरियस इतने ही से सतुष्ट नहीं हुआ। उसने अब रोम मे मनमानी करने का विचार किया तथापि प्रकट रूप से उसने सिनेट सभा के विरूद्ध कोई काम नहीं किया। इसलिए उसने एक ट्रिव्यून से ऐसे नियमो के स्वीकृत कराने का प्रस्ताव करवाया जिन्हे ग्रेकस भाइयों ने किया था। यह ट्रिव्यून इसके कहने मे आ गया और स्पष्ट रूप से इसके लिए अन्दोलन करना प्रारम्भ कर दिया। गुप्त रीति से मेरियस ने उसे सहायता भी दी। परन्तु इन प्रस्तावो से कुछ फल नहीं निकला क्योंकि सीनेट ने इनका घोर विरोध किया। इस प्रकार इटली मे दो दल हो गये। इनमे परस्पर झगड़ा होने लग गया और अत में एक विप्लव खड़ा हो गया। सीनेट ने मेरियस से इस विप्लव के शान्त करने के लिए कहा। अब मेरियस बड़े फेर मे फॅसा। सब लोग जानते थे कि मेरियस की सहायता से ही ट्रिव्यून आदि विप्लव कर रहे थे, उन्हे मेरियस कैसे दबाता। अब मेरियस किसी को भी सहायता देने में सकोच करने लगा परन्तु अन्त में उसने सीनेट को ही सहायता दी और विप्लव कारियो को अपनी सेना से दबा दिया। इस समय प्रकट रूप से सीनेट के विरुद्ध काम करने का साहस मेरियस को नहीं हुआ। इससे मेरियस जनता की दृष्टि से गिर गया।

मेरियस की राजनैतिक-नेता की हैसियत से समालोचना

इसमें सदेह नहीं कि अपने सैनिक गुणो के कारण, मेरियस कुछ दिनों के लिए प्रसिद्ध हो गया था परन्तु सर्वप्रिय नेता में जिन गुणों की आवश्यकता है, वे उसमें नहीं थे। उसका कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं था और न उसके पास कोई निश्चित कार्यक्रम ही था। यह, चाहे युद्ध हो, चाहे शान्ति हो, सब में सब से आगे रहना चाहता था। वह छठवीं बार भी कसल चुना गया परन्तु इस बार उसने ग्लूसिया और सैटर नाइनस नामक दो व्यक्तियो से

मेल कर के ही ऐसा कर सका था। ये दोनों बहुत बुरे और घृणित मनुष्य थे। जब मेरियस ने ऐसे ऐसे कलुषित मनुष्यो से प्रेम करना प्रारम्भ किया, तब दोनो दल उससे बिगड़ गये। इस प्रकार मेरियस दोनो दलों की दृष्टि से गिर गया।

दासों का दूसरा युद्ध

जब मेरियस युद्ध में फँसा हुआ था, तब सिसली में दासो ने फिर युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। इन लोगो ने सालवीयस नामक दास को अपना राजा बनाया और रोम की सेना को हरा दिया। रोम की सेना के हराने के बाद इस दास ने राजाओं के सब चिन्हों को धारण किया। परन्तु जिस मनुष्य की नसों मे कई पीढ़ी से गुलामी का रक्त बह रहा था, वह केवल राजा के सब वस्त्रों, आभूषणों तथा सज धज से ही कैसे शान्त हो सकता था, उसने अपना पहला नाम भी बदल दिया। अब उसे अपना पहला नाम बुरा मालूम पड़ता था। इसी प्रकार उसने कुछ दिन तक खूब सज धज के साथ राज्य किया। जब वह मर गया तो अथेनो नामक एक दूसरा दास राजा हुआ। इसने चारों ओर रोम के राज्य को लूटना प्रारम्भ कर दिया। इस पर सीनेट ने एक्वीलियस नामक कसल को सन् १०१ ई० पू० में उसके विरुद्ध लड़ाई करने को भेजा। कसल ने इन सब दासो को हरा दिया और फिर से शान्ति स्थापित कर दी।

सत्रहवाँ अध्याय

रोम का सामाजिक युद्ध

रोम के इतिहास मे सामाजिक-युद्ध एक महत्व पूर्ण घटना है। परन्तु इस युद्ध के वास्तविक कारण और फलादि के समझने के लिए, रोम की उस समय के ठीक पहले की दशा तथा सीनेट की शक्ति आदि के बारे मे भली भाँति समझ लेना आवश्यक है। अतएव पहले यहाँ उसी का वर्णन किया जाता है।

सामाजिक-युद्ध के पहले रोम की दशा

सामाजिक-युद्ध के पहले रोम मे प्रसिद्ध तीन दल—(१) सरदार-दल (२) जनता-दल और (३) व्यापारी-दल थे। इनमें से व्यापारी दल तो चमगादड़ की तरह कभी सरदार-दल मे आता था और कभी जनता की ओर मिल जाता था। परन्तु शेष दो सरदार-दल और जनता दल थे। ये दो भिन्न भिन्न तथा कई अंशों मे एक दूसरे के विरुद्ध दल थे और इनमें प्राय परस्पर झगड़ा हुआ करता था। परन्तु हमें यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि ये दोनो पेट्रीशियन और प्लेबियन नहीं थे और इनका झगड़ा पेट्रीशियन और प्लेबियन का झगड़ा नहीं था क्योंकि इस समय के बहुत पहले ही इन सब झगड़ों का अंत हो गया था और दोनों जातियाँ परस्पर मिलकर एक हो गई थीं। पेट्रीशियन और प्लेबियन का झगड़ा तो नगर-राष्ट्र का झगड़ा था परन्तु यह नवीन झगड़ा प्रजातन्त्र के नवीन दो दलों—सरदार-दल और जनता-दल—का झगड़ा था। ग्रेकस-बन्धुओं के सुधारों की असफलता के बाद से इन दोनों दलों के झगड़ों ने वास्तव मे बड़ा ही उग्ररूप धारण

कर लिया। इन तीनों दलों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है —

(१) सरदार-दल

इस दल में रोम के सब सरदार तथा कुलीन मनुष्य थे। ये लोग सब तरह से सीनेट-सभा की शक्ति को प्रबल करना चाहते थे और उसे बढ़ाना चाहते थे। ये लोग चाहते थे कि रोम की नागरिकता के अधिकार इटली के लोगों को न मिलें। ये चाहते थे कि शासन तथा अन्य कामों में इन्हीं लोगों को सब पद मिला करें। ये यह भी चाहते थे कि रोम के प्रजातन्त्र के शासन में किसी को भी कुछ अधिकार न मिले। सीनेट के सब लोग इसी दल में थे। प्यूनिक युद्धों के समय रोम में खूब एकता थी। उस समय सीनेट-सभा के सदस्य भी खूब अनुभवी तथा बुद्धिमान् मनुष्य थे। इसलिए सब लोग सीनेट की प्रतिष्ठा करते थे और उनकी बातों को मानते थे। परन्तु अब सीनेट में स्वार्थी मनुष्य आ गये थे। अब इसमें पहले की तरह, सिद्धहस्त तथा देशभक्त मनुष्यों की कमी थी। अतएव ये लोग रोम का शासन भली भाँति नहीं कर सकते थे।

(२) जनता-दल

इस दल में रोम के साधारण लोग थे। ये लोग सीनेट की सब शक्ति को कम करना चाहते थे। ये चाहते थे कि सब प्रश्नों तथा अभियोगों का फ़ैसला सीनेट न करे किन्तु साधारण लोगों की सभा। परन्तु इस दल में एकता नहीं थी। इस समय सबसे अधिक प्रसिद्ध प्रश्न यही था कि इटली के सब लोगों को रोम की नागरिकता का अधिकार मिले या न मिले। इस प्रश्न के सम्बन्ध में भी इस दल में एकता नहीं थी। इस दल में भी कुछ लोग

चाहते थे कि यह अधिकार इटली के सब लोगों को न मिल और कुछ चाहते थे कि यह अधिकार भी सभी लोगों को अवश्य मिल जाय। कभी कभी इनके नेताओं में भी इस सम्बन्ध में मतभेद होता था। सीनेट-सभा इसे भली भाँति जानती थी और इनके परस्पर के मतभेद से लाभ उठाती थी। इस कारण से इस दल की यथार्थ उन्नति नहीं होती थी।

(३) व्यापारी-दल

ये लोग न तो सरदार-दल में थे और न जनता दल में। ये दोनो ही दल में मिल जाया करते थे। ये जनता-दल में इसलिए मिलते थे कि दोनो मिल कर सीनेट की शक्ति कम कर सकें और सीनेट से इसलिए मिल जाते थे कि सब लोगों को नागरिकता के अधिकार न मिलने दें।

सामाजिक-युद्ध के पहले इटली के लोगों के असन्तोष तथा सामाजिक-युद्ध के कारण

इटली के लोगो ने रोम वालो की हर तरह से सहायता की थी। इन्होंने उन्हें सेना दी थी द्रव्य दिया था और समय पड़ने पर अपना रक्त भी बहाया था। इसलिए ये रोमवालो के समान अधिकार और प्रतिष्ठा चाहते थे। इसलिए जब रोम वालों ने इटली वालो को नागरिकता के अधिकार नहीं दिए, तो इन्हें बहुत बुरा लगा और इनमें असन्तोष फैल गया।

इटली के कुछ लोग रोम में भी बस गये थे जिन्हें वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया था। रोम के लोग समझते थे कि ये लोग उनके विरुद्ध वोट दिया करते हैं। इसलिए इन्हें इस मार्ग में से हटा देना चाहिए। इस विचार से रोम के लोगों ने अपने मन में सोचा कि यदि ये भी रोम से निकाल दिए जायँ, तो अच्छा हो।

इस विचार से पेनस नामक एक ट्रिब्यून ने यह कानून स्वीकृत करा लिया कि इटली के सब लोग जो रोम में बस गये हैं, रोम से निकाल दिए जायँ। जब इस कानून के अनुसार इटली वाले रोम के बाहर निकाल दिए गये तो उनका असंतोष और भी अधिक बढ़ गया।

इसके सिवाय इटली के लोग पहले से भी असंतुष्ट थे ही। छोटे सिपियो एफ्रिकेनस ने सबसे पहले इटली वालों का पक्ष लिया था परन्तु वह मार डाला गया। फ्लेकस ने सन् १२५ ई० पू० में इटली वालों को वोट देने का अधिकार देना चाहा था तथा इसके लिए आन्दोलन किया था परन्तु उसका कुछ भी फल नहीं हुआ और वह गाल भेज दिया गया। कायसग्रेकस ने सन् १२२ ई० पू० में इसी प्रकार प्रयत्न किया था परन्तु वह भी मार डाला गया। लिवियस ड्रूसस ने भी सन् ६१ ई० पू० में प्रयत्न किया था कि सब इटली वालों को रोम की नागरिकता के अधिकार दे दिए जायँ परन्तु वह भी मार डाला गया। इन सब कारणों से इटली वाले रोम से असंतुष्ट थे।

पहले तो रोम ने विजित देशों तथा इटली वालों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया और उन्हें अपना मित्र कहा और शत्रुओं से उनकी रक्षा भी की। इसका फल यह हुआ कि ये लोग भी रोम के साथ अच्छा बर्ताव करने लगे। परन्तु थोड़े दिन के बाद रोम वालों ने अपनी नीति बदल दी और इटली वालों के साथ क्रूरता का बर्ताव करना प्रारम्भ कर दिया। इटली वालों को न तो वोट देने का अधिकार था, न ये कमीटिया में बैठ सकते थे और न कसल चुन सकते थे। ये इतने पराधीन हो गये थे कि अपनी इच्छा के अनुसार विवाहादिक काम भी नहीं कर सकते थे। इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध में उन्हें सिर तोड़ परिश्रम करना पड़ता

चाहते थे कि यह अधिकार इटली के सब लोगों को न मिले और कुछ चाहते थे कि यह अधिकार भी सभी लोगों को अवश्य मिल जाय। कभी कभी इनके नेताओं में भी इस सम्बन्ध मे मतभेद होता था। सीनेट-सभा इसे भली भाँति जानती थी और इनके परस्पर के मतभेद से लाभ उठाती थी। इस कारण से इस दल की यथार्थ उन्नति नहीं होती थी।

(३) व्यापारी-दल

ये लोग न तो सरदार-दल मे थे और न जनता दल में। ये दोनो ही दल मे मिल जाया करते थे। ये जनता-दल में इसलिए मिलते थे कि दोनो मिल कर सीनेट की शक्ति कम कर सकें और सीनेट से इसलिए मिल जाते थे कि सब लोगों को नागरिकता के अधिकार न मिलने दें।

सामाजिक-युद्ध के पहले इटली के लोगों के असन्तोष तथा सामाजिक-युद्ध के कारण

इटली के लोगो ने रोम वालों की हर तरह से सहायता की थी। इन्होने उन्हें सेना दी थी द्रव्य दिया था और समय पड़ने पर अपना रक्त भी बहाया था। इसलिए ये रोमवालो के समान अधिकार और प्रतिष्ठा चाहते थे। इसलिए जब रोम वालों ने इटली वालो को नागरिकता के अधिकार नहीं दिए, तो इन्हें बहुत बुरा लगा और इनमें असन्तोष फैल गया।

इटली के कुछ लोग रोम मे भी बस गये थे जिन्हें वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया था। रोम के लोग समझते थे कि ये लोग उनके विरुद्ध वोट दिया करते हैं। इसलिए इन्हें इस मार्ग में से हटा देना चाहिए। इस विचार से रोम के लोगो ने अपने मन में सोचा कि यदि ये भी रोम से निकाल दिए जायँ, तो अच्छा हो।

था तथापि लूट के माल में उन्हें कुछ भी नहीं मिलता था। लूट की सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ सीधे रोम पहुँचती थीं।

जब सन् ६० ई० पू० में ड्रूसस की हत्या हो गई तो रोम में बड़ी गहरी सनसनी फैली। इटली के लोगों ने भली भाँति समझ लिया कि अब शान्ति से कोई अधिकार नहीं मिलेगा। उधर रोम के लोग इन्हें कोई अधिकार न देने पर ही तुले हुए थे। इसलिए इटली वालों और रोम में सन् ६० ई० पू० में युद्ध प्रारम्भ होगया। इसी का नाम सामाजिक युद्ध है। इसे मार्सियन-युद्ध भी कहते हैं।

सामाजिक-युद्ध की घटनाएँ

ड्रूसस की मृत्यु के बाद इस असन्तोष ने बड़ा ही उग्र रूप धारण किया और कई स्थानों पर विद्रोह होना प्रारम्भ हो गया। अब जितने लोग रोम के शासन से असन्तुष्ट थे, वे सबके सब एकता के सूत्र में बँध गये। इन सब लोगों ने मिलकर रोम की पहाड़ी की दूसरी ओर कार्फिनियम नामक स्थान पर एक दूसरा रोम नगर बसाया और उसे इटालिका कहने लग गये। यहाँ पर इन लोगों ने रोम की सब बातों का नकल किया, दो कसलों को चुना और पाँच सौ सभासदों की एक सीनेट-सभा स्थापित की। इन लोगों ने अपने सिक्के भी चलाए। ये सिक्के आज भी मिलते हैं। इस प्रकार सब काम करके इन लोगों ने रोम से लड़ने के लिए भी तैयारी करना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि ये लोग भली भाँति जानते थे कि बिना युद्ध किए रोम के लोग उन्हें कुछ भी अधिकार न देंगे।

जब रोम ने इन लोगों का यह रंग देखा तो ये भी युद्ध की तैयारी करने लगे। इस प्रकार इटली एक दूसरे के विरुद्ध दो भागों में विभक्त हो गया। अभी तक रोम के सेनापति दूसरे लोगों में

लड़ते चले आए थे। परन्तु अब इन्हें अपने सिखाए हुए सेनापति से ही लड़ना था। रोम ने चुने हुए एक लाख सिपाहियों को इस युद्ध में लड़ने के लिए भेजा। रोम की सेना दो ओर भेजी गई क्योंकि इन लोगों ने नई सेना को दोनों ओर से घेर कर उसे मार डालने का विचार किया था। दक्षिण मे कसल जूलियस-सीजर—जो विजयो तथा प्रतापी जूलियस-सीजर का पिता था—और उत्तर मे मेरियस तथा रूमिलियस। दक्षिण की सेना को इटालिका की सेना ने अच्छी तरह से हरा दिया। जिस जूलियस-सीजर की गणना संसार के सर्वश्रेष्ठ विजयियों में की जाती है, उसीके पिता को, इस नव स्थापित राज्य की सेना ने अब बुरी तरह से हरा दिया। इसी प्रकार से उत्तर की सेना भी हार गई। इस ार मे रोम की बड़ी हानि हुई और उसकी प्रतिष्ठा चोपट हो गई। व रोम को आटे-दाल का भाव मालूम हुआ और अपरिवर्तन दियों की आँखें खुलीं। उन्हें अब यह भी डर उत्पन्न हो गया कि ा के प्रजातन्त्र राज्य का नाश ही हो जायगा। परन्तु इस समय मा रोम ने एक चाल चली जो बहुत उपयोगी हुई। रोम ने जूलियस-सीजर की सलाह मे उन ३४ उपनिवेशों को नागरिकता का अधिकार दे दिया, जो उनके मित्र थे। इस प्रकार फिर अब ाम का राज्य—जिसकी जड़ हिल गई थी—दृढ़ हो गया। फिर पने वर्ष सन् ८९ ई० पू० मे रोम ने यह आज्ञा निकाली कि यदि लों के लोग ६० दिन के भीतर ही भीतर रोम मे मिल जायँगे तो ह नागरिकता के अधिकार दे दिए जायँगे। इस आज्ञा का इटली ो पर अच्छा प्रभाव पड़ा। विद्रोहियों ने अपने सब अस्त्र- रख दिए और रोम में मिल गये। इस तरह से नागरिकता न पुराने तथा लम्बे-चौड़े झगड़े का सन् ८८ ई० पू० मे अंत या। और सब जातियाँ तो आज्ञा निकलते ही रोम मे मिल

गई परन्तु सेमनाइन-जाति उसके बाद भी रोम से लड़ती रही परन्तु साला ने उन्हें हरा दिया और तब वे भी रोम का मित्र बन गई। अब सेमनाइन लोग भी मिल गये और सब के सब परस्पर समान मान लिए गये। इस प्रकार सेमनाइनों का नाम भी इतिहास से मिट गया क्योंकि अब ये कोई स्वतन्त्र तथा पृथक् जाति नहीं रह गये।

सामाजिक-युद्ध का फल

इसका एक महत्व पूर्ण फल यह हुआ कि सारे इटली को वोट देने का अधिकार मिल गया और सारी इटली एक सूत्र मे बध गई। अब तक रोम और इटली अलग अलग थे परन्तु अब दोनों मिल कर एक हो गये। अब रोम ही बढ़ कर इटली हो गया अथवा इटली सिकुड़ कर रोम हो गई। अब सारे देश में एक जाति हो गई, सब अपने को "रोमन" कहने लग गये। इसका दूसरा फल यह हुआ कि सारी इटली को नागरिकता के अधिकार मिल गये।

इसमे सन्देह नहीं कि इस प्रकार अधिकार दे देने से रोम तथा इटली मे शान्ति तो स्थापित हो गई परन्तु आंतरिक तथा पारस्परिक-कलह और भी अधिक बढ़ गया। इसमें भी सन्देह नहीं कि सिद्धान्त रूप से इटली की सब जातियों मे समानता तो स्थापित हो गई परन्तु व्यवहारिक रूप मे अब भी रोम के नगर की ही प्रधानता रहती थी। ये ही लोग शासन के काम में अधिक भाग लेते थे क्योंकि इन्हें इस प्रकार के कामो के करने मे कई तरह की सुगमता थी और बाहरी लोगो को भाँति भाँति की कठिनता इसलिए बाहर के लोग रोम के लोगो से बुरा मानने तथा डा करने लग गये थे और रोम के लोगों मे विश्वास ही नहीं करते थे इन सब कारणो से रोम तथा इटली मे पारस्परिक-युद्धों की वृ हो गई।

अठारहवाँ अध्याय

रोम का आंतरिक-युद्ध

रोम की सेना इधर बढ़ती ही चली जाती थी। इस कारण से सेनापतियों के अधिकार भी बढ़ते ही चले जाते थे। इस समय रोम की वास्तविक शक्ति सेनापतियों में ही रह गई थी। इसलिए रोम के होनहार युवक सेनापति बनना ही अधिक पसंद करते थे। इस समय राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी प्रस्तावों में भी इनका बहुत हाथ रहता था। ऐसी दशा में दो प्रबल सेनापतियों में परस्पर झगड़ा होना स्वाभाविक ही था। इसी कारण से आगामी पचास वर्ष तक रोम में आन्तरिक-युद्ध होते रहे। इन आन्तरिक युद्धों का अंत, प्रजातन्त्र के पतन और राज्य-तन्त्र के उत्थान के साथ ही साथ हुआ। परन्तु इन सब युद्धों का वर्णन करने के पहले साला का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक जान पड़ता है क्योंकि इन लड़ाइयों से उसका भी घनिष्ट सम्बन्ध है।

साला का परिचय

साला पेट्रीशियन-वंश के किसी साधारण व्यक्ति का पुत्र था। अपने जीवन के प्रारम्भ काल में इसने यूनानी-कला तथा साहित्य की ओर बहुत मन लगाया। वास्तव में साला अध्ययन शील और विद्या व्यसनी था। वृद्धावस्था में भी यह पढ़ता तथा स्वयं लिखता रहा। परन्तु इसमें कई भारी भारी दुर्गुण भी थे। यह वास्तव में बड़े कठोर हृदय का मनुष्य था और मनुष्यों की हत्या करने में तनिक भी नहीं हिचकता था। यह नीच मनुष्यों से मित्रता करता था और इसका चरित्र शुद्ध नहीं था। मेरियस के साथ, यह

जुगर्था से लड़ने के लिए अफ्रिका भेजा गया था और वहाँ उसने अच्छी कीर्ति कमाई। सामाजिक-युद्धों में भी इसने अच्छी तथा प्रशसनीय सैनिक योग्यता दिखलाई। सामाजिक-युद्ध के बाद से तो सब लोग इसे मेरियस से भी बढ़ कर समझने लगे। सब लोग अब यही कहने लगे कि साला ने ही जुगर्था को भी पकड़ा है और इसी ने सामाजिक-युद्ध का भी अंत किया है। इस की लोकप्रियता अब मेरियस को असह्य हो उठी। इसलिए साला ने सीनेट की शरण ली। सीनेट तो इस समय कमजोर थी ही, वह चाहती थी कि कोई प्रसिद्ध सेनापति उसका साथ दे। इसलिए सीनेट ने साला का पक्ष लिया तथा उसे सन् ८८ ई० पू० में कसल बनाया और मेथ्रीडेटीज से युद्ध करने के लिए उसे ही भेजने का निश्चय किया। इस पर मेरियस बिगड़ गया और साला से तथा उससे लड़ाई छिड़ गई। इसी को प्रथम आन्तरिक-युद्ध कहते हैं।

प्रथम आन्तरिक-युद्ध (८८-८६ ई० पू०, मेरियस और साला के बीच में)

एशिया माइनर में पांटस नामक एक राज्य था। यह अर्मीनिया के समीप था। इसका राजा मेथ्रीडेटीज गत बीस वर्षों से अपनी शक्ति खूब बढ़ा रहा था। अब रोम उसे सशंक दृष्टि से देखता था। उसने देखा कि रोम के लोग कई झगड़ो में फँसे हुए हैं। इसलिए, इसे सुअवसर समझकर उसने रोम के राज्यों के ऊपर हमला कर दिया और उन यूनानी लोगों ने भी—जो रोम की प्रजा थे—उसका बड़े हर्ष से स्वागत किया। अब रोम में यह प्रश्न उत्पन्न हो गया कि उससे लड़ने के लिए कौन भेजा जाय। इस समय साला और मेरियस दोनों ही उससे लड़ने के लिए जाना चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि पूर्वी लड़ाइयों में अधिक कीर्ति, सम्मान तथा लूट

...का माल मिलता है। दोनो ही यह भी जानते थे कि पूर्वी लोगों ...को हराना सुगम है। सीनेट इस समय साला के पक्ष में थी, इसने ...साला को, जो उस समय कसल था एशिया मे लड़ने के लिए सेना...पति नियत किया और मेरियस को नहीं भेजा। इसमे सन्देह नहीं ...कि मेरियस इस समय बहुत बुड्ढा होगया था परन्तु उसकी इच्छा तथा तृष्णा बुड्ढी नहीं हुई थी तथा वह जनरल बनना चाहता था। ...और मेथूीडेटीज से लड़ने के लिए जाना चाहता था। इसी ...चार से उसने बहुत से सीनेटरो को अपनी ओर मिला लिया ...और सलपीसियस नामक एक ट्रिब्यून के द्वारा यह स्वीकृत करा लिया कि साला की जगह मेरियस नियुक्त किया जावे और ...ही एशिया मे लड़ने के लिए भेजा जाय। जब साला ने सुना कि वह अपने पद से हटा दिया गया है तो वह अपनी सेना के पास ...ा पहुँचा और उनसे सब हाल कहा। इस बात को सुनकर सेना ...ाग-बबूला हो गई और साला के साथ मर मिटने को भी तैयार ...गई, अब साला ने रोम पर धावा कर दिया।

इस प्रकार पारस्परिक मतभेद के कारण रोम के एक अधि-...री द्वारा रोम पर आक्रमण करने का यह पहला ही अवसर था परन्तु ऐसी घटना इसके बाद कई बार हुई। ऐसी प्रबल सेना का ...ामना करना मेरियस के लिए असम्भव था क्योंकि वह इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था, इसलिए वह किसी न किसी तरह से ...ाम से भाग निकला। वह एक तालाब मे पानी में छिपा हुआ पकड़ा गया और उसे प्राणदण्ड की आज्ञा मिली। एक दास को उसे फाँसी देने की आज्ञा हुई परन्तु उस समय मेरियस ने उससे कहा—"क्या तुझमे मेरियस को फाँसी देने की शक्ति तथा साहस ...?" इतने मे दास घबड़ा उठा और वह मेरियस को फाँसी नहीं दे सका। वहाँ से भी मेरियस भाग गया।

सलपीसियस रोम के पास ही एक जगह छिप गया परन्तु लोगों ने उसे पकड़वा दिया और तब वह मार डाला गया। इस प्रकार विना युद्ध किए ही साला विजयी हो गया। अब साला ने सलपीसियस के सब नियमों को रद्द कर दिया और मेथ्रीडेटीज से लड़ाई करने के लिए यूनान की ओर चला गया।

साला के चले जाने के बाद सिना और आक्टेवियस नाम दो कसलों में परस्पर लड़ाई होने लगी क्योंकि सिना, मेरियस का पक्षपाती था और चाहता था कि मेरियस फिर रोम में बुलाया जाय और सलपीसियस के कानून फिर प्रचलित किए जायँ। परन्तु आक्टेवियस इन सब बातों का घोर विरोध करता था। क्योंकि वह साला का पक्षपाती था। इसलिए इन दोनों में घोर संग्राम हुआ जिसमें सिना हार गया और उसे शहर के बाहर अपनी रक्षा के लिए भाग जाना पड़ा। इसमें सन्देह नहीं कि सिना हार गया था, परन्तु इसने शीघ्रही एक बड़ी भारी सेना एकत्रित कर ली क्योंकि उन लोगों ने जिन्हें अभी हाल ही में वोट देने का अधिकार मिला था, इसे खूब सहायता दी। इसी समय मेरियस को भी पता चल गया कि रोम में गड़बड़ी मची हुई है, इसलिए वह भी रोम में लौट आया। इन दोनों—सिना और मेरियस—की संयुक्त सेना ने रोम को चारों ओर से घेर लिया और उस जहाज को लूट लिया जिस पर अन्न लद कर रोम जा रहा था। रोम के लोग डरने लग गये कि अब सिना और मेरियस दोनों मिल कर रोम को खूब लूटेंगे और बहुतों को मार डालेंगे। इसलिए सीनेट ने इन दोनों से रोम के नागरिकों की जान बचाने और रोम में आने की प्रार्थना की। इस प्रकार मेरियस फिर एक बार रोम में प्रधान हो गया। जब मेरियस रोम से भागा था, तो उसे कई आपत्तियों का सामना करना पड़ा था और कई बार

तो वह मरते मरते बचा था। इन सब दु खों के सहने के कारण अपने शत्रुओं के प्रति, मेरियस का हृदय बड़ा कठोर हो गया था। इसलिए जब वह रोम मे प्रधान हुआ, तब उसने अपने सब शत्रुओं को मरवा डाला। कई इतिहासज्ञों ने लिखा है कि इस समय पाँच दिन तक रोम के फाटक बद रहे। इन दिनो मेरियस अपने सिपाहियो के साथ गलियो मे इधर उधर घूमता फिरता था और जिसकी ओर मेरियस सकेत करता था, वह यम-सदन पहुँचा दिया जाता था। बहुत लोगो को तो इसने कुत्ते की मौत मार डाली। इस समय रोम के रक्त की नदी स्वय रोम ही में बह चली।

इसके बाद मेरियस सातवीं बार कसल चुना गया परन्तु वह अधिक दिन तक नहीं जी सका, वह शीघ्र ही मर गया। यहीं पर प्रथम आंतरिक युद्ध का अंत समझना चाहिए।

द्वितीय-आतरिक-युद्ध

सन् ८६ ई० पू० में मेरियस सातवीं और अंतिम बार कसल बनाया गया और उसी साल मर भी गया। उसके स्थान पर लोगो ने फ्लेकस को कसल चुन लिया। परन्तु अब इन आतरिक कलहो के कारण से रोम की सारी शासन-व्यवस्था बिगड़ गई थी और सीनेट में अब कोई शक्ति नहीं रह गई थी। अब रोम के सब लोग साला से डरने लग गये थे और ये भली भाँति समझ गये थे कि जब साला पूर्व से विजयी होकर रोम में आएगा, तो अपने शत्रुओं को कठिन दड देगा। इसलिए सीनेट ने कहा कि साला से लड़ाई करने के लिए कोई तैयारी नहीं करनी चाहिए बल्कि उसी को प्रधान मान लेना ही उचित है। परन्तु कसलो ने सीनेट की आज्ञाओं की अवहेलना की और साला से लड़ाई करने

तैयारी करना प्रारंभ कर दिया। इटली के भी बहुत लोगों ने मेरियस के इस दल का पक्ष लिया। फ्लेकस साला से लड़ने के लिए आगे भेजा गया परन्तु वह मार्ग ही में मार डाला गया और उसकी सेना हार गई। सिना ने सोचा कि हम स्वयं आगे बढ़कर साला के मार्ग को रोक दें। परन्तु स्वयं उसके सिपाहियों ने ही उसे मार डाला। इसी समय रोम की सीनेट के कुछ लोगों ने साला के यहाँ लिखा—"आप सीधे रोम चले आइए। हम लोग आप की रक्षा का सब प्रबंध स्वयं कर देंगे।" इसका जवाब साला ने दिया—"आप लोग कृपया मेरी रक्षा की कुछ भी चिन्ता न करें। हम स्वयं आप की रक्षा के लिए रोम में आ रहे हैं।"

साला के इस उत्तर ने रोम को और भी अधिक भयभीत कर दिया। इस प्रकार जब साला रोम के पास पहुँचा तो उसके शत्रुओं के पास कोई अच्छा सेनापति नहीं था। अब मेरियस का पुत्र कसल बनाया गया था परन्तु वह भी सेक्रीपोर्टस की लड़ाई में मारा गया। कारबो नामक सेनापति को भी साला ने क्लूजियम की लड़ाई में हरा दिया। इस प्रकार कसलो की भेजी हुई सेनाओं को साला ने दो तीन स्थानों पर अच्छी तरह से हरा दिया। सेमनाइन लोग अब भी साला के विरुद्ध थे और जनता दल अथवा उदार-दल के पक्ष में थे। रोम के कैलाइन द्वार पर एक घोर संग्राम हुआ। यह युद्ध रात भर होता रहा। परन्तु प्रातःकाल ही साला विजयी हो गया। अब साला ने अपने शत्रुओं के सब सेनापतियों को मार डाला था। इस प्रकार अब साला रोम का पूर्ण रूप से अधिकारी हो गया। अब साला को रोम में अपनी इच्छा के अनुसार काम करने की पूरी स्वतंत्रता थी क्योंकि अब कोई उसे रोकने वाला नहीं था।

अब साला ने रोम में प्रवेश किया और अपने शत्रुओं से भ
कर बदला लिया। सबसे पहले इसने अपने शत्रुओं की एक नाम
ाली प्रकाशित की और उन्हें जान से मरवा डाला। इसी प्रका
ई बार नामावलियाँ निकाली गईं और सब के सब तलवार के
ाट उतार दिए गये। लोगों का कहना है कि साला ने कई हजार
ादमियो को मरवा डाला। एक दिन सीनेट-सभा बैठी थी तथा
सर्भ काम हो रहा था उसी समय पास ही के कमरे से दुःख भरी
ावाज आई जिसके कारण सीनेट को अपना काम बन्द कर देना
ड़ा और सब लोग आश्चर्य-चकित दृष्टि से एक दूसरे की ओर
खने लगे। तब साला ने सब लोगो से बड़े तपाक से कहा—
ाप लोग सीनेट की कार्यवाही होने दीजिए और इस आवाज
चिन्ता न कीजिए। यहाँ तो मेरी आज्ञा से कुछ राजविद्रोहियो
ाधर्म सिखाया जा रहा है।" कहा जाता है कि यहाँ पर पाँच
सेमनाइन इसी प्रकार काट डाले गये।

इस प्रकार सरदार दलने अपने विरोधियो से भयकर बदला
या। अब सब लोगो पर साला का आतंक छा गया और कई
तक लोग इस घटना को नहीं भूल सके। इस प्रकार द्वितीय-
रिक युद्ध का अंत हो गया।

इस युद्ध का फल

ा पारस्परिक तथा आन्तरिक युद्धो के बाद साला रोम मे
मनुष्य बन गया। इस समय साला, रोम का नेता था।
के बाद उदार दल (जनता-दल) के बहुत मनुष्यो की
और राज्य के नाम पर स्वार्थ भी साधा गया।

उन्नीसवाँ अध्याय

साला की शासन-व्यवस्था

साला एक राजनीतिज्ञ भी था। वह सरदारदल का पक्ष
पाती था अतएव वह सीनेट की शक्ति को बढ़ाना चाहता था
अब रोम में उसके मार्ग में कोई काँटा नहीं था और वह मनमान
कर सकता था। परन्तु ऐसा करने के पहले विरोधी दल को पूर्ण
तया कुचल देना और राज्यव्यवस्था में किसी नए कानून आदि
परिवर्त्तन करने के लिए कोई नई पदवी धारण करना आवश्य
था। पहले काम के लिए तो उसने अपने विरोधियों को मर
डाला और दूसरे काम के लिए उसने डिक्टेटर की पदवी धार
की। सन् २१७ ई० पूर्व मे रोम में दो डिक्टेटर बन गये थे।
कारण से रोम बहुत ही अधिक अव्यवस्थित हो गया था। उ
साल से डिक्टेटर बनने की प्रथा बन्द कर दी गई थी परन्तु लग
१२० वर्ष के बाद साला ने फिर उसी प्राचीन प्रथा को जारी कि
यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पहले डिक्टेटरों की अवधि
महीने की थी परन्तु अब उसकी कोई अवधि नहीं रही।
अतिरिक्त साला नामक डिक्टेटर का काम केवल अपनी इच्छ
अनुसार व्यवस्था में परिवर्त्तन करना मात्र था। रोम के लोग
साला से थर थर काँपते थे और उसके कामो में हस्तक्षेप कर
न तो स्वप्न ही देख सकते थे और न साहस ही कर सक
इसी डर के मारे कमिटियो ने भी अपने सब अधिकारों को
को दे दिया। अब साला एक प्रकार से राजा ही था क्योंकि
जो चाहे कर सकता था। परन्तु उसने राज-मुकुट नहीं धार
किया।

डिक्टेटर बनने पर साला के कार्य

(१) सीनेट और साला

अब साला ने अपनी नई व्यवस्था प्रारंभ कर दी। उसने सीनेट की शक्ति को बढ़ाना प्रारंभ कर दिया। क्योंकि इस समय वह बहुत निर्बल हो गई थी। सबसे पहले तो उसने सीनेट को सारे प्रबन्धों का मुखिया बनाया। साला ने 'कुमीट्रिया' से कानून बनाना आदि सब अधिकार छीन लिया और इन सब अधिकारों को सीनेट को दे दिया। सीनेट के अधिकारों को बढ़ाने के लिए इसने कई कानून भी पास कराया। ट्रिब्यून और जनता की शक्तियों को कम करके साला ने सीनेट की शक्ति को बढ़ाया। पहले सेंसर लोग भी सीनेट की कार्यवाही की देखरेख करते थे परन्तु अब साला ने सीनेट को इन सेंसरों से भी स्वतंत्र कर दिया।

(२)

हाल ही में सब लोगों को वोट देने का अधिकार मिल गया था। साला ने इन सब अधिकारों को छीन लिया और कोई चूँ भी नहीं कर सका।

(३)

इसके बाद साला ने इटली की एकता और दृढ़ता का अच्छा प्रबंध किया। इस विचार से इसने नगरों की पुरानी सब संस्थाओं को तोड़ दिया और प्राण दंड के कारण जितने नगर खाली हो गये थे, उनमें अपने सिपाहियों को बसा दिया। इस प्रकार ये ऊजड़ गाँव भी फिर से आबाद हो गये और देश में शान्ति भी स्थापित हो गई। इसने फौजदारी कानून की अच्छी व्यवस्था की और अच्छे न्याय का भी प्रबंध किया। इसने अदालतों में पंचों को भी निर्णय करने का अवसर दिया।

इस समय रोम के प्रांतों की सरकार की दशा और भी अधिक सोचनीय हो रही थी क्योंकि यहाँ के गवर्नर मनमानी किया करते थे तथा प्रजाओं के साथ बहुत बुरा बर्ताव करते थे।

इन सब कारणों से प्रजातन्त्र की जड़ हिल गई थी और लोग इस वर्त्तमान प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्त्तन करने का विचार करने लग गये थे। प्रजातन्त्र के नष्ट होने के ये ही सब कारण हैं। इन सब बातों से स्पष्ट है कि रोम की इस समय ऐसी दशा थी कि इसे रोम की कोई वर्त्तमान शक्ति सँभाल ही नहीं सकती थी। वास्तव में इस समय रोम की सारी शक्तियाँ इधर उधर बिखरी हुई थीं और कोई एक शक्ति प्रधान नहीं रह गई थी। इसलिए रोम के लोगों ने ऐसा सोचना प्रारम्भ कर दिया था कि इन सब बिखरी हुई शक्तियों को एक मनुष्य में एकत्रित कर देना चाहिए। इसी को दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि रोम के लोगों की प्रवृत्ति राजतन्त्र की ओर झुक रही थी। रोम के लोगों ने अब भली भाँति अनुभव कर लिया था कि इतने बड़े राज्य का, प्रजातन्त्र अच्छी तरह से प्रबन्ध कर ही नहीं सकता क्योंकि सीनेट तथा रोम की और किसी संस्था में भी वहाँ के लोगों का विश्वास नहीं रह गया था। वास्तव में उस समय रोम में प्रतिनिधि-प्रथा का विकास नहीं हुआ था, ऐसी दशा में रोम के लोगों के ये विचार सर्वथा उचित ही थे। इधर तो यह दशा थी, उधर बलवा करने वालों का भय बढ़ता ही चला जाता था। मेथ्रीडेटीज युद्ध के लिए तैयारी कर रहा था, लेपिडस रोम की सेनाओं को हराता चला जाता था और दासों की संख्या बढ़ती ही चली जाती थी। इन सब कारणों से रोम भयभीत हो रहा था और वह एक ऐसे विजयी, वीर तथा मनुष्य की खोज में था जो इन सब बलवा करने वालों और रोम के भय को दूर करे। उस मनुष्य का विजयी

होना आवश्यक था क्योंकि रोम मे विजयी बड़े सत्कार की दृष्टि से देखा जाता था और विजयी तथा चोर का अर्थ एक ही माना जाता था। इसी समय सब की दृष्टि पांपियस पर पड़ी क्योंकि इसके पहले ही पांपियस ने अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दे दिया था। रोम के लोगों को विश्वास हो गया कि पांपियस रोम मे फिर शान्ति स्थापित कर सकता है। इसलिए सब लोगो ने पांपियस को कसल चुन लिया।

पांपियस के काम

पांपियस ने जनता की आशा को पूरा भी किया। इस समय रोम को सब से अधिक भय भूमध्य-सागर के पास के लुटेरे और डाकुओ का था, जो दिन प्रति दिन बढ़ते ही चले जाते थे। सन् ६६ ई० पू० मे यह सेनापति बनाया गया और भूमध्य-सागर के पास के लुटेरों को परास्त करने के लिए भेजा गया। पांपियस ने वास्तव मे इस समय बड़ी अच्छी योग्यता का परिचय दिया। इसने चारो ओर से लुटेरों को घेर लिया और एक ऐसा जाल बिछाया जिससे वे निकल ही नहीं सके। इसने इन लुटेरो के सारे अड्डों को नष्ट कर दिया और उनमे से अधिको को मार डाला। कुछ लुटेरो ने पांपियस को आत्म समर्पण कर दिया। इन्हे पांपियस ने इटली के नगरो में बसा दिया और उन्हे अपने समाज में मिला लिया। इन लुटेरो के पास बहुत जहाज थे। पांपियस ने इन सब पर अपना अधिकार कर लिया। इनके नष्ट होते ही इटली में अनाज बहुत सस्ता हो गया क्योंकि अन्न के जहाजों को ये मार्ग ही में लूट लिया करते थे। इस विजय से पांपियस की प्रतिष्ठा और भी अधिक हो गई और वह रोम का सर्वश्रेष्ठ सेनापति गिना जाने लगा।

अब पूर्व में रोम को मेथ्रीडेटीज का भय रह गया था। इसलिए उससे भी लड़ने के लिए पांपियस ही उपयुक्त समझा गया तथा भेजा गया। पांपियस ने उसे भी हरा दिया। इन सब विजयों के कारण पांपियस का खूब नाम हुआ और उसकी शक्ति भी बहुत बढ़ गई।

जिस समय पांपियस विजय पर विजय प्राप्त कर रहा था, उस समय रोम में चारो ओर अविश्वास फैला हुआ था और षड्यंत्रों का बाजार गर्म हो रहा था। रोम के सरदार लोग डर रहे थे कि विजय से लौट कर पांपियस भी साला की तरह निरकुश हो जायगा और लोगो के नाक मे दम कर देगा। धनिकों को इसकी विशेष चिन्ता थी क्योंकि पांपियस उदार-दल का आदमी था। भावी रक्तपात और अशान्ति से रोम को बचाने के लिए रोम में कई उपाय सोचे जा रहे थे। कोई उदार दल को शक्तिमान बनाना चाहता था और कोई सरदार-दल को। कोई पांपियस से युद्ध करने की तैयारी कर रहा था और कोई भविष्य-चूट की। परन्तु इस समय रोम मे कई प्रसिद्ध तथा योग्य मनुष्य थे। इन सबों में भी मतभेद था और ये अपने दल को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। परन्तु इनसे सम्बन्ध रखने वाली प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन करने के पहले इन प्रसिद्ध तथा प्रधान नेताओ का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक जान पड़ता है।

इस समय के रोम के प्रधान नेता

इस समय रोम में पांच-छ प्रधान नेता थे। इन लोगों ने रोम के इतिहास तथा राजनीति की रङ्गभूमि में अच्छा भाग लिया इसलिये रोम के इस समय का इतिहास प्रारम्भ करने के पहले ... का अत्यन्त संक्षिप्त परिचय दे देना आवश्यक ... है।

जूलियस सीजर

इसका जन्म सन् १०२ ई० पू० में सरदार दल(nobles) में हुआ था। परन्तु इसका सम्बन्ध मेरियस से भी था। इसका विवाह सिना की कन्या से हुआ था। इस प्रकार स्पष्ट है कि इसका सम्बन्ध उदार दल (जनता) में भी था। यह वास्तव में एक बड़ा ही प्रतिभाशाली मनुष्य था। अपने जीवन के प्रारम्भ काल ही में उसने रोम की परिस्थिति को भली भाँति समझ लिया था और प्रारम्भ से ही उसने सम्पूर्ण रोम के स्वामी बनने का निश्चय कर लिया था और उसके लिये प्रयत्न भी करता था। जिस समय रोम में साला की तूती बोल रही थी और कोई साधारण आदमी चूँ भी नहीं कर सकता था, उसी समय जूलियस सीजर ने साला की आज्ञाओं का उल्लंघन कर दिया। साला ने सीजर से कहा था—"अपनी स्त्री को छोड़ दो।" परन्तु सीजर ने ऐसा नहीं किया। इससे सब लोग समझ गये कि सीजर मनस्वी है।

लिखने-पढ़ने में भी इसका बड़ा मन लगता था। युवावस्था के प्रारम्भकाल में ही यह अपनी विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध हो गया। इसे व्याख्यान देने का बड़ा शौक था और इस कला में इसे अच्छी ख्याति भी मिली। एशिया खण्ड में यह एक बार लड़ने के लिये भेजा गया वहाँ पर भी उसने अच्छा नाम कमाया। धीरे धीरे यह रोम में प्रसिद्ध हो गया और राजनैतिक कामों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। इसने उदार-दल (जनता) का पक्ष लेना शुरू किया। इसने मेरियस के सम्बन्ध में व्याख्यान देना भी प्रारम्भ कर दिया, जिससे सब लोग इसे और भी अधिक चाहने लगे। इसने क्रमानुसार पाटिक, क्वेस्टर और प्रीटोर आदि सब पदों को सुशोभित किया और प्रत्येक पद पर अच्छी योग्यता का परिचय दिया। इसने

मेरियस की मूर्त्ति को भी स्थापित किया। जब स्पेन में लड़ाई हुई तो यह भी लड़ने के लिये भेजा गया। वहाँ पर इसने सेनापति का भी काम किया और उस दशा में भी बहुत अच्छा काम किया। अब उसकी गणना रोम के प्रसिद्ध सेनापतियों में होने लगी। स्पेन से लौटने के बाद इससे तथा सीनेट से कुछ अनबन हो गई। अब यह सीनेट का जानी दुश्मन हो गया और उनकी शक्तियों के कम करने का प्रयत्न करने लगा। यह सन् ६० ई० पू० में कसल चुना गया। उसने सिना की कन्या से विवाह किया था। इसलिये उदार दल वाले उसे बहुत चाहते थे। वह सीनेट की शक्ति को नष्ट करके स्वयं रोम का एक मात्र शासक बनना चाहता था। परन्तु वह राजनीति का एक अच्छा विद्यार्थी था, वह समझ गया था कि अभी इस काम के करने की पूरी शक्ति नहीं है अतएव अब वह सुअवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। फाउलर साहब ने लिखा है "सीजर वास्तव में एक प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ था। इसने भूमध्य सागर के आसपास के देशों का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया था। इस काम को साला और पाम्पियस नहीं कर सके थे। इसने न्याय और कानून सम्बन्धी सुधार किये थे जिनमें से प्रत्येक में उसकी प्रशंसनीय बुद्धिमत्ता का पर्याप्त परिचय मिलता है। इसने सीनेटरों की संख्या ९०० कर दी जिससे उनकी शक्ति बहुत कम हो गई। सीजर के हत्या करने वालों ने वास्तव में एक बड़ी भारी भूल की थी।"

कैटेलाइन

इसका जन्म पेट्रीशियन वंश में हुआ था। कई कारणों से यह दरिद्र हो गया था। पहले इसके घराने के लोग धनी थे। यह साला का पक्षपाती था। कहा जाता है कि इसका हृदय बहुत कलुषित था। जब साला ने बहुत मनुष्यों को मार डाला था, तब इसने भी

ितने मनुष्यों को अपनी निजी बातों के तथा स्वार्थ के लिये मरवा ाला था। धीरे धीरे यह रोम में प्रसिद्ध हो गया। परन्तु इस सार में मनुष्य दो तरह से प्रसिद्ध होता है—अच्छा काम करके ाथवा बुरा काम करके। कैटेलाइन अपने बुरे कामों के लिये ही प्रसिद्ध हुआ। बदनाम होने पर भी यह प्रीटोर के पद को पा ाया। सन् ६७ ई० पू० में यह अफ्रिका का गवर्नर भी नियत कर दिया गया। इसने कसल बनने का भी प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता नहीं हुई। इसने एक बड़ा भारी षडयन्त्र किया परन्तु उसका पता लग गया। सन् ६२ ई० पू० में यह मार डाला गया।

सिसरो

सिसरो एक साधारण कुल तथा घर में उत्पन्न हुआ था। यह रोम का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध वक्ता था। उसकी गणना ससार के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं में की जाती है। उसके व्याख्यान, अमर साहित्य की सामग्री हैं क्योंकि रोम पर उसके व्याख्यानों का, उसकी मृत्यु के बाद भी प्रभाव पड़ा। वह यूनानी साहित्य तथा विद्या का भारी विद्वान था। उसने यूनानी-भाषा से कई पुस्तकों का अपनी भाषा में अनुवाद भी किया था। वह सरदार दल का नेता था और सरदार दल तथा व्यापारी दल को एक में मिलाना चाहता था और इसमें उसे कुछ सफलता भी मिली थी। वह कसल भी चुना गया था। जब वह कसल था, तब उसने कैटेलाइन के षड्यन्त्रकारियों को मरवा डाला था। इस काम से प्रसन्न हो कर सीनेट ने इसे "देश-पिता" की उपाधि दी थी परन्तु उस पर कैटेलाइन के अनुयायियों के वध का अपराध लगाया गया और उसे देश निकाला का दण्ड दिया गया। डबल्यू वार्ड फाउलर-साहब ने अपने रोम के इतिहास में सिसरो की बड़ी प्रशंसा लिखी है।

उनका कहना है कि सिसरो की महत्ता समझने के लिये कई ग्रंथों के लिखने की आवश्यकता है। अपने समय का यह सर्वश्रेष्ठ मनुष्य था आदि आदि। फाउलर साहब ने यह भी लिखा है—"इसमें संदेह नहीं कि सिसरो में कुछ मनुष्योचित दुर्बलताएँ थीं परन्तु उन्हें देख और समझ कर भी हम लोग सिसरो से घृणा नहीं कर सकते किन्तु उस पर दया कर सकते हैं।

क्रेसस

क्रेसस बहुत बड़ा और धनी आदमी था। यह रोम में बहुत प्रसिद्ध हो गया। साला के समय में क्रेसस ने विरोधियों के सामान को नीलाम में मोल लिया था और इस प्रकार यह धनी हो गया था। खिलाड़ी दासों के विप्लव को दबाने के लिए यह भेजा गया था। इस काम में इसे सफलता भी मिली थी। यह सन् ७० ई० पू० में पांपियस के साथ कुसल भी चुन लिया गया था। क्रेसस धनिकों का प्रतिनिधि था।

पांपियस

पांपियस, स्ट्रेबो का पुत्र था और प्राचीन रोम के सेनापतियों में एक श्रेष्ठ मनुष्य था। सामाजिक-युद्ध के समय में यह अपने पिता के साथ लड़ रहा था। जब मेरियस और साला में आन्तरिक-युद्ध हुआ था, तब इसने साला का साथ दिया था। इन सब लड़ाइयों में यह बहुत प्रसिद्ध हो गया और यह अपने समय का रोम का सर्वश्रेष्ठ सेनापति समझा जाने लगा। इसके बाद यह सिसली में मेरियस के अनुयायियों से लड़ने के लिए भेजा गया और उन्हें अच्छी तरह से हरा दिया। अफ्रिका में भी इसे विजय प्राप्त हुई। अब सब लोगों ने उसे महान की पदवी दे दी और सब लोग इसे एक भारी विजयी समझने लगे। साला के

मृत्यु के बाद ही लेपिडस ने बलवा का झंडा खड़ा कर दिया था। पांपियस ने लेपिडस को हराया और इस बलवे का अंत कर दिया। सरटोरियस नामक एक मनुष्य ने स्पेन में भी बलवा कर दिया था परन्तु वहां जाकर पापियस ने उसे भी हरा दिया और स्पेन को रोम के अधीन कर दिया। जब यह स्पेन से लौट रहा था तो इसे पता चला कि खिलाड़ी दासों ने भी बलवा कर दिया है। इसलिए उसने उन पर भी हम्ला किया और उन्हें हरा दिया। इस प्रकार इसने बहुत से बलवा करने वालों को हरा दिया और रोम के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया।

इसके बाद पापियस ने कसल बनने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। इसने अपने प्रयत्नो से उदार-दल को अपने पक्ष में कर लिया। इसने यह भी वादा किया कि जब मै कसल बनूँगा तो ट्रिब्यूनों की शक्ति को अधिक करने का प्रयत्न करूँगा, कम से कम, मैं उन सब अधिकारो को ट्रिब्यूनों को अवश्य दिला दूँगा जिन्हें साला ने उनसे छीन लिया है। अंत मे यह कसल चुन भी लिया गया। जब वह कंसल बन गया तब उसने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। इसके बाद इसने उन सब डाकुओं का नाश कर दिया जिन्होंने भूमध्य सागर के पास के रोम के राज्यों को लूटना प्रारम्भ कर दिया था। इसने पांटस के राजा मेथ्रीडेटीज को हरा दिया और पान्टस तथा सीरिया को रोम के राज्य में मिला दिया। इसके बाद यह रोम लौट आया और जूलियस-सीजर तथा क्रैसस के साथ मित्रता कर के एक त्रिगुट बना लिया। पापियस के बारे मे फाउलर साहब ने लिखा है—" इसने पूर्व मे भी रोम की सीमा को नियत किया जिसमे रोम का बड़ा लाभ हुआ। इस सम्बन्ध मे तथा अनेक और बातों के सम्बन्ध में पांपियस को महत्वपूर्ण काम करना पड़ा आदि।"

इस समय पर डबल्यू वार्ड फाउलर-साहव का मत

डबल्यू वार्ड फाउलर-साहव ने लिखा है कि इस समय के जितने बड़े लोग थे, सब के सब अकाल मृत्यु के ही शिकार हुए, इसमें सन्देह नहीं कि यह समय 'कर्म-युग' कहला सकता है। परन्तु इस समय में और भी बहुत से काम हुए। इस समय मे बहुत से श्रेष्ठ कवि और लेखक भी हुए हैं। लूक्रेशियस और कैटलस नामक प्रसिद्ध कवि इसी समय मे हुए हैं। लूक्रेशियस का विचार था कि धर्म एक व्यर्थ का बखेड़ा है, मृत्यु के बाद का जीवन आदि पुरोहितों का गोरख धंधा है।

केटो (छोटा)

यह बड़े केटो का नाती था। वह चरित्र का बड़ा अच्छा था और रोम में इस अंश में सर्वश्रेष्ठ समझा जाता था। वह भी सरदार दल का नेता था और उदार-दल की प्रत्येक बातों का घोर विरोध करता था।

वह जिस बात पर डट जाता था, उससे तनिक भी इधर उधर नहीं हिलता था।

इन सब प्रसिद्ध मनुष्यों के बाद अब उन सब घटनाओं का वर्णन किया जायगा जिनसे इन लोगो का अधिक सबंध है।

कैटेलाइन का षड्यन्त्र

कैटेलाइन सरदार-दल का एक व्यक्ति और साला का मित्र था। उसके ऊपर बहुत सा ऋण था। इसलिए वह रोम में क्रान्ति उत्पन्न करके अपने स्वार्थ की सिद्धि करना चाहता था। वह चाहता था ज्योंहीं रोम में गड़बड़ी मचे त्योंहीं मैं धनिकों को लूट लूँ और

बहुत धन एकत्रित कर लूँ। इसी विचार से उसने उन सब लोगों को अपने पक्ष में कर लिया जो किसी भी तरह से असंतुष्ट थे। इनकी सहायता से यह कंसल भी बनना चाहता था परन्तु सन् ६३ ई० पू० में सिसरो कंसल चुना गया और कैटेलाइन मुँह ताकता रह गया। इसलिए कैटेलाइन की क्रोधाग्नि और भी अधिक हो गई। वास्तव में यह समय भी क्रांति को बुला रहा था क्योंकि साला के सिपाहियो ने अब तक अपना सब धन खर्च कर दिया था और अब लूटमार करने की राह देख रहे थे। इसके सिवाय साला के समय में बहुत लोग दरिद्र बन गये थे। ये लूट के माल से धनवान बनने का स्वप्न देख रहे थे। व्यभिचार और अधिक व्यय के सताए हुए—पहले धनी परन्तु अब दरिद्र—लोग भी क्रांति की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। अब शहरों में भी बहुत दरिद्र आदमी बस गये थे और धनिकों को ये ईर्षा की दृष्टि से देखते थे। इसके सिवाय सीनेट तथा अन्य लोग परस्पर के झगड़े में फँसे हुए थे और प्रजातंत्र की चिन्ता भी नहीं करते थे। इस समय पांपियस पूर्व में मेथीडेटीज़ से युद्ध कर रहा था। इसलिए रोम में कोई भी ऐसी सेना थी ही नहीं जो क्रान्ति को दबा सके। इन सब कारणों से प्रेरित हो कर कैटेलाइन ने रोम में क्राति करने का विचार कर लिया।

जब कैटेलाइन कंसल नहीं चुना गया, तब उसने सिसरो को—जो अब कंसल चुन लिया गया था, मार डालने का विचार किया और इसीलिए षड्यंत्र भी रच लिया। परन्तु यह शान्त प्रकृति का मनुष्य नहीं था षड्यंत्र का सब भेद खुल गया। इसमें सन्देह नहीं कि सीनेट को कैटेलाइन के षड्यंत्र का पूर्णरूप से पता चल गया परन्तु ये लोग उससे इतना डरते थे कि ये उसे पकड़ने का साहस नहीं कर सके।

अब कैटेलाइन एक दूसरा ही षड्यंत्र रचने लगा। परन्तु इस बार इसने बड़ी सावधानी से काम लिया और इसे खूब अच्छी तरह से गुप्त रखने का प्रयत्न किया। इसने सब असंतुष्ट लोगों को एकत्रित कर लिया और उनके सामने कई क्रांतिपूर्ण प्रस्ताव पेश किए। उसने इन लोगों से कहा '—" उस समय, अर्थात् क्रांति के बाद हम लोग सब प्रकार के ऋणों से मुक्त हो जायँगे, धनिकों का धन हम लोगों का हो जायगा और सारी संपत्ति को हम लोग आपस में बाँट लेंगे।

सिसरो कैटेलाइन पर सूक्ष्म दृष्टि रखता था और उसके संबंध की सब बातों का पता लगाया करता था। उसने षड्यंत्रकारियों में से किसी एक की प्रेमिका से षड्यंत्र-संबंधी सब बातों का पूर्णरूप से पता लगा लिया। जब सिसरो ने इस षड्यंत्र का सीनेट के सामने भंडा-फोड़ किया, तब सब लोगों के आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। अब सीनेट ने सिसरो को डिक्टेटर बना दिया और उससे इसका प्रबन्ध करने के लिए कहा।

जब कैटेलाइन को पता चला कि सिसरो डिक्टेटर बनाया गया है, तब वह रोम से भाग गया क्योंकि सीनेट ने भी उसे देश शत्रु की उपाधि दे दी थी। सिसरो ने अब इस षड्यन्त्र की लगभग सब बातों का पता लगा लिया और सिद्ध कर दिया कि उसकी सब बातें सच थीं। उसी समय सिसरो ने शेष सब षड्यन्त्र कारियों को पकड़वा लिया। अब सीनेट में यह प्रश्न उत्पन्न हो गया कि इन षड्यन्त्रकारियों को क्या दण्ड दिया जाय। इस सम्बन्ध में बड़ा मतभेद हुआ और सीनेट में बड़ा वाद विवाद हुआ। सीनेट ने इन्हें मृत्यु दण्ड देने का प्रस्ताव किया परन्तु जूलियस सीज़र का विचार इसके विरुद्ध था। सीज़र ने कहा कि यह बात की व्यवस्था के विरुद्ध है इसलिए इन्हें देश-निकाला अथवा

आजन्म कारावास का दण्ड दिया जाय। सीनेट के अधिक लोगों ने सीज़र की बात को मान लिया था परन्तु अंत मे केटो ने सीनेट के पक्ष में व्याख्यान दिया जिसमे फिर लोगो की राय बदल गई और सीनेट ने उन्हे फांसी पर लटकवा दिया।

कैटेलाइन ने रोम मे बाहर जा कर एक सेना एकत्रित की। इसलिए कसल ने उससे युद्ध करने के लिए एक सेना भेजी। दोनों सेनाओं में लड़ाई हुई जिसमें कैटेलाइन मारा गया और उसकी सेना छिन्न भिन्न हो गई।

कैटेलाइन के इस षडयन्त्र से स्पष्ट हो जाता है कि रोम की दशा इस समय कैसी गिर गई थी। इस समय लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये कसल बनना चाहते थे देश-सेवा के विचार से नहीं। प्राचीन रोम की नियम परायणता अब नहीं रह गई थी। काम का औचित्य तथा अनौचित्य भिन्न भिन्न दलो की सम्मति पर निर्भर था।

कैटेलाइन के साथियो को विना अभियोग चलाए ही सीनेट ने मरवा डाला था। इस पर साधारण जनता मे बड़ा भारी असन्तोष फैला क्योकि यह काम रोम की व्यवस्था के सर्वथा विरुद्ध था। रोम मे जब किसी को मृत्युदण्ड देना होता था, तब यह प्रश्न कमीटिया ही सुलझाती थी और उसी का फ़ैसला स्वीकार किया जाता था। कमीटिया मे जनता एकत्रित होती थी। परन्तु कमीटिया की आज्ञा के विना किसी को भी फांसी नहीं दी जाती थी। वास्तव मे सीनेट ने रोम के इस नियम के विरुद्ध काम किया था। यह दोष सिसरो के मत्थे मढ़ दिया गया और उसे देश निकाला का दण्ड मिला।—

अब कैटेलाइन एक दूसरा ही षड्यंत्र रचने लगा। परन्तु इस बार इसने बड़ी सावधानी से काम लिया और इसे खूब अच्छी तरह से गुप्त रखने का प्रयत्न किया। इसने सब असंतुष्ट लोगों को एकत्रित कर लिया और उनके सामने कई क्रांतिपूर्ण प्रस्ताव पेश किए। उसने इन लोगों से कहा '—" उस समय, अर्थात् क्रांति के बाद हम लोग सब प्रकार के ऋणों से मुक्त हो जायेंगे, धनिकों का धन हम लोगों का हो जायगा और सारी संपत्ति को हम लोग आपस में बाँट लेंगे।

सिसरो कैटेलाइन पर सूक्ष्म दृष्टि रखता था और उसके संबंध की सब बातों का पता लगाया करता था। उसने षड्यंत्रकारियों में से किसी एक की प्रेमिका से षड्यंत्र संबंधी सब बातों का पूर्णरूप से पता लगा लिया। जब सिसरो ने इस षड्यंत्र का सीनेट के सामने भंडा-फोड़ किया, तब सब लोगों के आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। अब सीनेट ने सिसरो को डिक्टेटर बना दिया और उससे इसका प्रबन्ध करने के लिए कहा।

जब कैटेलाइन को पता चला कि सिसरो डिक्टेटर बनाया गया है, तब वह रोम से भाग गया क्योंकि सीनेट ने भी उसे देश शत्रु की उपाधि दे दी थी। सिसरो ने अब इस षड्यन्त्र की लगभग सब बातों का पता लगा लिया और सिद्ध कर दिया कि उसकी सब बातें सच थीं। उसी समय सिसरो, ने शेष सब षड्यन्त्र कारियों को पकड़वा लिया। अब सीनेट में यह प्रश्न उत्पन्न हो गया कि इन षड्यन्त्रकारियों को क्या दण्ड दिया जाय। इस सम्बन्ध में बड़ा मतभेद हुआ और सीनेट में बड़ा वाद विवाद हुआ। सीनेट ने इन्हें मृत्यु दण्ड देने का प्रस्ताव किया परन्तु जूलियस सीज़र का विचार इसके विरुद्ध था। सीज़र ने कहा कि यह बात रोम की व्यवस्था के विरुद्ध है इसलिए इन्हें देश-निकाला अथवा

आजन्म कारावास का दण्ड दिया जाय। सीनेट के अधिक लोगो ने सीज़र की बात को मान लिया था परन्तु अंत मे केटो ने सीनेट के पक्ष मे व्याख्यान दिया जिससे फिर लोगो की राय बदल गई और सीनेट ने उन्हें फांसी पर लटकवा दिया।

कैटेलाइन ने रोम से बाहर जा कर एक सेना एकत्रित की। इसलिए कसल ने उससे युद्ध करने के लिए एक सेना भेजी। दोनों सेनाओ मे लड़ाई हुई जिसमे कैटेलाइन मारा गया और उसकी सेना छिन्न भिन्न हो गई।

कैटेलाइन के इस षड्यन्त्र से स्पष्ट हो जाता है कि रोम की दशा इस समय कैसी गिर गई थी। इस समय लोग अपने स्वार्थ की पूर्त्ति के लिये कसल बनना चाहते थे देश-सेवा के विचार से नहीं। प्राचीन रोम की नियम परायणता अब नहीं रह गई थी। काम का औचित्य तथा अनौचित्य भिन्न भिन्न दलो की सम्मति पर निर्भर था।

कैटेलाइन के साथियो को बिना अभियोग चलाए ही सीनेट ने मरवा डाला था। इस पर साधारण जनता मे बड़ा भारी असन्तोष फैला क्योंकि यह काम रोम की व्यवस्था के सर्वथा विरुद्ध था। रोम मे जब किसी को मृत्युदण्ड देना होता था, तब यह प्रश्न कमीटिया ही सुलझाती थी और उसी का फैसला स्वीकार किया जाता था। कमीटिया मे जनता एकत्रित होती थी। परन्तु कमीटिया की आज्ञा के बिना किसी को भी फासी नहीं दी जाती थी। वास्तव मे सीनेट ने रोम के इस नियम के विरुद्ध काम किया था। यह दोष सिसरो के मत्थे मढ़ दिया गया और उसे देश निकाला का दण्ड मिला।

बाईसवाँ अध्याय

पांपियस विजय से रोम लौटता है

जिस समय रोम में अशान्ति फैली थी और षड्यन्त्र चल रहे थे उस समय पांपियस पूर्व में विजय प्राप्त कर रहा था। रोम के लोग अब उसे सशंक दृष्टि से देख रहे थे और डर रहे थे कि कहीं साला की तरह पांपियस भी मनमानी न करे। कोई उससे लड़ाई करने की तैयारी करने का उपदेश दे रहा था और कोई उसे प्रतिष्ठा देने के विचार में मग्न था। इस समय रोम के भिन्न भिन्न दलों में मनमुटाव हो गया था और प्रत्येक अपने स्वार्थ के पूरा करने का प्रयत्न कर रहा था। स्वयं पांपियस ने भी अपने मन में अभी तक निश्चय नहीं किया था कि वह सरदार-दल अथवा सीनेट का पक्ष ले अथवा उदार दल का।

परन्तु विजय से लौट कर पांपियस ने सब को अपने कामों से आश्चर्य-सागर में ढकेल दिया। इटली में उतरते ही उसने अपनी सारी सेना को भङ्ग कर दिया और अपने गाँव में जाकर रहने लगा। इसमें सन्देह नहीं कि वह रोम में शक्तिशाली और प्रभावशाली हो कर ही रहना चाहता था परन्तु वह रोम की व्यवस्था के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहता था। उसने अपने मन में सोचा कि यदि हम रोम की व्यवस्था की प्रतिष्ठा करेंगे तो सीनेट हमसे प्रसन्न हो जायगी और हमारी बातों को मान भी लेगी। इस प्रकार सेना भङ्ग करके पांपियस ने सीनेट में कहा—"आप कृपया मेरी दो बातों को मान लीजिए—"एक तो यह कि

मैंने जिन जिन कामो को पूर्व मे किया है, उन्हें आप लोग स्वीकार कर लीजिए और दूसरे मेरे वीर सिपाहियो को पुरस्कार स्वरूप कुछ भूमि दीजिए।"

परन्तु सीनेट ने पापियस की बातो को स्वीकार नहीं किया। न तो सीनेट ने पूर्व की बातो को माना और न उसके सिपाहियों को जमीन ही दिया। कैटेलाइन के षड्यन्त्र को दबा कर सीनेट अपने को विजयी और शक्तिशाली समझने लग गई थी। अतएव उसने पापियस की बातो को नहीं माना। इसलिए पापियस सीनेट से और भी अधिक नाराज हो गया। अब तक पापियस ने अपने मन मे यह निश्चय नहीं किया था कि किस दल का साथ दें परन्तु अब उसने उदार दल मे ही सम्बन्ध रखना अच्छा समझा क्योंकि सीनेट प्रत्येक बात मे उसका विरोध करती थी। इसलिए पापियस सीनेट से भी बहुत चिढ़ गया और उसे तोड़ने का अवसर देखने लगा।

प्रथम त्रिगुट

सीजर ने देखा कि इस समय पापियस और सीनेट में मन-मुटाव हो गया है। इसे उसने सीनेट के भङ्ग करने का अच्छा अवसर समझा। इस समय जूलियस सीजर कोई मामूली आदमी नहीं था। बल्कि इस समय वह सारे रोम मे प्रसिद्ध हो गया था और रोम के उदार दल का भी नेता था। स्पेन में वह लड़ने के लिए भेजा गया था। वहाँ पर उसने अच्छी सैनिक योग्यता दिखलाई थी परन्तु सीनेट ने उस लड़ाई की विजय का श्रेय सीजर को नहीं दिया और उसकी शक्ति को कम करने का विचार कर लिया। परन्तु सीजर अब मोम का पुतला नहीं था, सारे रोम में उसके पक्ष के लोग मौजूद थे। सीजर कसल के लिए खड़ा हुआ और चुन भी लिया गया। अब सीजर ने सीनेट की शक्ति को कम

करने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया और उसे तोड़ने का भी अवसर देखने लगा। क्रैसस भी सीज़र का मित्र ही था, इसलिए यह भी सीज़र से मिल गया। ये तीनों आदमी उदार-दल के मनुष्य थे और तीनो ही मिल गये। इन्हीं तीनो को प्रथम त्रिगुट कहते हैं। सीजर के पास एक बड़ी भारी सेना थी, क्रैसस के पास बहुत धन था और पापियस का बड़ा यश और आदर था।

इन तीनो ने परस्पर मे यह सलाह कर ली कि तीनों ही मिलकर अपने उद्देश्य की पूर्त्ति करें। ये तीनो भली भाँति जानते थे कि इनके मिल जाने पर सीनेट कुछ भी नहीं कर सकेगी। वास्तव मे ऐसा ही हुआ भी। इन तीनो ने रोम तथा सीनेट की सारी शक्ति को परस्पर बाँट लिया और सीनेट मुँह देखती रह गई। यदि सीनेट ने सीजर को स्पेन का विजयी स्वीकार किया होता, पापियस के एशिया के सब कामो को माना होता और उसके सब सिपाहियो को जमीन दी होती तो ये तीनो न मिल सकते और सीनेट को समूल नष्ट न कर सकते।

प्रथम त्रिगुट के कुछ प्रारम्भिक काम

क्रैसस और पापियस की सहायता से जूलियस सीजर कसल चुन लिया गया। अब जूलियस सीज़र ने क्रैसस और पांपियस की सहायता की। परन्तु ऐसा करने के पहले साधारण लोगों को प्रसन्न करना आवश्यक था। इसलिए सीज़र ने जनता के लाभ के लिए नियम स्वीकृत करा लिया। इसके बाद सीजर ने पांपियस के सिपाहियों को भूमि भी दी और उसके एशिया के कामो को भी स्वीकृत करा लिया। इस प्रकार मे सीजर ने पांपियस, क्रैसस और उदार दल आदि सब लोगों को प्रसन्न कर लिया और तब जूलियस सीजर ने अपने को गाल का पाँच वर्ष के लिए गवर्नर नियत

करवा लिया। इसके बाद सीजर ने अपने मित्रों को रोम के भारी भारी तथा उच्च पदों पर नियत कर दिया और करवा दिया। सीजर को गाल की ओर जाना आवश्यक था क्योंकि उस ओर से रोम को भय उत्पन्न हो रहा था। उन्हें दबाने के लिए दो या तीन वर्ष काफी न होते अतएव सीजर पाँच वर्ष के लिए गाल का गवर्नर नियत किया गया। सीजर तो वहाँ जाना चाहता ही था। वास्तव में स्वय उसी ने इसे स्वीकृत भी करवाया था। परन्तु गाल जाने के पहले, वह रोम में उचित प्रबध करना चाहता था, क्योंकि दूर-भविष्य मे वह रोम के राजा होने का स्वप्न कभी से देखने लगा था। इसी विचार से उसने अपने सब मित्रों को रोम के अच्छे अच्छे पदों पर नियुक्त किया, दूसरे कसल पीसो की लड़की से अपना विवाह किया और पापियस से अपनी लड़की का विवाह कर दिया। जूलियस सीज़र ने इन विवाहों से अपने सबध सूत्र को अधिक प्रबल कर दिया। इस प्रकार सीजर ने भावी घटनाओं के लिए अच्छी तैयारी कर ली परन्तु अभी तक उसने अपने शत्रुओं का कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया था, इस समय उसके शत्रुओं में दो आदमी प्रधान थे —एक केटो और दूसरा सिसरो। अभी इनका प्रबध करना बाकी था। साइप्रज का राजा राजगद्दी पर से उतार दिया गया था और वह रोम का मित्र था। इसलिए केटो, उसे फिर गद्दी पर बैठाने के विचार से साइप्रस भेज दिया गया। सिसरो पर कैटेलाइन के मित्रों के अव्यवस्थित रूप से वध करवाने का अपराध लगाया गया और वह देश से निकाल दिया गया।

जूलियस सीजर की पूर्ण विजय हुई क्योंकि वह जो कुछ चाहता था, उसे मिल गया। उसके मित्र ही इस समय रोम के ऊँचे ऊँचे पदों पर थे, उसके शत्रु रोम से दूर हटा दिए गये और उसके पास एक बड़ी भारी सेना थी जिसके द्वारा वह अपनी शक्ति

प्रबल कर सकता था और अपना सैनिक-कौशल दिखा सकता था। उसका उद्देश्य रोम के शासन में हस्तक्षेप करना था। इस सेना की सहायता से इस अंश में भी अपना उद्देश्य पूरा कर सकता था।

लूका की कनफेरेंस (५६ ई० पू०)

सन् ५८ ई० पू० मे सीजर गाल चला गया परन्तु इस त्रिगुट के हितो की रक्षा करने के लिए पांपियस और क्रैसस दोनों ही रोम मे रह गये।

परन्तु पापियस और क्रैसस में अनबन हो गई। सीजर वास्तव में एक अच्छा राजनीतिज्ञ था। उसने समझ लिया कि अभी इस त्रिगुट को स्थिर रखना आवश्यक है। इसमें सन्देह नहीं कि एक दिन इस त्रिगुट को भी तोड़ना होगा, परन्तु अभी वह अवसर नहीं आया। वह यह भी भली भाँति जानता था कि इस त्रिगुट के अभी टूट जाने से सीनेट शक्तिशाली हो जायगी।

इधर सीनेट भी सचेत थी। उसने देखा कि इस समय पापियस और क्रैसस में अनबन है। इसलिए दुर्बल सीनेट ने भी प्रबल तथा शक्ति शाली होने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। जब इसका समाचार सीजर को मिला तो उसने लूका में एक कनफेरेंस की ,और इन दोनों को फिर मिला दिया। इससे यह तै हुआ कि सन् ५५ ई० पू० में पांपियस और क्रैसस दोनो ही कंसल रहे। इसी में यह भी निश्चय हुआ कि क्रैसस को सीरिया और पापियस को स्पेन मिले और पाँच वर्ष और जूलियस सीजर गाल का गवर्नर रहे।

तेईसवाँ अध्याय

गाल में सीजर के कार्य

सन् ५८ ई० पू० मे जूलियस सीजर पाँच वर्ष के लिए गाल में भेजा गया। इसने २८ मार्च सन् ५८ ई० पू० में एक बड़ी सेना के साथ गाल की ओर प्रस्थान कर दिया। इस समय जूलियस सीजर बड़ी तीव्र गति से जा रहा था। आठ ही दिन मे वह स्विट्जरलैंड के पास आ गया और उन सब स्विट्जर-निवासियों को हरा दिया जो अभी लड़ने की तैयारी कर रहे थे। अब इसने ट्यूटन-जाति की सेनाओं से लड़ने का विचार किया। ये लोग असाधारण घोर हुआ करते थे। इनका नेता इस समय प्रसिद्ध एरियोविस्टस था। यह वास्तव मे बहुत ही अधिक बहादुर था। गाल की भूमि बहुत ही अधिक उपजाऊ थी और ये लोग उसी पर अपना अधिकार जमाना चाहते थे। राइन नदी के बायें किनारे पर एक बड़ा भारी युद्ध हुआ। इसमें दोनों ओर की सेनाएँ खूब लड़ीं। परन्तु ऐसा मालूम हुआ की सीजर हार जायगा। परन्तु एरियोविस्टस की स्त्री ने उससे कहा—"नये चन्द्र दर्शन तक किसी भी आदमी को कतल मत करो। ऐसा करने से बड़ा पाप होता है।" एरियोविस्टस भी अपनी स्त्री के इस अंध विश्वास में पड गया और लडाई करना बंद कर दिया। सीजर को अब अच्छा अवसर मिल गया और उसने अपनी सेना फिर ठीक कर ली। कुछ दिनों के बाद फिर घोर संग्राम हुआ। आज भी मालूम हुआ कि सीजर ही हार जायगा, परन्तु इसी बीच में सीजर की बची हुई सेना भी आ गई। एरियोविस्टस के सब सिपाही अब

गया कि इनसे इस प्रकार लड़ने से काम नहीं चलेगा। इसलिए इस सम्बन्ध में उसने कपट से काम निकालने का विचार किया। पहले तो सीजर ने सन्धि की बात चलाई और जब उनका नेता इस सम्बन्ध मे बात चीत करने सीज़र के डेरा पर आया तो सीजर ने उसे कैद कर लिया और अपनी सेना को उनकी सेना पर आक्रमण करने के लिए कह दिया। इस समय उनकी सेना में कोई नेता नहीं रह गया था अतएव वे अच्छी तरह से नहीं लड़ सके और हार गये।

जब यह समाचार रोम में पहुँचा तो कैटो बहुत विगड़ा। इस समय वह साइप्रस से विजय तथा धन लेकर रोम मे आ गया था और रोम मे अधिक प्रसिद्ध हो गया था। जब वह साइप्रस से लौटा था, तब रोम वालो ने उसका खूब स्वागत किया था। कैटो को सीजर ने ही बाहर भेजवा दिया था इसलिए वह सीज़र से चिढ़ा करता था। इसलिए जब कैटो ने सुना कि सीजर ने धोखेबाजी से इन जगलियों पर विजय पाई है, तब उसने प्रस्ताव किया कि सीजर शत्रुओ के हवाले कर दिया जाय। परन्तु पापियस और क्रैसस के आगे वह कुछ भी नहीं कर सका। इसमे सदेह नहीं कि सिसरो भी सीज़र के विरुद्ध ही था परन्तु इस त्रिगुट के भय के कारण से सिसरो भी कैटो का पक्ष नहीं कर सका। इसलिए सीज़र उसी प्रकार रह गया।

इसके बाद सीजर ने राइन नदी को पार किया और जर्मन जातियो को हरा दिया। इसके बाद सीजर ने ब्रिटेन जीतने का विचार किया और दो सेना तथा आठ सौ जहाज़ के साथ डोवर के मुहाने की ओर प्रस्थान कर दिया। डोवर के मुहाने से सीजर ब्रिटेन मे पहुँच गया और वहाँ के लोगो को भी हरा दिया। इसी समय उसे समाचार मिला कि गाल मे भयकर विद्रोह आरभ हो

गया है। इसलिए उसने पूर्ण रूप से ब्रिटेन को बिना जीते ही गाल की ओर प्रस्थान कर दिया। गाल में पहुँच कर सीज़र ने विद्रोहियो को हरा दिया और उन्हें कड़ा दड दिया।

इस समय सीजर, गाल के उत्तरी भाग के विद्रोह को दबा रहा था। इसी समय दक्षिण में गालो ने उससे भी अधिक भयकर बलवा कर दिया। इस समय ये प्रसिद्ध वीर वर्सिन गेटोरिक्स के नेतृत्व में काम कर रहे थे।

इस वीर योद्धा ने सन् ५२ ई० पू० मे सीजर की सेना को मार कर भगा दिया और सात सौ से अधिक रोम के सैनिको को मार डाला। यहाँ पर भी सीजर ने कूटनीति से सहायता ली और शत्रुओ के बहुत लोगो को अपने पक्ष मे कर लिया और उनकी सहायता से सन् ५० ई० पू० में गालो को हरा दिया। अपने साथियों के बचाने के विचार से वर्सिनगेटोरिक्स ने आत्मसमर्पण कर दिया जिसे सीजर ने मरवा डाला। उस वीर नेता की मृत्यु के साथ-ही-साथ, इस भयकर युद्ध का भी अत हो गया। परन्तु इसमे बहुत आदमी मारे गये, सैकड़ो गाँव उजड़ गये और अधिक मनुष्य दास बना कर बेंच दिए गये, अनेक माताएँ पुत्र हीन और कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गई। इससे सम्पूर्ण गाल पर सीजर का आतक छा गया और अब रोम, गालो के आक्रमण से लगभग तीन सौ वर्ष तक सुरक्षित रहा। अब सीज़र ने इन विजित-जातियों के साथ अच्छा व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। इसलिए थोड़े ही दिनो के बाद यहाँ के लोग भी सीजर के अनुकूल हो गये। अब सीज़र ने इन जगली जातियो में सभ्यता का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। थोड़े ही दिनो में ये लोग सभ्य हो गये और सीजर अपनी इस असाधारण सफलता पर गर्व करने लगा।

सीज़र अपनी सेना के साथ सर्वदा अच्छा वर्ताव किया करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि सीज़र की सेना केवल उसमें श्रद्धा ही नहीं रखती थी परन्तु उसका भक्त भी हो गई और रोम के प्रजातन्त्र से उसकी श्रद्धा हट गई। सीज़र भी जानता था कि इस सेना के बल पर ही वह एक दिन रोम के प्रजातन्त्र को नष्ट करेगा और अन्त में अवसर आने पर इस सेना ने सीजर का साथ भी दिया। सीज़र ने गाल को इसीलिए चुना था कि वहाँ पर वह एक अच्छी सेना तैयार कर सकेगा और गाल मे रहने से वह रोम के निकट रहेगा और वहाँ की सब परिस्थितियों का भी अध्ययन करता रहेगा।

प्रथम त्रिगुट का अन्त

जूलियस सीजर की उस पुत्री का नाम, जो पांपियस से व्याही गई थी, जूलिया था। जूलिया सन् ५४ ई० पू० मे मर गई। इसलिए सीजर और पांपियस की मित्रता कुछ ढीली पड़ गई थी। इसके अतिरिक्त पांपियस अब सीज़र से द्वेष भी करने लग गया था। लूका के निश्चय के अनुसार क्रैसस सीरिया भेजा गया था क्योंकि वहाँ अशान्ति मची हुई थी। सन् ५४ ई० पू० में क्रैसस एक बड़ी पलटन के साथ, शाम की ओर रवाना हो गया। परन्तु वहाँ के लोगों ने उसे धोखा देकर उसे शत्रु की सेना से घेरवा दिया। इसके बाद शत्रु ने उन पर बाणों की वर्षा करना प्रारम्भ कर दिया और क्रैसस की सब सेना को नष्ट कर दिया। इस गर्म मरुस्थल में रोम की सेना कुछ भी नहीं कर सकी। अन्त में क्रैसस भी मार डाला गया इसके बाद पार्थी जाति के लोग कभी भी रोम वालों से नहीं हारे। क्रैसस की मृत्यु से सीजर और पांपियस का सम्बन्ध और भी अधिक शिथिल हो गया। अब रोम में ऐसा कोई मनुष्य नहीं था जो इन्हें मिला दे। अन्त में कई कारणों से पांपियस

सीनेट के पक्ष में हो गया। इसलिए सीजर मे और उससे और भी अधिक मत-भेद हो गया। इस प्रकार प्रथम त्रि-गुट का अंत हो गया।

पांपियस और सीजर का पारस्परिक युद्ध

पांपियस और जूलियस सीजर के पारस्परिक युद्ध के कई कारण थे। जूलिया और क्रैसस की मृत्यु से पांपियस और सीजर की जोड़ने वाली कड़ी टूट गई। ये एक दूसरे से द्वेष करते थे क्योंकि प्रत्येक अपने को शक्तिशाली बनाना चाहता था। जब सीजर ने गाल में विजय प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया, तो रोम में उसका बड़ा नाम हो गया और पांपियस का तेज उसके सामने मंद पड़ गया।

रोम में प्रत्येक वर्ष कसलों के चुनाव के समय युद्ध होते थे। सन् ५४ ई० पू० से ५२ ई० पू० तक रोम में खूब अराजकता तथा अव्यवस्था फैली हुई थी और रक्तपात हो रहा था। इस दो वर्ष में रोम में इतनी व्यवस्था बिगड़ गई और इतने रक्तपात हुए कि दुर्बल सीनेट यह समझ न सकी कि अब क्या करे। अंत में सीनेट को पांपियस से इन सब झगड़ों के शान्त करने में सहायता मांगनी पड़ी। सन् ५२ ई० पू० में सीनेट ने पांपियस को एक-मात्र कसल बना दिया। पांपियस तो ऐसा अवसर खोजता ही था क्योंकि वह रोम की सारी शक्ति अपने हाथ में रखना चाहता था। जब पांपियस कसल बन गया तो इसने भी सीनेट का खूब पक्ष लिया। अब पांपियस और सीनेट दोनों ही सीजर के विरुद्ध काम करने लगे और उसकी शक्ति को कम करने का प्रयत्न करने लगे।

पांपियस ने, पहले, यह नियम स्वीकृत करा लिया कि जो लोग रोम में रहते हैं वे ही किसी पद के लिए खड़े हो

सकते हैं। पांपियस ने सीजर के विचार से ही इस नियम को स्वीकृत कराया था क्योंकि सीजर इस समय गाल में था और इस नियम के अनुसार वह किसी भी पद के लिए खड़ा नहीं हो सकता था।

पांपियस ने सीनेट मे यह भी स्वीकृत करा लिया कि वह फिर पाच वर्ष के लिए स्पेन का गवर्नर बना दिया गया। इस प्रकार पांपियस की दशा सीजर से बहुत अच्छी हो गई क्योंकि सन् ४६ ई० पू० मे सीजर को गाल के गवर्नर के पद तथा सारी सेना छोड़ देनी पडती परन्तु उस समय भी पांपियस स्पेन का गवर्नर होता और एक बड़ी भारी सेना का सेनापति होता। इन सब नियमों के अतिरिक्त पांपियस ने सीजर के विरुद्धात्मक और भी नियम स्वीकृत करा लिए थे।

अपने स्वार्थ को पूरा करने के विचार से ही पांपियस स्पेन नहीं गया और रोम ही मे डटा रहा। इससे सीजर उससे सशक रहने लगा। सीजर अब भली भाँति समझ गया कि यदि मैं कसल के लिए खड़ा होने के विचार मे एक साधारण मनुष्य की दशा में जाऊँगा, तब अवश्य ही पांपियस हमारे ऊपर कोई अभियोग चला देगा और हमें कष्ट देगा। सीजर ने सन् ४६ ई० पू० में सुना कि रोम में उसका बड़ा विरोध हो रहा है और उसके स्थान पर एक दूसरा मनुष्य भी नियत कर दिया गया है और सीजर को अधिकार छोड़ देने की आज्ञा मिल गई है। वास्तव में सीनेट ने सीजर के विरुद्ध निम्न लिखित आज्ञा निकाली थी—सीजर अमुक तारीख तक गाल के गवर्नर के पद से त्याग पत्र दे दे और अपनी सब सेनाओं को भग कर दे। यदि वह ऐसा न करे तो रोम-राज्य का शत्रु समझा जावे।"

इस आज्ञा के अतिरिक्त सीनेट ने पापियस को डिक्टेटर भी बना दिया इसलिए उसकी शक्ति और भी अधिक हो गई। जिस समय सीनेट में ये सब झगड़े हो रहे थे, उस समय भी दो ट्रिब्यूनों ने सीज़र का पक्ष लिया था। परन्तु सीनेट तथा पापियस ने उन्हें धमकाया। इसलिए ये लोग भागकर सीजर के पास चले गये।

इस समय केटो का भी प्रभाव सीनेट पर खूब था। इसलिए भी सीनेट सीजर से अप्रसन्न थी। जब सीजर को यह सब समाचार मिला तब सीज़र ने सीनेट से कहला भेजा कि या तो पापियस और वह दोनों एक साथ ही प्रांतीय गवर्नर के पद को छोड़ दें अथवा सीजर को यह आज्ञा मिल जाय कि वह गाल में रहता हुआ ही कसल के लिए खड़ा हो सके और इस प्रकार पापियस और उसकी शक्ति समान हो। परन्तु सीनेट ने सीजर की एक भी बात न मानी। इस समय पापियस को अपने पक्ष में समझ कर सीनेट फूली हुई थी और सीजर की वास्तविक शक्ति से वह बिल्कुल अपरिचित थी। इसी समय सीज़र के पक्ष के दो ट्रिब्यून सीनेट के डर से उसके पास भाग गये। अब सीजर ने कहा कि मैं इन दोनों ट्रिब्यूनों की रक्षा करना चाहता हूँ और इनकी रक्षा करने के लिए युद्ध करना आवश्यक है, अतएव विवश होकर मुझे युद्ध करना पड़ रहा है। इतना कह कर सीजर ने सीनेट के पुराने वैरी, परन्तु वर्त्तमान पक्षपाती, अपने पुराने मित्र और वर्त्तमान शत्रु तथा दामाद पापियस से लड़ने के लिए आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। इसके आगे के पाँच वर्षों के सीजर के काम ऐसे महत्वपूर्ण हुए कि उन्हीं के कारण सीज़र को "महान्" की उपाधि दी जाती है।

सीजर ने सन् ४८ ई० पू० में इटली में प्रवेश किया और तभी से इसका तथा पापियस का गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया। सीजर ने

रुबिकन नदी को पार किया और रोम की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। सीजर को लोग बहुत मानते थे। एक नगर के बाद दूसरे नगर ने सीजर के लिए अपने फाटक खोल दिए और बड़ी सुगमता से सीजर आगे बढ़ने लगा। अब सीजर ने पांपियस की सेनाओं से युद्ध करना तथा उन्हें हराना प्रारम्भ कर दिया। जहाँ जहाँ पांपियस की सेना से लड़ाई हुई, वहाँ वहाँ सीजर विजयी हुआ। थोड़े ही दिनों के बाद सीजर रोम में पहुँच गया। इस प्रकार पांपियस और सीनेट की सब आशाएँ व्यर्थ हुईं। पांपियस भाग निकला, सीनेट खसक गई और सरदार दल चपत हो गया। इस प्रकार जब सीजर रोम में पहुँचा तो कोई उससे लड़ने वाला नहीं था, सीजर अब रोम का स्वामी बन गया। सीजर ने पांपियस का पीछा किया। पांपियस अपने पुराने विजय स्थान एपिरस को भाग गया। मार्च और एप्रिल, केवल इन्हीं दो महीनों में सीजर ने सारे इटली को अपने अधिकार में कर लिया।

परन्तु सीजर थोड़े ही दिन रोम में ठहरा क्योंकि अब स्पेन की ओर से भय था। अतएव शीघ्र ही सीजर स्पेन की ओर रवाना हो गया। मार्ग में उसने पहाड़ तथा कई उमड़ी हुई नदियों को पार किया और पांपियस की सेना से भिड़ गया। इस समय पांपियस वहाँ नहीं था, किन्तु वह इस समय यूनान में था। सीजर ने शत्रु की सेना को हरा दिया और विजित देश तथा लोगों के साथ न्याय का बर्ताव किया। जितने सेनापति कैद कर लिए गये थे सभी को बिना किसी प्रकार की हानि पहुँचाए छोड़ दिया। मार्ग में सीजर ने न तो किसी गाँव को लूटा और न किसी महल को। पांपियस प्रायः ऐसा किया करता था। परन्तु सीजर ने विजित लोगों के साथ खूब अच्छा बर्ताव किया। इसलिए विजित देश के लोग उससे बहुत प्रसन्न हो गये और उसकी प्रशंसा करने लगे।

अब सीज़र ने स्वयं पाम्पियस से लड़ने का विचार किया और एपिरस पहुँच गया। यहाँ सीज़र और पाम्पियस के साथ घोर संग्राम हुआ, जिसमें पांपियस की सेना ने सीज़र की सेना को भली भाँति हरा दिया। इस युद्ध में सीज़र के हज़ारों सिपाही मारे गये। दूसरे वर्ष सीज़र ने फिर पाम्पियस का सामना किया। इस बार भी संख्या में पाम्पियस की सेना, सीज़र की सेना से दूनी थी परन्तु सीज़र की सेना लड़ने में अधिक कुशल और स्वामि भक्त थी। थेसली में फार्सेलिया नामक स्थान पर घोर संग्राम हुआ जिसमें सीज़र की विजय हुई और पाम्पियस की ६००० सेना मारी गई। इस पराजय के साथ ही साथ पाम्पियस की सारी कीर्ति भी नष्ट हो गई अब वह एक साधारण मनुष्य रह गया।

परन्तु ऐसे समय में भी पाम्पियस ने धैर्य न छोड़ा और फिर भी सीज़र से लड़ने के लिए उपाय सोचने लगा। वह भली-भाँति समझ गया कि यहाँ पर वह सेना एकत्रित नहीं कर सकेगा। उसने सोचा कि एशिया माइनर में मुझे सेना अवश्य मिल जायगी क्योंकि वहाँ के लोग मेरी पहली विजय को न भूले होंगे। परन्तु उसे यह समाचार मिला कि वहाँ का राजा अंट्योक, सीज़र की ओर मिल गया है। अतएव उसने मिश्र जाने का विचार किया परन्तु उसी के एक सैनिक ने उसे तलवार से मार डाला। जब पाम्पियस का सिर सीज़र के सामने लाया गया, तो वह अपने पुराने परम मित्र, वर्तमान परम शत्रु तथा दामाद के ऐसे दुःसमय अंत पर रो पड़ा।

इसके बाद सीज़र मिश्र पहुँचा क्योंकि वहाँ पर भी अशान्ति फैली हुई थी। जब सीज़र मिश्र पहुँचा तो उसने देखा कि एक चौदह वर्ष के लड़के टोलीमियस और उसकी बहिन क्लियोपेट्रा में झगड़ा हो रहा है सीज़र ने क्लियोपेट्रा का पक्ष लिया और उसे गद्दी

पर बैठा दिया। थोड़े दिन तक वह एलेक्जेंड्रिया (सिकंदरिया) में ठहरा रहा क्योंकि अपने देश में वह अराजकता नहीं देखना चाहता था। यहाँ पर एक बार उसके शत्रुओं ने उसे चारों ओर से घेर लिया। वह समुद्र में कूद पड़ा और एक कप्तान की सहायता से अपनी जान बचाई। इस कप्तान पर पीछे सीज़र बहुत हुआ और उसे वास्फोरस का राजा बना दिया।

इसी समय, अर्थात् जब वह मिश्र में ही था, तभी रोम की सीनेट ने ४८ ई० पू० में सीजर की अनुपस्थिति में ही उसे पाच वर्ष के लिए कसल बना दिया। इस प्रकार अब वह विधिपूर्वक रोम का अधिकारी और शासक बन गया।

इसके बाद जूलियस सीजर एशिया गया और जैला नामक स्थान पर उसने मिथ्रीडेटीज के पुत्र को हरा दिया। वह अपने राज्य को फिर से लेने का प्रयत्न कर रहा था। इसके बाद सीजर रोम में आया और अपने मित्रों के बल को दृढ़ किया और फिर यहाँ से अफ्रिका की ओर चला गया। वहाँ पर भी सीजर ने कई बार विजय प्राप्त कर ली और न्यूमीडिया का बहुत भाग रोम में मिला लिया और शत्रु पक्ष को पूर्णरीति से पराजित कर दिया। सन् ४५ ई० पू० में सीजर अफ्रिका से स्पेन की ओर चला गया क्योंकि पापियस के लड़कों ने सीजर से लडने के लिए स्पेन में एक भारी सेना एकत्रित की थी। मुडा नामक स्थान पर एक युद्ध हुआ जिसमें सीजर विजयी हुआ।

मुडा की लड़ाई के बाद सीज़र की दशा

मुडा की लड़ाई के बाद से सीजर पूर्णरूप से रोम का स्वामी बन गया क्योंकि पापियस का अन्तिम चिन्ह भी इस लड़ाई के बाद मिट गया। इसमें सन्देह नहीं कि अभी सीज़र ने राजा के नाम को

धारण नहीं किया था, परन्तु अब वह रोम—संसार का स्वतंत्र शासन कर्ता और अनियंत्रित राजा था। अब सीनेट की वास्तविक शक्ति कुछ भी नहीं रह गई थी। अब सीनेट के सदस्य भी सीजर की चापलूसी करने लग गये थे। सीजर ने भी इनकी चापलूसी का ध्यानपूर्वक सुना। उसके रोम लौट आने के कुछ दिन ही बाद एक स्थान पर सीनेट एकत्रित हुई और सीजर से कहा कि हम लोगों ने आपको आगामी दस वर्ष के लिए कसल नियत कर दिया है। नियमानुसार सीनेट के सामने सीजर को उठ कर खड़ा होना चाहिए था परन्तु वह चुपचाप बैठा रहा। इसके बाद उसे "इम्पेरेटर" की पदवी दी गई और फिर वह जन्म भर के लिए डिक्टेटर बना दिया गया। वास्तव में सीनेट इस समय सीजर की दासी हो रही थी। इसमें तो लेश मात्र भी सन्देह नहीं है कि सीजर ने इन सब शक्तियों को अपनी सेना के बल से प्राप्त किया था परन्तु बाद में सीनेट ने उसे इन सब शक्तियों को उसे नियमानुसार दे दिया। इस प्रकार रोम की व्यवस्था और कानून के अनुसार अब सीजर रोम का स्वामी बन गया।

चौबीसवाँ अध्याय

जुलियस सीज़र के सुधार

जूलियस सीज़र के सुधार निम्न लिखित तीन भागों में विभक्त हो सकते हैं —(१) सामाजिक (२) प्रांतीय और (३) व्यवस्था सम्बन्धी।

सामाजिक सुधार

इस समय रोम में चार-पांच लाख मनुष्य रहते थे। इनमें बहुतो को भोजन का भी कष्ट हो रहा था। इसलिए सीज़र ने मकान बनवाना प्रारभ कर दिया। इस प्रकार बहुतों को खाना मिलने लगा। दुःखित मनुष्यों के दुःख दूर करने के लिए सीजर ने कई कानून भी बनाए थे। इसने कार्थेज और कारिंथ के पास उपनिवेश भी बसाया जिससे बहुत लोगो को सहायता मिली। इस समय समाज में दासो की सख्या बढ़ रही थी। इसलिए सीज़र ने यह नियम बनाया कि जहाजों के स्वामी कम से कम एक तिहाई स्वतत्र मनुष्यो को ही लादें। फज़ूल खर्ची के विरुद्ध भी सीज़र ने नियम बनाया था। सीज़र ज्योतिष में भी निपुण था। इसने कैलेंडर (पचांग) में भी सुधार किया। उसमें ९० दिन जोड़ दिए गये और ४५ ई० पू० से वर्ष ३६५ दिन ६ घटे का माना जाने लगा। इसके पहले ३५५ दिन का वर्ष माना जाता था।

(२) प्रांतीय सुधार

रोम के लोग अपने को सारे ससार से और इटली के लोग अपने को अन्य प्रांतो से श्रेष्ठ समझते थे। रोम के शासन में भी

सका प्रभाव देखा जाता था। परन्तु जूलियस सीजर पहला
राजनीतिज्ञ था जिसने इस असमानता की ओर ध्यान दिया
सने रोम से ले कर अल्पस पहाड़ तक के देशों को रोम की
नागरिकता के अधिकार को दे दिया। इसके सिवाय सीजर ने
गाल तथा स्पेन के कुछ शहरों को भी वोट देने का अधिकार
दिया था।

(३) व्यवस्था सम्बन्धी सुधार

जूलियस सीजर सीनेट की शक्ति को कम करना चाहता था।
सने गाल और स्पेन देश तथा रोम नगर के नीच जाति के लोगों
भी सीनेट में भरती करना प्रारम्भ कर दिया और इनकी सख्या
कर दी। सीजर ने प्रांतो के प्रतिनिधियो को भी सीनेट मे
करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार सीनेट अब एक सलाह
न वाली सभा मात्र रह गई। सीजर ने सीनेट से शासन की
बिल्कुल ही छीन ली। इसने सारे देश म म्युनिसिपल्टी का
प्रबन्ध किया और शासन तथा सगठन सम्बन्धी महत्वपूर्ण
न बनाए। इसने रोम-कानून को भी व्यवस्था के अनुकूल
प्रारम्भ किया था। इसने न्यायालयो में भी सुधार किया।
शासक अब केवल एक वर्ष के लिए नियत किए जाते थे।
ह और विद्रोह का देश निकाला दड नियत कर दिया।

न सब सुधारो से स्पष्ट है कि सीजर ने अपने देश की भलाई
खूब प्रयत्न किया। अपने शत्रुओं के साथ भी यह अच्छा
रता था। इसमे सन्देह नहीं कि अब रोम में सीजर की ही
ती थी और यह जो चाहता था, करता था परन्तु उसके
प्रजातंत्र तथा बहुजन-सत्तात्मक राज्य के सिद्धान्तो के
हीं था।

सीजर के विरुद्ध षड्यन्त्र

इस समय सीजर अकेला ही कसल और डिक्टेटर भी था और रोम की सेना उसके हाथ में थी। इस प्रकार इस समय यह पूर्ण रूप से—परन्तु नाम मे नहीं—राजा ही था। इसमें संदेह नहीं कि ५२ ई० पू० मे पाम्पियस भी अकेला ही कसल रह चुका था। परन्तु वह प्रजातन्त्र के अंत करने मे समर्थ नहीं हुआ। रोम में अब प्रजातन्त्र के स्थापित हुए पाँच सौ वर्ष हो गये थे और उसकी नींव बड़ी गहरी थी। इसलिए इतनी प्राचीन व्यवस्था का नाश करना कोई सरल काम नहीं था। इस काम को जूलियस सीजर ने पूरा किया। रोम के एक भव्य भवन मे रोम के प्राचीन सात राजाओं की मूर्तियाँ एक स्थान पर रखी हुई थीं। अब सीजर की मूर्ति भी उन्हीं के पास खड़ी कर दी गई। इस आठवीं मूर्ति ने रोम के लोगो के हृदय मे हलचल मचा दी। सीजर ने अब पुराने राजाओ के समान पोशाक पहनना भी प्रारंभ कर दिया था। एंटोनी ने सीजर के लिए एक राजमुकुट भी बनवा दिया परन्तु सीजर ने उसे धारण नहीं किया क्योंकि वह राजनीति का एक अच्छा विद्यार्थी था और रोम के मनुष्यो की नस नस भी पहचानता था। सीज़र ने नए सिक्को को छपवाया और सोने के सिक्कों पर अपनी मुकुट सहित मूर्ति छपवाई। अब कुछ लोगों ने इस बात का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया कि रोम में पहले एक राजा ही राज्य करता था और वह देवी का पुत्र तथा देवता था। इस प्रकार कुछ लोग सीजर को देवता भी मानने लग गये। अब सीनेट भी सीज़र के हाथ का खिलौना ही रह गई थी। सीनेट में जो स्थान रिक्त होते थे उन्हें वह स्वयं भर देता था।

इन सब बातो को देख कर कुछ लोग—जो सीजर के मित्र थे—प्रसन्न हो रहे थे। परन्तु रोम मे कुछ ऐसे लोग भी थे जो

के समाचार चारों ओर फैल रहे थे। एक मनुष्य ने सीजर की पालकी में एक कागज को फेंक दिया और तब सीजर से कहा—"कृपया आप इसे शीघ्र ही पढ़िये।" उस पत्र में षड्यंत्र की सब बातें लिखी हुई थीं। परन्तु सीजर ने उसे कोई प्रार्थना पत्र समझ लिया और उसे यों ही रख दिया। इस समय सैकड़ों मनुष्य उसे प्रार्थना पत्र दे रहे थे।

सीजर सीनेट-भवन मे पहुँचा और वहाँ जा कर बैठ गया। इसी समय सिम्बर नामक एक मनुष्य ने सीजर को एक प्रार्थना पत्र दिया। सिंबर का एक भाई देश से निकाल दिया गया था। सिबर ने इस प्रार्थना पत्र में उसे बुलाने के लिए लिखा था। सीजर ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। इसी समय सिम्बर ने सीजर पर खड्ग प्रहार किया। सीजर की अवस्था इस समय ५६ वर्ष की थी। इसमें सदेह नहीं कि इस समय वह बुड्ढा हो गया था, तथापि वह बलवान था और अपनी रक्षा करने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु उसे पता चल गया कि उसके शत्रुओं की सख्या बहुत है। इसी समय सीजर ने अपने शत्रुओं में ब्रूटस को भी देखा और तब उसे बड़ा दु ख हुआ। सीजर, ब्रूटस को अपने पुत्र की तरह प्यार करता था और उसके साथ भलाई का बर्ताव किया करता था। थोड़ी ही देर में उसके शत्रुओ ने उसे चारो ओर से घेर लिया और उसे वहीं मार डाला। इस प्रकार इस बुद्धिमान मनुष्य, रोम के प्रजातन्त्र राज के अंतकर्त्ता, अकाट्य राजनीतिज्ञ, अजय वीर, अथक परिश्रमी प्रभावशाली नेता, प्रतिभाशाली लेखक, रोम में राज्यतंत्र का संस्थापक और महापुरुष का आज अंत हो गया। सारे देश में शोक सागर उमड़ पड़ा। जनता षड्यंत्रकारियों के रक्त की प्यासी हो गई और जनता के क्रोध से बचने के लिए षड्यंत्रकारियो को इधर उधर भागना तथा मारा मारा फिरना पड़ा।

सीजर की मृत्यु का प्रभाव

इसमें सदेह नहीं कि सीजर की मृत्यु से केवल रोम ही का नहीं किन्तु सारे सभ्य समार की हानि हुई। ब्रूटस तथा अन्य षड्यत्रकारियो को आशा थी कि सीजर की मृत्यु से ही रोम मे प्रजातत्र राज्य की स्थापना हो जायगी परन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं हुई। इस समय रोम मे दोनों दलो की जड़ बड़ी गहरी हो गई थी और शासन मे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन किए बिना रोम में किसी प्रकार से शान्ति स्थापित नहीं हो सकती थी। सीजर की मृत्यु के बाद फिर एक बार रोम में अशान्ति फैल गई और रक्तपात की तैयारी होने लगी। जब अगस्टस ने प्रजातत्र को छिन्न भिन्न कर के दूर फेंक दिया और स्वय स्वतत्र राजा बन बैठा तब फिर रोम मे शान्ति हुई और व्यवस्था के अनुकूल काम होने लगा।।

सीजर की समालोचना

इसमें सदेह नहीं कि रूबिकन नदी को पार कर के सीजर ने एक ऐसा काम किया था जो रोम की व्यवस्था के विरुद्ध था परन्तु हम यह भी नहीं भूलना चाहिए कि सीजर के शत्रुओं ने कई काम रोम की व्यवस्था के विरुद्ध पहले ही कर चुके थे। दो ट्रिब्यूनों ने सीजर का पक्ष लिया था और जिस बात के लिए ये लड़ रहे थे, वह सर्वदा रोम की व्यवस्था के अनुकूल था। इसके अतिरिक्त, सीजर वास्तव में एक बड़ा भारी राजनीतिज्ञ था।उसने भली भांति समझ लिया था कि रोम की शान्ति, व्यवस्था तथा सुख के लिए, प्रजातत्र के स्थान पर एक-तत्र राज्य का स्थापित करना परमावश्यक है। जूलियस सीजर को अटल धारणा थी और था यह उसका पूर्ण विश्वास कि परिस्थितियों के परिवर्त्तन के साथ ही साथ, अब रोम की सरकार मे भी अवश्य ही परिवर्त्तन होगा

चाहिए। उसने भली भाँति समझा था कि इन दलबन्दियों तथा सीनेट की शक्तियो का अंत करना परमावश्यक है और एक निश्चित नियमित तथा स्थायी सरकार की स्थापना करना वांछनीय है। सीजर ने रोम के व्यवस्थात्मक इतिहास पर दृष्टिपात किया और खूब अच्छी तरह से समझ लिया कि भूत कालिक सब प्रकार के शासनो से रोम की वर्त्तमान बुराइयो का अन्त कभी नहीं हो सकता। इसलिए एक स्वतंत्र, एकतंत्र राज्य स्थापित करना आवश्यक है। उसके इस मैालिक विचार ने उसे राज्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया और यही उसने अपना परम धर्म समझा। यदि इस उच्च तथा मैालिक विचार को कार्य रूप में परिणत करने के ही लिए सीजर ने रूबिकन नदी को पार किया तो उसने कुछ अन्याय तथा अनुचित काम नहीं किया। मेरियस कई वर्षों तक लगातार कसल क्यो चुना गया? साला ने अनियत समय तक के लिए क्यो डिक्टेटर के पद को धारण किया था? क्या ये सब काम रोम की व्यवस्था के विरुद्ध नहीं थे? परन्तु इन लोगों में सीजर की सूक्ष्मदर्शिता, मौलिकता तथा देश-प्रियता कहाँ थी?

रोम की परिस्थिति का सीजर को बड़ा अच्छा ज्ञान था और इस समय के राजनैतिक प्रश्न का भी उसने महत्वपूर्ण तथा सर्व श्रेष्ठ उत्तर निकाल लिया था। सीजर एक अच्छा सेनापति, अभ्यस्त तथा व्यवहारिक राजनीतिज्ञ, इतिहासज्ञ, कानून-निर्माता और एक भारी वक्ता था। सीजर में ऐसे कई प्रधान गुण थे जिनमें से किसी एक के कारण से भी साधारण मनुष्य प्रसिद्ध हो सकता था। सीजर की राजनीतिज्ञता वृथा में किला नहीं बनाया करती थी किन्तु व्यवहार के क्षेत्र में ही वह अपनी कुशलता दिखलाती थी।

जूलियस सीजर वर्त्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं को
भली भाँति समझता था। वह यह भी समझता था कि इस समय
राम में एक मनुष्य का राज्य होना चाहिए। इसलिए, उसने सब
शक्तियो को अपने में ही केन्द्रित करने का अंतिम निश्चय किया।
उसके प्रातीय व्यवहारो और कुछ नगरों को वोट देने के अधिकार
देने से उसकी राजनीतिज्ञता का अच्छा परिचय मिलता है। प्रजा-
तंत्र को नष्ट करके राजतंत्र स्थापित करने के लिए जिन सब गुणो
की आवश्यकता होती है, वे सब सीज़र में थे। भारी से भारी सेना-
पतियो में जिन सब गुणो की आवश्यकता होती है, वे सब सीज़र
में पर्याप्त परिमाण में मौजूद थे, अर्थात् वह परिस्थितियो के
अनुकूल सब बातों मे परिवर्त्तन करता था, तीव्रगति से चलता था
और अपने सिपाहियो का प्रिय था। संसार के इतिहास में ऐसे
जनरल बहुत कम हुए हैं। यदि इन सब बातों पर हम विचार करें
तो यह कह सकते हैं कि कदाचित् जूलियस सीजर प्राचीन काल
का सर्वश्रेष्ठ मनुष्य है।

पच्चीसवाँ अध्याय

सीजर की मृत्यु के वाद रोम की दशा

सीजर की हत्या करने के वाद ब्रूटस अपने मन मे वहुत प्रसन्न हुआ। उसने समझा कि उसके प्रयत्नो से रोम मे फिर प्रजातन्त्र राज्य की जड—जो सीजर के समय में हिल गई थी—अच्छी तरह से जम जायगी। वह समझता था रोम की जनता भी उससे वहुत प्रसन्न हो जायगी और उसके काम को वहुत पसन्द करेगी। इसी विचार से वह सभा-भवन (Forum) मे गया परन्तु वहाँ पर जनता ने उसका स्वागत नहीं किया। ब्रूटस ने लोगों से कहा कि मैंने एक उपद्रवी तथा प्रजापीडक व्यक्ति को मार डाला है। परन्तु जनता ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

सीजर के मित्र

सिज़र मर गया था परन्तु उसके कई अनुगामी तथा मित्र अब भी रोम मे थे। सीजर की हत्या करने वाला, स्वय ब्रूटस भी सीजर के मित्रों मे से था। परन्तु ब्रूटस प्रजातत्र के पक्ष में था सीज़र के प्रधान मित्रों और श्रेष्ठ अनुगामियो मे से एन्टोनी भी एक था। परन्तु सीज़र की तरह यह भी राजतत्र के पक्ष मे था। वास्तव मे इस समय सारा रोम दो भागों में विभक्त हो गया था। कुछ लोग प्रजातत्र के पक्ष में थे। इनका नेता ब्रूटस था और शेष लोग राजतत्र के पक्ष मे थे, इनका नेता, सीजर की मृत्यु के वाद एन्टोनी था।

पहले तो ऐसा मालूम हुआ कि दोनो दलो में युद्ध छिड़ जायगा और फिर रक्त की नदी रोम में बहेगी परन्तु दोनों दलों में समझौता हो गया। इस समझौते के अनुसार यह तै हुआ कि सीज़र की हत्या करने वालों को कोई कष्ट न दिया जाय परन्तु सीज़र के सब काम तथा नियम पूर्ववत् ही रहें, उनमें कुछ भी परिवर्त्तन न हो।

सीजर की मृत्यु के बाद एटोनी का राज्य लोभ

एटोनी वास्तव मे सीजर का अनुगामी था। उसने गाल मे भी सीजर के साथ काम किया था और रोम में भी सीजर के पक्ष का समर्थन करता था। जिस समय सीजर की हत्या की गइ, उस समय यह और सीजर दोनो ही कसल थे। इससे भी स्पष्ट है कि एटोनी, सीजर की मृत्यु के पहले ही, रोम का एक प्रधान व्यक्ति हो गया था। सीजर की मृत्यु के बाद इसने सीजर की सब शक्तियो को भी अपनाने का विचार किया। इसी विचार से इसने जनता को सीजर के हत्यारों के विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न किया। इसलिए एटोनी ने सीजर की अत्येष्टि-क्रिया के समय खूब जनता को उत्तेजित किया और सीजर के कामो की खूब प्रशंसा की। इतना ही नहीं, उसने हत्यारों की, भीतर ही भीतर खूब निन्दा भी की। एटोनी वास्तव में एक अच्छा राजनीतिज्ञ था और उसने इस वर्त्तमान परिस्थिति से लाभ उठाने का अच्छा प्रयत्न किया। इस व्याख्यान के प्रभाव से जनता ब्रूटस और कैसियस के विरुद्ध हो गई और ईट का जबाव पत्थर से देने का विचार करने लगी। अब ब्रूटस अपने देश मैसेडोनिया और कैसियस सीरिया भाग गया। इस प्रकार एटोनी इस समय रोम का प्रधान बन गया।

आक्टोवियस

जब एंटोनी, रोम की सारी शक्ति को अपनाने का प्रयत्न कर रहा था, तब आक्टोवियस भी रोम में आ पहुँचा। यह सीजर की बहिन का लड़का था और सीजर ने अपने जीवन-काल ही में इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। सीजर की हत्या के पहले यह यूनान में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। हत्या के समय उसकी अवस्था केवल १७ वर्ष थी। जब आक्टोवियस रोम में पहुँचा तो उसने देखा कि सीजर की सेना की सहायता से एंटोनी रोम के आधिपत्य को प्राप्त करना चाहता है। इसमें सन्देह नहीं कि आक्टोवियस की अवस्था कम थी परन्तु वह वास्तव में बड़ा चतुर तथा अच्छा राजनीतिज्ञ था। इसलिए उसने रोम के लोगों को अपनी ओर मिलाना प्रारम्भ कर दिया। सीजर ने बहुत लोगों को धन देने की प्रतिज्ञा की थी। ये लोग समझते थे कि अब यह सब धन नहीं मिलेगा परन्तु आक्टोवियस ने इन सबों को धन देने की प्रतिज्ञा कर ली। इससे ये लोग इससे प्रसन्न होगये। इतना ही नहीं। आक्टोवियस ने पहले तो एंटोनी से कहा कि आपने सीजर के सब धन को ले लिया है। रुपया आप इसे लौटा दीजिए क्योंकि मैं उन सब लोगों को धन देना चाहता हूँ, जिन्हें सीजर ने धन देने की प्रतिज्ञा की है। परन्तु एंटोनी ने सीजर के कोष को देना अस्वीकार कर दिया। इसके बाद आक्टोवियस ने अपने सब सामानों तथा जमींदारी आदि को बेंच दिया और इन सब धनों को चुका दिया। आक्टोवियस के इस काम से सब लोग और भी अधिक प्रसन्न होगये। अब एंटोनी भी समझ गया कि आक्टोवियस केवल एक छोकड़ा ही नहीं है। अतएव उसने आक्टोवियस की उन्नति के प्रत्येक मार्ग में रोड़ा अटकाने का प्रयत्न किया। आक्टोवियस ने भी इसकी सब चालों को समझ लिया। इसलिए उसने सीनेट का पक्ष लिया।

एंटोनी और आक्टोवियस की लड़ाई

सीनेट-सभा में सिसरो ने एंटोनी के विरुद्ध एक खूब लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया। इसलिए सीनेट सभा एंटोनी से बिगड़ गई और एंटोनी का रोम में रहना असम्भव हो गया क्योंकि उसका भी जीवन अब रोम में सुरक्षित नहीं रह गया था। इसलिए वह गाल चला गया। जनता ने पहले उसे गाल को दिया था। सीनेट उससे अब और बिगड़ी और आक्टोवियस को उसके विरुद्ध लड़ाई करने के लिए भेजा। सन् ४३ ई० पू० में फोरम गैलारम और म्यूटिना पर दोनों में घोर युद्ध हुआ जिसमें एंटोनी हार गया। अब एंटोनी वहाँ से भी भागा और लपिडस के पास पहुँच गया। इस प्रकार एंटोनी और लेपिडस में मित्रता होगई। लेपिडस इस समय गाल और स्पेन के कुछ भाग का शासक था।

विजयी आक्टोवियस

विजयी होकर आक्टोवियस रोम में पहुँचा और कसल बनने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु सीनेट ने इसका घोर विरोध किया तथापि आक्टोवियस, अब रोम में प्रसिद्ध तथा सर्वप्रिय हो गया था, वह कसल चुन लिया गया। इसके बाद आक्टोवियस ने इस कानून को पास करवा लिया कि सीजर की हत्या करने वाले, लुटेरे तथा डाकू हैं। आक्टोवियस की उन्नति देखकर अब सीनेट उससे चिढ़ने लगी और उसे कसल के पद तथा शक्ति से हटाना चाहती थी। परन्तु अब आक्टोवियस के अधीन एक भारी सेना थी जो उसके लिए मरने को भी तैयार थी। इसलिए सीनेट उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी।

दूसरा त्रिगुट

इसमें सदेह नहीं कि आक्टोवियस ने एंटोनी को हरा दिया था

आक्टोवियस

जब एंटोनी, रोम की सारी शक्ति को अपनाने कर रहा था, तब आक्टोवियस भी रोम में आ पहुँचा। की बहिन का लड़का था और सीजर ने अपने जीवन इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। सीज़र की ह यह यूनान में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। हत्या के स अवस्था केवल १७ वर्ष थी। जब आक्टोवियस रोम, उसने देखा कि सीजर की सेना की सहायता से ए आधिपत्य को प्राप्त करना चाहता है। इसमें स आक्टोवियस की अवस्था कम थी परन्तु वह वास्तव तथा अच्छा राजनीतिज्ञ था। इसलिए उसने रो अपनी ओर मिलाना प्रारम्भ कर दिया। सीज़र ने धन देने की प्रतिज्ञा की थी। ये लोग समझते थे धन नहीं मिलेगा परन्तु आक्टोवियस ने इन सबों प्रतिज्ञा कर ली। इससे ये लोग इससे प्रसन्न होगये। आक्टोवियस ने पहले तो एंटोनी से कहा कि आ धन को ले लिया है। कृपया आप इसे लौटा दीजि सब लोगों को धन देना चाहता हूँ, जिन्हें सीज़ प्रतिज्ञा की है। परन्तु एंटोनी ने सीजर के कोष कर दिया। इसके बाद आक्टोवियस ने अपने जमींदारी आदि को बेच दिया और इन सब ध आक्टोवियस के इस काम से सब लोग और भी अब एंटोनी भी समझ गया कि आक्टोवियस ही नहीं है। अतएव उसने आक्टोवियस की में रोड़ा अटकाने का प्रयत्न किया। आक्टोवि चालों को समझ लिया। इसलिए उसने सी

एंटोनी और आक्टोवियस की लड़ाई

सीनेट-सभा में सिसरो ने एंटोनी के विरुद्ध एक खूब लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया। इसलिए सीनेट-सभा एंटोनी से बिगड़ गई और एंटोनी का रोम में रहना असम्भव हो गया क्योंकि उसका भी जीवन अब रोम में सुरक्षित नहीं रह गया था। इसलिए वह गाल चला गया। जनता ने पहले उसे गाल को दिया था। सीनेट उससे अब और बिगड़ी और आक्टोवियस को उसके विरुद्ध लड़ाई करने के लिए भेजा। सन् ४३ ई० पू० में फोरम गैलोरम और म्यूटिना पर दोनों में घोर युद्ध हुआ जिसमें एंटोनी हार गया। अब एंटोनी वहाँ से भी भागा और लेपिडस के पास पहुँच गया। इस प्रकार एंटोनी और लेपिडस में मित्रता होगई। लेपिडस इस समय गाल और स्पेन के कुछ भाग का शासक था।

विजयी आक्टोवियस

विजयी होकर आक्टोवियस रोम में पहुँचा और कन्सल बनने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु सीनेट ने इसका घोर विरोध किया तथापि आक्टोवियस, अब रोम में प्रसिद्ध तथा सर्वप्रिय हो गया था, वह कन्सल चुन लिया गया। इसके बाद आक्टोवियस ने इस कानून को पास करवा लिया कि सीजर की हत्या करने वाले, लुटेरे तथा डाकू हैं। आक्टोवियस की उन्नति देखकर अब सीनेट उससे चिढ़ने लगी और उसे कन्सल के पद तथा शक्ति से हटाना चाहती थी। परन्तु अब आक्टोवियस के अधीन एक भारी सेना थी जो उसके लिए मरने को भी तैयार थी। इसलिए सीनेट उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी।

दूसरा त्रिगुट

इसमें सन्देह नहीं कि आक्टोवियस ने एंटोनी को हरा दिया था

परन्तु वह यह भी भली भाँति जानता था कि एंटोनी फिर भी लड़ाई के लिए तैयार हो सकता है इसलिए उसे भली भाँति हराना बहुत ही अधिक आवश्यक है। इसलिए उसने एंटोनी के विरुद्ध युद्ध करने के लिए रोम से प्रस्थान कर दिया। परन्तु आक्टोवियस और एंटोनी मे अब कोई लड़ाई नहीं हुई क्योंकि लेपिडस के प्रयत्नों से इनमें समझौता हो गया। इस समझौते मे आक्टोवियस, एंटोनी और लेपिडस तीनो शामिल थे। इसे दूसरा त्रिगुट कहते हैं। इन तीनो ने रोम के सारे सूबाओं को परस्पर मे पाँच वर्ष के लिए बाँट लिया। इस समझौते के अनुसार आक्टोवियस ने सिसली, सारडीनिया और अफ्रिका पर, लेपिडस ने स्पेन पर और एंटोनी दोनो गालो पर अधिकार जमाने का निश्चय किया। इस समझौते में यह भी तै हुआ था कि आक्टोवियस और एंटोनी दोनो मिलकर ब्रूटस और कैसियस की सम्मिलित सेना पर हमला करें।

इस प्रकार सारे रोम के सूबाओं को परस्पर बाँट कर जब ये तीनो रोम मे पहुँचे तो रोम वालो को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर त्रिगुट ने सीनेट के द्वारा उन सब अधिकारों को प्राप्त कर लिया जिन्हे इन लोगो ने पहले ही से तै कर लिया था। इस प्रकार दूसरा त्रिगुट, पहले त्रिगुट से भिन्न था। दूसरे त्रिगुट ने पहले त्रिगुट की तरह कोई गुप्त मन्त्रणा नहीं की थी परन्तु सीनेट ने भी इसे कानून का रूप दे दिया था। इसमें सदेह नहीं कि दूसरा त्रि-गुट को कानून का रूप मिल गया था परन्तु वह रोम की व्यवस्था के अनुकूल नहीं था।

त्रिगुट का कार्य

(१) नरमेध-यज्ञ

साला की तरह इस त्रिगुट ने भी एक बड़ा भारी नरमेध-यज्ञ किया। पहले तो इन्होंने अपने विरोधियो की एक नामावली

तैयार की और तब इन्हें मार डाला। इन लोगों ने बहुत मनुष्यों के धन को भी जब्त कर लिया। इस घटना से सारे रोम में आतंक छा गया। इसमें धनी और गरीब दोनों ही मारे गये। इन्हीं सब मनुष्यों में रोम का सर्वश्रेष्ठ वक्ता सिसरो भी था। सिसरो केवल रोम तथा इटली का ही सर्वश्रेष्ठ वक्ता नहीं था किन्तु उसकी गणना संसार भर के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं में की जाती है। परन्तु इस त्रिगुट ने ऐसे नररत्न का भी वध करवा डाला।

(२) ब्रूटस से युद्ध

इसके बाद इस त्रिगुट ने ब्रूटस तथा कैसियस को हराने का विचार किया क्योंकि ये ही लोग अब प्रजातंत्र के पक्ष में रह गये थे। मैसीडोनिया में ब्रूटस और कैसियस ने एक बड़ी सेना तैयार कर ली थी। फिलीपाई के मैदान में घोर संग्राम हुआ। परन्तु ब्रूटस की सेना हार गई क्योंकि ब्रूटस और कैसियस अच्छे सेनापति न थे। संग्राम में बुरी तरह से हार जाने के कारण ब्रूटस और कैसियस दोनों ने आत्मघात कर लिया। ब्रूटस की मृत्यु के साथ ही साथ प्रजातंत्र का भी अंत हो गया। इसके बाद त्रिगुट ने फिर से रोम को आपस में बाँटा।

एंटोनी मिश्र में

इस विजय के बाद एंटोनी मिश्र की ओर चला म वह क्लियोपेट्रा से मिला और उसके रूप पर मुग्ध क्लियोपेट्रा पर आसक्त हो जाने के कारण एंटोनी मिश्र में रहने लगा। अब एंटोनी ने अपने भुला दिया। वास्तव में एंटोनी इस दास था।

आक्टोवियस फिर रोम में

फिलिपाई की लड़ाई के बाद आक्टोवियस रोम में लौट आया। जब वह रोम में आया तो उसके सिपाही लोग जमीन के लिए हल्ला मचाने लगे। आक्टोवियस भली भाँति जानता था कि इस समय सिपाहियों को सब तरह से प्रसन्न ही रखना चाहिए। इसलिए आक्टोवियस ने इटली के बहुत लोगों की ज़मीन को ज़प्त कर लिया और उन्हें अपने सिपाहियों में बाँट दिया। इस प्रकार से इसने सिपाहियों के झगड़े तथा अशान्ति का अन्त किया। परन्तु इस समय इटली में और भी कई तरह की गड़बड़ी फैली हुई थी। इधर एंटोनी की स्त्री फ्लूविया डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पका रही थी। वह इस समय रोम में अशान्ति फैलाने का खूब अच्छा प्रयत्न कर रही थी। वह समझती थी कि जब रोम में खूब अशान्ति फैलेगी, तभी एंटोनी यहाँ आएगा। अपने पति को रोम में बुलाने तथा क्लियोपेट्रा के प्रभाव को ब्रूटस पर से हटाने के विचार से ही फ्लूविया, रोम में अशान्ति का बाजार जान बूझ कर गर्म कर रही थी। जब फ्लूविया ने देखा कि इस प्रकार अशान्ति मचाने पर भी अभी एंटोनी नहीं आया और अब भी वह क्लियोपेट्रा पर आसक्त ही है, तब उसने लड़ाई करने के लिए प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। इसमें उसके भाई एल० एंटोनी ने भी उसका साथ दिया। इन दोनों ने एक बड़ी भारी सेना एकत्रित की और आक्टोवियस से लड़ाई करने का सब सामान एकत्रित कर लिया। परन्तु एग्रीपा ने उन्हें हरा दिया। एग्रीपा, आक्टोवियस का अनुगामी और उसका एक प्रधान सेनापति था। इस युद्ध के बाद रोम में आक्टोवियस की तूती बोलने लगी। परन्तु जब इस पराजय का समाचार एंटोनी को मिला, तो वह डर गया। उसने समझा कि अब

इस लड़ाई में दो बार आक्टोवियस हार गया परन्तु तीसरी बार एग्रीपा ने उसे अच्छी तरह से हरा दिया। सैक्स्टस पौम्पियस वहाँ से एशिया भाग गया और एटोनी ने उसे मार डाला। इस प्रकार इस लड़ाई का अंत हुआ।

एटोनी, लेपिडस और आक्टोवियस में झगड़ा तथा त्रिगुट का अन्त

सैक्स्टस पौम्पियस की मृत्यु के बाद लेपिडस ने कहा कि सारे सिसली पर मेरा अधिकार रहेगा। आक्टोवियस ने इस बात को नहीं स्वीकार किया। इसलिए दोनो में मतभेद हो गया। तब आक्टोवियस ने लेपिडस का नाम त्रिगुट से काट दिया और उसके सब अधिकारो को छीन लिया। इस प्रकार लेपिडस अब एक साधारण मनुष्य की दशा मे इटली चला गया। एटोनी पूर्व में क्लियोपेट्रा का दास बना हुआ था। वह सदा अब पूर्व मे ही रहता था तथा अपनी चालढाल भी पूर्व के लोगों की तरह ही रखता था। यहाँ तक कि वह पूर्व के लोगो की तरह वस्त्र भी पहनता था। इसलिए रोम के लोग उससे घृणा करने लगे थे। इसके सिवाय रोम के लोग इस समय आक्टोवियस से प्रसन्न थे। उसने इटली में शान्ति स्थापित कर दी थी और सीजर के सब सिपाही उसके साथ थे। आक्टोवियस, मेरियस के पक्ष के पुराने राजनैतिक दल का मुखिया था। इसके सिवाय लेपिडस के इस त्रिगुट से हट जाने से भी एटोनी और आक्टोवियस मे मनमुटाव हो गया था। इन सब कारणों से अब दोनो लड़ाई करने की तैयारी करने लगे।

सन् ३१ ई० पू० में एक्टियम स्थान पर एक संग्राम हुआ। संग्राम के बीच से क्लियोपेट्रा एक जहाज पर भाग चली। जब एटोनी ने देखा कि क्लियोपेट्रा भागती चली जा रही है, तब वह

भी उसके पीछे पीछे भाग निकला। इनके बाद एंटोनी के और सब जहाज भी भाग खड़े हुए। इस प्रकार बिना अधिक परिश्रम किए ही, आक्टावियस विजयी हो गया। आक्टोवियस ने इनका मिश्र तक पीछा किया। एंटोनी से किसी ने कह दिया कि क्लियोपेट्रा मर गई है। इसलिये एंटोनी ने आत्मघात कर लिया। परन्तु वास्तव में क्लियोपेट्रा मरी नहीं थी। जब क्लियोपेट्रा को यह समाचार मिला कि एंटोनी आत्मघात करके मर रहा है तो वह दौड़ कर उसके पास आई। परन्तु एंटोनी अब अधमरा हो चुका था। क्लियोपेट्रा एंटानी को जिलाने का प्रयत्न करने लगी, परन्तु उसे कुछ भी सफलता नहीं मिली, एंटोनी मर ही गया। मृत्यु से पहले एंटोनी ने एक बार क्लियोपेट्रा को देख लिया। आक्टावियस ने क्लियोपेट्रा को कैद कर लिया परन्तु क्लियोपेट्रा ने अपने को साँप से कटवा कर आत्मघात कर लिया।

इस युद्ध का फल

इस युद्ध से एक तो यह फल निकला कि अब मिश्र देश, रोम का एक प्रांत बन गया। वास्तव में क्लियोपेट्रा मिश्र की अन्तिम रानी थी। इस लड़ाई से आक्टोवियस अब सारे रोम का एक मात्र शासक रह गया। इस प्रकार प्रजातन्त्र राज्य का अंत हो गया।

लोग उसे इसी नाम से जानते हैं। इसके बाद उसने ट्रिब्यूनों के सब अधिकारों के प्राप्त करने के लिए भी एक पद को धारण किया। इनमें से कई पदवियाँ तो उसने जन्म भर के लिए धारण की थीं। ट्रिब्यूनो के पद को धारण करने से उसकी शक्ति और भी अधिक हो गई क्योंकि अब वह मजिस्ट्रेटों के फैसलाओं को रद्द कर सकता था। अन्त मे उसने "पाँटीफेक्स मैक्सीमस" के पद को धारण किया जिसका अभिप्राय यह था कि वह रोम के धर्म का भी प्रधान बन गया। इस प्रकार अगस्टस (आक्टोवियस) ने रोम की सारी शक्तियो को अपने हाथ मे कर लिया तथापि उसने राजा के पद को धारण नहीं किया। वास्तव मे अगस्टस किसी भी राजा से कम नहीं था। इसी कारण से अब से ही रोम-साम्राज्य का प्रारम्भ माना जाना चाहिए। अगस्टस वास्तव में छिपा हुआ राजा ही था।

अगस्टस के युद्ध

अगस्टस, वास्तव मे युद्ध नहीं करना चाहता था। वह तो अपने राज्य की सीमा को दृढ़ करने का विचार कर रहा था। वह अपनी प्रजा को सुरक्षित रखना चाहता था। राज्य की सीमा को बढ़ाना उसका उद्देश्य नहीं था। परन्तु यदि कोई हमला करे तो यह दबना भी नहीं चाहता था। उसके समय में जितनी लड़ाइयाँ हुई, सब उसे विवश हो कर करनी पड़ीं। उसके समय की निम्न लिखित लड़ाइयाँ प्रसिद्ध है —

(१) पार्थियन लोगो ने रोम वालो से (केसस मे) रोमी झंडा छीन लिया था। इसलिए अगस्टस ने युद्ध में उन्हे परास्त किया और उनसे रोम का झंडा छीन लिया।

(२) स्पेन के कुछ लोगो ने रोम-राज्य के विरुद्ध बलवा किया था इसलिए अगस्टस के सेनापतियों ने उन्हें हरा दिया।

(३) अरब के दक्षिण के मसाले के देशों में इसने एक भारी फौज भेजी थी परन्तु वह हार गई और अगस्टस की बड़ी बदनामी हुई।

(४) इसमें सन्देह नहीं कि अगस्टस को और भी कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं। परन्तु उनमें से सबसे प्रसिद्ध वह युद्ध है जो उसे जर्मन लोगों से लड़नी पड़ी थी। राइन नदी रोम साम्राज्य की पश्चिमोत्तर सीमा थी परन्तु बहुत लोगों ने इस सीमा का उल्लंघन किया और रोम-साम्राज्य पर धावा किया। इसलिए अगस्टस ने कई बार अपने सौतेले बेटे ड्रूसस आदि को इनके विरुद्ध लड़ने के लिए रवाना किया। परन्तु इसका कोई फल न हुआ। अन्त में सन् ९ ई० में जर्मनों के राजा अर्मीनियस ने रोम के सेनापति वारस को तथा उसकी सेना को अच्छी तरह से हरा दिया। जब अगस्टस को इसका समाचार मिला तो उसे बड़ा खेद हुआ। इसके बाद रोम के निवासियों ने एल्ब नदी तक अपने राज्य की सीमा बढ़ाने का विचार ही छोड़ दिया और राइन ही अब रोम की पश्चिमोत्तर सीमा रह गई।

अगस्टस के सुधार

अगस्टस अपने सुधारों के लिए बहुत अधिक प्रसिद्ध है। उसके सुधारों का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। इसके सुधार निम्नलिखित भागों में विभाजित किए जा सकते हैं —

(१) सामाजिक सुधार (२) साम्पत्तिक सुधार और (३) पब्लिक कार्य।

सामाजिक-सुधार

अगस्टस ने फजूल खर्ची और बदमाशी के सुधारने के लिए कई कानूनों को बनाया। उसने वैवाहिक जीवन की प्रशंसा की

और उसके लिए लोगों को उत्साहित किया। व्यभिचारियों को वह बड़ा कड़ा दंड देता था। स्त्री-त्याग के विरुद्ध भी उसने कई कड़े नियम बनाए। वैवाहिक जीवन को उत्तेजित करने के लिए इसने अविवाहित लोगों पर कर लगाया। इस प्रकार इसने समाज का कई तरह से सुधार किया।

सांपत्तिक-सुधार

इटली के सिवाय, इसने और सब देशों पर कर लगाया और पहले पहल रोम साम्राज्य के कर को अच्छी दशा में लाने का प्रयत्न किया। अगस्टस ने खान, नमक और मछली आदि पर भी कर लगाया। इसने चुंगी भी स्थापित की। व्यक्तिगत आमदनी पर भी इसने कर लगाया। रोम में कभी कभी अन्न की कमी हो जाया करती थी। इसलिए इसने मिश्र तथा अफ्रिका से अनाज के स्वरूप में कर लेना प्रारम्भ किया था। इस प्रकार अगस्टस ने भाँति भाँति के रोम साम्राज्य के सांपत्तिक सुधार किए थे।

पबलिक-कार्य

अगस्टस ने रोम में कई सुंदर मंदिर तथा भव्य भवन बनवाए थे। इसलिए वह प्रायः कहा करता था—मैंने रोम को एक ऊजड़ गाँव की दशा में पाया था। उसे मैंने सुन्दर राजभवन के रूप में परिणत कर दिया। वास्तव में इसने कई मंदिरों और पुरानी इमारतों की मरम्मत भी कराई थी।

इसने आग बुझाने तथा शहर में ठीक समय से पानी देने के लिए दो भिन्न भिन्न संस्थाएँ खोली थीं। इसने एक जहाजी बेड़े को भी जन्म दिया था।

अगस्टस के शिक्षा तथा विद्या सम्बन्धी कार्य

अगस्टस वास्तव में विद्वानों तथा विद्यारसिकों का बड़ा आदर

था सहायता करता था। इसके समय में बड़े बड़े विद्वान तथा कवि उत्पन्न हुए थे। लिवी नामक इतिहासज्ञ इसी के समय में हुआ था। जगत् प्रसिद्ध वर्जिल, होरेस और ओविड नामक कवि इसी के समय में हुए थे। अगस्टस का समय वास्तव में विद्या तथा कला आदि के विचार से बहुत अधिक प्रशंसनीय था।

अगस्टस का राज्य-संगठन

अगस्टस वास्तव में राजनीति का एक अच्छा विद्यार्थी था। उसने राज्य का प्रबन्ध बड़े अच्छे ढंग से किया। इसने इटली तथा सब सूबाओं का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया था। इसने सम्पूर्ण इटली को ग्यारह भागों में विभाजित कर दिया और प्रत्येक में एक गवर्नर को शासन करने के लिए नियत कर दिया। फिर सब सूबे—सैनेटोरियल और राजकीय—दो भागों में विभाजित किए गये थे। जो सूबे भीतर थे और जिनमें पहले ही संगठन हो चुका था, उन सबो पर पहले की तरह सीनेट का प्रबन्ध चलता रहा और ये ही सूबे सैनेटोरियल कहलाते थे। परन्तु जो सूबे राज्य की सीमा पर थे और जिनमें अभी सरकार का अच्छा संगठन नहीं हुआ था, उन पर स्वयं अगस्टस शासन करता था। यहाँ के गवर्नरों को स्वयं अगस्टस ही नियत करता था और यही उनसे जवाब भी तलब करता था। इन गवर्नरों को अच्छा शासन तथा न्याय करने की कड़ी ताकीद थी। इस प्रकार सूबा के सब लोग प्रसन्न रहने लगे क्योंकि अब इन सब सूबाओं में पहले की तरह अत्याचार नहीं होता था। अगस्टस के खुफिया-विभाग के लोग भी इन गवर्नरों की देखरेख किया करते थे इसलिए ये लोग घूसादि अब नहीं ले सकते थे। अब विजित और विजेता का भाव लोगों के मन से दूर होता चला जाता था। बात यह थी कि अगस्टस के राज्य के

पहले प्रांतीय लोग बिल्कुल पराधीन थे। ऐसे बहुत से अधिकार रोम के लोगों को प्राप्त थे जो प्रांतीय लोगों को नहीं मिले थे। वास्तव में इसके पहले सीनेट की शक्ति क्षीण हो गई थी क्योंकि दूसरे लोग भी अब राज-कार्य में हस्तक्षेप किया करते थे। परन्तु जब अगस्टस राजा हुआ, तो सीनेट और जनता दोनों ही उसकी बातों को मानने लग गये और इस प्रकार अब इटली के लोग स्वतंत्र नहीं रह गये। धीरे धीरे प्रांतीय लोगों को भी अगस्टस ने अधिकार देना प्रारम्भ कर दिया। इसलिए प्रांतीय लोगों की दशा भी अब रोम के लोगों की तरह हो गई।

प्रांतीय-शासन में सुधार

अभी तक सब सूबों का प्रबन्ध रोम के गवर्नर किया करते थे और सिनेट इन्हें नियुक्त किया करती थी। एक प्रकार से ये गवर्नर स्वतंत्र होते थे और अपने स्वार्थ के लिए लोगों को भाँति भाँति का कष्ट पहुँचाया करते थे। उन्हें देखने वाला भी कोई नहीं था परन्तु जब से स्वयं अगस्टस ने उन पर शासन करना प्रारम्भ किया, तब से उनकी दशा बहुत कुछ सुधर गई। अब इन्हें अगस्टस के बनाए हुए नियमों का पालन करना पड़ता था। इसके सिवाय अगस्टस का खुफिया विभाग भी उन पर बड़ी कड़ी दृष्टि रखता था। अगस्टस इनके दुःख के दूर करने को भी सर्वदा तैयार रहता था। अगस्टस की न्याय-प्रियता से प्रांतीय लोग उससे बहुत प्रसन्न रहा करते थे।

अगस्टस के समय में रोम-राज्य की सीमा

इसमें सन्देह नहीं कि अगस्टस के समय तक रोम-राज्य की सीमा बहुत बढ़ गई थी परन्तु स्वयं अगस्टस ने राज्य की सीमा के बढ़ाने का प्रयत्न नहीं किया। किन्तु उसे सुरक्षित करने तथा दृढ़

बनाने का सदा ध्यान रखा । अगस्टस के समय में रोम-राज्य पश्चिम में एटलांटिक समुद्र तक फैला हुआ था। पश्चिम में यह अंगरेजी चैनेल, राइन और डैन्यूब नदी से घिरा हुआ था। पूर्व में यूफ्रेटीज नदी तक और दक्षिण में सहारा के रेगिस्तान तक इसकी सीमा थी। सारे राज्य में इस समय शान्ति विराज रही थी। अगस्टस के समय में रोम में इस प्रकार शांति का अखंड राज्य था कि मेडीटेरेनियन समुद्र के देशों में कोई भी फौज नहीं रहती थी। सब लोग स्वयं सीमा की रक्षा करते थे। अगस्टस के बाद भी रोम-साम्राज्य में विशेष कोई वृद्धि नहीं हुई। वास्तव में सन् ४५ ई० में सम्राट् क्लाडियस ने बर्तानिया को और सम्राट् ट्रेजन ने सन् १०६ ई० में डेसिया प्रांत को जीता तथा अपने राज्य में मिला लिया था। अगस्टस के समय के बाद रोम-साम्राज्य में केवल ये ही दो प्रांत मिलाए गये।

अगस्टस के समय में रोम-सरकार की दशा

वास्तव में तो अगस्टस ही अब स्वतंत्र राजा था परन्तु अभी तक प्रजातंत्र राज्य ही का नाम चलता था। इतना ही नहीं, प्रजातंत्र-राज्य ने अब सैनिक निष्ठुरता का रूप धारण कर लिया था परन्तु अभी भी प्रजातन्त्र के नाम का नाश नहीं हुआ था। अगस्टस के सामने सीजर का उदाहरण मौजूद था। उसने जूलियस सीजर के उदाहरण से भली भाँति समझ लिया था कि रोम के लोग पुरानी लकीर पीटेंगे और सीजर के उदाहरण से अगस्टस यह भी समझ गया था कि पुरानी प्रथा का स्पष्ट रूप से कभी विरोध नहीं करना चाहिए। इसलिए अगस्टस ने धीरे धीरे और शान्ति के साथ परिवर्त्तन किया। उसने राज्य की सारी शक्तियों को धीरे धीरे अपनाया और कसल, सेंसर, ट्रिब्यून और प्रधान पुरोहित आदि सब पदों को भी धीरे धीरे धारण किया

और जब लोगों ने उससे राजा तथा डिक्टेटर के पद को धारण करने के लिए कहा तो उसने उन्हें लेना अस्वीकार कर दिया। अगस्टस के समय में भी पुराने मैजिस्ट्रेट लोग पहले ही की तरह चुने जाते थे। एसेंबली अब भी बैठती थी और कानून बनाती थी। सिनेट-सभा अब भी अपना पुराना काम करती थी। इस प्रकार ऊपर से तो इस समय भी प्रजातन्त्र ही राज्य था और अगस्टस केवल कसल था। पहले भी कसलों ने प्रांतों को अपने अधिकार में रखा था, उसी प्रकार इस समय भी अगस्टस का प्रांतीय-शासन था। परन्तु यह तो ऊपरी बात थी वास्तव में सत्य इससे भिन्न था क्योंकि वास्तव में अगस्टस राजा ही था और उसकी प्रत्येक इच्छा कानून थी। अगस्टस की राज्य-पद्धति प्रत्यक्ष में प्रजातन्त्र राज्य के रूप में थी परन्तु वास्तव में वह सैनिक-निष्ठुरता ही थी।

अगस्टस का चरित्र और उसकी समालोचना

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन का विचार है कि अगस्टस का मस्तिष्क तो शान्त था परन्तु उसका हृदय शुष्क था तथा वह एक भारी कपटी था। इसमें सदेह नहीं कि कभी कभी आवश्यकता-वश और कभी कभी पालिसी के कारण उसे बहुत लोगो के साथ क्रूरता तथा कड़ाई का वर्ताव करना पड़ता था परन्तु वह क्रूर-स्वभाव का मनुष्य नहीं था। वह क्रम और न्याय को बहुत पसंद करता था। वह वास्तव में बहुत ही अधिक बुद्धिमान तथा व्यवहारिक था। वह अपने उद्देश्य की पूर्त्ति करने में उचित साधनों का प्रयोग करता था वह सरल, सादा, तथा शान्तिप्रिय था। अगस्टस का सब से प्रधान काम यह है कि उसने रोम-राज्य में शान्ति स्थापित कर दी और वे सब युद्ध—जिनमें बहुत रक्तपात होता था—बंद हो गये। उसके समय में प्रांतों की सब गड़बड़ी

तथा अत्याचार भी बद हो गये। इसने रोम को सुसज्जित किया, सामाजिक तथा कौटुम्बिक जीवन, कला, साहित्य तथा विज्ञान को उत्साहित किया। इसके समय मे रोम राज्य में प्रसन्नता और विभव की वृद्धि हुई। लगभग दो सौ वर्ष से रोम में झगड़ा, लड़ाई और मारपीट मची हुई थी। न तो किसी का जीवन सुरक्षित था और न माल। परन्तु अगस्टस ने राज्य में शान्ति स्थापित कर दी। इससे सब लोग उसे बहुत मानने लगे और कुछ लोग तो उसे परमेश्वर ही मानने लगे।

अगस्टस के समय की कुछ फुटकर बातें

अगस्टस का राज्य ई० पू० से प्रारम होता है और ई० पश्चात में इसका अंत होता है। इससे स्पष्ट है कि इसी के समय मे ईसा मसीह पैदा हुए थे। जर्मनी के राजा आरमीनियस ने अगस्टस के सेनापति वारस को हरा दिया था। रोम के इतिहास में यह एक महत्व पूर्ण घटना है। यदि वारस ने जर्मनी को इस युद्ध में जीत लिया होता तो वर्तमान यूरोप के ऊपर ट्यूटन सभ्यता का प्रभाव नहीं पड़ा होता और अंगरेज जाति का भी यह रूप नहीं रहता। इस प्रकार यूरोप का एक दूसरा ही इतिहास होता। इसमें सदेह नहीं कि, अगस्टस, सीनेट को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था परन्तु वास्तव मे सीनेट की शक्ति बहुत कम हो गई थी। जूलियस सीजर ने सीनेट की सख्या बढ़ा कर एक हजार तक कर दिया था और सीनेट मे बाहर के लोगो तथा नीच श्रेणी के मनुष्यों को भरना प्रारभ कर दिया था परन्तु अगस्टस ने इनकी सख्या ०० कर दी और नीच श्रेणी के लोगो को उससे बाहर कर दिया। वह सीनेट का बड़ा आदर करता था और प्रसिद्ध प्रसिद्ध बातों को उनके फैसला पर छोड़ता भी था। परन्तु वह अपनी वास्तविक

स्थान पर जरमेनीकस को विष पिला कर मार डाला। कुछ
के बाद टाईबेरियस की आज्ञा से पाइसो (Piso) भी मार डा
गया। टाईबेरियस डरता था कि कहीं ऐसा न हो कि पाइ
जरमेनीकस के विष देने के रहस्य को खोल दे। इसलिए पाइ
का अंत कर देना भी उसने आवश्यक समझा।

अपने राजत्व-काल के पिछले दो वर्षों में अगस्टस ने अ
कुछ अधिकार भी टाईबेरियस को दे दिए थे। अतएव जब
सम्राट हुआ तो परामर्श-समिति, सीनेट तथा जनता ने अगस
के सब अधिकारों को उसे भी दे दिया। परन्तु यह अगस्टस
समान प्रसन्न और दयालु नहीं था। वास्तव में यह बड़ा क्रूर थ
अपने शासन के पहले ६ वर्ष में इसने अच्छी तरह से राज्य वि
और जनता तथा सूबा के लोगों को भी प्रसन्न रखने का प्र
किया। परन्तु अब यह पहले की तरह प्रिय नहीं रह गया थ
इस समय उसका भतीजा जरमेनीकस सर्वप्रिय हो उठा थ
इसलिए चचा भतीजे से डर गया और उसे मरवा डाला।

गुप्त पुलिस और प्रीटोरीय-गारद

पहले तो रोम के सब लोगों ने टाईबेरियस को अगस्टस
सब अधिकारों को दे दिया। परन्तु जब इन लोगों ने देखा
इसका बर्ताव अगस्टस की तरह नहीं है तो ये लोग टाईबेरि
से बुरा मानने लगे और परस्पर कहने लगे कि हम लोगों ने य
अधिकार केवल अगस्टस को दिए थे। ये सब के सब अधिक
टाईबेरियस को नहीं दिए जा सकते। परन्तु टाईबेरियस इ
कोई भी अधिकार छोड़ना नहीं चाहता था। अतएव अधिक लो
टाईबेरियस से बुरा मानने लगे और उसके विरुद्ध षड्यंत्र र
लगे। टाईबेरियस को भी इन सब बातों का पता चल गय
इसलिए उसने एक निम्नलिखित राज्य-नियम बनाया —

केवल राजा की जान लेने का प्रयत्न ही नहीं किन्तु राजा के विरुद्ध लेख तथा शब्द भी बलवा, राजद्रोह समझा जायगा और इनके अपराधी को मृत्यु का दंड दिया जायगा।

टाईबेरियस के समय में अनेक अपराध-रहित मनुष्य इस नियम के शिकार हुए।

टाईबेरियस का गुप्त पुलिस-विभाग

अपनी रक्षा करने के विचार से टाईबेरियस ने गुप्त पुलिस-विभाग खोला। वह चाहता था कि इनके द्वारा मुझे सब प्रकार की सूचनाएँ मिलती रहेंगी। इन गुप्त सिपाहियों को उस पुरुष के धन का भी कुछ अंश मिलता था, जिन्हें ये पकड़ते थे। अतएव ये लोग धन के लालच से निरपराधियों को भी दोषी ठहराने लगे। कई निर्दोष लोग गुप्त पुलिसों के द्वारा मार डाले गये।

प्रीटोरीय-गारद की नियुक्ति

टाईबेरियस डरा करता था कि कहीं ऐसा न हो कि कुछ लोग षड्यन्त्र द्वारा मुझे मार डालें। इसलिए अपनी रक्षा के लिए, उसने नौ हजार चुने हुए रोमा-सिपाहियों को नियत किया। ये प्रीटोरीय गारद के नाम से इतिहास में विख्यात हुए। ये लोग टाईबेरियस के आसपास ही रहते थे। इनका प्रधान सिजेनस था। उसने देखा कि टाईबेरियस का राज्य प्रीटोरीय गारद के ही कारण वर्त्तमान है। अतएव उसने भी सम्राट बनने की अभिलाषा की। उसके इस मार्ग में ड्रूसस कंटक हो सकता था। इसलिए सन् २३ ई० में उसने ड्रूसस को विष देकर मरवा डाला। सन् २६ ई० में उसने एग्रीपीना और उसके पुत्र—नीरो और द्वितीय ड्रूसस—को देश से निकाल दिया और स्वयं कंसल बन गया। टाईबेरियस ने जिसे अपना रक्षक बनाया था, वही उसका भक्षक

बनने की तैयारी करने लगा। अब टाईबेरियस भी सिजेनस से सशंकित रहने लगा और उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु अब सिजेनस को मारना आसान काम नहीं था क्योंकि प्रीटोरीय गारद की शक्ति अब बहुत बढ़ गई थी। प्रीटोरीय-गारद का ही कोई मनुष्य इस काम को कर सकता था। प्रीटोरीय गारद का कप्तान मेको इस काम के लिए चुना गया और इसने सिजेनस को मार डाला।

टाईबेरियस की मृत्यु

सिजेनस की मृत्यु के बाद मेको बहुत प्रसिद्ध हो गया। इसने जरमेनीकस के पुत्र गायस कैलीग्यूला के साथ मित्रता कर ली और सन् ३७ ई० में टाईबेरियस को मरवा डाला।

टाईबेरियस पर एक दृष्टि

टाईबेरियस योग्य पिता का एक अयोग्य लड़का था। यदि अगस्टस के कुछ भी गुण इसमें होते तो वह आनन्द पूर्वक राज्य करता और कोई विप्लव, हत्या अथवा षड्यंत्र न उठ खड़े होते। परन्तु रोम के लोग उसकी कठोरता तथा क्रूरता के कारण उससे घृणा करते थे। परन्तु इतना अच्छा हुआ कि टाईबेरियस के निजी अवगुणों का प्रभाव साम्राज्य पर नहीं पड़ा। लड़ाइयों में इसके समय में रोम की प्रजा चैन की बंशी बजाती रही। सब जगह रोम ही की विजय होती रही और जहाँ जहाँ विप्लव हुए, सब के सब—अफ्रिका और गाल—शीघ्रता से दबा दिए गये। टाइबेरियस ने बहुत लोगों को मरवा डाला था और वह स्वयं भी मारा गया। टाइबेरियस के उदाहरण से यह ध्वनि निकलती है कि इतिहास भी सर्वदा नहीं तो प्राय—नीति का अनुसरण करता है।

गायस कैलीगूला (३७-४१ ई० तक)

गायस कैलीगूला, जरमेनीकस और एग्रीपीना का बेटा था। सभी, परामर्श समिति, सेना तथा जनता ने इसे सम्राट बना दिया क्योंकि यह सर्व प्रिय था। गद्दी पर बैठने के समय इसकी अवस्था २५ वर्ष थी। पहले तो इसने राज्य का प्रबन्ध बहुत ही अच्छा किया। जितने लोग देश से निकाले गये थे, बुला लिए गये और सब राजनैतिक कैदी छोड़ दिए गये। गुप्त पुलिस की रिपोर्टों को इसने फाड़ कर फेंक दिया और सीनेट में योग्य मनुष्यों को भर्ती किया। परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद वह दुर्व्यसनों और लालसाओं का शिकार हो गया। वास्तव में वह निर्बल, दुराचारी और आचार-हीन बन गया। वह अपनी वासनाओं की पूर्त्ति के लिए भाँति भाँति का प्रयत्न करता था और इसीलिए धनिकों को मरवा डालता था। टेलर साहब ने लिखा है "वह प्राय उन्मत्तों की तरह काम करता था"। इसके शासन काल में कोई प्रसिद्ध घटना नहीं हुई। इसने अपने शासन-काल में अगस्टस के मंदिर को बनवा कर समाप्त किया। पहले तो लोगों ने इसका घोर विरोध किया परन्तु गायस ने किसी की एक न सुनी और मंदिर बनवा कर के ही छोड़ा। इसने पम्पे के बनाए हुए नाटक घर की फिर से मरम्मत कराई और एक विशाल क्रीड़ा-भवन बनाना आरम्भ कर दिया परन्तु वह उसे पूरा न कर सका। वह चाहता था कि सब लोग उसे परमेश्वर ही माने। वह रोम के अच्छे से अच्छे और प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित मनुष्यों का भी सब के सामने अपमान करता था और उन्हें गाली देता था। अतएव सब लोग उससे बुरा मानने लगे और एक षड्यन्त्र रच कर उसे मार डाला।

क्लाडियस (४१ ५४ ई० तक)

क्लाडियस जरमेनिकस का भाई और गायस कैलीगूला का चचा था। प्रीटोरीय गारद ने इसे सम्राट बनाया और परामर्श-समिति तथा अन्य लोगों ने इस बात को स्वीकार कर लिया। इस समय इसकी अवस्था ५१ वर्ष थी। यह कायर था परन्तु कभी कभी काम में खूब दृढ़ता के साथ जुटता था। अपने शासन के प्रारम्भ में उसने गायस के घातकों को मरवा डाला। इसने अगस्टस तथा सीजर के मत का अनुसरण करने का विचार किया। इसने सीजर के सिद्धान्त के अनुसार और सब प्रान्तों को भी वोट देने का अधिकार दिया। इसके राजत्व काल की सबसे अधिक प्रसिद्ध घटना ब्रीटेन की विजय है। इसके समय में यहूदियों ने रोम में सिर उठाया था। इसलिए इसने सब यहूदियों को रोम के बाहर निकाल दिया। क्लाडियस स्वयं तो एक सज्जन पुरुष था। परन्तु उसकी दूसरी स्त्री एग्रीपीना का उस पर बुरा प्रभाव पड़ा था। इसलिए उसका शासन दूषित था। इसने अपने भाई की स्त्री, एग्रीपीना से भी शादी करने में आनाकानी नहीं की थी। एग्रीपीना के पुत्र का नाम नीरो था। नीरो, एग्रीपीना के पूर्व पति का पुत्र था, क्लाडियस का नहीं। एग्रीपीना ने क्लाडियस को नीरो को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए विवश किया और क्लाडियस को यह बात माननी पड़ी। क्लाडियस ने एक प्रकाश-स्तंभ और ओस्टिया के बंदर को फिर से बनवाया।

यह एक अच्छा लेखक भी था। इसने कार्थेज और एट्रूरिया के सामयिक इतिहास को लिखा है। इसने बर्तानिया के कुछ भाग को रोम साम्राज्य के अधीन कर लिया। इसमें सन्देह नहीं कि क्लाडियस ने एग्रीपीना के पुत्र नीरो को अपना उत्तराधिकारी बना

दिया था परन्तु वह अपने मन में डरा करती थी कि कहीं क्लाडियस नीरो को छोड़ कर किसी दूसरे को अपना अधिकारी न बना दे। इसलिए सन् ५४ ई० में एग्रीपीना ने क्लाडियस को विष दे कर मरवा डला। टेलर साहब ने क्लाडियस की तुलना जेम्स दी फर्स्ट से की है। परन्तु जेम्स के ऊपर तीन स्त्रियों का प्रभाव पड़ा था, क्लाडियस की तरह एक स्त्री का नहीं।

नीरो (सन् ५४-६४ ई० तक)

नीरो, एग्रीपीना का, प्रथम पति से पुत्र था। यह १७ वर्ष की अवस्था में सम्राट बना। सेनेका नामक एक व्यक्ति इसका शिक्षक था। सेनेका एक अच्छा विद्वान तथा दार्शनिक था। बरहस इस समय प्रीटोरीय गारद का प्रधान था। इन्हीं दोनों तथा अपनी मा की देखरेख में इसने राज्य का काम करना प्रारंभ किया। सेनेका की बुद्धिमता से इसने पाँच वर्ष तक तो लाभ उठाया। इसके शासन के प्रारंभ का यह पाँच वर्ष वास्तव में बहुत अच्छा समझा जाता है। इस समय उसने प्रांतों का कर कम कर दिया और विवाह के समय अधिक खर्च न करने के लिए नियम बनाया। इस समय इसकी प्रजा सब तरह से प्रसन्न थी। परन्तु अब नीरो, सेनेका के शासन में नहीं रहना चाहता था। अतएव बरहस को उसने विष दिलवा दिया और सेनेका को भी अपने दरबार से अलग कर दिया। अब यह कुसंग में पड़ गया और इसका शासन अत्यन्त क्रूर हो गया। नीरो के शासन-काल के प्रारंभ ही में एग्रीपीना से और उससे अनबन हो गई। एग्रीपीना, नीरो को एक मार्ग पर ले जाना चाहती थी और नीरो दूसरे मार्ग पर चलना चाहता था।

एग्रीपीना—मर्दानी औरत—ने क्लाडियस के पुत्र ब्रिटेनि-सम्राट बनाने का प्रयत्न करना प्रारंभ कर दिया। तब नीरो

क्लाडियस (४१ ५४ ई० तक)

क्लाडियस जरमेनिकस का भाई और गायस कैलीग्यूला का चचा था। प्रीटोरीय गारद ने इसे सम्राट बनाया और परामर्श-समिति तथा अन्य लोगो ने इस बात को स्वीकार कर लिया। इस समय इसकी अवस्था ५१ वर्ष थी। यह कायर था परन्तु कभी कभी काम मे खूब दृढ़ता के साथ जुटता था। अपने शासन के प्रारभ में उसने गायस के घातको को मरवा डाला। इसने अगस्टस तथा सीजर के मत का अनुसरण करने का विचार किया। इसने सीजर के सिद्धान्त के अनुसार और सब प्रान्तों को भी वोट देने का अधिकार दिया। इसके राजत्व काल की सबसे अधिक प्रसिद्ध घटना ब्रीटेन की विजय है। इसके समय में यहूदियो ने रोम मे सिर उठाया था। इसलिए इसने सब यहूदियो को रोम के बाहर निकाल दिया। क्लाडियस स्वय तो एक सज्जन पुरुष था। परन्तु उसकी दूसरी स्त्री एग्रीपीना का उस पर बुरा प्रभाव पडा था। इसलिए उसका शासन दूषित था। इसने अपने भाई की स्त्री, एग्रीपीना से भी शादी करने मे आनाकानी नहीं की थी। एग्रीपीना के पुत्र का नाम नीरो था। नीरो, एग्रीपीना के पूर्व पति का पुत्र था, क्लाडियस का नहीं। एग्रीपीना ने क्लाडियस को नीरो को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए विवश किया और क्लाडियस को यह बात माननी पड़ी। क्लाडियस ने एक प्रकाश-स्तभ और ओस्टिया के वदर को फिर से वनवाया।

यह एक अच्छा लेखक भी था। इसने कार्थेज और एट्रूरिया के सामयिक इतिहास को लिखा है। इसने वर्तानिया के कुछ भाग को रोम साम्राज्य के अधीन कर लिया। इसमें सदेह नहीं कि क्लाडियस ने एग्रीपीना के पुत्र नीरो को अपना उत्तराधिकारी बना

दिया था परन्तु वह अपने मन में डरा करती थी कि कहीं क्लाडियस नीरो को छोड़ कर किसी दूसरे को अपना अधिकारी न बना दे। इसलिए सन् ५४ ई० में एग्रीपीना ने क्लाडियस को विष दे कर मरवा डला। टेलर साहब ने क्लाडियस की तुलना जेम्स दी फर्स्ट से की है। परन्तु जेम्स के ऊपर तीन स्त्रियों का प्रभाव पड़ा था, क्लाडियस की तरह एक स्त्री का नहीं।

नीरो (सन् ५४-६४ ई० तक)

नीरो, एग्रीपीना का, प्रथम पति से पुत्र था। यह १७ वर्ष की अवस्था में सम्राट बना। सेनेका नामक एक व्यक्ति इसका शिक्षक था। सेनेका एक अच्छा विद्वान तथा दार्शनिक था। बरहस इस समय प्रीटोरीय गारद का प्रधान था। इन्हीं दोनों तथा अपनी मा की देखरेख में इसने राज्य का काम करना प्रारम्भ किया। सेनेका की बुद्धिमता से इसने पाँच वर्ष तक तो लाभ उठाया। इसके शासन के प्रारम्भ का यह पाँच वर्ष वास्तव में बहुत अच्छा समझा जाता है। इस समय उसने प्रांतों का कर कम कर दिया और विवाह के समय अधिक खर्च न करने के लिए नियम बनाया। इस समय इसकी प्रजा सब तरह से प्रसन्न थी। परन्तु अब नीरो, सेनेका के शासन में नहीं रहना चाहता था। अतएव बरहस को उसने विष दिलवा दिया और सेनेका को भी अपने दरबार से अलग कर दिया। अब यह कुसंग में पड़ गया और इसका शासन अत्यन्त क्रूर हो गया। नीरो के शासन-काल के प्रारम्भ ही में एग्रीपीना से और उससे अनबन हो गई। एग्रीपीना, नीरो को एक मार्ग पर ले जाना चाहती थी और नीरो दूसरे मार्ग पर चलना चाहता था। इसलिए एग्रीपीना—मर्दानी औरत—ने क्लाडियस के पुत्र ब्रिटेनिकस को सम्राट बनाने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। तब नीरो

ने विप दे कर ब्रिटेनिकस को मरवा डाला और कुछ दिन के बा अपनी माता एग्रीपीना को भी तलवार के घाट उतार दिया। इ प्रकार एग्रीपीना ने अपने पति के लिए जिस अकाल मृत्यु बुलाया था, वह सदेह एग्रीपीना के पास भी पहुँच गई। अब नीं स्वतत्र हो गया और उसकी वासना के घोड़े की बागडोर रोक वाला कोई मनुष्य नहीं रह गया। नीरो का चरित्र अब बहुत अधिक दूपित हो गया। उसकी गणना ससार के इतिहास के स के अधिक बुरे मनुष्यो मे की जाती है। टेलर-साहब ने भी लिख है कि जब यह राजा हुआ तो एक व्याख्यान दिया था। इ व्याख्यान से लोगो ने आशा की थी कि उसका राजत्व-का अच्छा होगा। परन्तु कुछ दिनो के बाद वह बहुत ही बुरा शास हो गया।

इसने अपनी विवाहिता स्त्री आक्टेविया को छोड़ दिया औ पोपिया सेवीना नामक एक भ्रष्ट स्त्री—वेश्या—मे अपना विवाह क लिया। इस नर-पिशाच ने अपनी माता तथा इस वेश्या को भ जान से मरवा डाला। इस दुष्ट ने उस गर्भिणी स्त्री वेश्या पर भ दया न की। सन् ६४ ई० में रोम में एक भयकर आग लगी औ यह नगर ६ दिन तक जलता रहा, इस जलते हुए नगर के दृश्य को एक पहाडी पर से नीरो ने प्रसन्नता पूर्वक देखा था और थोड़ देर के बाद वह सगीत का आनन्द उठाने लगा। इस दु खमय तथ कठिन समय में भी इस नराधम का कठोर हृदय नहीं पसीजा औ इसने अपनी प्रजा के दु ख के दूर करने का कुछ भी उपाय न किया। इतना ही नहीं बहुत लोगो का विचार है कि स्वय नीरो ही रोम में आग लगवा दी थी। अन्त में जनता को प्रसन्न करने लिए, इसने कुछ निरपराधी ईसाइयों को पकड़ मँगाया और उन्ह पर आग लगाने के दोप का आरोपण किया। इसके बाद उस

इन बेचारे ईसाइयो को बुरी तरह से मरवा डाला। इटली का प्रसिद्ध कवि लूकन इसी के समय में हुआ था। लूकन, सेनेका तथा अन्य लोगों ने इसके विरुद्ध एक षड्यंत्र रचा। परन्तु इस षड्यंत्र का रहस्योद्घाटन हो गया। तब नीरो ने इन षड्यन्त्र-कारियो को मरवा डाला। सेनेका ने डर के मारे आत्मघात कर लिया।

क्वीन बोडीशिया का नाम सब लोग जानते हैं। यह ब्रिटेन की एक रानी थी। इसके सम्बन्ध में बहुत कवियो ने कविताएँ भी बनाई हैं। रोम के सिपाहियों ने इस रानी का अपमान किया और खूब रक्तपात किया। रानी ने अपनी करुणा-जनक दशा को अपने पुरोहित ड्रूइड के सामने पेश किया। तब ड्रूइड ने कहा—"जिस रक्त को रोम ने बहाया है, उसी रक्त से लिख लो कि रोम के साम्राज्य का अवश्य ही अन्त होगा।" कुछ लोगो का विश्वास है कि यह उनकी भविष्यत् वाणी थी।

नीरो के समय में ईसाइयो पर भी बड़ा अत्याचार हुआ। इसके समय में ईसाई-मत का प्रचार होने लग गया था। ईसामसीह अगस्टस के समय में पैदा हुए थे और टाईबेरियस के समय में लोगो ने उन्हें फाँसी दे दिया। परन्तु अब उनके अनुगामियो की संख्या बढ़ रही थी। ईसाई लोग प्राचीन देवताओं की पूजा का खंडन करते थे। इसलिए मन्त्र लोग इनसे चिढ़ते थे और इन्हें तंग करते थे। ये लोग सम्राटों को भी उच्च दृष्टि से नहीं देखते थे। अतएव सब लोग इन्हें राजद्रोही समझते थे।

ओलिम्पिया के खेलों के देखने के लिए, एक बार इसने यूनान जाने के लिए प्रस्थान कर दिया परन्तु मार्ग ही में से कुछ नगरो और मंदिरों को लूटकर रोम लौट आया। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ

गिबन भी इस सम्बन्ध में लिखता है कि नीरो ने ईसाइयों के साथ घोर अत्याचार किया।

रोम को सुन्दर बनाने के लिए नीरो ने जनता पर कर लगाया। इससे जनता इससे और भी अधिक चिढ़ गई। इस समय रोम वाले अपने सूबों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते थे। अतएव स्पेन की सेना ने अपने सेनापति गैलबा को सम्राट बना देने की घोषणा की। इसी समय स्पेन के गवर्नर तथा सेनापति गैलबा ने रोम सम्राज्य के विरुद्ध बलवा कर दिया। गाल के सिपाहियों ने भो गैलबा का साथ दिया। इनके साथ गैलबा ने रोम पर धावा कर दिया और उसे नष्ट करने का पक्का विचार कर लिया। अब नीरो ने जर्मनी के गवर्नर वरजीनियस को गैलबा से लड़ने तथा उसे रोकने के लिए भेजा। परन्तु वरजीनियस और गैलबा के बीच में समझौता हो गया। अब नीरो समझ गया कि उसका जीवन सुरक्षित नहीं है। रोम के लोगों को भी इसका समाचार मिल गया। किसी ने भी नीरो का साथ नहीं दिया। अतएव नीरो ने आत्महत्या कर ली। इस पापात्मा की मृत्यु के साथ ही साथ जूलियस वंश के सम्राटों का अन्त हो गया।

क्लाडियन वंश के सम्राटों पर एक दृष्टि

इसमें सदेह नहीं कि क्लाडियन-वंश के सम्राटो के समय में राज्य का कोई अच्छा प्रबंध नहीं था और उसमें कभी कभी अव्य-वस्था के चिन्ह भी दिखलाई पड़ने लगते थे परन्तु इस समय में रोम-साम्राज्य की उन्नति अवश्य हुई। पारस्परिक झगड़े और रक्तपात से साधारण जनता सुरक्षित रही। इस समय वास्तव में रोम में एक राजतंत्र ही राज्य था और पिता के सिंहासन का अधिकारी पुत्र ही समझा जाता था।

गैलवा (सन् ६४ ई०)

यह स्पेन का गवर्नर था। इसने नीरो के समय में बलवा किया। [इ]सकी सेना ने नीरो की मृत्यु के बाद इसे सम्राट होने की घोषणा [क]ी। ओथो ने भी पहले इसका साथ दिया क्योंकि उसे आशा [थ]ी कि गेलवा उसे अपना उत्तराधिकारी बनाएगा। परन्तु गैलवा [न]े पाइसो नामक एक आदमी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। [इ]सलिए ओथो इससे चिढ़ गया, प्रीटोरीय-गारद को अपने पक्ष में [क]र लिया और गैलवा को मरवा डाला।

ओथो

गेलवा को मृत्यु के बाद प्रीटोरीय-गारद ने ओथो को सम्राट बनाया। परन्तु इसने केवल तीन ही वर्ष तक राज्य किया क्योंकि जर्मनी की सेना ने ओथो को सम्राट नहीं स्वीकार किया और अपने सेनापति वाइटीलियस को सम्राट होने की घोषणा कर दी। [क]ामोना के मैदान मे इन दोनो मे युद्ध हुआ। इसमें ओथो हार गया और तब उसने आत्मघात कर लिया।

वाइटीलियस

यह एक अयोग्य राजा और भ्रष्ट मनुष्य था। वह विलासिता [द]ेवी का परम उपासक था। उसका सिद्धान्त यह था —

खाओ, पियो, मौजें करो, खेलो हँसो, सब ठीक है।

अब प्रीटोरीय-गारद ने रोम पर भी पूर्णरूप से अधिकार कर [लि]या। पहले तो उन्हें अन्य सिपाहियों से अधिक वेतन मिलता [थ]ा। इससे सब सेना प्रीटोरीय-गारद से चिढ़ती थी। रोम पर [उ]नका आधिपत्य देख कर और भी अधिक चिढ़ गई। चारो ओर [क]ी सेनाओं ने रोम में आ कर अपने भाग्य का फैसला करने का

अन्तिम निश्चय कर लिया। रोम, संग्राम-क्षेत्र के रूप में परिणत हो गया। बहुत दिनों तक उनमे झगड़ा चलता रहा। पहले तो जर्मनी की सेना ने सब को हराया था परन्तु उसके बाद सीरिया की सेना ने आ कर उसे भी हरा दिया और अपने सेनापति वेस्पेशियन को सम्राट होने की घोषणा कर दी। इसी समय से फ्लेवियन वंश के सम्राटों का राज्य प्रारंभ हुआ।

उन्नीसवाँ अध्याय

फ्लेवियन-वंश के सम्राट (७० ई० से ९६ ई० तक)

नीरो की मृत्यु से जूलियस सीजर के वंश के सम्राटों का अन्त हो गया। इसके बाद ६ वर्ष तक रोम साम्राज्य में अव्यवस्था का अखण्ड राज्य था। अन्त में सीरिया की सेना ने और सब सेनाओं को हरा दिया और अपने सेनापति वेस्पेशियन को सम्राट घोषित कर दिया। इस प्रकार जूलियस-सीजर के घराने के राजाओं का अन्त और फ्लेवियन वंश के राजाओं का प्रारम्भ हुआ। इस वंश में निम्नलिखित तीन राजा हुए —

(१) वेस्पेशियन (२) टाईटस और (३) डोमीशियन।

वेस्पेशियन (६९–७९ ई० तक)

फ्लेवियन-वंश का यह पहला ही सम्राट था। टेलर साहब ने लिखा है कि सेना ने ही इसे सम्राट बना दिया। इसके पहले फ्लेवियन वंश का कोई मनुष्य सम्राट नहीं हुआ था, इसलिए भी इतिहास में यह प्रसिद्ध है। इसके समय में रोम में शान्ति रही। इसने प्रजा की उन्नति करने का प्रयत्न किया। यह एक बुद्धिमान मनुष्य था और इसने सेना तथा आय-व्यय की व्यवस्था को ठीक किया। यह बड़े घराने का नहीं था इसलिए शासन के प्रारम्भ काल में इसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था परन्तु इसने परामर्श-समिति का सम्मान करके उसे अपने पक्ष में कर लिया। वेस्पेशियन ने अपने उच्च तथा आदर्श आचरण

तथा द्रढ़ सैनिक शक्ति के बल से रोम में शान्ति स्थापित कर दी।

इसके समय में यहूदियों ने स्वतन्त्र होने के लिए अन्तिम प्रयत्न किया और युद्ध भी छेड़ दिया। परन्तु वेस्पेशियन के लड़के टाइटस ने सन् ७० ई० में उन पर आक्रमण कर दिया और उनके केन्द्र जेरूसलम को नष्ट कर दिया तथा उसे अपने अधीन भी कर लिया। परस्पर फूट के कारण यहूदी लोग हार गये थे। इसी के समय में जूडिया भी रोम-साम्राज्य का एक सूबा बन गया।

वेस्पेशियन ने शिक्षा तथा कर का भी बहुत उत्तम प्रबन्ध किया था। सर्व प्रथम इसी ने जातीय-शिक्षा के लिए धन खर्च करना प्रारम्भ किया था। यह सीनेट की इज्जत करता था परन्तु उनकी शक्ति को कम करने का प्रयत्न करता था वह अपने सरल स्वभाव तथा दृढ़ चरित्र के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है। वह पक्के-दर्जे का मितव्ययी भी था। राज्य-नियमों का यह कभी उलंघन नहीं करता था। इसका तथा इसके आचार-व्यवहार का सब लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

सन् ७७ ई० में वेस्पेशियन ने एग्रीक्यूला को बरतानियाँ का लाट बनाया। इसने सम्पूर्ण इंगलिस्तान तथा स्काटलैंड को जीत लिया। सन् ७९ ई० में ७० वर्ष की अवस्था में वेस्पेशियन की मृत्यु हो गई।

टाइटस (७९—८१ ई० तक)

यह वेस्पेशियन का पुत्र था तथा पिता के समय में भी राज्य का काम करता था। वह एक प्रशंसनीय सेनापति, भारी

विद्वान और अभ्यस्त विचारवान् था। इससे सारी प्रजा प्रसन्न रहती थी और इसे "मनुष्य-जाति का आनन्द-दाता" की उपाधि दी थी। इसके समय मे प्रजा के ऊपर दो महान सकट पड़े थे!—(१) भयकर आग लग गई जिसमें बहुत से मकान तथा मनुष्य नष्ट हो गये और (२) विस्यूवियस नाम का ज्वालामुखी पहाड़ फूट पड़ा जिसमे रोम के प्रसिद्ध नगर हरक्यूलेनियम और पोम्पियाई पूर्ण रूप से नष्ट हो गये। ये दोनो नगर पिछली शताब्दी में खोदे गये हैं और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व पूर्ण सिद्ध हुए हैं। इनसे यह भी सिद्ध होता है कि उस समय भी वहाँ म्यूनिसिपल चुनाव होता था। इसके पिता ने "कोलिशियम" नामक नाटक घर को बनवाना प्रारम्भ किया था। उसे इसी ने पूरा किया। सन् ८१ ई० में यह मर गया।

टेलर साहब ने लिखा है कि इसके समय में रोम में बहुत दिनों के बाद एक बार और खूब शान्ति विराजने लगी।

डोमीशियन (८१–९६ ई० तक)

यह टाईटस का भाई तथा वेस्पेशियन का पुत्र था। परन्तु न तो यह अपने पिता के समान था और न अपने भाई के तुल्य। यह क्रूर तथा उदास स्वभाव का था। इसने सैनिकों के वेतन को बढ़ा दिया और जनता को खेल दिखा कर प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रजा को प्रसन्न करने के लिए राजा में जिन गुणों का होना चाहिए, उनका इसमे अभाव था। सेना को अधिक वेतन देने के लिए इसे धनिकों से धन छीनना पड़ गया जिसमे सब लोग इससे चिढ़ गये और इससे घृणा करने लगे। इसी के समय में एग्रीक्यूला ने इँगलैंड की विजय को पूर्ण किया। सन् ८४ ई० में यह बरतानियां में बढ़ता ही चला जाता था। अतएव

डोमीशियन उससे डरने लगा और उसे वापस बुला लिया। शासन के अन्तिम काल में डोमीशियन का स्वभाव और भी अधिक क्रूर—डोम की तरह—हो गया। इससे तंग आकर लोगों ने इसके विरुद्ध एक षड्यंत्र रचा और यह मार डाला गया। इसकी मृत्यु के साथ ही साथ फ्लेवियन-वंश के सम्राटों का अन्त हो गया। डोमीशियन के समय से ही सब लोगों ने ईसाइयों पर अभियोग चलाना प्रारम्भ कर दिया और बाद के राजाओं ने भी ऐसा ही किया।

तीसवाँ अध्याय

रोम-साम्राज्य का शान्ति-युग

एंटोनाइनस का समय अर्थात् पाँच अच्छे राजा
(६६-१६२ ई० तक)

सन् ६६ ई० से १६२ ई० तक एंटोनाइनस का समय अथवा पाँच अच्छे राजाओं का काल कहलाता है। वास्तव मे यह रोम-साम्राज्य के आनन्द, शान्ति तथा उन्नति का काल था। गिबन कहता है कि इस समय संसार भर मे और रोम में भी अन्य सब समयों से अधिक आनन्द रहा और सब लोगों ने शांतिपूर्वक जीवन बिताया। इसे रोम-साम्राज्य का शान्तियुग कहना अनुचित न होगा। इस काल का प्रारम्भ नरवा से और अन्त मार्कस औरीलियस से होता है। ये पाँचों राजा एक दूसरे के बाद हुए थे। नरवा के पहले, उत्तराधिकारी के सम्बन्ध मे यह तै हुआ था कि सम्राट अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी न नियुक्त करे किन्तु किसी योग्य, धीर तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ता को, और यही सम्राट की मृत्यु के बाद सम्राट बने। इन पाँचों राजाओं के समय में यह व्यवस्था बहुत सफल हुई। इस व्यवस्था की सफलता का एक प्रधान कारण यह भी था कि इन पाँचों राजाओं में से किसी का भी औरसपुत्र न था। इस युग में गृहयुद्ध, हत्या, षड्यन्त्र तथा अत्याचार आदि कुछ भी नहीं हुए। सीनेट में भी पारस्परिक कोई युद्ध नहीं हुआ। सब प्रांतों के लोग प्रसन्न थे। समस्त देश में सब प्रकार की उन्नति हुई। साहित्य, शिल्प, कला आदि के सम्बन्ध

मे भी इस समय बड़ी उन्नति हुई। रोम की जिन जिन बातों तथा वस्तुओं की आज ससार में प्रशसा की जाती है वे सब इसी काल की और उनमे से अधिक सम्राट हेड्रियन के महल की हैं। "वेदान्त" तथा "स्टोइक" का प्रचार इसी काल में हुआ। ईसाई-धर्म भी इसी समय फैलने लगा था।

नरवा (९६–९८ ई० तक)

डोमीशियन को कोई पुत्र नहीं था। अतएव उसकी मृत्यु के बाद सीनेट ने नरवा को राजा चुना और लोगों ने भी उसे सम्राट स्वीकार कर लिया। इस शान्ति-युग का नरवा पहला सम्राट था। इसने केवल डेढ़ वर्ष तक राज्य किया। यह बहुत ही अधिक दयावान तथा शान्ति-प्रिय मनुष्य था। यह परामर्श-समिति का एक बहुत ही अधिक पुराना तथा अनुभवी सदस्य था और अपने शासन काल में उसने अपने अनुभव का पूरा पूरा लाभ उठाया और शान्ति पूर्वक शासन किया। उसने साम्राज्य के दरिद्रो को पृथ्वी दे दी। डोमीशियन के घातको को प्रीटोरीय-गारद दड देना चाहता था परन्तु नरवा उन्हें क्षमा करना चाहता था। प्रीटोरीय-गारद को रोकने के विचार से इसने ट्रैजन नामक व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाया और ट्रैजन ने उन्हें रोकने का प्रयत्न भी किया। १६ महीने राज्य करने के पश्चात् नरवा का देहान्त हो गया।

ट्रैजन (९८-११७ ई० तक)

यह स्पेन का रहनेवाला था। नरवा ने इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। नरवा की मृत्यु के बाद यह सम्राट हुआ। इसकी गणना रोम के अच्छे, सब से बड़े शक्तिशाली साम्राटों में की जाती है। वास्तव में यह बड़ा धर्मात्मा और शासन में निपुण

था। अपनी असाधारण योग्यता के ही कारण एक विदेशी मनुष्य रोम साम्राज्य का स्वामी बन गया। यह वास्तव में बहुत वीर सेनापति था। रोमवालों में विजय प्राप्ति की प्राचीन इच्छा तथा गर्व का नाश हो गया था परन्तु ट्रैजन ने इन्हें फिर उनके मन में जागृत कर दिया।

ट्रैजन के युद्ध

डेसिया की लड़ाई

सन् १०१ ई० में ट्रैजन ने डेसिया पर आक्रमण कर दिया। डेसिया अब वर्तमान रूमानिया है। डेसियावाले बहुत दिनों से रोम-साम्राज्य की शान्ति भग कर रहे थे। डेसिया मे सोने की खानें भी थीं। इसलिए भी बहुत लोग आ आ कर उसमे बसने लगे थे। इन सब बातों को देखकर ट्रैजन ने डेसिया पर आक्रमण कर दिया। इसने डैन्यूब नदी पर एक बहुत ही अधिक प्रबल पुल बनवाया और डेसिया के राजा को हरा दिया। अब डेसिया भी रोम साम्राज्य का एक प्रान्त बन गया।

अर्मीनिया की लड़ाई

अर्मीनिया में पार्थीय-जाति के लोग रहते थे। इन लोगों ने कई बार रोम के देशों पर हमला किया था और रोम की सेनाओं को भी हरा दिया। तब ट्रैजन ने उन पर हमला किया और खूब अच्छी तरह से उन्हें हरा दिया। इस समय भी रोम की सेना ने अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया और सम्राट ने अपनी वीरता तथा योग्यता का। इसके बाद सम्राट ने मैसोपोटामिया, बेबीलोनिया और अर्मीनिया आदि को भी साम्राज्य के प्रान्त होने की घोषणा की।

ट्रैजन और जनता तथा सीनेट

वह सीनेट को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था अतएव सीनेट भी उससे प्रसन्न रहती थी। सीनेट ने उसे "सर्वश्रेष्ठ" की पदवी दी थी। उसने अनाथों तथा दरिद्रों की कई तरह से सहायता की और उनका कर कम कर दिया। इसने कई मंदिर, भव्य-भवन तथ स्तभ बनवाए, परन्तु इन सब कामों के लिए इसने जनता से कर नहीं वसूल किया। इससे प्रजा इससे बहुत प्रसन्न रहा करती थी।

ट्रैजन के सम्बन्ध में फाउलर-साहब की सम्मति

ट्रैजन केवल एक वीर सिपाही नहीं था किन्तु एक विचारशील और प्रजा का हित चाहने वाला राजा भी। वह अपने सब कर्त्तव्यों का अच्छी तरह से पालन करता था। इसने गरीबों के लड़कों के पढ़ाने का भी प्रबन्ध किया था।

हेड्रियन (११७-१३८ ई० तक)

ट्रैजन की मृत्यु के बाद यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि कौन राजा होगा। परन्तु कुछ लोगों ने कहा कि अपनी मृत्यु-शय्या पर से ट्रैजन ने पवलियस ईलियस हेड्रियन को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। सैनिकों तथा जनता ने इस बात को स्वीकार कर लिया और हेड्रियन सम्राट बन गया। हेड्रियन इस समय का सब से प्रसिद्ध और प्रधान सम्राट समझा जाता है।

हेड्रियन ने अपने मन में कहा कि इस समय रोम-साम्राज्य के बढ़ाने का प्रयत्न करना व्यर्थ है क्योंकि न तो रोम के पास पर्याप्त धन ही है और न पर्याप्त मनुष्य ही। इसी विचार से हेड्रियन ने डेसिया के अतिरिक्त ट्रैजन के जीते हुए देशों को छोड़ दिया।

शाकि हेड्रियन ने अपने को युद्ध करने से बचाया और देश उन्नत करने का प्रयत्न किया। वास्तव में इसने अपने प्रान्तों अच्छा सुधार किया। इसने केवल रोम-नगर के ही उन्नत रने का विचार नहीं किया किन्तु रोम के भिन्न भिन्न सूबाओं की उन्नति करने का भी विचार किया था। इसने कई भव्य-भवन था सड़कें बनवाई। इसने यहूदियों के बलवे को बद किया गैर उन्हें मार डाला। ईसाइयो पर भी यह दयादृष्टि रखता था। सके समय में रोम की आन्तरिक-व्यवस्था बहुत कुछ ठीक हो ई। यह प्रजा के हित के लिए सदा प्रयत्न किया करता था। लोग कर नहीं दे सकते थे, उन्हें यह क्षमा कर देता था। सने एक यह भी नियम बनाया कि परामर्श-समिति के सदस्य बिना समिति की आज्ञा कोई दड न दे सके। अपनी प्रजा के थ न्याय करने के लिए, इसने इटली को चार भागों में विभक्त र दिया और प्रत्येक भाग में न्यायालय तथा न्यायाधीश नियत किया। अपनी प्रजा तथा अपने राज्य की रक्षा के विचार से सने ब्रिटेन में एक दीवार बनवाना प्रारम्भ किया था परन्तु उसे ह पूरा नहीं कर सका। यह विचारवान् पुरुष था। इसने अपने समय में कई नए कानून बनवाए। सन् १३८ ई० में यह र गया। इसने एटोनाइनस पायस को अपना उत्तराधिकारी नाया।

हेड्रियन के बारे में फाउलर-साहब ने लिखा है —यह रोम-राज्य की सीमाओं की रक्षा करता था और देश में अच्छे शासन का भी प्रबन्ध करता था। इसने रोम के कानून के सम्बन्ध में बड़ी अच्छी उन्नति की थी। यह राज्य के सब कामों का निरीक्षण करता था।

एंटोनाइनस पायस (१३८-१६१ ई० तक)

हेड्रियन ने इसे अपना उत्तराधिकारी नियत किया था। अतएव सन् १३८ ई० मे यह सम्राट बनाया गया। वास्तव में यह पवित्रता की मूर्ति ही था। इसके समय में कोई प्रसिद्ध घटना नहीं हुई क्योंकि इसके समय मे सब स्थानो पर पूर्ण रूप से शान्ति तथ अच्छी व्यवस्था विराजती रही। यह बहुत ही अधिक सज्जन औ दयालु था। सारी प्रजा को यह अपनी सतान समझता था औ प्रजा भी इसे अपने पिता के समान ही मानती थी। इसके सम में लड़ाई मे एक बूँद भी रक्त नहीं गिरा। एक बार सीमान देशवालों ने रोम-साम्राज्य पर हमला भी कर दिया। ऐसी दशा भी इसने तलवार नहीं उठाई और कुछ रुपये दे कर उन्हें शान कर दिया। परन्तु इसके समय में रोम की सेना बहुत निर्ब हो गई। इसने दरिद्र कन्याओं के लिए एक पाठशाला खोल और शिक्षा की बड़ी उन्नति की। यह दार्शनिक तथा विद्वानो को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था और उन्हें ग उत्साहित करता था। इसने अपने सब सूबाओ का भी बड़ा अच्छा, प्रबध किया। इसके समय में पार्थिया, सीथिया त अन्य प्रान्तो मे सदा पारस्परिक युद्ध होता रहता था। ये सब सब एंटोनाइनस के यहाँ अपने झगड़े का फैसला कराने के लि आया करते थे और एंटोनाइनस के फैसलों को मान लेते थे प्रान्तों में दौरा करने को यह अनुचित समझता था। समझता था कि ऐसा करने में प्रान्त की प्रजा पर राजा के सत्क करने का अधिक भार पड़ेगा। सन् १६१ ई० में, ७५ वर्ष अवस्था में यह मर गया। इसने मार्कस ओरीलियस और लूसिय वीरस को अपना उत्तराधिकारी बनाया था।

मार्कस औरीलियस (१६१-१८० ई० तक)

एंटोनाइनस की मृत्यु के बाद मार्कस ओरीलियस और लूसियस वीरम सम्राट बने। ये दोनों भाई थे। परन्तु लूसियस वीरम राज्य करने को सर्वथा अयोग्य था। सौभाग्य से १६६ ई० में वह मर गया और केवल मार्कस औरीलियस ही सम्राट का काम करने लगा। सम्राट की हैसियत से यह उतना प्रसिद्ध नहीं है जितना एक दार्शनिक की हैसियत से। इसका चरित्र बहुत ही अधिक पवित्र तथा प्रशंसनीय था। इसके राज्य के पहले वर्ष में साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों में गड़बड़ी मच गई। इसमें पार्थिया वालों का बलवा सब से अधिक प्रसिद्ध है। मार्कस औरीलियस ने इस बलवे को दबा दिया था। इसके राजत्वकाल में भयंकर प्लेग ने बहुत मनुष्यों को इस संसार से उठा लिया। इसके बाद देश में बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा, भयंकर आग लगी और भारी भूडोल आया। सब लोगों ने कहा कि इन सब बातों का कारण ईश्वरीय-क्रोध है। ईश्वरीय-क्रोध शान्ति के लिए औरीलियस ने बहुत से ईसाइयों को बलिदान चढ़ा दिया। इसी समय रोम साम्राज्य की सीमाओं पर के लोग आक्रमण करने लग गये। इसमें सदेह नहीं कि सम्राट ने इन सबों को मार भगाया परन्तु इन जंगली जातियों का आक्रमण समय के साथ बढ़ता ही चला गया। अब रोम की सेनाएँ तथा नागरिक भी निर्बल होते चले जा रहे थे।

औरीलियस का शासन काल शान्ति पूर्ण नहीं था। उसका निजी जीवन भी कलहपूर्ण ही था। यह विद्याध्ययन में अपना समय बिताना चाहता था। औरीलियस का विवाह पूर्व सम्राट एंटोनाइनस की कन्या से हुआ था। इसकी स्त्री का स्वभाव बहुत बुरा तथा क्रूर था। इसी स्त्री के कारण औरीलियस का जीवन

दु:खमय हो गया था, क्योंकि यह उसे बहुत तंग किया करती थी। अपने इस दु:खमय जीवन में भी वह प्राय: लिखा करता था। उसका "मेडीटेशन" नामक एक बहुत ही अच्छा तथा महत्व पूर्ण ग्रंथ है।

मार्कस औरीलियस एक बहुत ही अच्छा सम्राट था परन्तु उसी के साथ रोम के अच्छे सम्राटों तथा इस शान्तियुग का नाश हो गया। सन् १८० ई० में यह जर्मनों से लड़ाई कर रहा था। उसी लड़ाई मे यह मारा गया। इसके बाद इसका पुत्र कमोडस सम्राट बना। फाउलर साहब ने लिखा है कि मार्कस औरीलियस को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था परन्तु उसने इन सबों का बड़े धैर्य, वीरता और साहस के साथ सामना किया।

कमोडस (१८०-१९२ ई० तक)

यह मार्कस औरीलियस का पुत्र था। यह शासन करने के सर्वथा अयोग्य था। इसने राज्य का सब काम अपने प्रीति पात्रों पर छोड़ दिया। इसके समय में प्रीटोरीय-गारद बहुत ही अधिक शक्तिशाली हो गया। इसी के समय से सैनिक लोग राजाओं को गद्दी पर बैठाने और उतारने लग गये। कमोडस आनन्द-प्रमोद की बातों को छोड़ कर और किसी विषय में अपना मन नहीं लगाता था। यह पहलवानों की तरह खूब लड़ता भी था। प्रजा के साथ भी इसका वर्ताव अच्छा नहीं था। इसके राजत्व काल मे पैरीनिस नामक मंत्री बहुत प्रसिद्ध हो गया था और जो चाहता, करता था। इस मंत्री ने सैनिकों को अप्रसन्न कर दिया था। तब सैनिको ने कमोडस को इस मंत्री के वध करने के लिए विवश किया। इससे सिद्ध हो जाता है कि कमोडस अयोग्य था और सैनिको का बल बहुत बढ़ गया था।

सन् १९२ ई० में उसके विरुद्ध एक षडयन्त्र रचा गया और वह अपने महल ही में अपने नौकरों द्वारा मार डाला गया।

शान्ति-युग के रोम-साम्राज्य की सामाजिक अवस्था

शांति-युग का समय दूसरी शताब्दी है। दूसरी शताब्दी में रोम में पर्याप्त उन्नति हो गई थी। ग्राट साहब ने दूसरी शताब्दी के रोम की बीसवीं शताब्दी के यूरोप से तुलना की है और उनमें कई अंगों में समानता बतलाया है।

इस समय व्याख्यान देना एक कला हो गया था और इसकी शिक्षा भी खूब दी जाती थी। इस समय रोम में प्रजातन्त्र राज्य की तूती बोल रही थी। अतएव व्याख्यान देना सामाजिक जीवन का एक प्रधान अंग बन गया था। इसमें तो लेश मात्र भी सदेह नहीं कि इस विद्या को रोम वालों ने यूनान से ही सीखा था परन्तु अब रोम वाले भी इसमें सिद्धहस्त हो गये थे। सिसरो का उदाहरण अब उसके सामने था। आज भी सिसरो की गणना सन्सार के सर्व श्रेष्ठ व्याख्यान दाताओं में की जाती है। साम्राज्य स्थापित होने के बाद इस कला का ह्रास होने लग गया था तथापि बहुत लोग इसे सीखते थे।

इस समय रोम निवासी अखाड़ों में मल्ल युद्धादि देख कर अपना मनोरंजन किया करते थे परन्तु इससे बुद्धि सम्बन्धी कोई विशेष लाभ नहीं होता था। कुछ इतिहासज्ञों ने लिखा है कि इस समय एक ऐसा अखाड़ा भी था जिसमें पचास हजार से अधिक मनुष्य बैठ सकते थे। बड़े बड़े तथा छोटे छोटे अनेक अखाड़े थे। इन अखाड़ों में बहुत मनुष्य जानवर की तरह एक दूसरे को जान से मार डालते थे और तो भी इसका विरोध नहीं किया जाता था। इसमें सदेह नहीं कि कुछ लोग इन खेलों को देखने नहीं जाते थे

परन्तु साधारण लोगों के मनोरंजन की यह एक अच्छी सामग्री थी। ऐसे घातक खेलों का प्रारम्भ "शान्तियुग" से पहले ही हो गया था और सिसरा तथा टाइबेरियस आदि प्रसिद्ध मनुष्यों ने इसके विरुद्ध भी बहुत कुछ कहा था परन्तु उन्हें कुछ भी सफलता नहीं प्राप्त हुई। एक बार मार्कस ऑरीलियस भी इस घातक खेल को देखने गया था। इन पहलवानों को तीव्र हथियारों से लड़ते देखकर मार्कस की आत्मा काँप उठी। इसने तब यह आज्ञा निकाली— "ऐसी लड़ाइयों में कोई भी तेज हथियार का प्रयोग न करे। सब लोगों को कुन्द तथा भोथरे हथियारों से लड़ना चाहिए।" परन्तु इसका फल केवल यह हुआ कि सब लोग इसी लिए मार्कस ऑरीलियस से बुरा मानने लग गये। इसके बाद एक महात्मा ने इसे बन्द करने का बड़ा प्रयत्न किया और अन्त में उसने इसी लिए अपना प्राण भी दे दिया। इसका जनता पर अधिक प्रभाव पड़ा और इस खेल के बन्द होने की आशा हो गई। ईसाई-धर्म के प्रचार के कारण भी इसमें कमी होने लगी और पाँचवीं शताब्दी में ये खेल बिल्कुल बन्द हो गये।

इस समय रोम ने शिल्प-कला, मूर्त्ति-कला, धर्म तथा साहित्य आदि सभी विषयों में खूब उन्नति की। कहा जाता है कि इस समय के रोम के मूर्त्तिकार, यूनान वालों से भी अच्छी मूर्त्तियाँ बनाते थे इन सबों का हैड्रियन ने अपने महल में सग्रह किया था। परन्तु इसका आशय यह नहीं है कि यूनानियों ने कभी भी इस समय के रोम वालों के समान मूर्त्तियाँ बनाई ही नहीं। पेरिक्लीज के समय के एथेंस के मूत्तिकार इस समय के रोम के मूर्तिकारों से अच्छी मूर्त्तियाँ बनाते थे। शासन-व्यवस्था के अतिरिक्त रोम, कभी भी और किसी चीज में एथेंस से बाज़ी नहीं मार सका। वास्तव में रोम यूनान का सब बातों में चेला है।

इसमें सदेह नहीं कि इस समय रोम मे साहित्य की भी उन्नति हुई परन्तु रोम का इस समय का साहित्य उच्च दर्जे का नहीं था। इस समय रोम में नाटक भी खेले जाते थे परन्तु ये सब भी साधारण श्रेणी के ही थे। रोम मे अभी तक नाटक, मनोरजन के ही लिए खेले जाते थे।

इस समय के सरदार लोग शासन मे भी भाग लेते थे और इस समय का शासन बहुत कुछ उनके हाथ में था। परन्तु उनकी व्यक्तिगत स्वतत्रता का नाश हो गया था। ये लोग अधिक से अधिक राजा के नौकर थे, एक स्वतत्र मनुष्य नहीं। इसीलिए इस समय के कुछ सरदार लोग नौकरी करना बुरा समझते थे और घर ही पर अपना जीवन बिताते थे। ऐसे लोगो में इस समय विलासिता बढ़ रही थी।

इस समय धनवानो की भी एक श्रेणी थी। ये लोग अधिक ब्याज पर कृपको को रुपया उधार देते थे। ये व्यापार भी करते थे परन्तु इनके पास जमीन नहीं थी।

साधारण प्रजा खेती तथा उद्योग से अपना निर्वाह करती थी। उनका जीवन शान्त तो था परन्तु सुखमय न था। कृपकों के पास खेत न थे। ये सरदार अथवा जमींदारों से किराए पर खेत लेते थे और तब उसे जोतते बोते थे। जमींदार लोग उन्हें नौकर समझते थे और उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते थे। इस प्रकार कृपक लोग धीरे धीरे जमींदारों तथा सरदारों के दास बनते जाते थे और उनकी दशा सदा बिगडती चली जाती थी।

एक्कीसवाँ अध्याय

सैनिकों के बनाए हुए सम्राट (१९२–२८४ ई० तक)

इस शान्ति-युग के बाद क्रान्ति तथा सैनिक-स्वेच्छाचारिता का समय आता है। सन् १९२ ई० से २८४ ई० तक का समय सैनिक निष्ठुरता के लिए प्रसिद्ध है। वास्तव में यह क्रान्ति, दु:ख तथा उपद्रव का युग था। इस समय और सब सूबो के सैनिक तथा प्रीटोरीय-गारद प्रबल हो गया। ये ही लोग राजाओ को गद्दी पर बैठाया और उतारा करते थे। वास्तव मे इस समय के राजा सैनिकों के हाथ के कठपुतले ही होते थे। जूलियस सीजर तथा अगस्टस ने भी सेना के बल से ही राज्य प्राप्त किया था परन्तु ये लोग परामर्श-समिति की सम्मति के अनुसार काम करते थे। इसके विरुद्ध इस समय के सैनिक सर्वथा स्वतंत्र तथा उच्छृङ्खल हो गये थे। कभी कभी तो ऐसा हुआ कि दो सेनाओं ने, दो भिन्न भिन्न मनुष्यो को एक ही समय, भिन्न भिन्न स्थानों में राजा होने की घोषणा कर दी थी। कभी कभी तो एक ही राजा भिन्न समयो पर भिन्न भिन्न स्थानो में राजा होता था। कभी कभी दो राजा एक दूसरे के प्रतिस्पर्द्धी हो जाते थे और उनमें परस्पर युद्ध छिड़ जाता था। इन युद्धो मे किसी की जान सुरक्षित नहीं थी और चारो ओर विद्रोह फैला हुआ था। इसी समय बर्बर-जातियों तथा गाथों ने रोम के सीमान्त देशों पर हमला करना प्रारभ कर दिया था। रोम सम्राज्य ने न कोई पराजय ही पाई और न तो कोई भारी क्रान्ति ही हुई परन्तु फिर भी रोम साम्राज्य खोखला होता चला जाता था।

पर्टीनैक्स (१९२-१९३ ई० तक)

रोम की सीनेट ने पर्टीनैक्स नामक व्यक्ति को सम्राट के पद पर नियुक्त कर दिया परन्तु बहुत धन इनाम पाने के लोभ से प्रीटोरीय गारद ने एक दूसरे मनुष्य को गद्दी पर बैठा दिया। इसलिए पर्टीनैक्स के सम्राट बनने के तीन महीने के भीतर ही एक क्रान्ति उठ खड़ी हुई। पर्टीनैक्स इसी विप्लव में मारा गया और सैनिक लोग प्रधान हो गये तथा मनमाना काम करने लगे।

सेप्टीमियस सेवेरस (१९३-२११ ई० तक)

पर्टीनैक्स के समय में जो क्रान्ति हुई, उसी में रोम-साम्राज्य के अंतर्गत पेनानिया की सेना ने रोम पर अधिकार कर लिया और सेप्टीमियस सेवेरस नामक अपने सेनापति को सम्राट बना दिया। यह राजनीतिज्ञ नहीं था किन्तु केवल एक सिपाही मात्र। इसलिए यह केवल सेना की सहायता से ही राज्य करता था और धनादिक वस्तुएँ दे कर उन्हें प्रसन्न किया करता था। इसने सिपाहियों के वेतन भी बढ़ा दिए और विवाह करके घर में रहने की उन्हें आज्ञा दे दी। इसका फल यह हुआ कि सिपाही लोग सुस्त हो गये और बाहर लड़ने की अपेक्षा घर में रहना अधिक पसंद करने लगे। सेप्टीमियस सेवेरस के पहले प्रीटोरीय गारद में केवल इटली निवासी ही हुआ करते थे परन्तु इसने बाहर के सिपाहियों को भी इसमें भर्ती किया। इसने सिपाहियों की संख्या को बहुत बढ़ा दी। इसके ही समय में रोम का शासन प्रायः विदेशी सिपाहियों के हाथ में आ गया था।

कैरा काला (२११-२१७ ई० तक)

अपने पिता सेप्टीमियस सेवेरस की मृत्यु के बाद यह सम्राट हुआ। यह स्वभाव का क्रूर तथा अयोग्य था। इसने सैनिकों के

बारे मे अपने पिता का ही अनुगमन किया और सदा सैनिकों के प्रसन्न रखने का प्रयत्न करता रहा। इसने दासों के सिवाय अन्य सब लोगों के नागरिकता का अधिकार दे दिया। सीजर ने गालों को नागरिकता का अधिकार दिया था। इस सम्बन्ध में कैरा काला ने सीजर की उदार नीति का ही अनुसरण किया। यद्यपि कैरा काला ने इन लोगो पर कर बढ़ाने के विचार से ही ऐसा किया था, तथापि सब लोग प्रसन्न थे क्योंकि ये सब अपने को रूमी कहने मे अपना बड़ा गैारव समझते थे।

इसने अपनी सेना के साथ अपने प्रान्तो का दैारा किया था। जब यह सिकदरिया (एलेक्ज़ेंड्रिया) पहुँचा तो कुछ लोगो ने इसकी हँसी उड़ाई थी। तब इसने उन लोगो को बुला कर मरवा डाला।

एलागा वालस (२१८-२२२ ई० तक)

सन् २१८ ई० में सीरिया की सेनाओं ने रोम में आ कर अपने सेनापति एलागा बालस को सम्राट बनाया। पहले यह एक पत्थर की पूजा किया करता था। जब यह सम्राट हुआ, तब इसने उस पत्थर को पूज्य ठहराया। इसने ४ वर्ष तक राज्य किया और सैनिक विद्रोह में मारा गया।

एलेक्ज़ेंडर सेवेरस (२२२-२३५ ई० तक)

एलागा बालस के मरने के बाद, सैनिको ने उसके चचेरे भाई एलेक्ज़ेंडर सेवेरस को सम्राट बनाया। इसके समय मे कोई विशेष घटना नहीं हुई। यह सरल प्रकृति का, ईमानदार, न्यायी, बुद्धिमान, विद्यानुरागी और वेदान्ती था। यह ईसामसीह, एबिलीस और अब्राहम आदि कई देवताओं की पूजा किया करता था। प्रजा के साथ इसका बर्ताव सर्वथा प्रशसनीय था। प्रतिदिन, कुछ नियत

समय तक इसका दरबार तथा राज महल इसलिए खुला रहता था कि जो चाहे उसके पास आवे और अपना दुख-सुख कहे। जहाँ तक हो सका इसने अच्छी तरह से शासन किया। इसी विचार से इसने सैनिकों की शक्ति को कम करने का भी प्रयत्न किया परन्तु जब सैनिकों को इस बात का पता चला तब सैनिकों ने इसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रचा और उसे मार डाला। इसके बाद थ्रेस देश का मेक्सीमाइनस नामक एक किसान सम्राट बनाया गया।

मेक्सीमाइनस (२३५)

मेक्सीमाइनस एक भीमकाय बहुत ही बलवान मनुष्य था। इसके समय में कोई विशेष घटना नहीं हुई। सन् २५१ ई० में सम्राट डीसियस युद्ध के मैदान में संग्राम में मारा गया। इस समय यह गाथों से लड़ रहा था। यह एक बहादुर मनुष्य था।

वेलेरियन (२५३-२६० ई० तक)

इसी के समय में सीमान्त देशों के निवासियों ने रोम साम्राज्य के भीतर घुसना प्रारंभ कर दिया। फ्रेंक लोगों ने गाल पर, गाथ लोगों ने यूनान और एशियामाइनर पर तथा ईरानियों ने सीरिया पर आक्रमण कर दिया। ईरानी राजा ने वेलेरियन को हरा दिया और उसे कैद कर लिया। ईरानी राजा ने उसके हाथों में बेड़ियाँ डाल दी थीं और जहाँ वह जाता था, वहाँ वेलेरियन को भी ले जाता था और उसके ऊपर पैर रख कर घोड़े पर सवार होता था।

गैलीनियस (२६०-२६५ ई० तक)

वेलेरियन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गैलिनियस सम्राट बनाया गया। परन्तु इसके समय में बहुत से सैनिकों ने अपने

अपने सेनापति को सम्राट होने की घोषणा कर दी। इसका फल बहुत बुरा हुआ क्योंकि सारे साम्राज्य मे गड़बड़ी फैल गई और कोई उचित व्यवस्था ही नहीं रह गई।

क्लॉडियस (२६५-२७० ई० तक)

यह इलीरिया का निवासी था और गैलीनियस की मृत्यु के बाद यह सम्राट बनाया गया। इसने गाथो से लड़ाई की और उन्हें रोम साम्राज्य के बाहर निकाल दिया। क्लॉडियस से बहुत कुछ आशा थी परन्तु सन् २७० ई० मे उसे प्लेग हो गया और वह मर गया।

औरीलियन् (२७०-२७५ ई० तक)

यह पेनोनिया का रहने वाला था और इसके राज्य पर बैठने के बाद से रोम मे सैनिक प्रतिभा तथा वीरता फिर लौटने लग गई। इसकी योग्यता अच्छी थी। इसने गाथो पर हमला किया और उन्हें हरा भी दिया। तथापि इसने डेसिया प्रांत उन्हीं लोगों को इस शर्त्त पर दिया कि ये लोग फिर रोम-साम्राज्य पर हमला न करें। पूर्व मे ज़ेनोबिया—जो पलमीरा की रानी थी—एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित करने का विचार कर रही थी। इसने जाकर उसे हरा दिया और क़ैद कर लिया। इसने गाल, स्पेन और ब्रिटेन पर भी अधिकार जमा लिया परन्तु अन्त मे यह मार डाला गया। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन लिखता है कि इसने भी ईसाइयों के साथ अत्याचार किया, तथा उन्हें दुःख दिया।

प्रोबस

यह सिद्धहस्त और वीर सेनापति था। इसने बर्बर तथा अन्य जातियों के हमलों के रोकने का प्रयत्न किया। इसने राइन और

डैन्यूब नदी के किनारे पर जर्मनो को हरा दिया। इसके बाद इसने गाथो को हराया और ईरानियों को भी प्रतिष्ठित संधि करने के लिए विवश किया। इसने अच्छी तरह से राज्य करने का प्रयत्न किया। यह बात सैनिकों को बुरी लगी और उन्होने उसे मार डाला। इसके बाद राज्य में बड़ी अव्यवस्था रही। अन्त मे डैन्यूब नदी पर की सेनाओ ने अपने सेनापति डायोक्लीशियन को सम्राट बनाया।

इस समय रोम की अवस्था

इस समय रोम मे चारो ओर गड़बड़ी फैली हुई थी और लोगो की बुरी दशा थी। इस समय फ्रैंक लोगों ने रोम-साम्राज्य के सीमान्त देशों पर आक्रमण करना तथा उन्हे अपने अधिकार में करना प्रारंभ कर दिया था। इन लोगो ने गाल को लूटा और स्पेन पर भी हमला कर दिया। इनके हमले अब एशियामाइनर पर भी होने लगे। इस समय रोम में सैनिको की तूती बोलती थी और उनमें कई तरह के दोष आ गये थे। प्रत्येक सेना अपने सेनापति को ही सम्राट बनाना चाहती थी अतएव ये परस्पर लड़ जाया करते थे। अतएव व्यापार मंद पड़ गया और आर्थिक संकट आ पहुँचा। इसलिए सैनिको का बल भी घटता चला जाता था और शत्रु शक्तिशाली होते चले जाते थे। इस समय रोम मे विलासिता भी खूब बढ़ रही थी। सिपाही लोग केवल अपने वेतन की चिन्ता करते थे। उन्हें रोम-साम्राज्य की विजय अथवा पराजय से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। साहित्य, विज्ञान तथा कला सब का ह्रास होता ही चला जाता था और धार्मिक झगड़े बढ़ते चले जा रहे थे।

अपने सेनापति को सम्राट होने की घोषणा कर दी। इसका फल बहुत बुरा हुआ क्योंकि सारे साम्राज्य में गड़बड़ी फैल गई और कोई उचित व्यवस्था ही नहीं रह गई।

क्लौडियस (२६५-२७० ई० तक)

यह इलीरिया का निवासी था और गैलीनियस की मृत्यु के बाद यह सम्राट बनाया गया। इसने गाथों से लड़ाई की और उन्हें रोम साम्राज्य के बाहर निकाल दिया। क्लौडियस से बहुत कुछ आशा थी परन्तु सन् २७० ई० में उसे प्लेग हो गया और वह मर गया।

औरीलियन् (२७०-२७५ ई० तक)

यह पैनोनिया का रहने वाला था और इसके राज्य पर बैठने के बाद से रोम में सैनिक प्रतिभा तथा वीरता फिर लौटने लग गई। इसकी योग्यता अच्छी थी। इसने गाथों पर हमला किया और उन्हें हरा भी दिया। तथापि इसने डेसिया प्रांत उन्हीं लोगों को इस शर्त पर दिया कि ये लोग फिर रोम-साम्राज्य पर हमला न करें। पूर्व में ज़ेनोबिया—जो पलमीरा की रानी थी—एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित करने का विचार कर रही थी। इसने जाकर उसे हरा दिया और क़ैद कर लिया। इसने गाल, स्पेन और ब्रिटेन पर भी अधिकार जमा लिया परन्तु अन्त में यह मार डाला गया। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन लिखता है कि इसने भी ईसाइयों के साथ अत्याचार किया, तथा उन्हें दुःख दिया।

प्रोबस

यह सिद्धहस्त और वीर सेनापति था। इसने बर्बर तथा अन्य जातियों के हमलों के रोकने का प्रयत्न किया। इसने राइन और

डैन्यूब नदी के किनारे पर जर्मनों को हरा दिया। इसके बाद इसने गाथों को हराया और ईरानियों को भी प्रतिष्ठित सन्धि करने के लिए विवश किया। इसने अच्छी तरह से राज्य करने का प्रयत्न किया। यह बात सैनिकों को बुरी लगी और उन्होंने उसे मार डाला। इसके बाद राज्य में बड़ी अव्यवस्था रही। अन्त में डैन्यूब नदी पर की सेनाओं ने अपने सेनापति डायोक्लीशियन को सम्राट बनाया।

इस समय रोम की अवस्था

इस समय रोम में चारों ओर गड़बड़ी फैली हुई थी और लोगों की बुरी दशा थी। इस समय फ्रैंक लोगों ने रोम-साम्राज्य के सीमान्त देशों पर आक्रमण करना तथा उन्हें अपने अधिकार में करना प्रारंभ कर दिया था। इन लोगों ने गाल को लूटा और स्पेन पर भी हमला कर दिया। इनके हमले अब एशियामाइनर पर भी होने लगे। इस समय रोम में सैनिकों की तूती बोलती थी और उनमें कई तरह के दोष आ गये थे। प्रत्येक सेना अपने सेनापति को ही सम्राट बनाना चाहती थी अतएव ये परस्पर लड़ जाया करते थे। अतएव व्यापार मंद पड़ गया और आर्थिक संकट आ पहुँचा। इसलिए सैनिकों का बल भी घटता चला जाता था और शत्रु शक्तिशाली होते चले जाते थे। इस समय रोम में विलासिता भी खूब बढ़ रही थी। सिपाही लोग केवल अपने वेतन की चिन्ता करते थे। उन्हें रोम-साम्राज्य की विजय अथवा पराजय में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। साहित्य, विज्ञान तथा कला सब का ह्रास होता ही चला जाता था और धार्मिक झगड़े बढ़ते चले जा रहे थे।

अपने सेनापति को सम्राट होने की घोषणा कर दी। इसका फल बहुत बुरा हुआ क्योंकि सारे साम्राज्य में गड़बड़ी फैल गई और कोई उचित व्यवस्था ही नहीं रह गई।

क्लौडियस (२६५-२७० ई० तक)

यह इलीरिया का निवासी था और गैलीनियस की मृत्यु के बाद यह सम्राट बनाया गया। इसने गाथों से लड़ाई की और उन्हें रोम साम्राज्य के बाहर निकाल दिया। क्लौडियस से बहुत कुछ आशा थी परन्तु सन् २७० ई० में उसे प्लेग हो गया और वह मर गया।

औरीलियन् (२७०-२७५ ई० तक)

यह पेनोनिया का रहने वाला था और इसके राज्य पर बैठने के बाद से रोम में सैनिक प्रतिभा तथा वीरता फिर लौटने लग गई। इसकी योग्यता अच्छी थी। इसने गाथों पर हमला किया और उन्हें हरा भी दिया। तथापि इसने डेसिया प्रांत उन्हीं लोगों को इस शर्त पर दिया कि ये लोग फिर रोम-साम्राज्य पर हमला न करें। पूर्व में जेनोबिया—जो पलमीरा की रानी थी—एक स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित करने का विचार कर रही थी। इसने जाकर उसे हरा दिया और कैद कर लिया। इसने गाल, स्पेन और ब्रिटेन पर भी अधिकार जमा लिया परन्तु अन्त में यह मार डाला गया। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन लिखता है कि इसने भी ईसाइयों के साथ अत्याचार किया, तथा उन्हें दुःख दिया।

प्रोबस

यह सिद्धहस्त और वीर सेनापति था। इसने बर्बर तथा अन्य जातियों के हमलों के रोकने का प्रयत्न किया। इसने राइन और

डैन्यूब नदी के किनारे पर जर्मनों को हरा दिया। इसके बाद इसने गाथों को हराया और ईरानियों को भी प्रतिष्ठित संधि करने के लिए विवश किया। इसने अच्छी तरह से राज्य करने का प्रयत्न किया। यह बात सैनिकों को बुरी लगी और उन्होंने उसे मार डाला। इसके बाद राज्य में बड़ी अव्यवस्था रही। अन्त में डैन्यूब नदी पर की सेनाओं ने अपने सेनापति डायोक्लीशियन को सम्राट बनाया।

इस समय रोम की अवस्था

इस समय रोम में चारों ओर गड़बड़ी फैली हुई थी और लोगों की बुरी दशा थी। इस समय फ्रैंक लोगों ने रोम-साम्राज्य के सीमान्त देशों पर आक्रमण करना तथा उन्हें अपने अधिकार में करना प्रारंभ कर दिया था। इन लोगों ने गाल को लूटा और स्पेन पर भी हमला कर दिया। इनके हमले अब एशियामाइनर पर भी होने लगे। इस समय रोम में सैनिकों की तूती बोलती थी और उनमें कई तरह के दोष आ गये थे। प्रत्येक सेना अपने सेनापति को ही सम्राट बनाना चाहती थी अतएव ये परस्पर लड़ जाया करते थे। अतएव व्यापार मंद पड़ गया और आर्थिक संकट आ पहुँचा। इसलिए सैनिकों का बल भी घटता चला जाता था और शत्रु शक्तिशाली होते चले जाते थे। इस समय रोम में विलासिता भी खूब बढ़ रही थी। सिपाही लोग केवल अपने वेतन की चिन्ता करते थे। उन्हें रोम-साम्राज्य की विजय अथवा पराजय से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। साहित्य, विज्ञान तथा कला सब का ह्रास होता ही चला जाता था और धार्मिक झगड़े बढ़ते चले जा रहे थे।

बत्तीसवाँ अध्याय

डायोक्लीशियन (सन् २८५-३०५ ई० तक)

प्रोवस के मरने के बाद कुछ दिन तक रोम में अशान्ति तथा गड़बड़ी फैली रही। अन्त मे डायोक्लीशियन रोम का राजा बन बैठा। इसके माता-पिता रोम में दास थे परन्तु यह बहुत ही योग्य तथा प्रवल मनुष्य था। सैनिक लोग इसके पक्ष में रहा करते थे और सैनिकों ने इसे सम्राट बनाया। डायोक्लीशियन के राजत्व काल से रोम के इतिहास में एक नए युग का आरम्भ होता है। इसके समय मे कसलो और ट्रिब्यूनो का राजनैतिक महत्व बिल्कुल जाता रहा और सीनेट का भी कुछ महत्व नहीं रहा। वास्तव में इनकी सब शक्तियाँ कम हो गई। केवल राजा ही सर्वशक्तिमान हो गया और कोई ऐसी दूसरी शक्ति नहीं रह गई जो राजा को रोक सके।

इस समय राज्य की दशा

इस समय सीनेट की शक्ति भी नष्ट हो गई थी अतएव राज्य भर मे कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जो सारे राज्य को एक निर्दिष्ट मार्ग पर ले चलने का प्रयत्न करे। इससे यह हुआ कि राज्य के नष्ट हो जाने का भय होने लगा। सब सूबाओं की दशा भी सोचनीय हो रही थी क्योंकि वहाँ पर सिपाही तथा सेनापति लोग जैसा चाहते थे, वैसा करते थे। कभी कभी तो ऐसा मालूम होता था कि राज्य के उतने ही टुकड़े हो जायेंगे जितनी सेनाएँ हैं क्योंकि राज्य के सारे प्रश्न अब तलवार की सहायता से ही हल होते थे। डायोक्लीशियन

ने इस परिस्थिति का खूब अच्छी तरह से अनुभव किया तथा इसे भली भाँति समझ लिया। उसने राज्य में एक ऐसी शक्ति के उत्पन्न करने का विचार किया जो इन सब दोषों को दूर कर सके। उसने सिपाहियों की प्रबल शक्ति का भी अनुभव किया। उसने यह भी देखा था कि अब सिपाही लोग ही राजाओं को सिंहासन पर बैठाया करते हैं और जब चाहते हैं, उन्हें राजगद्दी से उतार देते हैं। डायोक्लीशियन ने सिपाहियों की इस बढ़ी हुई शक्ति का नाश करने का विचार तथा प्रयत्न किया। इसमें सदेह नहीं कि सैनिकों ने ही उसे सम्राट बनाया था परन्तु उसने शासन पद्धति में ऐसे ऐसे परिवर्तनों के करने का विचार तथा प्रयत्न किया जिससे सैनिकलोग सम्राटों को बनाने तथा गिराने योग्य नहीं रह गये।

डायोक्लीशियन के सुधार

सम्राट होते ही डायोक्लीशियन ने अपनी योग्यता, दूरदर्शिता तथा राजनीतिज्ञता का परिचय दिया। इसने राज्य में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। उसके सुधार अगस्टस के सुधारों के समान कहे जाते हैं। इसमें सदेह नहीं कि इधर बहुत दिनों से रोम ससार राज्य-पथ की ओर झुक रहा था और इससे पहले भी बहुत लोगों ने राजा बनने का प्रयत्न किया था परन्तु रोम में पूर्ण रूप से राज्य प्रथा के स्थापित करने का श्रेय डायोक्लीशियन ही को प्राप्त है। इससे प्रकट है कि वास्तव में इसने ही रोम-साम्राज्य को स्थापित किया और इसके पहले रोम-ससार के लिए "रोम-साम्राज्य" शब्द का प्रयोग करना, ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक नहीं है।

डायोक्लीशियन के सुधारों के आधार उसके निम्नलिखित दो विचार थे :—

(१) रोम साम्राज्य की सीमाओं की रक्षा करना और (२) राजाओं के उत्तराधिकारियों का क्रम स्थापित करना। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, उसने अपने राज्य को कई भागों में बाँट दिया और इन्हें कई शासकों के अधीन कर दिया। डायोक्लीशियन ने समझा कि इस प्रकार प्रबन्ध करने से राम-साम्राज्य की सीमाओं की रक्षा भी होगी और सैनिक लोग भी सुगमता से इन शासकों को न बदल सकेंगे।

डायोक्लीशियन ने मेक्सीमियन नामक एक वीर सेनापति को अपना सहयोगी शासक बनाया और इन दोनों ने 'अगस्टस' की उपाधि धारण की। इसके बाद उसने गैलेरियस और कस्टेन्टाइन को सीजर की उपाधि दी और उन्हें भी शासक बनाया। अगस्टस का दर्जा सीजर के दर्जे से अधिक था। एक प्रकार से प्रत्येक अगस्टस के नीचे तथा उसका सहकारी एक सीजर नियत किया गया। अगस्टसों की मृत्यु के बाद सीजर लोग, "अगस्टस" पद के अधिकारी हो सकते थे।

थ्रेस, मिश्र और एसियामाइनर को डायोक्लीशियन ने स्वयं अपने अधिकार में रखा, इटली तथा अफ्रिका पर उसने मेक्सीमियन को, गाल, स्पेन और ब्रिटेन पर कस्टेन्टाइन को और डैन्यूब नदी के प्रान्तों पर गैलेरियस को शासक नियत किया। इस प्रकार रोम-साम्राज्य अब चार भागों में विभाजित हो गया। शासकों का कर्त्तव्य अपनी अपनी सीमाओं की रक्षा करना, राज्य में शान्ति स्थापित करना, तथा उसे स्थिर रखना और सैनिकों की शक्ति को बढ़ने नहीं देना था। इस प्रबन्ध से कुछ समय तक उसके राज्य में शान्ति अवश्य रही। इस प्रकार का शासन उसी समय तक सफलता पूर्वक चल सकता है, जब तक भिन्न भिन्न शासकों में परस्पर मेल हो। परन्तु इन में अधिक दिनों तक मेल नहीं रह सका

और डायोक्लीशियन के जीवन काल ही मे ये परस्पर लड़ने लग गये।

राज्य को चार भागों में विभाजित करने का फल

(१) इसका एक फल तो यह हुआ कि अब कोई सैनिक न तो राजगद्दी की अभिलाषा ही कर सकता था और न किसी सैनिक को राजगद्दी पर बैठाने का ही प्रयत्न कर सकता था।

(२) इस प्रबन्ध से रोम साम्राज्य के शासक, देश की सीमाओ पर अथवा सीमा के पास रहते थे और इस प्रकार सीमाओ की रक्षा भली भाँति कर सकते थे।

(३) इस प्रबन्ध से रोम का महत्व बहुत कुछ घट गया क्योंकि अब यह रोम-साम्राज्य की राजधानी नहीं रह गया। ये चारों अपनी अपनी सुविधा के अनुसार बाहर भिन्न भिन्न स्थानो में रहते थे। जब पहले सम्राट लोग रोम नगर मे रहते थे तब वे केवल एक न्यायाधीश और सेनापति ही की दशा में रहते थे। परन्तु जब वे बाहर साम्राटो की भाँति रहने लगे, तब ये असाधारण और सर्वोच्च व्यक्ति माने जाने लगे। इस शान को देखकर सैनिक लोग भी नम्र हो गये और सम्राट को आदर की दृष्टि से देखने लगे।

डायोक्लीशियन की धार्मिक-पालिसी

डायोक्लीशियन ने देखा कि रोम साम्राज्य के भीतर ईसाइयो की एक स्वतन्त्र शक्ति बन रही है। उसने यह भी देखा, यदि यह शक्ति रोम साम्राज्य मे भी बढ़ गई तो साम्राज्य की भलाई में धक्का लगेगा। इसलिए सन् ३०३ ई० में उसने सब गिर्जाघरों के नाश कर देने तथा उनकी पुस्तकों के जला देने या सरकारी दफ़्तरों में दे देने की आज्ञा निकाली। कुछ दिन के बाद इसने सब बिशपों

को भी कैद कर लिया। इसके डर के मारे बहुत लोगों ने अपने धर्म को छोड़ दिया। वास्तव में इसने ईसाई-धर्म को बहुत हानि पहुँचाई। परन्तु यह उसे समूल नष्ट नहीं कर सका। वह ईसाइयों से घृणा नहीं करता था परन्तु पालिसी के विचार से उनको नष्ट कर देना चाहता था। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन लिखता है— "डायोक्लीशियन ने भी ईसाइयों के साथ अत्याचार किया।"

डायोक्लीशियन का पद-त्याग

डायोक्लीशियन ने रोम-साम्राज्य के लिए बीस वर्ष तक घोर परिश्रम किया अतएव उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। सन् ३०५ ई० में उसने अपने पद को छोड़ दिया और जाकर डेलमीशिया में रहने लगा। यहाँ पर उसने अपने जीवन के शेष ६ वर्ष विताए। उसका जीवन सफल रहा परन्तु उसका अन्तिम समय सुखमय नहीं था क्योंकि उसने देखा कि उसी के नियत किए हुए अगस्टस तथा सीजर परस्पर लड़ रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि सिद्धान्त रूप से डायोक्लीशियन की राज्यव्यवस्था बहुत ही अच्छी थी परन्तु व्यवहारिक कसौटी पर वह ठीक नहीं उतरी। इसके राज्य के बाद झगड़ा उठ खड़ा हुआ और २०० वर्ष तक परस्पर युद्ध होता रहा। अन्त में कस्टैंटाइन विजयी हुआ और सन् ३२३ ई० में राजा बन बैठा।

तेंतीसवाँ अध्याय

कस्टेन्टाइन-महान (३२३ से ३३७ ई० तक)

यह डायोक्लीशियन के एक सीजर कस्टेंटाइन का पुत्र था। जब इसका पिता (सन् ३०६ ई० म) मर गया, तब यार्क के सैनिकों ने इसे राजा होने की घोषणा कर दी। अन्य लागो ने इसका घोर विरोध किया। अतएव कस्टेंटाइन ने केवल वर्तानियाँ की सेना के 'सीजर' के पद मे ही सतोष किया और स्वतन्त्र राजा बनने का अवसर देखने लगा। यह वास्तव में बड़ा धीर था। इसने सन् ३१२ ई० में मेजेंटियस को—जो इसका इटली में प्रतिद्वन्दी था—हरा दिया और इस प्रकार पश्चिमी साम्राज्य का एकमात्र शासनकर्त्ता बन गया। इसके बाद इसने अपनी शक्ति को बढ़ाना तथा सगठित करना और ईसाइयो के साथ अच्छा बर्ताव करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय पूर्व-साम्राज्य का स्वामी लीसीनियस था। यह कस्टेंटाइन का प्रतिद्वन्दी था। दोनो ही एक दूसरे से ईर्ष्या करते थे अतएव इनमें लड़ाई छिड़ गई और एड्रियानोपुल मे घमासान लड़ाई हुई। इसमे कस्टेंटाइन विजयी हुआ। इस प्रकार कस्टेंटाइन सम्पूर्ण रोम-साम्राज्य का स्वामी बन गया। इन पारस्परिक युद्धों म इसने सदा धीरता तथा वीरता का अच्छा परिचय दिया।

कस्टेंटाइन के दो प्रसिद्ध कार्य

कस्टेंटाइन के राजत्व काल में अनेक प्रसिद्ध बातें हुईं परन्तु निम्न लिखित दो बातें अधिक महत्व पूर्ण हैं —(१) ईसाई-धर्म का स्वीकार करना और (२) रोम से राजधानी को

विजैंटियम् (विजेशियम् जो पीछे कुस्तुन्तुनिया अथवा कंस्टैंटीनोपुल के नाम से प्रसिद्ध हुआ) उठा ले जाना।

ईसाई-धर्म की ओर झुकाव

अपने राजत्व काल के प्रारम्भ ही में कस्टेंटाइन ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो चाहे ईसाई-धर्म को स्वीकार कर सकता है। किसी को इसलिए कोई हानि नहीं पहुँचाई जायगी कि वह ईसाई-धर्म को मानता है। इसके विपरीत सरकार ईसाइयों की रक्षा भी करेगी। सन् ३१३ ई० में उसने मिलन से यह राजाज्ञा निकलवाई कि ईसाइयों के साथ केवल न्याय का ही बर्ताव नहीं किया जायगा किन्तु उनके साथ दयालुता का भी वर्ताव किया जायगा और उनकी रक्षा भी की जायगी। इसके बाद उसने स्वयं ईसाई-धर्म को स्वीकार किया और उसे राज-धर्म होने की घोषणा की। ईसाइयों के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला यह पहला ही सम्राट था। कस्टेंटाइन के समय तक रोम का धर्म खोखला हो चुका था और विचारवान लोगों की श्रद्धा उससे उठ गई थी। इसलिए जब स्वयं कस्टेंटाइन ने इस धर्म को स्वीकार किया तो बहुत लोगों ने उसका स्वागत किया और ईसाई-धर्म की स्थिति बहुत दृढ़ हो गई और इसका बहुत ही अधिक प्रचार हो गया। कुछ इतिहासज्ञों ने यह भी लिखा है कि कस्टेन्टाइन का ईसाई-धर्म में विश्वास नहीं था और न तो उसने मृत्यु-शय्या जाने से पहले इस धर्म को स्वीकार किया। उसने देखा कि ईसाई लोग संगठित और शक्तिमान् हैं। इनके धर्म को स्वीकार करलूँगा तो आसानी से उनका नेता बन जाऊँगा। इन्हीं सब बातों के विचार तथा लाभ की दृष्टि से उसने ईसाइयों के विरुद्ध पुराने सब कानून रद्द कर दिए और उन्हें पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी। जो हो, इसमें तो लेशमात्र भी सन्देह नहीं

है कि कस्टेन्टाइन के कारण ईसाई धर्म ग्बूब फैला तथा उसका प्रचार बढ़ा।

राजधानी-परिवर्त्तन

कस्टेन्टाइन ने रोम से अपनी राजधानी हटा ली और विज़ेंटियम् नगर में राजधानी स्थापित की। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन ने इस राजधानी के स्थापित करने के प्रथम दिन के दृश्य का बड़ा ही मनोरंजक वर्णन किया है। कस्टेन्टाइन भी हाथ में भाला लिए हुए, एक जुलूस के आगे आगे जा रहा था और सब लोग उसके पीछे पीछे शान्ति पूर्वक चल रहे थे। यह जुलूस राजधानी की सीमा का परिक्रमा कर रहा था। नियत सीमा के आगे बढ़ने पर कस्टेन्टाइन के आश्रितों ने उससे निवेदन किया—"अब आप नियत सीमा से आगे आ गये हैं" तब कस्टेन्टाइन ने जवाब दिया—"मै अभी आगे चलूँगा और तभी ठहरूँगा जब परमेश्वर, जो हम लोगों के आगे जा रहा है ठहरने का सङ्केत करेगा।"

इसके बाद विज़ेंटियम् का नाम कस्टेन्टीनोपुल (कुस्तुन्तुनिया) पड़ गया। अब रोम-साम्राज्य एक प्रकार से पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में विभाजित हो गया। यही कुस्तुन्तुनिया, पूर्वी रोम साम्राज्य की सन् १४५३ ई० तक राजधानी रही। सन् १४५३ ई० में सुल्तान ने इस पर अपना अधिकार जमा लिया।

राजधानी के परिवर्त्तन करने का कारण

रोम से राजधानी हटा कर कुस्तुन्तुनिया में उठा ले जाने के निम्नलिखित कारण थे:—

(७) बुद्धि-सम्बन्धी प्रगति तथा सभ्यता का केन्द्र भी पूर्व था।

इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन लिखता है — "कस्टेंटाइन ने अपने मन में समझा कि शत्रुओं से बिजेंटियम् (कुस्तुन्तुनिया) की रक्षा तो स्वयं प्रकृति ही कर लेगी। इसकी परिस्थिति अद्वितीय है।"

राजधानी-परिवर्त्तन का फल

इस परिवर्त्तन से रोम की प्रधानता जाती रही और वह अब एक सूबे की साधारण राजधानी मात्र रह गया। परन्तु यह बिशप का निवास स्थान बन गया। इसलिए यद्यपि रोम की राजनैतिक महत्ता जाती रही परन्तु यह ईसाई-जगत् का आध्यात्मिक नेता तथा गुरु माना जाने लगा। इस परिवर्त्तन से रोम-साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो गया। इतिहासज्ञों का विचार है कि कस्टेंटाइन का यह काम महत्वपूर्ण तथा बुद्धिमत्तामय और राजनैतिक दृष्टि से प्रशंसनीय था।

कस्टेन्टाइन के अन्य प्रसिद्ध कार्य

(१) कस्टेंटाइन ने सेना की शक्ति कम करने के लिए, सेनापतियों के नीचे काम करने वाले सिपाहियों की संख्या को कम कर दिया। इसने सेना को दो भागों में विभाजित कर दिया। पहले भाग में वे सब सेनाएं थीं जो नगरों में रहती थीं और दूसरे भाग में वे सब जो सीमान्त देशों में सीमा की रक्षा के लिए नियुक्त की गई थीं। इस प्रकार सेनापतियों की शक्ति बहुत कम हो गई और सैनिक बल बहुत ही अधिक निर्बल पड़ गया और क्रांति होने की कोई संभावना ही नहीं रह गई।

(२) इसने सैनिक शक्ति को, सूबेदारों की शक्ति से अलग कर दिया। अब राज्य के भिन्न भिन्न सूबों के सूबेदारों में कुछ भी सैनिक शक्ति नहीं रह गई और उनका बल बहुत ही कम हो गया और सब प्रकार की शक्ति केवल राजा में ही रह गई।

(३) कस्टेंटाइन ने सब देश को कई छोटे छोटे प्रान्तों और ज़िलों मे विभाजित कर दिया और प्रत्येक ज़िला मे एक न्यायाधीश नियत कर दिया। प्रत्येक ज़िले को तेरह तेरह भागों मे बाँट दिया ये तेरहो भाग चार प्रीफेक्ट नामक अधिकारियों के अधीन थे इस प्रकार से कस्टेंटाइन के साम्राज्य में बहुत से पदाधिकारी नियुक्त हो गये जो सम्राट् की आज्ञा मानने के लिए सदा तैयार रहते थे क्योंकि इनकी नियुक्ति करना तथा पदविच्छेद करना सम्राट के ही हाथ में था।

(४) कस्टेंटाइन ने क़ुस्तुन्तुनिया मे नये सीनेट तथा नए नए पदाधिकारियों को नियत किया। इनका सम्बन्ध रोम से कुछ भी नहीं रहा।

कस्टेन्टाइन पर एक दृष्टि

सैनिकों की शक्ति कम करके, स्वतन्त्र पदो पर अपने आश्रित अधिकारियों को रख कर और रोम से क़ुस्तुन्तुनिया राजधानी ले जाकर कस्टेंटाइन पूर्व देश के राजाओं की तरह एक स्वतन्त्र राजा बन गया। जिन जिन लड़ाइयों में यह गया, उनमें यह अवश्य ही विजयी हुआ। इससे सिद्ध होता है कि जेनरल की हैसियत से उसकी योग्यता प्रशसनीय थी। सेना के सगठन तथा राजनैतिक परिवर्त्तनों से उसकी राजनीतिज्ञता सिद्ध होती है। राजधानी का परिवर्तन भी अच्छा ही था। ईसाई-धर्म को स्वीकार करना भी उस समय कोई मामूली बात नहीं थी। कस्टेंटाइन के सब कामे

पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि 'महान्' नामक उसकी उपाधि सर्वथा उचित है।

इसमें सन्देह नहीं कि कस्टेंटाइन की इस नवीन-शासन पद्धति से थोड़े दिनों के लिए उसके राज्य में एकाग्रता, दृढ़ता तथा टिकाऊपन अवश्य आ गया था। परन्तु वेतन तथा सज धज के कारण सम्राट् का खर्च बहुत बढ़ गया था। इसलिए उसे जमीन पर कर बढ़ाना पड़ा। जब तक राज्य में शान्ति रह सकी, तब तक तो लोग किसी न किसी प्रकार कर देते रहे परन्तु ज्योंही सीमान्त देशों पर आक्रमण होने लगे त्योंही सारे साम्राज्य में घोर अशान्ति और असन्तोष फैल गया। अतएव सन् ३३७ ई० में जब कस्टेंटाइन मर गया तो उसके महल में अनेक षड्यन्त्र चल रहे थे।

चौंतीसवाँ अध्याय

फ्लेवियस क्लोडियस जूलियन
(३५५ ई० से ३६३ ई० तक)

कस्टेंटाइन ने अपने राज्य को अपने तीनो लड़को में बाँट दिया था। परन्तु उसकी मृत्यु के बाद उसके राज्य में चारों ओर अशान्ति फैल गई और भाइयों मे परस्पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। अन्त मे कस्टेंटाइन का भतीजा जूलियन सन् ३५५ ई० मे सम्राट हो गया। वास्तव मे यह एक योग्य व्यक्ति था। यह केवल अपनी वीरता के ही लिए इतिहास मे नहीं प्रसिद्ध है किन्तु विद्वत्ता के लिए भी। इसने जर्मनों तथा गालों को हरा कर अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया। जब यह सम्राट् बन गया तो कंस्टेन्टाइन का पुत्र इससे और भी अधिक जलने लगा और इसे तङ्ग करने की चिन्ता में रहने लगा। सन् ३५६ ई० मे सेनाओं ने जूलियन को सम्राट् मान लिया और दूसरे वर्ष कस्टेंटाइन के पुत्र के मर जाने के बाद वह पूर्णरूप से स्वतन्त्र हो गया।

इसके समय में ईसाइयों की दशा

इस समय ईसाइयों की बुरी दशा थी। सब लोगो ने समझा था कि ईसाई-धर्म के प्रचार से ससार मे राम-राज्य आ जायगा परन्तु वास्तव मे वैसी बात नहीं हुई। ईसाई-धर्म से जिस शान्ति धर्म और व्यवस्था की आशा की गई थी, वे सब नहीं मिलीं इस समय एक ईसाई, दूसरे ईसाई के खून का प्यासा हो गया था इस समय ईसाइयो मे धार्मिक विवाद ने खूब जोर पकड़ लिया

और परस्पर के मतभेदों के कारण एक ईसाई दूसरे से घृणा करने लग गया था। ईसाइयों के इन सब पारस्परिक झगड़ो को देखकर बहुत लोगो ने ईसाई-धर्म को छोड़ दिया और फिर रोम के प्राचीन धर्म को मानने लगे। जूलियन ने भी ऐसा ही किया था। जूलियन के हृदय पर कस्टेन्टाइन के पुत्रो के क्रूर काम तथा अन्य ईसाइयो के झगड़े का बड़ा प्रभाव पड़ा। इसलिए उसने—यद्यपि वह जन्म का ईसाई था—ईसाई धर्म को छोड़ दिया और रोम के प्राचीन धर्म का ही अवलबन कर लिया। इतना ही नहीं उसने इस प्राचीन धर्म के प्रचार करने का भी प्रयत्न किया। इसमें सदेह नहीं कि पहले के सम्राटो की तरह उसने ईसाइयो को तग नहीं किया परन्तु अपने हृदय मे वह उनसे अवश्य चिढ़ता था और उनके उत्साह को सर्वदा भङ्ग किया करता था। उसने उन सब ईसाइयो को जो राज्य के बड़े बड़े पदो पर थे, पृथक् कर दिया और स्कूल तथा कालेजों में ईसाइयो को अध्यापक नहीं होने देता था। जूलियन ने ईसाइयो की आर्थिक-सहायता भी वद कर दी।

प्राचीन धर्म के प्रचार करने का प्रयत्न

जूलियन ने रोम के प्राचीन धर्म के प्रचार करने का प्रयत्न किया। उसने यूनान में शिक्षा पाई थी और सूर्य देवता को बहुत अधिक मानता था। उसका विश्वास था कि सूर्य ही विश्वकर्त्ता को सजीव और हितकारी मित्र हैं। ये सब बातें उसके प्राचीन धर्म के अनुकूल थीं। जूलियन ईसाइयों की तरह मे इस प्राचीन धर्म मे भी सगठन करना चाहता था। वह इस धर्म के पुजारियो की शिक्षा का भी विशेष प्रबध करना चाहता था। प्राचीन धर्म मानने वाले सम्राटो मे यही अन्तिम सम्राट् था और इसकी मृत्यु से प्राचीन धर्म के उत्थान की अन्तिम आशा जाती रही। इसमें भी सन्देह नहीं कि यदि वह अधिक दिनो तक जीता, तो अवश्य इस

प्राचीन धर्म के प्रचार करने का अधिक प्रयत्न करता और धार्मिक झगड़े भी अवश्य ही बढ़ जाते।

अन्य मतावलम्बियों के साथ उसका बर्ताव

जूलियन ने अन्य मतावलम्बियों को पूरी स्वतन्त्रता दी थी जब यहूदियो ने जरुसलेम में फिर से मन्दिर बनवाने का विचार किया, तो इसने उन्हें मन्दिर बना लेने दिया। ईसाइयो के साथ भी इसने क्रूरता का बर्ताव नहीं किया।

जूलियन का अन्त

जूलियन ने कई बार ईरानियो को लड़ाई के मैदान में हरा दिया था। अन्तिम बार उन्हें लड़ाई में हराकर यह लौट रहा था परन्तु रास्ते में इसे किसी ने मार डाला। उसके अन्तिम शब्द ये थे —"ईसाई-धर्म! तू जीत गया।' इससे पता चलता है कि वह प्राचीन धर्म का खूब प्रचार करना चाहता था परन्तु मृत्यु के कारण ऐसा नहीं कर सका। जब कस्टेंटाइन ने ईसाई-धर्म को स्वीकार कर लिया तभी से प्राचीन धर्म के अनुयायी सम्राटों का अन्त हो गया था परन्तु उसके बाद जूलियन ने फिर इसे स्वीकार कर लिया। अतएव जूलियन ही प्राचीनधर्मावलम्बी अन्तिम सम्राट् था।

जूलियन के बाद के राजा

जूलियन की मृत्यु के बाद बहुत दिनो तक साम्राज्य में अशान्ति फैली रही। इसके बाद वैलेंशियन नामक एक व्यक्ति राजा बन बैठा। यह एक नीच घराने का सिपाही था परन्तु यह अपनी धीरता और रणोत्साह की प्रबलता के लिए प्रसिद्ध है। वास्तव में यह बड़ा न्यायी था और उसके समय में आभ्यन्तरिक प्रयत्न बहुत

ही प्रशसनीय था। उसने अलमेनी को जिसने गाल पर हमला किया था, मार भगाया। पश्चिमी रोम-साम्राज्य पर यह स्वय शासन करता था और पूर्वी रोम-साम्राज्य पर इसने अपने भाई वेलेंस को राजा नियत कर दिया था। परन्तु गाल वालों ने उसके राज्य के ऊपर हमला कर दिया और उसे मार डाला। इसके मरने के बाद थियोडोसियस पूर्वी रोम-साम्राज्य का राजा बन बैठा।

थियोडोसियस

यह एक बहुत ही अधिक योग्य सेनापति था। वलेंस की मृत्यु के बाद यह पूर्वी रोम-साम्राज्य का राजा बन बैठा। इसने अपने प्रतिद्वन्दी मैक्सीमस को भी हरा दिया और इस प्रकार यह सम्पूर्ण रोम-साम्राज्य का स्वामी बन गया। यही रोम का अन्तिम सम्राट् था जिसने सम्पूर्ण रोम-साम्राज्य पर राज्य किया। इसके बाद के सम्राट् पूर्वी अथवा पश्चिमी रोम-साम्राज्यों में से किसी एक ही पर राज्य करते थे।

इसके समय में निम्नलिखित तीन बातें हुईं —

(१) ईसाई-धर्म का प्रचार तथा उसकी अन्तिम विजय (२) बर्बर-जातियो से युद्ध और (३) रोम के कानून की पूर्ति।

(१) ईसाई-धर्म की अन्तिम विजय

यह बड़ा ही कट्टर ईसाई था और इसने ईसाई-धर्म का खूब प्रचार किया। सन् ३९४ ई० मे सिनेट मे—जिसमे स्वय थियोडोसियस वर्तमान था—इस सम्बन्ध में बहस हुई कि रोम का प्रधान तथा रक्षक प्राचीन देवता जूपिटर माना जाय अथवा ईसा। सीनेट ने ईसा के पक्ष में मत दिया। इसके बाद ईसाई-धर्म का प्रचार बड़ी शीघ्रता से होने लगा। वास्तव में ईसाई-धर्म की यह

अन्तिम विजय थी। प्राचीन धर्म के हवनादिक कर्मों के लिए मृत्यु का दण्ड देना निश्चय कर लिया गया और प्राचीन देवताओं को पूजा भी बन्द कर दी गई। प्राचीन मन्दिर या तो नष्ट कर दिये गये अथवा उनके सब सामानों से गिरजा घर बना। कोई कोई पुराने मन्दिर तो गिरजाघर के रूप मे ही परिणत हो गये। इस प्रकार ईसाई-धर्म की पूर्ण रूप से विजय हो गई परन्तु इस विजय के साथ ही साथ रोम की प्राचीन सभ्यता तथा कला का अन्त हो गया और रोम के वाणिज्य तथा शिल्पादि सभी कलाओं को भी अवनति होने लगी। धीरे धीरे इनका लोप हो गया और लगभग एक हजार वर्ष तक रोम के ज्ञान का दीपक टिमटिमाता रहा परन्तु उसकी ज्योति मन्द पड़ गई। इसी कारण से यह काल "अन्धकारमय युग" के नाम से विख्यात है। लगभग एक हज़ार वर्ष के बाद यूरोप का पुनरुत्थान हुआ और तब फिर इन सब बातों का प्रचार हुआ। इस सम्बन्ध मे प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन लिखता है कि जब थियोडोसियस ने सन् ३६० ई० मे ईसाई-धर्म को केवल राज-धर्म मान लिया और पुराने धर्म को कानून के विरुद्ध कहा तभी से ईसाई-धर्म की अन्तिम विजय माननी चाहिये।

(२) बर्बर जातियो से युद्ध

बहुत दिनो से गाथ लोग प्रबल होते चले जाते थे। वेलेंस ने पहले इन लोगों को रोम मे बसने की आज्ञा दे दी थी परन्तु ये लोग वेलेंस से ही लड़ने लगे थे और वेलेंस की मृत्यु के बाद ये ही लोग रोम-साम्राज्य के स्वामी रहे। परन्तु थियोडोसियस ने बड़ी चतुराई से गाथों को कई भिन्न भिन्न भागो मे विभाजित कर दिया और फिर उनमें से प्रत्येक से अलग अलग युद्ध करके उनकी शक्ति को बहुत ही कम कर दिया।

(३) क़ानून की पूर्ति

थियोडोसियस ने रोम के कई कानूनों की पूर्ति की।

थियोडोसियस ने सोचा कि इतने बड़े साम्राज्य पर एक मनुष्य अच्छी तरह से राज नहीं कर सकता। इसलिए उसने समस्त रोम साम्राज्य को पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में विभाजित कर दिया। अपने बड़े पुत्र आर्केडियस को उसने पूर्वी भाग पर नियत किया और उसकी राजधानी कुस्तुतुनिया बना दिया। दूसरे पुत्र हानोरियस को उसने पश्चिमी भाग का स्वामी बनाया और उसकी राजधानी मिलन नियत की। इस प्रकार व्यवहारिक रूप से रोम-साम्राज्य के दो भाग हो गये यद्यपि कुछ लोग इसे एक ही मानते रहे।

पैंतीसवाँ अध्याय

विदेशी-जातियों का आक्रमण और रोम-साम्राज्य का पतन

रोम-साम्राज्य की सीमाओं पर विदेशी जातियाँ २०५ ई० से आगे बढ़ रही थीं। इस समय रोम मे धार्मिक झगडो की तूती बोलती रहती थी। इसलिए ये लोग अपनी शक्ति को इनके मार्ग के रोकने में नहीं लगा सकते थे। धार्मिक झगड़ों के बाद रोम-साम्राज्य की जो कुछ शक्ति थी वह पारस्परिक झगड़ो मे लगती थी। इसलिए सीमान्त देश की बर्बर जातियाँ बड़ी सुगमता से आगे बढ़ती चली जाती थीं। इसमें सदेह नहीं कि कई बार रोम के सेनापतियो ने इन्हें अच्छी तरह से पराजित किया था तथापि इन विजयों का कुछ स्थायी प्रभाव नहीं पडा क्योंकि ये लोग अब भी आगे बढ़ते ही चले आते थे और रोम-साम्राज्य के भीतर अपनी बस्तियाँ बसाते चले जाते थे। यदि इनके साथ कोई सेना होती, तो अब भी रोम उन्हें हरा सकता था परन्तु ये लोग बिना सेना ही के आगे बढ़ते चले आते थे। रोम की सेना इन्हें हटा देती थी परन्तु सेना के हट जाने पर ये आगे बढ़ आती थीं। इन बर्बर जातियों के अतिरिक्त स्वय रोम-साम्राज्य के कुछ विदेशी-नौकर भी रोम-साम्राज्य के भीतर बसने लगे थे। रोम के ये विदेशी नौकर भी रोम-साम्राज्य के पतन के कारण हुए क्योंकि रोम की वीरतादि गुण भी इनमें आ गये थे। गाथों के रोम मे आने का एक कारण रोम की सभ्यता भी थी क्योंकि ये लोग उसे रोम मे सीखना चाहते थे।

गाथ और हूस

गाथ लोग पहले इधर-उधर घूमा करते थे और काला समुद्र से बाल्टिक समुद्र तक चक्कर लगाते थे। परन्तु इनका केन्द्र मध्य यूरोप ही था। कुछ दिनों के बाद इन लोगों ने भ्रमण करना छोड़ दिया और बस्तियाँ बना कर बसने लग गये। अलहिलास नामक गाथ ने ईसाइयों की धर्म-पुस्तक बाइबिल का गाथ की भाषा में अनुवाद किया। इस पुस्तक के प्रभाव से ये लोग ईसाई-धर्म को मानने लगे और इनमें भी सभ्यता आने लगी। सन् ३७८ ई० में हूसों ने वालगा नदी को पार कर लिया और गाथों के राज्यों पर हमला किया। इनसे हार कर गाथ लोग आगे बढ़े और रोम के राज्य पर अपना अधिकार करने लगे। वेलेंस उनका सामना नहीं कर सका परन्तु थियोडोसियस ने उन्हें हरा दिया और उनके साथ संधि कर ली। परन्तु उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र होनोरियस के समय में ये फिर हमला करने लगे।

होनोरियस

होनोरियस, थियोडोसियस का बेटा था। पिता के मरने पर यह पश्चिमी रोम साम्राज्य का राजा हुआ। इसकी अवस्था केवल ११ वर्ष की थी। अतएव इसके राज्य का काम स्टीलिको नामक एक मंत्री करता था। इसी के समय में गाथों के नेता एलरिक ने इटली पर हमला किया परन्तु स्टीलिको ने उसे मार भगाया। फिर जंगलियों की कई सेना ने इटली पर हमला किया परन्तु उन्हें भी स्टीलिको ने हरा दिया। इसके बाद स्टीलिको पर यह दोष लगाया गया कि वह राजगद्दी पर बैठना चाहता है और इसी अपराध के कारण वह मार डाला गया। उसे मरवा कर होनोरियस ने बड़ी गलती की क्योंकि वही इस समय उसकी रक्षा कर सकता

था। सन् ४०८ ई० मे एलरिक ने फिर रोम पर हमला किया परन्तु उसे रोकने के लिए इस समय कोई स्टीलिको नहीं था। गिबन ने एलरिक के इस लूट का बड़ा ही अच्छा वर्णन किया है। परन्तु उन्होंने सन् ४१० ई० में इसे स्वीकार किया है। एलरिक ने रोम को चारो ओर से घेर लिया। पहले तो उसने रोम के लोगों से बहुत सा धन, रोम का नाश न करने के लिए लिया परन्तु धन ले लेने के बाद इसने रोम पर अपना अधिकार कर लिया और उसे छ दिन तक लूटता रहा। यद्यपि एलरिक रोम से इस समय युद्ध कर रहा था परन्तु वास्तव मे वह रोम की प्रत्येक बातो की प्रशसा कर रहा था और यदि वह रोम साम्राज्य मे सेनापति तथा अन्य कोई प्रतिष्ठित पद पाता तो सतुष्ट हो जाता। उसने अपना विचार भी प्रकट कर दिया था और इसी आशा से उसने रोम को दो बार छोड भी दिया था परन्तु अंत मे सन् ४०८ ई० में उसने रोम को चौपट कर ही के छोड़ा।

यदि इस समय रोम मे कोई राजनीतिज्ञ होता तो एलरिक को अपनी ओर मिला कर तथा स्टीलिको को न मार कर और इन दोनो की सहायता लेकर अब भी रोम को बचा लेता परन्तु रोम मे राजनीतिज्ञो का अब दीवाला निकल गया था।

होनोरियस के समय में ब्रिटेन से रोम की सेना हटा ली गई और तब एगलोसेक्सनों ने उस पर अपना अधिकार जमा लिया। होनोरियस सन् ४२३ ई० मे मर गया।

होनोरियस के बाद पश्चिमी रोम के राज्य पर कोई प्रसिद्ध राजा नहीं हुआ। इस समय जगली जातियो के हमले रोम-साम्राज्य पर होने लगे और धीरे धीरे इन लोगों ने रोम के राज्य के भागों को भी अपने अधिकार में कर लिया। जेनसेरिक नामक वडल जाति के नेता ने अफ्रिका के रोम के राज्यो पर अधिकार

कर लिया और भूमध्य-सागर के आस पास के देशों को भी खूब लूटा। इसके बाद अटिल्ला नामक हूर्णो के नेता ने भी रोम के राज्य पर अपना अधिकार जमाना प्रारंभ कर दिया। इसमें सदेह नहीं कि इस समय भी एटियस नामक रोम के जनरल ने उसे हरा दिया परन्तु अब रोम में न तो सगठन ही रह गया था और न उनमें अब कोई शक्ति ही रह गई थी। इसलिए अब रोम के लोग साधारण शत्रुओं से भी अच्छी तरह से नहीं लड़ सकते थे और उसे मार कर दूर नहीं भगा सकते थे। इस समय रोम में रुपए का भी अभाव था और सेना का वेतन समय पर नहीं मिलता था। इसलिए सेना में भी अब कोई शक्ति नहीं रह गई थी। इसीलिए जब सन् ४७२ ई० में रिसिमेर ने रोम को लूटना प्रारंभ कर दिया, तो कोई उसे रोक नहीं सका।

सन् ४७६ ई० में उडवासर नामक जर्मनों के नेता ने रोम-साम्राज्य के अन्तिम राजा रोम्यूलस अगस्टलस को गद्दी से उतार दिया और इस प्रकार उसने पश्चिमी रोम साम्राज्य का अंत कर दिया।

पूर्वी रोम-साम्राज्य की सत्ता इसके बाद भी लगभग एक हजार वर्ष तक और रही। सन् १४५३ ई० मे तुर्कों ने पूर्वी रोम-साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार पूर्वी रोम-साम्राज्य का अंत कर दिया।

रोम-साम्राज्य की समालोचना

रोम साम्राज्य का इस प्रकार अंत हो गया परन्तु वर्त्तमान यूरोप की सभ्यता अथवा राजनीति का यही स्रोत है। यूरोप की शासन पद्धति की वही जननी है और उसी रोम साम्राज्य ने ही यूनानी-सभ्यता का भी चारों ओर प्रचार किया था। यूरोप की

लगभग सब जातियो ने रोम से कुछ न कुछ सीखा है। यूरोप की सब भाषाओं पर रोम की लातीनी भाषा का प्रभाव पड़ा है। रोम के राजनैतिक अधिकार का अंत हो गया परन्तु रोम के सब अधिकारों का अंत नहीं हुआ। रोम ने एक प्रकार से अपने अधिकार के क्षेत्र को बदल दिया। अब रोम ने योरप पर अपने धार्मिक अधिकार का सिक्का जमा लिया और रोम के पोपो की तूती सारे यूरोप में बोलने लगी।

रोम-साम्राज्य के पतन के कारण

वास्तव में रोम अब दो भागों में विभाजित हो गया था। ये दोनों भाग पूर्वी रोम-साम्राज्य और पश्चिमी रोम साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध हैं। पूर्वी रोम-साम्राज्य मे पश्चिमी रोम-साम्राज्य से अधिक शान्ति तथा टिकाऊपन था क्योंकि पूर्वी रोम-साम्राज्य में यूनानियो की अधिकता थी और यूनानियो की सभ्यता, रूम की सभ्यता से श्रेष्ठ थी। सन् ४७६ ई० मे उडवासर ने जो हैस्यूलाई जाति (जर्मनों) का एक राजा था, पश्चिमी रोम के राजा रोम्यूलस अगस्टलस को रोम की राजगद्दी से उतार दिया और स्वय रोम का राजा बन बैठा। इस प्रकार से सन् ४७६ ई० म पश्चिमी रोम-साम्राज्य का अन्त होगया। परन्तु पूर्वी रोम साम्राज्य की स्थिति लगभग एक हजार वर्ष तक और रही क्योंकि उसका अन्त सन् १४५३ ई० मे हुआ जब कि तुर्को ने इसकी राजधानी कुस्तुन्तुनिया (कसटैन्टीनोपुल) पर अपना अधिकार कर लिया।

पश्चिमी रोम-साम्राज्य के पतन का कारण

वास्तव मे पश्चिमी रोम साम्राज्य के पतन के दो ही प्रधान कारण थे—(१) पारस्परिक तथा आभ्यतरिक कलह और एकता का अभाव तथा (२) बाहर वालो के आक्रमण।

ये ही दोनो शक्तियाँ किसी भी साम्राज्य के पतन का कारण होती हैं और ये ही रोम के पतन का भी कारण हुई। इन दोनों शक्तियो ने रोम में निम्नलिखित रूप धारण किया था अतएव ये ही रोम के पतन का कारण कही जाती हैं।

(१) रोम वालो मे अब नैतिक शक्ति तथा पहले की तरह वीरता का अभाव था।

(२) रोम के लोगों में भाँति भाँति की विलासिता फैल गई थी।

(३) रोम में धन और मनुष्य दोनों की कमी हो गई थी। रोम का राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था। इतने बड़े राज्य का वे अच्छी तरह से प्रबन्ध नहीं कर सकते थे अतएव देखने मे तो रोम का राज्य बड़ा भारी था परन्तु वास्तव में भीतर से बहुत ही अधिक खोखला हो गया था। रोम में काम करने वाले बहुत ही कम आदमी मिलते थे अतएव विवश हो कर इन्हे दासों (गुलामों) को काम करने के लिए रखना पड़ता था और उन्हीं लोगों को सेना में भी भरती करना पड़ता था। ये ही गुलाम खेती का काम भी करते थे।

(४) रोम के इतिहास मे प्रकट है कि वह विजय के धन मे ही अधिक धनी हो गया था परन्तु अब रोमवाले कोई विजय नहीं प्राप्त करते थे और इस प्रकार रोम दिन प्रतिदिन दरिद्र होता चला गया।

(५) रोम वाले अधिक टेक्स लगाते थे और बुरी तरह से वसूल करते थे। इससे भी रोम कमजोर होता चला गया।

(६) रोम की सरकार सैनिक थी। राजनीति का यह अकाट्य सिद्धान्त है कि कोई भी सैनिक सरकार अधिक दिन तक नहीं टिक

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन इस सम्बन्ध में लिखता है—"रोम की सम्पत्ति, विजय और प्रबन्ध में भी पतन का बीज बोया गया था। हम लोगों को रोम के पतन का कारण नहीं पूछना चाहिए। वास्तव में प्रश्न तो यह है कि यह इतने दिन तक कैसे स्थिर रहा? बहुत लोगों का कथन है कि राजधानी के परिवर्त्तन होने से रोम-साम्राज्य का पतन हुआ। परन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। इत्यादि।"

रोम के पतन के ये सब कारण तो थे ही, परन्तु एक और प्रधान कारण रोम की व्यवस्था की भ्रांति तथा गलती थी। रोम जिन जिन देशों को जीतता था, उनकी व्यक्तिगत और जातिगत स्वतन्त्रता को नष्ट कर देता था। रोम यह नहीं जानता था कि विजित देशो को शान्ति और सुन्दर व्यवस्था देना ही पर्याप्त नहीं है परन्तु उनमें स्वय शासन करने की शक्ति तथा योग्यता भी उत्पन्न करनी चाहिए। रोम इन विजित देशो की शत्रुओ से रक्षा तो करता था, परन्तु वह नहीं जानता था कि केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है किन्तु उनमें अपनी रक्षा करने की योग्यता भी उत्पन्न करनी चाहिए। इसलिए जब विदेशी जातियो ने रोम पर हमला किया तो ये देश अपनी रक्षा न कर सके और अपनी स्वाधिनता भी खो बैठे। विजित देशों के स्वाभाविक विकास को नष्ट कर के और उनमें कृत्रिम व्यवस्था को ला कर के रोम ने बड़ी भारी गलती की थी और फल स्वरूप उसे इन सब देशो से हाथ धो देना पड़ा।

छत्तीसवाँ अध्याय

पूर्वी रोम-साम्राज्य का दिग्दर्शन तथा उसका अंत

जब कस्टेंटाइन ने अपनी राजधानी कुस्तुन्तुनिया में बना ली, एक प्रकार से तभी से रोम-साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो गया परन्तु अभी दोनों पर एक ही राजा राज्य करता था। परन्तु थियेडोसियस की मृत्यु के बाद वास्तव में साम्राज्य के दो भाग हो गये और दोनों पर दो भिन्न भिन्न राजा राज्य करते थे। जिसकी राजधानी कुस्तुन्तुनिया थी वह अब पूर्वी रोम-साम्राज्य कहलाने लगा। आर्केडियन यहाँ का पहला सम्राट था। लगभग सौ वर्ष तक इसकी दशा भी खूब डाँवाडोल थी परन्तु छठवीं शताब्दी के प्रारम्भ से इसकी दशा बहुत कुछ सुधरने लगी क्योंकि अन्य प्रान्तों से भी उसे कर मिलने लगा और मिश्र तथा सीरिया से भी गेहूँ तथा अन्य पदार्थ आने लगे। अभी भी इसका सम्बन्ध पश्चिमी साम्राज्य से कुछ थोड़ा था। परन्तु जब पूर्वी रोम-साम्राज्य पश्चिमी रोम-साम्राज्य से बिल्कुल स्वतंत्र हो गया, तब से उसका प्रबंध और अच्छा हो गया और यह और भी उन्नति करने लगा।

सन् ५२७ ई० से ५६५ ई० तक जस्टिनियन पूर्वी रोम साम्राज्य का सम्राट रहा। यह बड़ा वीर और चतुर था। वह एक अच्छा सेनापति और योग्य पुरुष था। इसने अपने राज्य को बहुत बढ़ाया और दृढ़ किया। इसने रोम के प्रचलित कानून का संग्रह कर प्रकाशित किया। इसने बहुत से सुन्दर तथा भव्य भवन बनवाए

थे। कस्टेंटाइन ने सोफिया नामक एक गिर्जे को बनवाया था परन्तु विद्रोहियों ने इसे लगभग नष्ट सा कर दिया था। जस्टिनियन ने इसे पूर्ण रूप से तथा फिर से सुन्दर बनवा दिया। उसने रेवेना नामक स्थान पर भी कई गिर्जे तथा भव्य भवन बनवाए थे। पहले योरप मे रेशम के कीड़े नहीं होते थे परन्तु इसने चीन से रेशम के कीड़ों को कुस्तुन्तुनिया में मँगवाया और तब यहाँ भी रेशम पैदा होने लगा। आजकल भी यहाँ रेशम का व्यापार किया जाता है। परन्तु इसके समय में ही गाथ लोग हमला करने लगे और गिर्जा घरों तथा भव्य भवनों मे अधिक रुपया खर्च हो जाने के कारण से रोम-साम्राज्य की अवनति भी होने लगी।

इसने युद्ध में गाथों को हरा दिया और ये लोग रोम-साम्राज्य के बाहर निकाल दिए गये। इसके बाद लम्बर्ड जाति ने रोम साम्राज्य पर हमला करना प्रारम्भ कर दिया।

आठवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुस्तुन्तुनिया में लियो सम्राट था। वह बड़ा भारी मूर्त्तिखंडन करनेवाला था। इसलिए रोम के पोप और लियो में घोर विरोध हो गया।

सिकंदरिया के पतन के बाद, हूस, ईरानी, रूसी, अरब वाले और अंत में तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया पर कई बार हमला किया परन्तु इस अजेय दुर्ग ने केवल तीन ही बार शत्रुओं के लिए फाटक खोले थे। सन् १४५३ ई० तक इस पर भिन्न भिन्न राजाओं का अधिकार रहा परन्तु सन् १४५३ ई० मे कुस्तुन्तुनिया के पतन के साथ ही साथ पूर्वी रोम-साम्राज्य का भी पतन हो गया।

इस पतन का प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गिबन ने बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है —

सन् १४५३ ई० में पूर्वी रोम-साम्राज्य (कुस्तुन्तुनिया) का पतन

द्वितीय मुहम्मद ने कुस्तुन्तुनिया के चारो ओर से घेर लिया था। कुस्तुन्तुनिया के भीतर के लोग घबड़ा रहे थे और बाहर खेमा मे मुहम्मद टिका था और कुस्तुन्तुनिया पर हमला करने का विचार कर रहा था। कई दूत नगर से खेमा में आए और गये परन्तु कुछ भी तै नहीं हुआ। अंत में मुहम्मद विगड़ा और उसने कहा—"मे कुस्तुन्तुनिया मे या तो अपना राज्य स्थापित करूँगा अथवा यहीं मर मिटूँगा और इसे अपना कब्र बनाऊँगा।"

परन्तु ज्योतिषी ने कहा था—"२६ वीं मई को हमला करना अच्छा होगा।" इसलिए मुहम्मद २६ वीं मई की प्रतीक्षा कर रहा था।

२७ वीं मई को मुहम्मद ने अपने सैनिकों से कहा—"शहर और घर तो मेरा है परन्तु लूट में तुम्हें भाग मिलेगा। जो पहले कुस्तुन्तुनिया की दीवारों पर चढ़ जायगा, उसे मैं बहुत इनाम दूँगा। देखो यदि कोई पख लगा कर उड़े तो वह भी न बचने पावे।" इसके बाद खेमे के मसालों से चारो दिशाएँ प्रज्वलित हो गईं।

उधर ईसाइयों की दशा अधिक सोचनीय हो रही थी। वे अपने दु:खमय अंत का स्वप्न देख रहे थे। पेलियोलोगस का व्याख्यान पूर्वी रोम साम्राज्य की भावी मृत्यु सदेश था परन्तु इस समय वह और सब लोगो के हृदय में उस आशा दीपक को प्रज्वलित करना चाहता था, जो उसके हृदय में पहले ही से बुझ गया था। इस समय वे स्वय निराशा से आशा ग्रहण कर रहे थे। रो रहे थे, एक दूसरे को समझा रहे थे, सिखा रहे थे और कुस्तुतुनिया की रक्षा का प्रबन्ध कर रहे थे। प्रात काल ही हमला

सैंतीसवाँ अध्याय

पवित्र रोम-साम्राज्य का दिग्दर्शन और उसका अन्त

ट्यूटन जाति के लोग जो राइन नदी के पश्चिम में बस गये थे अपने को फ्रैंक कहते थे। इनका वास्तविक इतिहास सन् ४८१ ई० से प्रारम्भ होता है। लगभग ५११ ई० में इन लोगों ने एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया और छठवीं शताब्दी के बाद उनकी खूब उन्नति होने लगी। सन् ७६८ ई० तक पिपिन नामक इसका राजा था। इसकी मृत्यु के बाद उसके दो पुत्र कार्लमैन और चार्ल्स में उसका राज्य बँट गया परन्तु तीन वर्ष के बाद कार्लमैन मर गया। इसलिए अब चार्ल्स ही सम्पूर्ण राज्य का स्वामी बन गया। इसने लगभग ५० वर्ष तक राज्य किया और लगातार युद्ध करके समस्त पश्चिमी यूरोप पर अधिकार कर लिया। इसी के समय मे पोप और लम्बर्डों मे झगड़ा होना उत्पन्न हो गया। पोप ने चार्ल्स से लम्बर्डों के विरुद्ध सहायता माँगी और चार्ल्स ने वहाँ पहुँच कर लम्बर्डों के राजा को गद्दी से उतार दिया, इससे पोप, चार्ल्स से बहुत प्रसन्न हो गया। यह लम्बर्डों को भी ग्रेगरी नामक प्रसिद्ध पोप ने ही लगभग दो सौ वर्ष पहले राजा बनाया था और उसके सिर के ऊपर स्वर्ण मुकुट रखा था। इसी मुकुट को चार्ल्स ने आज अपने सिर पर रख लिया और वह अपने को महान कहने लगा। इसी समय से वह "चार्ल्स महान्" के नाम से ही विख्यात है।

इस समय पूर्वी रोम-राज्य पर एक स्त्री राज करती थी। इसका नाम आयरीन था। इसने अपने पुत्र को मार डाला और वह स्वयं

साम्राज्ञी बन गई। यह ईसाई धर्म की भी निन्दा किया करती थी अतएव पोप लोग सदा इससे असंतुष्ट रहा करते थे। इसलिए वे किसी दूसरे मनुष्य को पूर्वी रोम साम्राज्य का सम्राट बनाना चाहते थे। परन्तु पश्चिमी रोम साम्राज्य के उत्तराधिकारियों में कोई ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्ति नहीं था जो सम्राट बन सके। ये लोग अभी इन्हीं सब बातों को सोच ही रहे थे कि इतने में शत्रुओं ने फिर पोप को घेर लिया। लियो नामक पोप ने फिर चार्ल्स महान् को अपनी सहायता के लिए सन् ८०० ई० में बुलाया और उसने फिर आ कर पोप के शत्रुओं को मार भगाया। सन् ८०० ई० के बड़े दिन में चार्ल्स महान् रोम ही में था। और सेंटपीटर के बनाए हुए गिर्जा में वह प्रार्थना करने के लिए गया और घुटनों को टेक कर प्रार्थना करना प्रारम्भ कर दिया। इसी समय पोप ने उसके मस्तक पर एक स्वर्ण मुकुट रख दिया और उसे 'सम्राट' घोषित कर दिया और जय जय कारों से गिरजा गूँज उठा। चार्ल्स महान् आज सम्राट बन गया। वास्तव में पश्चिमी रोम साम्राज्य का अंत ४७६ ई० में ही हो गया था। परन्तु सन् ८०० ई० के बाद से चार्ल्स महान् का राज्य फिर पश्चिमी रोम साम्राज्य के नाम से विख्यात हो गया परन्तु इसे लोग पवित्र रोम साम्राज्य ही अधिक कहते हैं। इस पवित्र रोम साम्राज्य का अंत सन् १८०६ ई० में हुआ।

अड़तीसवाँ अध्याय

सेंसर-केटो

सब बाहरी विजयो के बाद रोम का जातीय जीवन गिरने लगा और उसमे विलासिता आदि दुर्गुण आने लग गये। रोम के बहुत लोगो ने जातीय जीवन के इस परिवर्त्तन का अनुभव किया और इन सब बुरे प्रभावों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। केटो—जो सेंसर था—इन सबो में प्रसिद्ध तथा प्रशसनीय है। उसने फिर उन्हीं पवित्र बातो के ले आने का घोर प्रयत्न किया। इसका जन्म सन् २३४ ई० पू० में हुआ था। यह छोटे छोटे पदो से ले कर बड़े से बड़े पदों पर रहा। यह कसल भी चुना गया था और सेंसर के पद को भी सुशोभित किया था।

स्पेन में भी यह लड़ा था और थर्मापिली मे सन् १९१ ई० पू० मे एंटीओकस के विरुद्ध भी लड़ा था। यह सिपियो बन्धुओ का जानी दुश्मन था। सेंसर की हैसियत से यह बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि इस समय इसने कई महत्व पूर्ण प्रस्ताव तथा सुधार किए थे। इसने नालियो को बनवाया और कई प्रकार के लोगों की बेइमानी को बन्द किया। सीनेटरो में जो योग्य नहीं थे, उन्हें इसने निकाल बाहर किया। उसने प्राचीन रीति-रिवाजों के पक्ष में और नवीन विलासिता आदि के विरुद्ध बड़ा कड़ा आन्दोलन किया। कार्थेज के नष्ट करने के लिए इसने बड़ा प्रयत्न किया था और जिन यूनानियो की कला तथा जीवन आदि की यह प्राय निन्दा किया करता था, उन्हीं के साहित्य का इसने बुढ़ापे मे अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया।

सिसरो —इसके जीवन का प्रारम्भिक समय, कानून, दर्शन तथा साहित्य के अध्ययन मे बीता। उसी समय यह रूम के प्रसिद्ध विद्वानों में गिना जाने लगा। अपनी प्रशसनीय प्रतिभा के कारण, यह "नवीन मनुष्य" के नाम से विख्यात हो गया। यह व्याख्यान देने में बड़ा ही कुशल था और उसकी गणना ससार भर के सर्व-श्रेष्ठ वक्ताओं में की जाती है। लड़कपन में यह फौज में काम करने लगा और धीरे धीरे इसकी उन्नति होती चली गई। सिसली में वेरेस ने बल पूर्वक रुपया वसूल किया था। इसलिए सिसरो ने उसके ऊपर अभियोग चलाया। ६३ ई० पू० में यह कसल बनाया गया। इसी के बाद इसने "कैटेलाइन-षड्यन्त्र" को नष्ट कर दिया। इसके कामों से प्रसन्न हो कर, जनता ने इसे "देश पिता" की उपाधि दी थी। यह रिपब्लिक का पक्षपाती थी।

कैटेलाइन षड्यन्त्र के नाश करने के बाद सिसरो के राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वियों ने उसे देश से निकाल दिया। सिसरो ने विना अभियोग चलाए ही इन द्रोहियो को मरवा डाला था। यही दोष उसके ऊपर लगाया गया। जब सीजर और पम्पे में मतभेद उठ खड़ा हुआ, तब सिसरो ने पम्पे का पक्ष लिया। इसलिए पम्पे ने उसे फिर बुलवा लिया। फारसेलिया की लड़ाई के बाद सिसरो इटली में आ गया और सीजर का मित्र बन गया। सीजर की हत्या के बाद इसने रिपब्लिकन का पक्ष लिया और अंटोनी के विरुद्ध व्याख्यान दिया। इसी कारण उसका नाश भी हुआ। दूसरे त्रिगुट्ट ने इसका नाम देशद्रोहियों में लिख दिया और तब यह मार डाला गया।

सिसरो वास्तव मे प्रशसा तथा प्रेम का पात्र है। वह इटली का नहीं, सारे ससार का व्यक्ति है। परन्तु वह परिवर्त्तन मय समय के योग्य राजनीतिज्ञ नहीं था। फाउलर साहब ने लिखा है कि अपने समय का सिसरो सर्वश्रेष्ठ मनुष्य था। वह अपवित्र

युग में पैदा हुआ था, तथापि वह पवित्र था और स्वार्थ वश उसने कभी कोई काम नहीं किया।

कैमिलसः—वेनटाइन युद्ध मे यह प्रसिद्ध हो गया। इसने वेई पर अधिकार कर लिया। इस पर यह अपराध लगाया गया कि उसने वेई के फाटको को चुरा लिया है। प्लेबियन लोगो ने क्रोधित हो कर उसे देश से निकाल दिया। जब गालों ने रूम को लूटना प्रारभ किया, तब यह फिर बुला लिया गया और रोम की रक्षा करने मे अपनी जान लड़ा दी। इसने परिश्रम तथा इस सावधानी और प्रयत्न से रोम की रक्षा की कि सब लोगों ने इसे "रोम का दूसरा जन्मदाता" की उपाधि दे दी।

हैनिवल —हैनिवल के पिता का नाम हेमिलकर बारसा था। यह कारथेज मे पैदा हुआ था। कारथेज के सेनापतियो में यह सर्व श्रेष्ठ था। उसकी गणना ससार के सर्वश्रेष्ठ जनरलों मे की जाती है।

हसड्रूवल के बाद हैनीबल, स्पेन का सूबादार नियत हुआ। यह रोम का जानी दुश्मन था। इसने रोम को चौपट करने की सौगन्ध खाई थी। वास्तव में वह रोम और कार्थेज मे सधि को तोड़ना चाहता था। इसलिए उसने सैगण्टम पर आक्रमण कर दिया और कार्थेज तथा रोम मे लड़ाई छिड़ गई। इसी को दूसरा प्यूनिक-युद्ध कहते हैं। पीरीनीज़ और एल्पस के दुर्गम मार्गों से होता हुआ, यह रोम मे पहुँच गया और ट्रीबिया, टीसीनस, ट्रेसमेंस झील और कना की लड़ाई में उन्हें खूब हराया।

हैनिवल को कार्थेज वालो ने कुछ भी सहायता न दी। परन्तु उसे सहायता देने के विचार से हसड्रूवल, हैनीवल की ओर बढ़ा परन्तु हैनीवल यह नहीं जानता था कि हसड्रूवल उसकी सहायता

के लिए आ रहा है। जब एक मनुष्य ने हसड्रूबल के सिर को हैनीबल को दिखलाया तब उसे पता चला कि हसड्रूबल सहायता देने के विचार से रूम मे आ गया था, हैनीबल फूट फूट कर रोने लगा। सहायता न मिलने पर भी हैनीबल रूम को जीतना चाहता था परन्तु कार्थेज वालो ने उसे अपने देश अफ्रिका में देश-रक्षा के लिए बुला लिया। परन्तु ज़ामा की लड़ाई मे हैनीबल हार गया।

इसके बाद हैनीबल ने कार्थेज की दशा सुधारने का विचार किया और देशोन्नति के काम मे लग गया। परन्तु कार्थेज के कुछ लोग इसके बढ़ते हुए प्रभाव को सह ही नहीं सके और इससे बिगड़ गये। अतएव हैनीबल को रोम से भाग जाना पड़ा। यहाँ से भाग कर हैनीबल, सीरिया के राजा एंटीओकस के पास पहुँचा। सीरिया के राजा ने हैनीबल का स्वागत किया। परन्तु जब सीरिया का राजा मैगनीशिया मे हार गया तब रूम वालों ने उससे हैनीबल को माँगा। हैनीबल वहाँ से भी भाग कर बीथीनिया के राजा के यहाँ भाग गया। रूम वालो ने इस राजा से भी हैनीबल को माँगा। हैनीबल ने देखा कि किसी प्रकार से जान नहीं बचेगी, वह वहाँ से भी भागा और बहुत दिनो तक इधर-उधर मारा मारा फिरा। अन्त में उसने विष पी लिया और सन् ११३ ई० पू० मे मर गया।

रोम के इतिहास में दो ब्रूटस प्रसिद्ध हैं—एक एल् ब्रूटस और दूसरा एम् ब्रूटस।

एल्० ब्रूटस

इसने तारकीनों के हटाने में खूब प्रयत्न किया। एक प्रकार से यही इस युद्ध का नेता था। राजाओ के बाद जो दो कसल हुए

उनमे से यही एक था। इसके लड़के रिपब्लिक के विपक्ष में और तारकीन के पक्ष में थे। अतएव इसने उनसे क्रुद्ध हो कर, उन्हें मार डाला। यह स्वय अपने ही लड़कों के मारने के लिए प्रसिद्ध है।

एम्० ब्रूटस

यह पहले सीज़र का मित्र था परन्तु जब सीजर ने स्वय राजा होना चाहा तब यह सीजर के विरुद्ध हो गया। फेरसेलिया के युद्ध में इसने सीजर के विरुद्ध पम्पे को सहायता दी। परन्तु सीजर ने उसे क्षमा कर दिया और ऊँचा पद भी दिया। वास्तव में वह रिपब्लिक के पक्ष में था। केसियस ने सीजर के विरुद्ध षड्यत्र रचा और ब्रूटस भी उसी मे सम्मिलित हो गया, सीज़र की हत्या के बाद यह मैसेडोनिया भाग गया परन्तु द्वितीय त्रिगुट्ट ने वहाँ तक उसका पीछा किया। द्वितीय त्रिगुट्ट से सामना करने के विचार से यह एशिया माइनर में धन एकत्रित कर रहा था। परन्तु फिलिपी के मैदान में आक्टेवियस तथा एटोनी ने उसे हरा दिया। इसके बाद ब्रूटस ने आत्मघात कर लिया। ब्रूटस वास्तव में एक सच्चा आदमी तथा सच्चा देशभक्त था। यदि उसने अपना सारा जीवन विद्याध्ययन मे बिताया होता तो उसे अवश्य ही बड़ी सफलता मिलती। उसे ससार का ज्ञान नहीं था। इसलिए वह मनुष्यों पर भली भाँति शासन नहीं कर सकता था।

एटोनी —यह जूलियस सीज़र का मित्र था। यह गाल तथा फेरसालिया मे सीजर के साथ साथ लड़ा था। सीज़र की हत्या के समय, यह भी कसल था। सीजर की हत्या के बाद इसने सब लोगो को ब्रूटस तथा केसियस के विरुद्ध भड़काया और जनता के डर से इन्हें रोम से भाग जाना पड़ा। सीज़र की हत्या के बाद

यह स्वय सीजर होना चाहता था परन्तु आक्टेवियस ने उसे म्यूटिना के मैदान पर हरा दिया, और उसकी आशा पर पानी फेर दिया। तब इसने लेपीडस और आक्टेवियस के साथ मिल कर एक सत्र बना लिया। ये ही तीनों मिल कर "द्वितीय त्रिगुट्ट" के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इसके बाद इसने कैसियस को फिलिपी में हराया। यहाँ से यह एशिया में पहुँचा। यहाँ पर यह क्लियोपाट्रा नामक स्त्री पर मुग्ध होगया और दास की तरह उसके साथ एलेकजेंड्रिया चला गया। क्लियोपाट्रा बहुत ही अधिक सुन्दर थी और कहा जाता है कि यूरोप के सारे राजा उसके दास थे। उसकी स्त्री फ्लूविया ने क्लियोपाट्रा से ब्रूटस को मुक्त करने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता न हुई क्योंकि आक्टेवियस ने उसे हरा दिया। यह सब समाचार सुन कर ब्रूटस रोम की ओर आया। यहाँ आने पर ब्रूटस और आक्टेवियस मे मित्रता हो गई। इसके बाद ब्रूटस ने आक्टेवियस की बहिन से विवाह कर लिया। फिर इसके ऊपर क्लियोपाट्रा का प्रभाव पड़ा। इस काम मे ब्रूटस के अनुयायी भी इससे बिगड़ गये। अन्त में सीनेट ने क्लियोपाट्रा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और आक्टेवियस ने एक्टियस की लड़ाई मे मिश्र की जलसेना को हरा दिया। क्लियोपाट्रा और एटानी दोनों एलेकजेंड्रिया भाग गये और लड़ाई की तैयारी करने लगे परन्तु स्वय ब्रूटस के सिपाहियो ने भी उसका साथ छोड़ दिया। दुःखी हो कर ब्रूटस ने आत्महत्या कर ली।

एग्रिपा —यह आक्टेवियस का घनिष्ट मित्र तथा उसका जनरल था। इसने, फ्लूविया (एटोनी की स्त्री) तथा उसके भाई को पेरूसियन-लड़ाई में हरा दिया था। आक्टेवियस के सेनापति की हैसियत मे इसने पम्पे को भी मीलिया और नौकोलस की जल

महर्षि वाल्मीकि-रचित

संस्कृतमूल

और हिन्दी भाषानुवाद-सहित

सचित्र श्रीमद्वाल्मीकि-रामायण

सम्पूर्ण का मूल्य १६)

श्री मद्रामायण के इस संस्करण में, ऊपर श्लोक दिया गया है और उस श्लोक के नीचे ही उसका हिन्दी मे अनुवाद है। इस प्रकार मूल के साथ भाषानुवाद का अपूर्व सम्मिश्रण अथवा कालिन्दी एवं मन्दाकिनी का एक ही स्थान पर पुण्यसङ्गम है। इस प्रकार की सुन्दर अनुवादशैली से कथाप्रसङ्ग की असङ्गति सर्वथा दूर कर दी गयी है। मूलश्लोकों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ करने में टीकाकारों ने जहाँ विशेष अर्थों से काम लिया है, वहाँ वहाँ उन उन टीकाकारों का नामोल्लेख कर पादटिप्पणी में मूलशब्दों का गणना अङ्क देकर उनका अर्थ ज्यों का त्यों संस्कृत ही मे लिख दिया गया है। इसके अतिरिक्त यथास्थान प्रसङ्गतः धार्मिक, ऐतिहासिक, एवं राजनीतिक स्वतंत्र टिप्पणियाँ भी दी गयी हैं। इन टिप्पणियों से अनुवाद की उपयोगिता बहुत कुछ बढ़ गयी है। श्रीमद्रामायण के उत्तरभारतीय और दक्षिणभारतीय, संस्करणों मे जो पाठान्तर पाये जाते हैं, उनका भी जगह जगह निर्देश कर दिया गया है। यह ग्रन्थरत्न दस खण्डों में प्रकाशित हुआ है। इसमें स्थान स्थान पर कितने ही सुन्दर रंगीन एवं भावपूर्ण चित्र भी दिये गये हैं।

यह स्वयं सीजर होना चाहता था परन्तु आक्टेवियस ने उसे म्यूटिना के मैदान पर हरा दिया, और उसकी आशा पर पानी फेर दिया। तब इसने लेपीडस और आक्टेवियस के साथ मिल कर एक सघ बना लिया। ये ही तीनों मिल कर "द्वितीय त्रिगुट्ट" के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इसके बाद इसने कैसियस को फिलिपी में हराया। वहाँ से यह एशिया में पहुँचा। वहाँ पर यह क्रियोपाट्रा नामक स्त्री पर मुग्ध होगया और दास की तरह उसके साथ एलकजेंड्रिया चला गया। क्रियोपाट्रा बहुत ही अधिक सुन्दर थी और कहा जाता है कि यूरोप के सारे राजा उसके दास थे। उसकी स्त्री फ्लूविया ने क्रियोपाट्रा से ब्रूटस को मुक्त करने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता न हुई क्योंकि आक्टेवियस ने उसे हरा दिया। यह सब समाचार सुन कर ब्रूटस रोम को ओर आया। यहाँ आने पर ब्रूटस और आक्टेवियस में मित्रता हो गई। इसके बाद ब्रूटस ने आक्टेवियस की बहिन से विवाह कर लिया। फिर इसके ऊपर क्रियोपाट्रा का प्रभाव पड़ा। इस काम से ब्रूटस के अनुयायी भी इससे बिगड़ गये। अन्त में सीनेट ने क्रियोपाट्रा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और आक्टेवियस ने एक्टियम की लड़ाई में मिश्र की जलसेना को हरा दिया। क्रियोपाट्रा और एंटोनी दोनों एलकजेंड्रिया भाग गये और लड़ाई की तैयारी करने लगे परन्तु स्वयं ब्रूटस के सिपाहियों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। दुःखी हो कर ब्रूटस ने आत्महत्या कर ली।

एग्रिपा—यह आक्टेवियस का घनिष्ट मित्र तथा उसका जनरल था। इसने, फ्लूविया (एंटोनी की स्त्री) तथा उसके भाई को पेरूसियन-लड़ाई में हरा दिया था। आक्टेवियस के सेनापति की हैसियत से इसने पम्पे को भी मीलिया और नोकोलस की जल

युद्ध मे हराया था। एक्टियम युद्ध का भी यही प्रधान नेता था। वह साहित्य तथा कला का भी बड़ा प्रेमी था।

मैरियस :—यह रूम के सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों मे से एक था। यह सात बार कसल बनाया गया था। स्पेन के इसके प्रशसनीय कामों ने सिपियो अफ्रिकैनस (छोटा) के ध्यान को आकर्षित किया। अपनी बलवती प्रतिभा के कारण यह ट्रिब्यून भी बनाया गया। इसने जब अपना विवाह जूलिया से जो जूलियस-सीज़र की चाची थी, किया तो यह और भी अधिक प्रसिद्ध हो गया। इसने जुगर्था (Jugurthine) की लड़ाई में पहले तो मेटेलस के नीचे काम किया परन्तु अन्त में यही प्रधान सेनापति हो गया और विजय प्राप्त की। इसने ट्यूटन और सिंबरी को भी हराया। इसने सामाजिक युद्ध मे भी काम किया परन्तु इसी समय साला ने इसकी प्रतिद्वन्द्वी की और इसे रूम से भाग जाना पड़ा और भाँति भाँति के कष्टों को सहना पड़ा। जब साला पूर्व-देश की ओर चला गया तब यह लौट आया और सिना (Cinna) की सहायता की। इस समय आक्टेवियस और सिना दो कसल थे। इन दोनो में युद्ध छिड़ा। इस लड़ाई मे मैरियस ने सिना की सहायता की। इस समय इसने धनिक लोगो से खूब अपना बदला चुकाया और सातवीं बार कसल चुना गया परन्तु शीघ्र ही सन् ८६ ई० पू० मे मर गया।

बड़ा सीपियो अफ्रिकैनस —यह पूब्लियस सिपियो का बेटा था। इसका पिता स्पेन मे कारथेज वालों से लड़ते समय मारा गया था। पुत्र ने द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के समय टीसिनस की लड़ाई में पिता की जान बचाई थी। चौबीस वर्ष की अवस्था मे इसने स्पेन के सेनापति तथा सूबेदार के पद को स्वीकार किया और स्पेन वालों को कई लड़ाई में हरा दिया। इसके बाद यह अफ्रिका

चला गया और पश्चिमी न्यूमीडिया के राजा मैसीनिसा को रोम के पक्ष में कर लिया। यहाँ से यह फिर स्पेन लौट आया और कार्थेज वालों को भली भाँति हरा दिया। यह कसल नियत कर दिया गया और फिर सिसली का सेनापति बनाया गया तथा उसे यह भी आज्ञा दी गई कि यदि यह उचित समझे तो अफ्रिका पर भी अपना अधिकार जमावे। तब यह अफ्रिका चला गया और ज़ामा की लड़ाई में हैनीबल को (२०२ ई० पू०) हरा दिया। इस विजय पर रोम ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और सीपियो को "अफ्रिकैनस" की पदवी दी। इसके राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वियों ने इसके ऊपर घूस का अभियोग चलाया परन्तु ज़ामा की विजय की प्रसन्नता के कारण यह छुट गया। इसके बाद यह अपने गाँव चला गया और आनन्द पूर्वक दिन बिताने लगा।

मेसेनस —यह अगस्टस के प्रधान मन्त्रियों में से एक था। जिस प्रकार एग्रीपा, लड़ाई के मैदान में इसकी सहायता करता था, इसी प्रकार शान्ति के समय मेसेनस उसकी मदद करता था। जब अगस्टस, क्लियोपेट्रा से युद्ध कर रहा था तब यह इटली का शासन करता रहा। यह सदा अगस्टस की सहायता करता रहा। यह साहित्यकों तथा विद्वानों की सदा प्रतिष्ठा किया करता था। इसने प्रसिद्ध कवि वर्जिल और होरेस को शरण दी थी। इसलिए इन कवियों ने अपनी कविता में इसे अमर कर दिया है।

युद्ध में हराया था। एक्टियम युद्ध का भी यही प्रधान नेता था। यह साहित्य तथा कला का भी बड़ा प्रेमी था।

मैरियस —यह रूम के सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों में से एक था। यह सात बार कसल बनाया गया था। स्पेन के इसके प्रशसनीय कामों ने सिपियो अफ्रिकैनस (छोटा) के ध्यान को आकर्षित किया। अपनी बलवती प्रतिभा के कारण यह ट्रिब्यून भी बनाया गया। इसने जब अपना विवाह जूलिया से जो जूलियस-सीजर की चाची थी, किया तो यह और भी अधिक प्रसिद्ध हो गया। इसने जुगर्था (Jugurthine) की लड़ाई में पहले तो मेटेलस के नीचे काम किया परन्तु अन्त में यही प्रधान सेनापति हो गया और विजय प्राप्त की। इसने ट्यूटन और सिंबरी को भी हराया। इसने सामाजिक युद्ध में भी काम किया परन्तु इसी समय साला ने इसकी प्रतिद्वन्दी की और इसे रूम से भाग जाना पड़ा और भाँति भाँति के कष्टों को सहना पड़ा। जब साला पूर्व-देश की ओर चला गया तब यह लौट आया और सिना (Cinna) की सहायता की। इस समय आक्टेवियस और सिना दो कसल थे। इन दोनों में युद्ध छिड़ा। इस लड़ाई में मैरियस ने सिना को सहायता की। इस समय इसने धनिक लोगों से खूब अपना बदला चुकाया और सातवीं बार कसल चुना गया परन्तु शीघ्र ही सन् ८६ ई० पू० में मर गया।

बड़ा सीपियो अफ्रिकैनस —यह पूब्लियस सिपियो का बेटा था। इसका पिता स्पेन में कारथेज वालों से लड़ते समय मारा गया था। पुत्र ने द्वितीय प्यूनिक-युद्ध के समय टीसिनस की लड़ाई में पिता की जान बचाई थी। चौबीस वर्ष की अवस्था में इसने स्पेन के सेनापति तथा सूबेदार के पद को स्वीकार किया और स्पेन वालों को कई लड़ाई में हरा दिया। इसके बाद यह अफ्रिका

चला गया और पश्चिमी न्यूमीडिया के राजा मैसीनिसा को रोम के पक्ष में कर लिया। यहाँ से यह फिर स्पेन लौट आया और कार्थेज वालों को भली भाँति हरा दिया। यह कसल नियत कर दिया गया और फिर सिसली का सेनापति बनाया गया तथा उसे यह भी आज्ञा दी गई कि यदि वह उचित समझे तो अफ्रिका पर भी अपना अधिकार जमावे। तब यह अफ्रिका चला गया और जामा की लड़ाई में हैनीबल को (२०२ ई० पू०) हरा दिया। इस विजय पर रोम ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और सीपियो को "अफ्रिकैनस" की पदवी दी। इसके राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वियों ने इसके ऊपर घूस का अभियोग चलाया परन्तु जामा की विजय की प्रसन्नता के कारण यह छूट गया। इसके बाद वह अपने गाँव चला गया और आनन्द पूर्वक दिन बिताने लगा।

मेसेनस —यह अगस्टस के प्रधान मन्त्रियों में से एक था। जिस प्रकार एग्रीपा, लड़ाई के मैदान में इसकी सहायता करता था, इसी प्रकार शान्ति के समय मेसेनस उसकी मदद करता था। जब अगस्टस, क्लियोपेट्रा से युद्ध कर रहा था तब यह इटली का शासन करता रहा। यह सदा अगस्टस की सहायता करता रहा। यह साहित्यज्ञों तथा विद्वानों की सदा प्रतिष्ठा किया करता था। इसने प्रसिद्ध कवि वर्जिल और होरेस को शरण दी थी। इसलिए इन कवियों ने अपनी कविता में इसे अमर कर दिया है।



उन्तालीसवाँ अध्याय

ग्रेकस बधुओं की पारस्परिक तुलना

दोनों भाइयों के कार्यों के अध्ययन करने से पता चलता है कि टाइबेरियस ग्रेकस ने तो केवल पृथ्वी-रहित मनुष्यों के लिए ही आन्दोलन किया था। उसका उद्देश्य कृषकों की दशा सुधारना था। वह चाहता था कि इटली के शहर वालों की संख्या अधिक रहे और दासों की संख्या कम रहे। वास्तव में वह सामाजिक और सांपत्तिक-सुधारक था परन्तु उसकी कार्रवाही रोम की प्रचलित व्यवस्था के अनुकूल नहीं थी क्योंकि आक्टेवियस का पदच्युत करना रोम की पुरानी व्यवस्था के अनुकूल नहीं थी। इसके विरुद्ध उसका भाई कायस ग्रेकस वास्तव मे एक राजनैतिक सुधारक था। उसने सीनेट की शक्ति को कम करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। सामाजिक-सुधार तो उसके राजनैतिक-सुधार का एक आनुसगिक फल था। इसलिए कायस के अस्त्र, अधिक क्रांतिकारी थे। परन्तु वह व्यवस्था के विरुद्ध कोई काम नहीं करता था। तथापि इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि दोनों भाइयों में कई समानताएँ भी थीं। दोनों ने ही जनता के हित के विचार से ही प्रेरित होकर इन सब सुधारों की ओर मन लगाया था। दोनों ही मे स्वार्थ की मात्रा, इन सुधारों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं थी।

मेरियस और साला की पारस्परिक तुलना

इन दोनों में बहुत समताएँ और बहुत विषमताएँ हैं। मेरियस का जन्म एक साधारण मनुष्य के घर में हुआ था। इसलिए वह उजड्ड की तरह बातें करता था। परन्तु उसकी सैनिक-योग्यता बहुत अच्छी थी। अतएव वह इस ऊँचे पद (कसल) पर पहुँच गया। इसके विरुद्ध साला का जन्म एक कुलीन-कुल में हुआ था, वह सभ्यता का बर्ताव करता था परन्तु इसकी सैनिक योग्यता भी प्रशसनीय थी। मेरियस कुछ भी पढ़ा लिखा नहीं था परन्तु साला यूनानी-शिक्षा तथा साहित्य से भलीभाँति परिचित था। दोनों ही क्रूर तथा निर्दयी थे। मेरियस अपने शत्रुओं को खूब पहचान पहचान कर नहीं मारता था परन्तु साला बदला लेने का बड़ा प्रेमी था। मेरियस से उसके शत्रु और मित्र दोनो ही डरते थे परन्तु साला अपने शत्रुओं को तो खूब तग करता था परन्तु अपने मित्रों के साथ अच्छा बर्ताव भी करता था। मेरियस जनता का और साला सरदारों का पक्ष करता था। मेरियस केवल एक वीर सिपाही था परन्तु साला अच्छा नियामक तथा एक अच्छा राजनीतिज्ञ भी था।

पाँपियस और जूलियस सीजर की पारस्परिक तुलना

इन दोनों में कई समानताएँ थीं। दोनों ही प्रथम श्रेणी के जनरल थे। दोनो की सेनिक योग्यता प्रशसनीय थी। पाँपियस केवल एक वीर सिपाही था। इसके विरुद्ध सीजर एक अच्छा वीर सिपाही और प्रथम श्रेणी का राजनीतिज्ञ भी था। रोम में सीजर के बहुत पहले से ही गड़बड़ी फैली हुई थी परन्तु सीजर ने इन सबों का कारण खूब समझा और उसके शान्त करने का उपाय

प्रसिद्ध घटनाओं के सन्

सन् ७५३ ई० पू० —रोम की स्थापना।

७५३ ई० पू० से ७१६ ई० पू० तक —रोम्यूलस ने राज्य किया।

७१५ ई० पू० से ६७३ ई० पू० तक —न्यूमापांपियस ने राज्य किया।

६७३ ई० पू० से ६४२ ई० पू० तक —ट्यूलियस हास्टीलियस ने राज्य किया।

६४२ ई० पू० से ६१७ ई० पू० तक —एकस मार्सियस ने राज्य किया।

६१७ ई० पू० से ५७८ ई० पू० तक —ल्यूशियस टार्किनियस प्रिसकस ने राज्य किया।

५७८ ई० पू० से ५३५ ई० पू० —सर्वियस ट्यूलियस ने राज्य किया।

५३५ ई० पू० से ५१० ई० पू० तक —टार्किनस सुपर्बस ने राज्य किया।

५०८ ई० पू० —रेगिलस झील के पास सुपर्बस और प्रजातंत्र से लड़ाई हुई।

४५० ई० पू० में —प्रजातन्त्र के समय १२ नियम प्रकाशित हुए।

४४५ ई० पू० मे —कैन्यूलियन नियम पास हुआ।

४२१ ई० पू० से —प्लेब लोग क्वेस्टर बनने लगे।

३९० ई० पू० में —एलिया नदी के तट पर गालो और रोम से लड़ाई हुई।

३७६ ई० पू० मे —लाइसीनियम नियम पास हुआ।

३६६ ई० पू० में —सेक्सस—जो प्लेवियन था—कसल चुना गया।

२७५ ई० पू० मे —बेनेवेंटम मे पाइरस की रोम से पराजय हुई।

२६३ ई० पू० से २४१ ई० पू० तक —प्रथम प्यूनिक युद्ध।

२२६ ई० पू० में —इलीरिया रोम के अधिकार मे आ गया।

२२५ ई० पू० मे —गालों को हरा कर उनके देश को रोम ने अपने अधिकार मे कर लिया।

२१८ ई० पू० से २०१ ई० पू० तक —द्वितीय प्यूनिक युद्ध।

२१८ ई० पू० में —हैनीवल ने सैगँटम को घेर कर नष्ट कर दिया।

२१६ ई० पू० में —हैनीवल तथा राम से कैनी मे युद्ध हुआ।

२०२ ई० पू० मे —जामा नामक स्थान मे सिपुष्या ने हैनीवल को हराया।

२०० ई० पू० से १९७ ई० पू० तक —मैसीडोनिया की दूसरी लड़ाई।

१९१ ई० पू० में —थर्मोपिली—मुहाने के पास की लड़ाई में सिरिया के राजा एंटीओकस को सीपियो ने हराया।

१८३ ई० पू० मे —हैनीवल ने आत्महत्या की।

१७१ ई० पू० से १६८ ई० पू० तक मेसोडोनिया की तीसरी लड़ाई।

१६८ ई० पू० मे —पीडना के युद्ध मे पर्सियस की पराजय हुई।

१४८ ई० पू० से १४६ ई० पू० तक—तृतीय प्यूनिक युद्ध।

१४७ ई० पू० में—यूनानी एकियन-संघ की पराजय हुई।

सन् १३३ ई० पू० में—टाइबीरियस ग्रेकस ट्रिब्यून चुना गया।

सन् १२४ ई० पू० में—कायस ग्रेकस ट्रिब्यून हुआ।

सन् १११ ई० पू० से १०६ ई० पू० तक—जुगर्था और रोम की लड़ाई।

सन् १०२ ई० पू० में—जूलियस सीजर का जन्म हुआ।

सन् १०१ ई० पू० में—इडियाई में ट्यूटन लोगों ने रोम से पराजय पाई।

सन् ६० ई० पू०—ड्रूसन की हत्या और सामाजिक युद्ध का प्रारम्भ।

सन् ८८ ई० पू० में—साला कसल, हुआ।

सन् ७८ ई० पू० में—साला की मृत्यु हुई और लेपीडस ने बलवा किया।

सन् ७० ई० पू० में—क्रैसस और पापियस कसल हुए।

सन् ६३ ई० पू० में—मिथ्रिडिटीज की मृत्यु हुई।

सन् ६२ ई० पू० में—कैटेलाइन षड्यन्त्र करने के अपराध में मार डाला गया।

सन् ६० ई० पू० में—जूलियस-सीजर कसल चुना गया।

सन् ५८ ई० पू० में—जूलियस सीजर ने गाल विजय के लिए प्रस्थान किया।

सन् ५६ ई० पू० में—सीजर ने लूका नामक स्थान के कानफ्रे में पापियस और क्रैसस से पुन मित्रता कर ली।

सन् ५४ ई० पू० में—जूलिया की मृत्यु के उपरान्त प्रथम त्रिगुट का अत हो गया।

सन् ४८ ई० पू० में—सीजर गाल विजय कर के रोम लौटा और इसी वर्ष फार्सेलिया में पांपियस को हराया।

सन् ४६ ई० पू० मे—मुंडा मे सीजर ने पांपियस के लडको को हराया।

सन् ४५ ई० पू० मे—वर्ष का मान ३३५ दिन के बदले ३६५¼ दिन हो गया।

सन् ४४ ई० पू० मे—ब्रूटस ने जुलियस सीजर की हत्या की।

सन् ४३ ई० पू० मे—आक्टेवियस ने फोरम गेलेरम और म्यूटन की लडाइयों में एंटोनी को हराया।

सन् ३१ ई० एक्टियम की लड़ाई मे एंटोनी ने आक्टेवियस से करारी पराजय पाई और रानी क्लियोपेट्रा के साथ मर गया।

सन् १४ ई० मे—आक्टावियस की मृत्यु हुई।

सन् १४ ई० से ३७ ई० तक—टाईबेरियस ने राज्य किया।

सन् १६ ई० मे टाइबेरियस अज्ञोक स्थान पर जरमेनीकस को विष पिला कर मार डाला।

सन् २३ ई० मे—टाइबेरियस ने ड्रूसस को विष देकर मार डाला।

सन् २६ ई० में—टाइबेरियस एग्रीपिना, उसके पुत्र नीरो और दूसरे ड्रूसस को देश से निकाल दिया।

सन् ३७ ई० से ४१ ई० तक—गायस कैलीग्यूला ने राज्य किया।

सन् ४१ से ५४ ई० तक—क्लाडियस ने शासन किया।

सन् ५४ से ६४ ई० तक—नीरो का राज्य-काल है।

सन् ६४ ई०—रोम मे भयकर आग लगी और नीरो इस दृश्य को प्रसन्नता पूर्वक पहाड़ी पर से देखता रहा।

सन् ६६ ७६ ई० तक—वेस्पेशियन का शासन-काल है।

सन् ७० ई० मे— टाइटस ने यहूदियो को दबा कर जेरूसलम को नष्ट कर दिया।

सन् ७६ ई० से ८१ ई० तक—टाइटस ने राज्य किया।

सन् ८१ ई० से ६६ ई० तक—डोमीशियन ने राज्य किया।

सन् ६६ ई० से ६८ ई० तक—नरवा का शासन समय है।

सन् ६८ ई० से ११७ ई० तक—ट्रैजन,ने शासन किया।

सन् १०१ ई० में—ट्रैजन ने डेसिया पर आक्रमण किया और जीत कर रोम का प्रान्त बना लिया।

सन् ११७ ई० से १३८ ई० तक—हेड्रियन ने राज्य किया।

सन् १३८ से १६१ ई० तक—एंटोनाइनस पायस का शासन-काल है।

सन् १६१ से १८० ई० तक—मार्कस और रेलियस ने राज्य किया।

सन् १८० से १६२ ई० तक—कामोडस ने राज्य किया।

सन् १६२ ई० मे— कमोडस के विरुद्ध एक षड्यत्र रचा गया और यह अपने महल में मार डाला गया।

सन् १६२ से १६३ ई० तक—पर्टीनेक्स ने राज-प्रबन्ध किया।

सन् १६३ से २११ ई० तक—सेप्टीमियस सेवेरस ने शासन किया।

सन् २११ ई० से २१७ ई० तक—कैराकाला का राज्य प्रबन्ध रहा।

सन् २१८ से २२२ ई० तक—एलगा बालस का राज्य-काल है।

सन् २२२ ई० से २३५ ई० तक—एलेक्जेंडर सेवेरस ने राज्य-व्यवस्था की।

सन् २५३ ई० से २६० ई० तक—वेलेरियन ने राज्य किया।

सन् २६० ई० से २६५ ई० तक—गैलीनियस ने शासन-प्रबन्ध किया।

सन् २६८ ई० से २७० ई० तक—क्लौडियस का राज प्रवन्ध रहा।

सन् २७० ई० से २७५ ई० तक—औरीलियन की राज्य-व्यवस्था रही।

सन् २८५ ई० से ३०५ ई० तक—डामेक्लीशियन ने राज्य किया।

सन् ३०३ ई० में—डामेक्लीशियन ने सब गिर्जाघरों को नाश कर देने की घोषणा निकाली।

सन् ३१२ ई० में—कस्टेंटाइन महान् ने अपने प्रतिद्वन्दी मेजेंटियस को हराया।

सन् ३१३ ई० म—कस्टेंटाइन महान ने ईसाइयों की रक्षा करने का आज्ञा निकलवाई।

सन् ३२३ ई० से ३३७ ई० तक—कस्टेंटाइन महान का शासन काल है।

सन् ३५५ ई० से ३६३ ई० तक—फ्लेवियस क्लौडियस जूलियस ने शासन किया।

सन् ३७८ ई० में—हूनों ने वालगा नदी पार कर गाथ लोगो पर हमला किया।

सन् ३९० ई० में—ईसाई धम राज्यधर्म हो गया।

सन् ४०८ ई० मे—गाथों का सरदार एलरिक ने रोम पर आक्रमण किया और लूट कर उसे चौपट कर दिया।

सन् ४२३ ई० मे—होनोरियस की मृत्यु हुई।

सन् ४७२ ई० में—हूनो के सरदार रिसिमेर ने रोम को लूटा।

सन् ४७६ ई० मे—जर्मन नेता ओडेसर ने रोम साम्राज्य के अन्तिम राजा रोम्यूलस अगस्टलस को हरा कर पश्चिमी रोम साम्राज्य का अंत कर दिया।

सन् ५२७ ई० से ५६५ ई० तक—जस्टिनियन पूर्वी रोम-साम्राज्य का सम्राट रहा।

सन् १४५३ ई० मे—तुर्कों ने पूर्व रोम साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर लिया।

प्रसिद्ध प्रसिद्ध युद्ध तथा उनके प्रभाव

एक्टियम (३१ ई० पू०) —आक्टेवियस ने आक्टियम की लड़ाई में एटोनी को हरा दिया और रोमन ससार का स्वामी बन गया। इसी युद्ध से प्रजातत्र राज्य का अन्त और राजात्मक राज्य का प्रारभ होता है।

वीयाई (४३८-३८६ ई० पू०)—रोम ने एट्रूस्कनों को हरा दिया और वीयाई पर अपना अधिकार कर लिया। वालशीयन युद्ध मे रोम ने वालशीयनों को हरा दिया।

मिटौरस (२०७ ई० पू०) —रूम वालो ने हैनीवल के भाई हसड्रुवल को हरा दिया। इसी लड़ाई के फल ने हैनीवल की आशाओ पर पानी फेर दिया और उसने रोम जीतने की आशा ही छोड़ दी।

रेजिलस (सन् ४९८ ई० पू०).—में रोम से सुपर्वस हार गया और उसने राज्य स्थापित करने का विचार छोड़ दिया।

मैसोडोनिया की तीसरी लड़ाई (१७१ ई० पू० से १६८ ई०पू० तक) में मैसोडोनिया-राज्य का अंत हो गया।

सिनोम्ने फेलिया (ई० पू० १९७) —रूमवालों ने मेसेडोन के पाँचवें फिलिप को हरा दिया। इस लड़ाई ने यूनानियों को मेसे-डोन के अधिकार से स्वतत्र कर दिया।

सन् १४६ ई० पू० मे एकियन-सघ के नाश के साथ ही साथ यूनान की स्वतन्त्रता नष्ट हो गई।

पक्के सेक्सटिया (१०२ ई० पू०) —इस लडाई में मेरियस ने ट्यूटन लोगों को अच्छी तरह से हराया और रूम को जगली जातियो के आक्रमण से बचा लिया।

थर्मोपिली (१९१) ई० पू० में सीरिया के राजा एटीओकस की सेना को रोम के सेनापति सीपियो ने हरा दिया।

पिडना (१६८ ई० पू०)—इस लडाई मे रूम ने परसियस को हरा दिया। इसी लडाई से मैसेडोनिया के राज्य का अन्त हो गया।

४३६ ई० पू० मे रोम में एक बड़ा भारी अकाल पडा।

फिलिप (४२ ई० पू०) —आक्टोवियस तथा एटानी ने ब्रूटस और कैसियस की सेना को हरा दिया। इस युद्ध से प्रजातन्त्र वादियों की आशा पर पानी फिर गया।

सन् १११ ई० पू० से १०६ ई० पू० तक रोम जुगर्था से लड़ता रहा।

फारसेलिया (४८ ई० पू०)—सीजर ने पम्पे को हरा दिया और रोमन-साम्राज्य का स्वामी बन गया। आक्टोवियस या अगस्टस के समय में ईसामसीह पैदा हुए थे और सम्राट टाई-बीरियस के समय में फाँसी पर लटकाए गये थे।

सन् ८८ ई० पू० से ८२ ई० पू० तक सालां और मेरियस मे युद्ध।

कैडाइनफोरक —इस लडाई मे सेमनातियों ने रूम की सेना को हरा दिया और रूम वालों को खूब तग किया रूम की सेना पर यह सब से भारी आपत्ति पडी थी।

सन् ५८ ई० पू० से ४६ ई० पू० तक जूलियस सीजर ने गालों को परास्त किया।

जामा (२०२ ई० पू०) —सिपियो ने हैनीवल को हरा दिया। इससे द्वितीय प्यूनिक-युद्ध का अंत हो गया और कार्थेज की शक्ति बहुत कम हो गई।

सन् ३३८ ई० पू० मे रोम के लोगों ने लातीनियो पर अधिकार कर लिया।

सेंटीनम (२६५ ई० पू०)—रूम वालो ने सेमनातियो को हरा दिया और उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया। यह सेमनातियो की तीसरी लडाई कहलाती है।

लेकवेडीमो —रूम वालों ने एट्रूस्कस तथा गालों की शक्ति को नष्ट कर दिया।

टेलामन —रूम वालों ने गालों को हराया और पो नदी को अपने राज्य की सीमा नियत की।

एफ० ए० परीक्षा के प्रश्न पत्र

(१) द्वितीय प्यूनिक युद्ध का वर्णन करो। इसका क्या फल हुआ ? (१६२५)

(२) ग्रेकस भाइयों के सुधारो का क्या उद्देश्य था ? उनकी असफलता के क्या कारण थे ? (१६२१, १६२६ और १६२५)

(३) आगस्टस ने प्रजातंत्र राज्य को रोम साम्राज्य (राजात्मक) कैसे बना दिया ? (१६२४)

(४) एंटोनाइनस के बारे में क्या जानते हो ? लिखो (१६२४)

(५) जूलियस सीज़र का जीवनचरित लिखो (१६१३)

(६) साला, डिक्टेटर की हैसियत से कैसा था ? उसका जीवन चरित लिखो (१६१२)

(७) सिसरों का जीवन चरित लिखो (१९१२)

(८) मैरियस और सल्ला की लड़ाई का क्या कारण था? (१९१२)

(९) रोम-साम्राज्य में ईसाई-धर्म कैसे फैला? (१९११ और १९२३)

(१०) रोमन-साम्राज्य के प्रारंभ में साम्राज्य के सब सूबों की क्या दशा थी? उनके संगठन के बारे में क्या जानते हो? (१९२३)

(११) रोम-साम्राज्य के पतन के क्या क्या कारण थे? (१९२२)

(१२) सिद्ध करो कि अगस्टस प्रजातंत्र के नाम से राज्य ही कर रहा था। (१९२१)

(१३) कैंस्टेन्टाइन "महान" के सुधारों को लिखो। उसने अपनी राजधानी बासफोरस क्यों बनाया? (१९१९ और १९२१)

(१४) फ्लेवियन राजाओं का इतिहास लिखो। (१९१८)

(१५) एन्टोनाइनस के राज्य के समय रोम-साम्राज्य की क्या दशा थी? (१९१२ और १९२०)

(१६) डायोक्लेशियन और अगस्टस के स्थापित किए हुए रोम साम्राज्य में क्या अन्तर था? दोनों के समय के साम्राज्य की पारस्परिक तुलना करो? (१९१०)

(१७) प्लेबियनों की क्या क्या शिकायतें थीं?

(१८) बहुत लोग ग्रेकस के आन्दोलन को ही प्रजातंत्र राज्य के पतन का कारण क्यों समझते हैं। ?

(१९) एक भारी जनरल की हैसियत से हैनीबल कैसा था? वह क्यों द्वितीय प्यूनिक-युद्ध में असफल हो गया?

(२०) रोम और कार्थेज के साधनों का वर्णन करो।

(२१) जूलियस सीजर की हत्या के बाद से दूसरे त्रिगुट के अन्त तक की प्रधान घटनाओं का वर्णन करो।

महर्षि वाल्मीकि-रचित

संस्कृतमूल

और हिन्दी भाषानुवाद सहित

सचित्र श्रीमद्वाल्मीकि-रामायण

सम्पूर्ण का मूल्य १६)

श्री मद्रामायण के इस संस्करण में, ऊपर श्लोक दिया गया है और उस श्लोक के नीचे ही उसका हिन्दी में अनुवाद है। इस प्रकार मूल के साथ भाषानुवाद का अपूर्व सम्मिश्रण अथवा कालिन्दी एवं मन्दाकिनी का एक ही स्थान पर पुण्यसङ्गम है। इस प्रकार की सुन्दर अनुवादशैली से कथाप्रसङ्ग की असङ्गति सर्वथा दूर कर दी गयी है। मूलश्लोकों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ करने में टीकाकारों ने जहाँ विशेष अर्थों से काम लिया है, वहाँ वहाँ उन-उन टीकाकारों का नामोल्लेख कर पादटिप्पणी में मूलशब्दों का गणना अङ्क देकर उनका अर्थ ज्यों का त्यों संस्कृत ही में लिख दिया गया है। इसके अतिरिक्त यथास्थान प्रसङ्गत धार्मिक, ऐतिहासिक, एवं राजनीतिक स्वतन्त्र टिप्पणियाँ भी दी गयी हैं। इन टिप्पणियों से अनुवाद की उपयोगिता बहुत कुछ बढ़ गयी है। श्रीमद्रामायण के उत्तरभारतीय और दक्षिणभारतीय, संस्करणों में जो पाठान्तर पाये जाते हैं, उनका भी जगह जगह निर्देश कर दिया गया है। यह ग्रन्थरत्न दस खण्डों में प्रकाशित हुआ है। इसमें स्थान स्थान पर कितने ही सुन्दर रंगीन एवं भावपूर्ण चित्र भी दिये गये हैं।

हिन्दी

शब्दार्थ-पारिजात कोष

हिन्दी साहित्य में कोषो की बड़ी कमी है। इस अभाव की पूर्ति के लिए हमने चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा से " शब्दार्थ-पारिजात " नाम का बृहद्-कोष तयार कराकर प्रकाशित किया है। इसमें प्रत्येक शब्दों के व्याकरणादि भेद भी लिख दिया गया है। जिसमें शब्दों का ज्ञान आसानी से हो जाता है। इस कोष मे हिन्दी और संस्कृत के वे शब्द, जिनका हिन्दी में व्यवहार होता है, दिये गये हैं। विशेषता इसमें यह है कि प्राचीन प्रसिद्ध पुरुषों और नगरों का, जो क्रमागत शब्दों में आये हैं संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इतना होने पर भी सब के सुभीते के लिए इसका मूल्य केवल ३) रखा गया है। द्वितीय संस्करण में अन्य आवश्यक और भी शब्द बढ़ा दिये गये हैं।

गुटका हिन्दी कोष

हिन्दी भाषा में कोषो की संख्या इने ही गिने हैं। जो हैं भी वे या तो अधूरे हैं या उनका मूल्य इतना अधिक है कि सर्व साधारण स्त्री पुरुष उससे लाभ नहीं उठा सकते। इसी अभाव की पूर्ति के लिए हमने चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा से यह गुटका कोष तयार कराया है। यह कहना अनुचित न होगा कि हिन्दी में ऐसा कम दाम का और उपयोगी कोष एक भी नहीं है। इससे अमीर गरीब स्त्री पुरुष बालक बालिकायें सभी लाभ उठा सकते हैं। १२४४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।।) कुछ भी नहीं है।

महर्षि वाल्मीकि-रचित

संस्कृतमूल

और हिन्दी भाषानुवाद सहित

सचित्र श्रीमद्वाल्मीकि-रामायण

सम्पूर्ण का मूल्य १६)

श्री मद्रामायण के इस संस्करण मे, ऊपर श्लोक दिया गया है और उस श्लोक के नीचे ही उसका हिन्दी में अनुवाद है। इस प्रकार मूल के साथ भाषानुवाद का अपूर्व सम्मिश्रण अथवा कालिन्दी एव मन्दाकिनी का एक ही स्थान पर पुण्यसङ्गम है। इस प्रकार की सुन्दर अनुवादशैली से कथाप्रसङ्ग की असङ्गति सर्वथा दूर कर दी गयी है। मूलश्लोकों मे प्रयुक्त शब्दों के अर्थ करने मे टीकाकारों ने जहाँ विशेष अर्थों से काम लिया है, वहाँ वहाँ उन उन टीकाकारों का नामोल्लेख कर पादटिप्पणी में मूलशब्दों का गणना अङ्क देकर उनका अर्थ ज्यों का त्यों संस्कृत ही मे लिख दिया गया है। इसके अतिरिक्त यथास्थान प्रसङ्गत, धार्मिक, ऐतिहासिक, एव राजनीतिक स्वतन्त्र टिप्पणियाँ भी दी गयी हैं। इन टिप्पणियों से अनुवाद की उपयोगिता बहुत कुछ बढ़ गयी है। श्रीमद्रामायण के उत्तरभारतीय और दक्षिणभारतीय, संस्करणों मे जो पाठान्तर पाये जाते हैं, उनका भी जगह जगह निर्देश कर दिया गया है। यह ग्रन्थरत्न दस खण्डों मे प्रकाशित हुआ है। इसमे, स्थान स्थान पर कितने ही सुन्दर रंगीन एव भावपूर्ण चित्र भी दिये गये हैं।

हिन्दी

शब्दार्थ-पारिजात कोष

हिन्दी साहित्य में कोषों की बड़ी कमी है। इस अभाव की पूर्ति के लिए हमने चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा से "शब्दार्थ-पारिजात" नाम का बृहद्-कोष तयार कराकर प्रकाशित किया है। इसमें प्रत्येक शब्दों के व्याकरणादि भेद भी लिख दिया गया है। जिससे शब्दों का ज्ञान आसानी से हो जाता है। इस कोष में हिन्दी और संस्कृत के वे शब्द, जिनका हिन्दी में व्यवहार होता है, दिये गये हैं। विशेषता इसमें यह है कि प्राचीन प्रसिद्ध पुरुषों और नगरों का, जो क्रमागत शब्दों में आये हैं संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इतना होने पर भी सब के सुभीते के लिए इसका मूल्य केवल ३) रखा गया है। द्वितीय संस्करण में अन्य आवश्यक और भी शब्द बढ़ा दिये गये हैं।

गुटका हिन्दी कोष

हिन्दी भाषा में कोषों की संख्या इने ही गिने हैं। जो हैं भी वे या तो अधूरे हैं या उनका मूल्य इतना अधिक है कि सर्व साधारण स्त्री पुरुष उससे लाभ नहीं उठा सकते। इसी अभाव की पूर्ति के लिए हमने चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा से यह गुटका कोष तयार कराया है। यह कहना अनुचित न होगा कि हिन्दी में ऐसा कम दाम का और उपयोगी कोष एक भी नहीं है। इसमें अमीर गरीब स्त्री पुरुष बालक बालिकायें सभी लाभ उठा सकते हैं। १२४४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।) कुछ भी नहीं है।

नवीन अंकगणित

लेखक

गणिताचार्य पण्डित अवध उपाध्याय
भूतपूर्व प्रिंसपल हिन्दी-विद्यापीठ-प्रयाग
तथा
कलकत्ता और लखनऊ विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कालर
तथा पलर्मो (इटली) आदि देशों की गणित
समाओं के सदस्य

संपूर्ण संस्करण	हिन्दी २)	उर्दू	२)
पहिला भाग	हिन्दी ॥=)	उर्दू	॥=)

वर्नाक्युलर स्कूलस् की पहली व दूसरी कक्षाओं के लिए

दूसरा भाग	हिन्दी ॥=)	उर्दू	॥=)

वर्नाक्युलर स्कूलस् की तीसरी व चौथी कक्षाओं के लिए

तीसरा भाग	हिन्दी ॥।=)	उर्दू	॥।=)

वर्नाक्युलर स्कूलस् की पांचवीं, छठी व सातवीं कक्षाओं के लिए

अँग्रेजी संस्करण छप रहा है। शीघ्र तय्यार होगा।

मिलने का पता—
रामनरायन
पब्लिशर अ